रहबरे इन्सानियत

मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलहि वसल्लम

लेखक

सय्यद मुहम्मद रबे हसनी नदवी

अनुवादक

मुहम्मद ग़ुफ़रान नदवी

प्रकाशक

दार-अल रशीद

हैदर मिर्ज़ा रोड, गोलागंज, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

सभी अधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित

पहला संस्करण मार्च- 2011
दूसरा संस्करण अगस्त- 2011
तीसरा संस्करण अकतूबर- 2012

किताब का नाम : रहबरे इन्सानियत
मुहम्मद सल्ललाहुअलैहिवसल्लम
लेखक का नाम : मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
अनुवादक का नाम : मुहम्मद गुफ़रान नदवी
पृष्ठ : 352
संख्या : 1100
मूल्य : 250 रूपये

प्रकाशक

दार-अल रशीद
ख़ातून मंज़िल हैदर मिर्ज़ा रोड, गोलागंज लखनऊ
फोन : 09452294097
9838154415

शेख़ अबुल हसन नदवी सेन्टर
फॉर रिसर्च एण्ड इस्लामिक इस्टडीज मुज़्फ़रपुर
आज़मगढ़ यूपी (भारत)

www.abulhasanalinadwi.org

بسم الله الرحمن الرحيم

www.abulhasanalinadwi.org

विषय सूची

विषय	पृ० सं०
प्रकाषक की बात भूमिका	13 23
अनुवादक की बात	34
अध्याय एक	37
इन्सान के मूरिसे आला (वंश प्रवर्तक)हज़रत आदम अलैहिस्सलाम	37
दीनी रहनुमाई	38
नबी का काम और पैग़ाम	43
अध्याय दो	45
छठी सदी ईसवी में दुनिया की हालत	45
यूरोप के मुल्कों का हाल	46
साउथ एशिया का हाल	47
म्जूस	47
बुद्ध धर्म	47
हिन्दू धर्म	48
रूमी व ईरानी इलाक़ों की सल्तनतें	49
अरबद्वीप	51
विश्व व्यापी स्तर पर इन्सानों की पस्ती और बिगाड़	51
महान नबी की ज़रूरत	52
अरब प्रायद्वीप का हाल बेअसते मुहम्मदी के समय	53
अरब प्रायद्वीप में इन्सानी आबादी	54
हज़रत इब्राहीम और उनकी औलाद	55
मक्का मुकर्रमा (पवित्र मक्का)	57
ज़म ज़म कुवें की तलाश	59
मक्का की भौगोलिक और प्राकृतिक स्थिति	59
अरबों की बुत परस्ती	61
नैतिक दशा और स्वाभाव	63
मुहम्मद सल्ल० अरब प्रायद्वीप के केन्द्र मक्का मुकर्रमा में क्यों मबऊस हुए?	65

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय तीन	68
वंशज, जन्म और पालन-पोषण का ज़माना	68
अरब क़बीलों का नबस (वंश)	68
कुरैश का क़बीला	69
नसब मुबारक	71
अदनान	73
विलादत (जन्म)	75
रज़ाअ़त दूध पीने का ज़माना	75
वालिदा की वफ़ात और दादा की तवज्जुह और सरपरस्ती	80
दादा की वफ़ात	80
चचा अबू तालिब की तवज्जुह और ज़िम्मेदारी	81
आपका पालन पोषण और शिक्षा-दीक्षा	82
सबसे ऊँची खूबियों वाली शख़सियत	85
हिलफ़ुल फ़ुज़ूल	87
हज़रत ख़दीजा के साथ तिजारत में शिरकत और निकाह	87
अबू तालिब के बेटे हज़रत अली को अपनी कफ़ालत (पालन पोषण) में ले	88
काबे की तामीर (निर्माण)	89
खुदाई इनायत (कृपा) व तरबियत (प्रशिक्षण)	90
हज़रत अबू बकर की दोस्ती	91
ग़ारे हिरा में एतिकाफ़ के लिये वक़्त गुज़ारना	91
अध्याय चार	93
"वही" (ईश्वरीय वाणी) का शुभारम्भ बेसत, और दावत व तबलीग़	93
पहली "वही"	93
रमज़ान में "वही" का नुज़ूल	93
वरक़ा बिन नौफ़ल से मुलाक़ात	95
इनजील व तौरेत में हुज़ूर सल्ल० की नबूवत की बशारत	96
शरीअते मुहम्मदी का इल्म व क़लम से गहरा संबंध	99
सर्व व्यापी और सर्व कालिक शरीअ़त	101
शरीअते मुहम्मदी के बुनियादी अरकान (स्तंभ)	102
सारी इन्सानियत के लिये तौहीद का पैग़ाम	104
कुरआन मजीद	106
ग़लत अक़ीदों के सुधार की दावत	107
सद् व्यवहार और मानवता के सन्देश की दावत	107

www.abulhasanalinadwi.org

सूरा मुद्दस्सिर का नुज़ूल	112
दावते हक़ (सच्चाई की दावत) का शुभारंभ	114
हज़रत ख़दीजा, अबू बक्र सिद्दीक़, अली और	
ज़ैद बिन हारिसा का कुबूले इस्लाम	114
सुब्ह व शाम की नमाज़ें	115
दारे अरक़म	115
सफ़ा पहाड़ पर एलाने आम	115
हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से इस्लाह (सुधार)	
उपदेश का निरन्तर अमल	116
क़ुरैश की मुख़ालिफ़त (विरोध)	117
इस्लाम लाने वालों की आज़माइश	119
हुज़ूर सल्ल० को तकलीफ़ पहुंचाना	120
क़बीले दौस के सरदार तुफ़ैल बिन अमर का कुबूल इस्लाम	121
इस्लाम लाने वालों पर क़ुरैश के अत्याचार	122
तकलीफ़ पहुंचाने के लिये नियामानुसार कमेटियों की रचना	124
क़ुरैश के सरदारों की अबू तालिब से मुलाक़ात	125
अबुल वलीद उतबा और रसूल सल्ल० की बात चीत	127
हज़रत अबू बक्र रज़ि० के साथ कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का मामला	128
हज़रत हम्ज़ा रज़ि० का कुबूले इस्लाम	129
हज़रत उमर का कुबूले इस्लाम	130
हबशह की हिजरत	131
क़ुरैश का ताआक़ुब (पीछा करना)	131
हज़रत जाफ़र रज़ि० की तक़रीर	133
नजाशी की हमदर्दी	134
शअब अबू तालिब का घेरा	134
मुहासरे (घेरे) से रिहाई	135
ग़म का साल	136
ताएफ़ का सफ़र	136
अदास का कुबूले इस्लाम	137
नसीबैन के जिन्नातों का कुबूले इस्लाम का वाक़िआ (घटना)	139
अध्याय पांच	140
मेराज की घटना, बै-ए-ते अक़बा	140
मदीने की हिजरत	140
हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० का कुबूले इस्लाम	144

www.abulhasanalinadwi.org

यसरिब वालों की आप सल्ल० से मुलाक़ात	145
पहली बैअ़ते अक़बा	146
मदीने में इस्लाम	146
दूसरी बैअ़ते अक़बा	147
हज़रत उम्मे सलमा की हिजरत	148
क़त्ल की साज़िश	150
मदीने की हिजरत	151
सुराक़ा बिन जोशम का वाक़िया	152
उम्मे मअ़बद का वाक़िया	152
अध्याय छ	154
मदीना मुनव्वरा का निवास और सामाजिक व्यवस्था	154
दुश्मनों की नई साज़िशों (षडयंत्रों) का मुक़ाबिला	154
मदीने में आप सल्ल० की आमद	155
मस्जिद नबवी की तामीर (निर्माण)	157
मदीने की प्राकृतिक और भौगोलिक स्थित	158
सामूहिक हालत	159
विश्व व्यापी भाई चारा	160
मदीने के यहूदियों से समझौता	161
इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था की स्थापना	163
अज़ान का आग़ाज़ (शुभारंभ)	164
क़िबले की तब्दीली	164
इस्लामी समाज की तशकील (संरचना)	166
सुफ़्फ़ा और अस्हाबे सुफ़्फ़ा	167
दअ़वत की राह में सब्र व बर्दाश्त	167
दअ़वते हक़ की तब्लीग़ के लिये ज़रूरी वसाएल (साधन)	168
एख़्तियार करने की ताकीद	168
मुसलमानों को फ़ौजी टकराव से पहले सामना	170
ग़ज़्व-ए-बदर, कुफ़्फ़ार और मुसलमानों के बीच पहला युद्ध	172
जंग बदर का संक्षिप्त वर्णन	174
दुश्मनों का अन्जाम (परिणाम)	176
क़ैदियों के साथ बर्ताव	177
बदर के वाक़िए के बाद	178
यहूदियों की अहद शिकनी (प्रतिज्ञा भंग)	178
रोज़े की फ़रज़ियत	179

www.abulhasanalinadwi.org

बनू क़ीनक़ाअ़ का मामला	180
उहद् (शव्वाल सन् 3 हिजरी)	180
हमराउल असद	184
उहद के बाद	184
रजीअ़ की घटना	184
हज़रत ख़ुबैब और ज़ैद बिन दसना रज़ि० की शहादत	185
बीरे मऊना	185
हराम बिन मलहान की शहादत	186
ज़ातुररिक़ाअ़	186
बनू नज़ीर का मामला	186
मुख़ालिफ़ीन (विरोधियों) का मदीने पर आक्रमण और खनदक़	187
का वाक़िआ सन् 5 हिजरी	
बनी क़ुरैज़ा का मामला	189
हज़रत सअ़द बिन मआ़ज़ का इम्तिहान	191
बनू मुस्तलिक़ का मामला	192
हज़रत जुवैरिया से आपका निकाह	192
मुनाफ़िक़ीन की फ़ित्ना अंग्रेजी (उपद्रव कारी) और वाक़िया इफ़्क	193
उमरा अदा करने के लिये मक्का मुकर्रमा का सफ़र और सुलह हुदैबिया	194
मुसलमानों के मक्के में दाख़िले से क़ुरैश की रोक और सुलह	196
बैअते रिज़वान	197
मुसलमानों का अमन पसंद रवय्या और मसलिहत पर रज़ामंदी	197
मुआहिदा व सुलहनामा	198
सुलह के लिये क़ुरैश का एक तरफ़ा सख़्त रवय्या	199
मुसलमानों का इम्तिहान	200
सुलह (समझौता) देखने में अपमान जनक लेकिन नतीजे	202
के लिहाज़ से लाभदायक	
ज़ाहिरी सूरत में नाकामी हक़ीक़त में कामयाबी	203
सुलह (समझौता) के फ़ाइदे और आश्चर्यजनक परिणाम व प्रभाव	204
हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और हज़रत उमर बिन आस	205
का क़ुबूले इस्लाम	
शासक वर्ग को दावते इस्लाम	206
शाहे हबशा नजाशी के नाम नाम-ए-मुबारक	207
शाहे मिस्र व असकनदरया मक़ोक़स के नाम नाम-ए-मुबारक	208
किसरा के नाम ख़त	208

www.abulhasanalinadwi.org

क़ैसरे रोम हिरक़्ल को दावते इस्लाम	209
हिरक़्ल की इन्क्वाईरी (जांच-पड़ताल)	209
अबू सुफ़ियान और हिरक़्ल का मुकालमा (वार्तालाप)	209
ख़ैबर का वाक़िआ	212
हज़रत सफ़िया से निकाह	213
उमरे की क़ज़ा	214
ग़ज़वे मूता सन् 8 हिजरी	214
क़ुरैश की तरफ़ से सुलह समझौते की खिलाफ़वर्जी और	
हुज़ूर सल्ल० का मज़लूमों की मदद करने का फ़ैसला	215
क़ुरैश के लीडर अबू सुफ़ियान की मुसालिहत (समझौते) की कोशिश	216
अबू सुफ़ियान का एलान	217
रसूलुल्लाह सल्ल० की हिकमते अमली	218
मक्का मुकर्रमा रवानगी	219
क़ुरैश के सेनापति अबु सुफ़ियान का इस्लाम लाना	219
मआफ़ी का आम ऐलान	221
दाख़िले का नियाज़मन्दाना अंदाज़	222
मआफ़ी का दिन है ख़ूंरेज़ी का नहीं	224
हक़ के ग़लबे (प्रभुत्त) का ऐलान	225
इस्लाम की तरफ़ उमूमी झुकाव	229
ग़ज़वे हुनैन, औतास और ताएफ़	229
अंसार से एक मोजिज़ाना खिताब	232
उमर-ए-जअ़राना	236
तबूक की मुहिम सन् ९ हिजरी	236
सच्चाई और क़ुसूर के मान लेने की बरकत	237
सूरः तौबा का नुज़ूल	243
ग़ज़व-ए-तबूक के असरात	245
मस्जिद ज़िरार	246
ज़कात की फ़रज़ियत	246
इस्लाह व दावत के काम में सख़्त हालात का ख़ात्मा	247
मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों की जंगों के दरमियान मुआज़ना (तुलना)	249
वुफ़ूद (शिष्टमण्डल) की आमद और इस्लाम का क़ुबूले आम सन् 09 हिजरी	256
अध्याय सात	258
हज्जतुल विदअ़	258
आपका आख़िरी हज और हज की फ़रज़ियत	259

www.abulhasanalinadwi.org

आदेश और वसीअतें	267
मिना व अरफ़ात में पूरी इन्सानियत के नाम पैग़ाम	270
अध्याय आठ	274
बीमारी और वफ़ात	274
वफ़ात का सहाब-ए-कराम पर असर	277
आप सल्ल० की खिलाफ़त का मसअला	280
हुज़ूर सल्ल० की पाक बीवियां	281
कई बीवियों की हिकमत व मसलहत	282
हुज़ूर सल्ल० की औलाद	291
अध्याय नौ	294
नबी-ए-करीम सल्ल० की विशेषताएं एवं स्वभाव आचरण	294
रसूलुल्लाह सल्ल० के ऊँचे अख़लाक़ और पवित्र विशेषताओं	298
का तत्वपूर्ण बयान	
पूर्ण मानवता और समता व संतुलन	302
इनायत व मेहरबानी और बर्दाश्त की शक्ति	303
जानवरों के साथ नरमी	305
दुश्मनों के साथ अच्छा व्यवहार	307
इस समय तुम्हें कौन बचा सकता है?	309
रहमतुललिल आलमीनी (पूरे संसार के लिय करूणा और दया)	309
सुधार और दावत का नबवी तरीक़ा	313
शुद्धीकरण और अन्तः सुधार	315
अध्याय दस	322
रसूलुल्लाह सल्ल० के सहाबा	322
साबिक़ीन अव्वलीन और अशर-ए-मुबश्शरा	329
खुलफ़ा-ए-राशिदीन	330
हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि०	331
हज़रत उमर रज़ि०	332
हज़रत उस्मान रज़ि०	333
हज़रत अली रज़ि०	334
हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि०	335
हज़रत तलहा रज़ि०	335
हज़रत ज़ुबैर रज़ि०	335
हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि०	335

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि०	336
दूसरे कुछ अहम सहाब-ए-किराम	337
हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि०	338
हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि०	338
हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि०	339
हज़रत जाफ़र बिन अली तालिब रज़ि०	339
हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि०	3340
हज़रत सअ़द बिन मआज़ रज़ि०	340
हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़ि०	341
हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि०	341
हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि०	341
हज़रत अबू दरदा रज़ि०	342
हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि०	342
हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि०	342
हज़रत खब्बाब रज़ि०	342
हज़रत बिलाल रज़ि०	343
हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि०	343
हज़रत सुहैब रज़ि०	343
हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि०	344
हज़रत अरक़म बिन अबिल अरक़म रज़ि०	344
हज़रत अमर बिन आस रज़ि०	345
हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि०	345
हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि०	345
हज़रत अबू हुरैरा रज़ि०	346
हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि०	346
हज़रत मूसा अशअरी रज़ि०	346
हज़रत अबू सुफ़ियान व मुआविया बिन अबी सुफ़ियान रज़ि०	346
कुछ कम उम्र सहाबा	347
हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि०	347
हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि०	348
हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि०	348
हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि०	348
हज़रत हसन व हज़रत हुसैन रज़ि०	348
हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि०	349

www.abulhasanalinadwi.org

www.abulhasanalinadwi.org

प्रकाशक की बात

राष्ट्रीय एवं धारमिक पक्ष पात से रहित हो कर साफ़ और खुले ज़ेहन से सीरते नबवी (हज़रत मुहम्मद स० का जीवन चरित्र) का अध्ययन करने वाले भली भांति जानते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम नैतिकता के शिक्षक और मानवता के मार्ग दर्शक हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की मुख्य और प्रसिद्ध विशेषता रहमतुल लिल आलमीनी (समस्त सृष्टि के लिये करुणा) है। आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम का पूर्ण जीवन क्षमा, दया, प्रेम सदव्यवहार, सहानभूति, मानव सम्मान का दर्पण है आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की शिक्षा और दीक्षा और सहाबा किराम के साथ आप के व्यवहार का मौलिक सार सहानभूति रहा है, आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम केवल मुसलमानों के लिये रहमत नहीं अपितु आप सारे जहाँ के लिये रहमत थे, अल्लह तआला कहता है: ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम हमने तुमको सारे संसार के लिये बस सर्वथा दयालुता बना कर भेजा है। (अल-अंबिया:- 107) हज़रत मुहम्मद स० की जीवनी के अध्ययन से आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की रहमत व करुणा की विशेषता आप के पवित्र जीवन के कामों में प्रभुत्वशाली है, आप सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम की ज़िन्दगी में कितनी कठिन घड़याँ और समस्यायें आईं, कितनी मुसीबतों और परेशानियों से आप को गुज़रना पड़ा, लेकिन किसी भी हाल में आपके नैतिक आचरण, सद्व्यवहार प्रेम भावना में कमी नहीं आयी, जब आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने इस्लाम की दअ़वत (आवाहन) शुरू की तो अपने ही क़बीले के लोगों ने सख़्त से सख़्त तकलीफ़ें और कष्ट पहुँचाया, आप का बाईकाट किया गया सच्चाई के रास्ते में रोड़े अटकाये गये, लेकिन हर हाल में आपकी करुणा और दया की भावना ऊपर रही, आपकी यह विशेषताएं केवल आप तक सीमित न थीं बल्कि आपकी शिक्षा और व्यवाहार के प्रभाव से सहाबा किराम भी इसी रंग में रंगे हुवे थे पवित्र कुरआन कहता है:

रहमान के (प्रिय) बन्दे वही हैं जो धरती पर नम्रता पूर्वक चलते हैं और जब जाहिल उनके मुँह आएं तो कह देते हैं: "तुम को सलाम!" जो अपने रब के आगे

www.abulhasanalinadwi.org

सजदे में और खड़े रातें गुज़ारते हैं, जो कहते है कि "ऐ हमारे रब! जहन्नम की यातना को हमसे हटा दे।" निश्चय ही उसकी यातना चिमट कर रहने वाली है। निश्चय ही वह जगह ठहरने की दृष्टि से भी बुरी है और स्थान की दृष्टि से भी। जो ख़र्च करते हैं तो न तो अपव्यय करते हैं और नहीं तंगी से काम लेते हैं, बल्कि वे इनके बीच मध्य मार्ग पर रहते हैं। जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे इष्ट पूज्य को नहीं पुकारते और न नाहक़ किसी जीव को जिस (के क़त्ल) को अल्लाह ने हराम किया है, क़त्ल करते हैं। और न वे व्यमिचार करते हैं- जो कोई यह काम करे वह गुनाह के वबाल से दोचार होगा।(अल फ़ुरकानः 63–68)

एक दूसरे अवसर पर क़ुरआन कहता हैः सफल हो गए ईमान वाले, जो अपनी नमाज़ों में विनम्रता अपनाते हैं, और जो व्यर्थ बातों से पहलू बचाते हैं, और जो ज़कात अदा करते हैं, और जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करते हैं- सिवाय इस सूरत के कि अपनी पत्नियों या लौडियों के पास जाएं कि इस पर वे निन्दनीय नहीं हैं। परन्तु जो कोई इसके अतिरिकत कुछ और चाहे तो ऐसे ही लोग हद से आगे बढ़ने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं, और जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं, वही वारिस होने वाले हैं। जो फ़िरदौस की विरासत पाएँगे, वे उस में सदैव रहेंगे। (अल-मोमिनून- 1–11)

ऊपरी आयतों से मालूम होता है कि रहमत, करूरणा दया, क्षमा, सहानभूति, मानव सम्मान इस्लाम की मौलिक और मुख्य विशेषताएं हैं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने केवल इनसानों ही के साथ करूणा-दया की शिक्षा नहीं दी बल्कि जानवरों और कीड़ों मकोड़ो के साथ भी करूणा-दया और नर्मी व सहानुभूति की शिक्षा दी, हदीसों और हज़रत मु०स० की जीवन चरित्र की किताबों में इसके (उदाहरण) बड़ी संख्या में मिलते हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम सद्व्यवहार, दया और नम्रता में समस्त मानवता के नायक थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने ख़ुद फ़रमाया है "अद्दबनी रब्बी फ़अहसन तादीबी" मेरा प्रशिक्षण, अल्लाह तआला ने किया है और बहुत अच्छा किया है, हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु कहते हैं कि आप स०अ० ने फ़रमाया अललाह तआ़ला ने मुझे अच्छे अख़लाक़ और अच्छे कामों को पूरा करने के लिये भेजा है, जब हज़रत आइशा (रजी०) से आप स०अ० के व्यवहार के विषय में पूछा गया तो उन्होंने बताया आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम व्यवहार में क़ुरआन का पूर्ण आदर्श थे, सहनशीलता और हृदय की विशालता में आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम का जो स्थान था वहाँ तक बड़े बड़े बुद्धिमानों की बुद्धि और कवियों के विचार और कल्पना की पहुँच नहीं हो सकती

www.abulhasanalinadwi.org

मानव जाति में उत्तम आचरण का सबसे बड़ा सूचक पैगंबरों की जाति है और पैगंबरों में सर्वप्रेष्ट हसती रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहिवसल्लम की है, इसी कारण अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम को इस विशेषता से सम्मानित किया थाः "तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आ गया है।

तुम्हारा मुश्किल में पड़ना उसके लिए असहनीय है वह तुम्हारे लिए लालायित है वह मोमिनों के प्रति अत्यन्त करुणामय, दयावान है।" (सूरः-तौबा–128)

कुछ न्याय प्रिय योरोपियन लेखकों ने अपनी किताबों में स्वीकार किया है, मुसलमानों का स्वभाव दानशील, साहसी और क्षमा करने वाला है दुर्बलों के साथ न्याय और सद्व्यवहार करते हैं, इस्लामी इतिहास में इसके बहुत से उदाहरण पाये जाते हैं।

ईसाई इतिहासकार फिलिप वाच और यूसुफ़ किरवाज "अल-मसीहियून फ़ित-तारीख़िल इस्लामी अल-अरबी वत तुर्की" में लिखते हैं कि हज़रत अमीर मुआ़वियह रज़ि० के ज़माने में ईसाइयों की संख्या 2,1/2 लाख के क़रीब थी, लेकिन आधी शताब्दी के बाद ख़लीफ़ा हारुनरशीद के ज़माने में उनकी आधी संख्या ने इस्लामी शिक्षा विशेषकर इस्लामी न्याय, समता और उदारता से प्रभावित होकर इस्लाम स्वीकार कर लिया, प्रसिद्ध ओरनटिय लिस्ट T.W. Arnold ने अपनी किताब The Preaching of Islam में प्रमारणों के साथ लिखा है कि इसलाम के शासन काल में नान मुस्लिमों के साथ न्याय, समानता, क्षमा और उदारता का जो व्यवहार किया गया, यूरोप के पूरे इताहास में इसका उदाहरण नहीं मिलाता है।

प्रसिद्ध जर्मन ओरनटियलिस्ट लेखिका श्रीमती होंका जो "पश्चिम पर इस्लाम का सूर्य उदय हो रहा है" और "अरहमुल फ़ातिहीन" की लेखिका हैं, कहती हैं कि मुस्लिम विजयताओं ने कभी भी इस्लाम स्वीकार करने पर किसी को मजबूर नहीं किया, इसके विपरीत ईसाइयों ने ईसाई धर्म स्वीकार न करने पर क़त्ल व लूट मार का बाज़ार गर्म किया, ख़ास तौर पर उन्दुलुस में मुसलमानों पर अत्याचार और ज़ुल्म के पहाड़ तोड़े गये।

पोप यूहन्ना नकयूसी ने अपनी किताब तारीख़ मिस्र (मिस्र का इतिहास) में लिखा है कि जब तक हज़रत अम्रबिन आस मिस्र के शासक रहे कभी भी चर्च से टेक्स नहीं लिया और न कोई अनुचित काम किया बल्कि जब तक मिस्र के शासक रहे, चर्चों की हिफ़ाज़त की एक दूसरा पोप मीख़ाइल सुरयानी कहता है कि बैज़िन तीनी सम्राटों ने हमारे पवित्र कलीसाओं और गिरजा घरों को बड़ी क्रुरता और हिंसा के साथ लूट लिया, लेकिन जब मुसलमानों का शासन काल

www.abulhasanalinadwi.org

आया तो मुस्लिम शासकों ने हमको रूमियों के अत्याचार से नजात दिलाई और हमको पूरी स्वतंत्र दी कि हम ईसाई जिस तरह चाहें अपने धर्म पर अमल करें, मुसलमानों के शासन काल में अम्न सुकून नसीब हुवा(संदर्भ तारीख मिस्र बैज़िनतीनी काल में, डा०सबरी अबुल ख़ैर सलीम, पृष्ठ मुद्रण काहिरा, दारेऐन 2001ई०) "तारीखुल उम्मतिल क़िबतिया के लेखक याकूब नख़लः रूफ़ीलः कहते हैं कि हज़रत अम्रबिन आस के ज़माने में क़िबतियों को जो अम्न सुकून और राहत व चैन नसीब हुवा वह उनको किसी और ज़माने में नसीब नहीं हुवा।

आशचर्य की बात है कि नान मुस्लिम लेखक विशेषकर ओरियनटियलिस्ट ने हज़रत मु०स० के जीवन चरित्र के इस पक्ष को बिलकुल उपेक्षित कर दिया, और पूरी जीविनी को छोड़कर अन्तिम काल की कुछ घटनाओं को जो प्रबंधकीय व्यवस्था और समाज सुधार से संबधित थीं उनको हज़रत मु०स० के जीवन चरित्र का मूल भाग बताया और जानबूझ कर यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम (न ऊज़ बिल्लाह) आतंक और ताक़त के प्रयोग के दाई (प्रेरक) थे और इस्लाम आतंक और हिंसा की शिक्षा देता है इस जाहिलाना और अन्याय पूर्वक विचार को जो सलीबी युद्ध के काल में कुछ लेखकों ने जानबूझकर आपनाया और अबतक उसे स्थापित रखा, और इसी दृष्टि कोण से जीवन-चरित्र को प्रस्तुत किया और नबवी काल के युद्धों पर अधिक लिखा जो उत्पीड़ता का काल था, जिस में अत्याचार और हिंसा का धैर्यपूर्वक मुक़बिल किया गया और आप स०अ० के साथ अत्याचार का व्यवहार किया गया जिसका सिलसिला विजय-मक्का तक चलता रहा, इसको इतने विस्तार के साथ नहीं लिखा गया, कुछ किताबों के अतिरिक्त जिन में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के अनुपम आदर्श के कुछ पहलुओं का वर्णन किया गया यूरोप वालों ने अन्तिम काल को आपने रिसर्च का विषय बनाया, और धैर्य, सहनशीलता और अत्याचार को सहन करने वाले काल और मानव संसार पर आप (स०अ०) के महान उपकार और ज़िन्दगी के सारे मैदानों में आप सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम के चिर स्थायी चिन्ह और प्रभाव की उपेक्षा की गई।

ओरियनटियलिस्ट ने आप की रहमतुल लिल-आलमीनी और आपकी सहनशीलता और क्षमा करने की विशेषता जो पूरे जीवन में मौजूद है क्रुरता से बदल दिया है, आज पश्चिमी देशो में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के संबन्ध से जो विचार धारा चल रही है और जिसे प्रचलित किया जा रहा है वह बुरी नियत के ओरियनटियलिस्ट की देन है जो उनके दिलों और दिमागों में ऐसी पक्की हो गयी है कि ज़माने की उन्नतियों और शोधन के क्षेत्र में नए नए अनुसंधान और जानकारियों के बावजूद आज तक परिवर्तित नहीं हो सकी, जबकि बहुत सी

कल्पनाएं जो प्रमाणित थीं और बहुत दिनों तक यूरोप के दिमाग़ पर छाई रहीं, बदल गईं। यूरोप का शिक्षित वर्ग इस बात का कष्ट नहीं करता कि वह साफ़ और खुले ज़ेहन से सीरत नबवी (हज़रत मुहम्मद के जीवन चरित्र) का अध्ययन करे और वास्तविकता का पता लगाए, हालाँकि जो लोग वास्तविकता की दृष्टि से अध्ययन करते हैं वह हज़रत मुहम्मद सल्ललाहु अलैहिवसल्लम की रहमतुल आलमीनी और दया करुणा की विशेषता को स्वीकार करते हैं, बहुत से यथार्थवादी और न्यायप्रिय योरोपियन बुद्धिजीवियों ने इस्लाम का निष्पक्ष अध्ययन किया तो वह इस्लाम की शिक्षा से प्रभावित होकर इस्लाम की क्षत्रछाया में आगये और यह भी स्वीकार किया कि उनकी पूर्व जानकारी अनभिज्ञता पर आधारित थीं।

कुछ दुश्चिन्तक पाश्चात्य इतिहासकार और ओरियनटियलिस्ट ने इसका इज़हार किया कि हज़रत मुहम्मद के जीवन-चरित्र के विषय पर उनके लिखने का उद्देश्य मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम से मुसलमानों के संबध कों समाप्त करना और उनके दिलों से आप की मुहब्बत और गहरा लगाओ, और आप की पवित्रता के प्रभाव को मिटाना है। इन आशंका पूर्ण ओरियनटियलिस्त में सर्वप्रथम निम्नलिखित लोग हैं:

विलयम म्यूर, A.J.Arberry, A.Geom, Goldizher, ज़वैमर (S.M.Zweimer) ग्रोनबाम, हिट्टी (P.H.Hitti) वैनसिंक (A.J.Wensink) लूई मासीनोन (L.Massignon) मार्गो लियूथ (D.S. Margoliouth)

ज़हरीले मटेरियल पर आधारित उन किताबों को मुसलमानों के शासन काल में और मध्य काल में यूरोप के अन्धकार और पिछड़ेपन के युग में यूरोप के ईसाइयों में जो आत्महीनता पाई जाती है और इस्लाम से पैतृक दुशमनी और फिर सलीबी युद्धों के प्रभाव से जनता में लोक प्रियता प्राप्त हूई, इस पक्ष पाती और ईर्ष्यपूर्ण विचार को इतिहास, कहानी नाविल द्वारा फैलाया गया, इसके अनुकूल फिल्में बनाई गईं, इस्लामी जगत के समाजी, राजनैतिक घटनाओं को इस्लाम की शिक्षा और स्वयंम रसूल करीम के व्यकतित्व से जोड़ने की कोशिश की गई और पाठयक्रम में उसे शामिल किया गया।

यूरोप पुनः जाग्रण और मुसलमानों के संप्रक के काल में इसकी आवश्यकता थी कि इसका वैज्ञानिक समीक्षा कियाजाता, मगर साम्राजिक नीति के कारण यह काम न होसका, साम्राजिक काल में मुस्लिम देशों की यूनीवर्सिटियों में वही ज़हरीला लिटिरेचर पाठयक्रम में प्रविष्ट किया गया। और स्वयंम मुस्लिम इतिहास कारों और सीरत के लेखकों ने इन किताबों को अनवेषणात्मक रचना समझ कर विश्वास्नीय योग्य समझा, यद्यपि आवश्यकता थी कि इनका आलोचनात्मक अवलोकन किया जाता, जिसकी वजह से यूरोप के साथ साथ स्वयंम इस्लामी

www.abulhasanalinadwi.org

जगत में सीरत नबवी के संबन्ध से असत्य बातें फैल गयीं और मुस्लिम शिक्षित वर्ग इससे प्रभावित हुवा।

ओरनटियलिस्ट ने यह किताबें एसे युग में लिखीं जबकि पूरी दुनिया पर मुसलमानों को राजनीतिक प्रभत्व प्राप्त था और दूसरी ओर यूरोप जिहालत व पथ भ्रष्टा से निकलने की कोशिश कर रहा था और मुस्लिम विजयतओं का रोब व दबदबा उस पर छाया हुवा था, इसी के साथ साथ यूरोप गृहयुद्धि में ग्रस्त था सौ वर्षीय तीस वर्षीय दस वर्षीय तीन वर्षीय युद्ध यूरोपियन गृह युद्ध के स्पष्ट उदाहरण हैं जिनमें लाखों लोगों का नरसंहार हुवा ओर इन रक्तपाती गृह युद्धों के कारण जनसाधारण में निराशा फैल गई इसी के साथ साथ मुस्लिम विजयताओं की सफलता और इस्लामी सभ्यता और संस्कृति के विकास को देख कर यूरोप आत्महीनता का शिकार हो गया था जिसके फलस्वरूप इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वैष शत्रता उत्पन्न हो गई।

यूरोप ने मुसलमानों के शासन काल व प्रभुत्व काल में आमने सामने युद्ध करने के बजाए छलकपट चतुरता, मिथ्यारोप और फूट का मार्ग अपनाया और मुसलमानों के विरुद्ध चिन्ता जनक, सांस्कृतिक युद्ध छेड़ दिया

यूरोप के वैज्ञानिक जागृति के प्रांरम में इस्लाम के संबन्ध से एक पुस्तकालय अस्तित्व में आया, जिसका अधिकांश भाग रसूलल्लाह सल्लाहु अलैहिवसल्लम के जीवन चरित्र से संबन्धित था, लेकिन यूरोप ने इस्लामी शीर्षक के अन्वेषण और रिसर्च में वास्तविकता और निष्पक्षता का वह सुबूत नहीं दिया जो दूसरे कला व ज्ञान के मैदान में दिखाई पड़ता है बल्कि इस्लाम के संबन्ध में उसी नीति और पद्धिति पर स्थापित रहा जो सलीबी युद्धों के काल में प्रचलित था और सलीबी युग के विचारों और कल्पनाओं को यूरोपियन लेखक जूँ का तूँ लिखते रहे, हालांकि विवेचना और अनुसंधान के नियामानुसार यह होना चाहिये था कि यूरोप दूसरे मैदानों की तरह इस मैदान में भी वास्तविकता और निष्पक्षता का सुबूत देता।

दुनिया में निष्पक्ष और न्याय प्रिय लेखक भी हैं, जिन्होंने प्रचलित पद्धति से हटकर सच्चाई और सत्यता का मार्ग अपनाते हुवे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहिवसललम और इसलाम के विषय में यूरोप में प्रचलित ग़लत और पथ भ्रष्ट विचारों को निराधार ठहराया है, लेकिन इन किताबों का यूरोप में चलन न हो सका, क्योंकि आज भी इस्लाम के संबन्ध से यूरोप वालों के ज़ेहन और दिमाग दूषित हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं कि बहुत से न्याय-प्रिय इतिहासकार आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की श्रेष्ठता और विशेषता और मानवता पर आप सल्लल्लाहु अलैहिवसललम के उपकार को मानते हैं जैसे "लामरटाइन" "डियुरोन्ट"

www.abulhasanalinadwi.org

"टॉम्स कारलायल" "जाकरेसलर" "होबर्ट जार्ज वेल्स" और हेनरी, इन बुद्धि जीवियों ने अपनी किताबों में आप सल्लल्लाहु अलैहिवसललम की मानवता के प्रति प्रेम और स्नेह को स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है।

लेकिन नाकाम सलीबी जंगो के जमाने से इस्लाम से शत्रुता, घृरणा और द्वेष का जो माहौल चला आरहा है उसकी वजह से वही किताबें लोकप्रिय हूई हैं जिन में इस्लाम के प्रति दूषित सामग्री होती है, इन सबका आधार वही प्राचीन विचार है जो योरपी क़ौमों के ज़ेहनों में रच बस गया है, और यूरोप के पाठ्क्रम में वही किताबें प्रवेश की गई हैं जो इस्लाम के विरुद्ध और वास्तविकता से हटकर बातों पर आधारित हैं जिसकी वजह से बचपन ही से ज़ेहनों में इस्लाम नबी और करीम सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की ग़लत तसवीर बनती है

मुस्लिम लेखकों और विचारकों को चाहिये तो यह था कि वह यूरोप की इस ज्ञानात्मक व वैचारिक आक्रमण का मुक़ाबला करते, लेकिन अफ़सोस कि वह अपनी संपूर्ण क्षमता यूरोप के सैनिक आक्रमण के बचाव में व्यस्त होने की वजह से इस ज्ञानात्मक आक्रमण पर ध्यान न दे सके हालांकि यूरोप इस्लाम जगत पर अपने साम्राज्यी आक्रमण से पहले ही इस मूक गंभीर वैज्ञानिक युद्ध को प्रारंभ कर चुका था

इसमें कोई सन्देह नहीं कि मुसलमानों ने सीरते नबवी (हज़रत मुहम्मद के जीवन चरित्र) पर एक बहुमूल्य भणडार तैय्यार किया और नबी सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम का जीवन चरित्र का विषय मुस्लिम लेखकों का रोचक और प्रिय विषय रहा है, इसी रसूल प्रेम और हज़रत मुहम्मद स०अ० से भावनात्मक विमुधता परिणाम स्वरूप उनके क़लम से ऐसी अद्भुत और बहुमूल्य किताबें वजूद में आईं जिन से अहले ईमान के दिल रसूल प्रेम की रौशनी से प्रकाशमान होते हैं, और उनके दिलों में रसूल की महब्बत की वजह से सब कुछ क़ुरबान कर देने की भावना पैदा होती है लेकिन मुस्लिम लेखकों की किताबें मुसलमानों ही की ज़बानों में हैं और निश्चित ही इन किताबों ने रसूल प्रेम और रसूल सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम से प्रेम और उनके अनुसरण की भावना को खूब विकसित किया, इसी प्रकार नअ़तिया क़साएद (नबी की सेवा में प्रशंसात्मक कविताओं) ने भी मुसलमानों में अक़ीदत के जज़बात को और जिला बख़्शी अर्थात क्रान्ति प्रदान की, लेकिन ग़ैर मुस्लिमों के नज़रये को इन किताबों द्वारा नहीं बदला जा सकता बल्कि उनके विचारों को उनकी ज़बानों में) सीरत पर लिट्रेचर पेश करके बदला जा सकता है।

इस्लाम और हज़रत मुहम्मद स० के जीवन चरित्र को ज्ञानात्मक व वैचारिक शैली में प्रस्तुत करना समय का महत्व पूर्ण कर्तव्य और मुसलमानों की सर्वप्रथम

www.abulhasanalinadwi.org

ज़िम्मेदारी है जो किसी तरह भी दअ़वती कर्तव्य से कम दर्जे की नही, बल्कि दोनों समान दर्जे की हैं, समय की मांग है कि इस्लामी जीवन व्यवस्था की महत्वता और उपयोगता, मानवता के उपकारी सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की प्रकाशमय और वास्तविक जीवन को ग़ैर मुस्लिमों के सामने वैज्ञानिक एवं सामायिक शैली में प्रस्तुत किया जाए, अतः इस्लामी संस्थाओं की सर्व प्रथम ज़िम्मेदारी है कि इस्लामिक और (हज़रत मुहम्मद स० के जीवन चरित्र) के विषय पर ज्ञानात्मक शैली में ऐसी किताबें लिखें जिन में रसूल सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम से संबन्धित आपत्तियों का संतोष जनक जवाब हो, इसी के साथ हालात और पाठकों की रूचि और मिज़ाज, स्वभाव का विशेष ध्यान रखा गया हो, इसलिये कि इस प्रकार के शक-सन्देह न केवल ग़ैर मुस्लिमों के ज़ेहन में पाये जाते है बल्कि पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त मुस्लिम वर्ग के ज़ेहनों में भी ग़ैर मुस्लिमों पथभ्रष्टक और असत्य नज़रये के कारण नित नये सन्देहों ने जगह बना ली हज़रत मुहम्मद स० के जीवन चरित्र पर जो किताबे लिखी गईं उनमें ग़जवात (नबवीकाल के युद्ध) को बहुत हाई लाइट किया गया, जिसका संबन्ध मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के पवित्र जीवन के उस काल से है जिस में अत्याचार अपनी चरम सीमा को पहुँच गया था और हर ओर से मुसलमानों पर आक्रमण था, ऐसी दशा में मुसलमान अपनी प्रतिरक्षा पर मजबूर थे, पवित्र कुरआन खुद उसकी ओर संकेत दे रहा हैः- अनुवादः अनुमति दी गई उन लोगों को जिन के विरुद्ध युद्ध किया जा रहा है, क्योंकि उन पर जुल्म किया गया- और निश्चय ही अल्लाह उनकी सहायता की पूरी सामर्थ्य रखता है। (सूरः अलहज :39)

हालांकि कुछ समय पहले हुदैबियह संधि को स्वीकार करना पड़ा, जिस के विषय में अधिकतर सहाबा को आपत्ति थी और वह समझते थे कि वह दुश्मन से मुक़ाबला कर सकते हैं, इसका उन्होंने इज़हार भी किया कि हम को यह अपमान क्यों बरदाश्त करना पड़ रहा है, अधिकांश की राय इसके विरुद्ध थी, मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम पर दअ़वती और समझौते की भावना ग़ालिब थीं, इसलिये आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने इस सुलह को स्वीकार कर लिया और दो सहाबी जो काफ़िरों के कब्ज़े में थे, उस वक़्त फ़रयाद लेकर आये तो आपने उनकों वापस जाने पर मजबूर किया, इतिहासकारों का ख्याल है कि इस सुलह (संधि) से जो फ़ाइदा हुवा वह जंगों से नहीं हुवा, और इस सुलह (संधि) के परिणाम स्वरूप फ़तह मकका का घटना घटी।

मकका की फ़तह विजय की घटना स्वंय करूणा दया की एक खुली हुई दलील है, सीरते नबवी का अध्ययन करने वाले जानते है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम किस अन्दाज़ से मकका में दाखिल हुवे, जहाँ उनके बड़ी संख्या में

www.abulhasanalinadwi.org

दुशमन मौजूद थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने सब को क्षमा कर दिया और एक सहाबी के मुँह से स्वाभाविक तौर पर जो वाक्य निकला कि आज बदले का दिन है आपने उसे बदलवा कर एलान फ़रमाया कि आज रहम (करूरणा) का दिन है और उनके हाथ से फन्डा ले लिया। इस ज़माने में बहुत ज़ोर शोर से प्रोपैगन्डा किया जा रहा है और मीडिया के समस्त साधन और स्रोत प्रयोग किये जा रहे हैं, यहाँ तक कि क़ुरआन करीम को हिन्सा की किताब और अल्लाह तआला को जंग के खुदा के नाम से नामित किया जा रहा है इसलिये ज़रूरतू इस बात की है पूर्ण सीरत को पेश किया जाये और उसका दुनिया की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया जाये, ताकि ग़ैर मुस्लिमों और यूरोप से प्रभावित मुस्लिम बुद्धिजीवियों को पूरी सीरत से जानकारी प्राप्त हो, और वह पहलू जो पवित्र जीविनी का मुख्य पहलू था, सबके सामने आये। सीरत पर विभिन्न दृष्टि कोणों से किताबें लिखी गईं किसी में आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम को एक नायक के रूप में पेश किया गया, किसी में एक शिक्षक और दीक्षक के रूप में प्रस्तुत किया गया किसी में अरबों का नजात दिलाने वाले की हैसियत से पेश किया गया, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिवल्लम की वास्तविक विशेषता यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम नैतिकता और मानवता के शिक्षक और रहमतुल लिल आलमीन हैं, और इसी को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने अपनी पैग़म्बरी का उद्देश्य बताया है।

बुज़ुर्ग भाई हज़रत मौलाना सय्यद मु०राबे हसनी नदवी नाज़िम नदवतुल उलमा लखनऊ ने अपनी इस सीरत की किताब में आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की व्यापक चित्र पेश करने की कोशि
ाश की है, इस किताब से यह अनुमान होगा कि कितनी ग़लत तसवीर पेश की जाती रही है और यूरोप के लेखकों ने कितना मिथ्यारोप से काम लिया है मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी ने दीर्घ काल तक सीरत के पठन-पाठन का कार्य किया, अरब का इतिहास और भूगोल उनका विशेष विषय रहा, अरबी साहित्य, इतिहास और भूगोल पर उनकी महत्व पूर्ण पुस्तकें हैं जिनको शिक्षित क्षेत्रों में लोकप्रियता प्राप्त हूई यह विषय लगभग बावन वर्ष से अधिक उनके अध्ययन और पाठ में रहा है

सीरत पर लिखने के लिये अरबों के स्वभाव, जातीय विशेषताओं और माहौल की गहरी जानकारी आवश्यक है, यह केवल इतिहास का विषय नहीं है बल्कि इसके लिये उस माहौल से भली भांति जानकारी अनिवार्य है जिस माहौल में उस पवित्र व्यक्तित्व का पालन पोषण हुवा दाई और मदऊ हज़रत मुहम्मद

www.abulhasanalinadwi.org

स० और अरबों दोनों से भली भांति परिचित, हो लेखक को यह सारी विशेषताएं प्राप्त हैं

इस किताब की यह भी विशषता है कि किताब की भाषा सुगम और सुबोध है, शोधात्मक और ज्ञानात्मक होने के बावजूद किताब सरल भाषा और सरल शैली में है- इस में विरोध और मतभेद रखने वालों के ज़ेहन को सामने रखा गया है और तर्क वितर्क के बजाये वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक शैली अपनाई गई है, यह किताब सीरत के पुस्तकालय में एक इज़ाफ़ा (वृद्धि) है आवश्यकता है कि यह किताब उन भाषाओं में अनुवादित की जाये जो ग़ैर मुस्लिम प्रयोग करते है इससे उम्मीद है जो ग़लत विचार ज़ेहनों में हैं वह दूर होंगे अल्लाह तआला लेखक मोदय को अतिउत्तम बदला प्रदान करे कि उन्होंने इस काम के लिये सीरते-नबवी के संग्रह का गहरा अध्ययन किया और उसका उचित निचोड़ इस किताब में) प्रसतुत कर दिया।

मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
नदवतुल उलमा-लखनऊ
22 अकटूबर 2008

www.abulhasanalinadwi.org

भूमिका

यह लम्बी चौड़ी दुनिया जो आसमान से ज़मीन तक फैली हुई है और उसकी असीमित विशालता में वास्तविक ज़ात इन सबको बनाने और उनमें जानदार व बेजान हर चीज़ को पैदा करने वाली एक मात्र ज़ात अल्लाह तआला की है, जिसने यह सब ज़मीन व आसमान बनाए और उसमें भांति भांति की सृष्टि रची, और उस सृष्टि में इन्सानों को विशेष प्रमुखताएं प्रदान कीं, जिनमें खास तौर पर इल्म से फ़ाएदा उठाने की विशेष क्षमता प्रदान की और इस क्षमता के साथ इस ज़मीन पर उसको आबाद करते हुए उसको ज़िम्मेदारियां प्रदान कीं और उन ज़िम्मेदारियों को पूरा करने की चेतावनी दी और उसके लिए दुनिया में रह कर ज़िन्दगी गुज़ारने के संबंध से जो ज़रूरत सामने आ सकती है उनको प्राप्त करने के लिए उनके सब आवश्यक साधन और कारक भी उपलब्ध कर दिए।

उपरोक्त विशेष्ताओं के संबन्ध से इन्सान को यह देखना और समझना है कि इस ज़मीन पर उसकी ज़िम्मेदारियां क्या हैं और उनके सिलसिले में उसके ख़ालिक़ (सृष्टा) व मालिक का हुक्म क्या है? अतः उसको बताने और ध्यान दिलाने के लिए जब जब और जैसे जैसे ज़रूरत होती रही, सब का पैदा करने वाला और मालिक अल्लाह तआला इन्हीं इन्सानों में से प्रमुख विशेषताओं के किसी व्यक्ति को नबी नियुक्त करता रहा और उसके द्वारा इन्सानों को उनके ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) व मालिक होने के तअल्लुक़ से पैग़ामे हिदायत पहुंचाता रहा ताकि उसके ज़रिये इन्सान अपनी ज़िन्दगी संवारे और इस ज़मीन पर अपनी ज़िम्मेदारी पूरा करने का कर्तव्य पालन करे, यह नबी व रसूल अपनी क़ौम पर नज़र रखता और यह देखता कि वह लोग ग़लत काम तो नहीं करने लगे हैं और भोग विलास में पड़ कर अपने मालिक के एहसान को भूल तो नहीं गए, अतएव यह नबी बराबर आते रहे और अपनी क़ौमों को ग़लत बातों से बचने और अपने रब के हुक्मों ही पर चलने की दावत देते रहे और इस बात से डराते रहे

www.abulhasanalinadwi.org

कि सबके ख़ालिक़ व मालिक के जो आदेश हैं उन पर अमल न करने पर वह तुम से नाराज़ होगा और गुनाहों पर सज़ा देगा।

ग़रज़ अंबिया अपनी अपनी क़ौम को ग़लत बातों से मना करते और अपने ख़ालिक़ (सृष्टा) व मालिक के अज्ञापालन की ओर ध्यान दिलाते और अच्छे बुरे का फ़र्क़ बताते थे और कहते कि तुम्हारे ख़ालिक़ और रब (पालनहार) ने जब सब नेमतें दीं तो वह कैसे यह बात पसन्द करेगा कि उसके एहसानात इन्सान नज़र अन्दाज़ (उपेक्षा) करे और उसके मालिक व ख़ालिक़ होने का जो हक़ उस पर लागू होता है उसको न समझे और सबसे बड़ा जुर्म यह करे कि केवल अपनी ख्याली राय (काल्पनिक मत) पर मख़लूक़ात या जमादात (सृष्टि अथवा जड़ पदार्थ) में से किसी दूसरे को अपना रब (पालनहार) और खुदा बना बैठे, यह तो इतना बड़ा जुर्म है कि उस पर तो इन्सान को फ़ौरन सज़ा दे सकता था और ज़िन्दगी के सब सामान और नेमतों से उसको वंचित कर सकता था, लेकिन यह रहीम व करीम (कृपालू व दानशील) है, पहले नबी भेजकर ध्यान दिलाता और बुरे परिणाम से डराता और एक समय तक छूट देता है, उसके पश्चात भी नबी की बात न मानी जाए और अपने को सुधारा न जाए तो फिर सज़ा देता है, इस प्रकार विभिन्न ज़मानों और विभिन्न क़ौमों में इसी काम के लिये असंख्य नबी अपने ज़मानों (कालों) में आए और उनमें से हर एक ने लम्बी लम्बी मुद्दत (दीर्घ काल) तक समझाने और बताने का काम अन्जाम दिया।

अल्लाह तआला ने इसका ज़िक्र अपने कलाम में इस तरह किया है :-

"सारे मनुष्य एक ही तरीक़-ए-कार पर थे (जब वह हक़ बात से हटने लगे) तो अल्लाह ने नबियों को भेजा जो शुभ सूचना देने वाले और डराने वाले थे, और उनके साथ हक़ पर आधारित किताब उतारी, ताकि लोगों में उन बातों का जिनमें वे विभेद कर रहे हैं, फ़ैसला कर दे। इसमें विभेद तो बस उन्हीं लोगों ने किया जिन्हें वह मिली थी, परस्पर ज़्यादती करने के लिए इसके पश्चात किया, जबकि खुली निशानियां उनके पास आ चुकी थीं। अतः ईमान वालों को अल्लाह ने अपनी अनुज्ञा से उस सत्य के विषय में मार्गदर्शन किया जिसमें उन्होंने विभेद किया था। अल्लाह जिसे चाहता है सीधे मार्ग पर चलाता है।" (सूरः बक़रा २१३)

अल्लाह तआला पिछली उम्मतों में जब जब गुमराहियां (पथ भ्रष्टता) बहुत बढ़ जातीं तो उनकी हिदायत (पथ प्रदर्शन) के लिए नबी नियुक्त करता जो "वही इलाही" के अन्तर्गत उसमें हिदायत का काम करता, नबी मुक़र्रर करने में ऐसे व्यक्ति का इन्तिख़ाब (निर्वाचन) करता जो अपनी इन्सानी सलाहियतों और विशेषताओं के लिहाज़ से भी दूसरे लोगों से भी बहुत बेहतर और परिपूर्ण होता, अतः इन विशेषताओं के साथ आवश्यकतानुसार विभिन्न कालों में नबी नियुक्त किए जाते रहे, आख़िरी ज़माने के लिए जो छटी सदी ईसवी से शुरू हुआ,

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह तआला की तरफ़ से क़बीले क़ुरैश से जो अल्लाह तआला के सर्व श्रेष्ठ नबी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनके उत्तम बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल (वंश) में प्रमुख विशेषताओं का क़बीला था, मगर अपने रब की इताअत व इबादत छोड़ कर अपनी इच्छा व पसन्द के लिहाज़ से तरह तरह की नाफ़रमानी (अवज्ञा) में ग्रस्त हो गया था, इसी के एक नेक सीरत और अच्छे आचरण वाले व्यक्ति हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आख़िरी नबी मुक़र्रर किया गया और उनकी ज़िम्मेदारी के काम में अक़ीद-ए-तौहीद (एकेश्वरवाद विश्वास) की शुद्धि और अपने एक पालनहार की इबादत और उसके आदेशों पर चलने के साथ उसके दिए हुए इल्म से सही फ़ायदा उठाने और सामाजिक व्यवस्था को इन्सानी और शरीफ़ाना व्यवस्था बनाने की ज़िम्मेदारी रखी गई और "वही" (ईश्वरवाणी) द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहनुमाई की जाती रही, और आपको चरित्र व आचरण और नैतिकता व ऊँची विशेषताओं के लिहाज़ से उच्च विशेषता वाले इन्सानों का आदर्श बना दिया गया, और इस तरह आप में इन्सानी ज़िन्दगी के समस्त प्रमुख और लाभदायक पहलू एकत्र हो गए और आप इन्सानी ज़िन्दगी की उच्चतर विशेषताओं में तमाम इन्सानों के लिए ऐसा नमूना व आदर्श बन गए कि समस्त इन्सानों को ज़िन्दगी के जिस भाग में उच्चतम् आदर्श जानने की आवश्यकता हो तो वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन में उस आदर्श को देख सके और अपना सके और आदर्श का इन्सान मालूम करना हो तो उसके लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन से यह इच्छित आदर्श प्राप्त कर सकें और इसका आदेश भी पूर्ण रूप से अल्लाह तआला की पवित्र किताब क़ुरआन मजीद में दिया गया है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया : निःसन्देह तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में उत्तम नमूना है, हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह तआला की और क़्यामत के दिन की उम्मीद रखता है और बहुत ज़्यादा अल्लाह तआला की याद करता है। (सूरः अहज़ाब-२१)

इस प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तमाम इन्सानों के लिए एक पूर्ण आदर्श की हैसियत हासिल हो गई और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़ौल व अमल (कथनी व करनी) और अल्लाह तआला की ओर से प्रदान की हुई शिक्षा व आदेश क़यामत तक आने वाले इन्सानों को दुरूस्त (उचित) और खुदा की बन्दगी के तौर तरीक़ इख़्तियार करने के लिए रहबर और रहनुमा बन गए और "वही" (ईश्वरवाणी) द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हर क़ौल व अमल अल्लाह तआला की ओर से ताईद शुदह (अनुमोदित) हो गया इसी के लिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में फ़रमाया : जो व्यक्ति

www.abulhasanalinadwi.org

रसूल का आज्ञापालन करेगा तो निःसन्देह उसने अल्लाह का आज्ञापालन किया। (सूरः निसा-80)

और फ़रमाया :-

और न वह अपने मन की इच्छा से मुंह से बात निकालते हैं, यह (कुरआन) तो हुक्मे खुदा है जो उनकी तरफ़ भेजा जाता है। (सूरः नज्म-३,४)

इस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन व कार्य का आज्ञापालन क़यामत तक दाइमी (स्थायी) हो गया जिससे हर समझदार व्यक्ति के लिए लाभ उठाना आवश्यक हो गया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले की क़ौमों में और ज़मानों में आवश्यकतानुसार बराबर अंबिया अलैहिस्सलाम अपने अपने अहद (काल) के ख़राब हालात के सुधार के लिए और उसी ज़माने के मुताबिक़ हिदायत के लिए पैग़ाम ले कर आते रहे, उन सबके अख़ीर (अंतिम) में आप सलल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खातमुन्नबीयीन (आखिरी नबी) के रूप में भेजे गए, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो आदेश व शिक्षा संसार के स्वामी की ओर से दी गई थी वह केवल स्थानी लोगों या किसी विशेष वर्ग के लिए नहीं दी गई बल्कि वह समस्त इन्सानों और आइन्दा आने वाले ज़मानों के लिहाज़ से सही अक़ाएद व इबादात की तलक़ीन (उपदेश) के लिए दी गईं, अतः फ़रमाया गया :

"और (ऐ मुहम्मद) हमने तुमको तमाम लोगों के लिए खुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते"। (सूरः सबा-28)

अतः आप स०अ० ने दुनिया के तमाम इन्सानों को संबोधित किया, फिर आप स०अ० के हुक्म से इल्म और पढ़ाने का दौर (युग) शुरू हुआ, उसके लिए तहरीर (लिखावट) और इल्म की हिफ़ाज़त का जो प्रबंध उसके ज़रिये आप स०अ० की सब बातें लिखित रूप में ले आई गईं, जो फ़ौरी तौर पर (तत्कालीन) आप स०अ० के सहाबा किराम के सीनों में सुरक्षित हो गई थीं, फिर जल्द ही लिखित रूप में ले आई गईं, उनमें आप स०अ० के सब अक़वाल व अहवाल कथन व आदेश और आप स०अ० के पवित्र जीवन चरित्र के तमाम हालात भी लिखित रूप में आ गए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस दुनिया में चांद की तारीख़ के लिहाज़ से 63 साल रहे, आप स०अ० के इस 63 वर्षी जीवन काल के तीन दौर हुए, पहला दौर पैदाइश से लेकर चालीस साल की उम्र तक, दूसरा दौर 41 से 53 साल की उम्र तक और तीसरा दौर 54 से 63 साल की उम्र तक, पहला दौर आपको नबूवत की ज़िम्मेदारी मिलने से पहले का हुआ, जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने खानदान में साफ़ सुथरे आचरण व व्यवहार

www.abulhasanalinadwi.org

और उच्च नैतिक आचरण की बिना पर आप स०अ० अपने क़बीले व खानदान में बहुत प्रिय और मान्य रहे, उसी दौर में आप स०अ० 25 साल की उम्र को पहुंचने पर वैवाहिक जीवन से संबंधित हुए और उस वक़्त से आप घरेलू ज़िन्दगी की ज़िम्मेदारियां अन्जाम देने लगे, आप स०अ० को बहुत अच्छी जीवन साथी मिली थीं, जिनकी तबीअ़त व मिज़ाज आप की तबीअ़त व मिज़ाज से मिल गया था, चुनांचे उनके साथ आप स०अ० की ज़िन्दगी बड़ी लगाव और संबंध की रही और उसने औलादें हुई और उनकी अच्छी तरबियत (पालन पोषण) भी हुई।

चालीस साल की उम्र होने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास अल्लाह तआला की तरफ़ से पहला पैग़ाम आया और फिर समय समय पर बराबर आता रहा और आप स०अ० को इन्सानों की हिदायत के लिए ज़रूरी बात कहने और करने की आसमानी "वही" के ज़रिये बताई जाती रही और उसके ज़रिये आप स०अ० पर क़ौम को समझाने और सच्ची बात एख़्तियार करने की तलक़ीन (उपदेश) करने की ज़िम्मेदारी डाली जाती रही, यह 53 साल की उम्र पहुंचने तक आप स०अ० की पाक ज़िन्दगी का दूसरा दौर था, उसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी क़ौम को अल्लाह तआला की नाफ़रमानियों और गुनाहों और ज़ुल्म व ज़्यादती छोड़ने की नसीहत करने का काम सुपुर्द हुआ, जिसको आप अन्जाम देते रहे, इस काम के शुरू करने पर क़ौम नाराज़ होने लगी कि हम जो कुछ अपने बाप दादा को करते देखते रहे हम उसको नहीं छोड़ेंगे और इसी पर क़ौम के अधिकतर लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुख़ालिफ़त (विरोध) करने लगे यहां तक कि आप स०अ० को इस काम से रोकने के लिए आपको और आपके मानने वालों को तरह तरह की तकलीफ़ें देने लगे, मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म सब्र करने का था, कि तकलीफ़ें बर्दाश्त करो और दअ़वत व इस्लाह (सुधार) के लिए कहते रहो, चुनांचे आप स०अ० सब बर्दाश्त (सहन) करते रहे यहां तक कि आप स०अ० को जान से मार देने का ग़ौर होने लगा, मगर फिर भी आप सब्र और सहन के साथ काम करते रहे, जब हालात ऐसे हो गए कि काम करना नामुम्किन हो गया और आप को जान से मार देने की साज़िश (षड़यन्त्र) तय्यार हो गई और दूसरी तरफ़ मदीना मुनव्वरा के बाज़ क़बाएल की तरफ़ से आप की मदद व सहायता का वादा भी हो गया कि आप वहां मुनतक़िल (स्थानांतरित) हो जाएं और वहां काम करें तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का शहर छोड़ कर मदीना आ गए जहां के अहम लोगों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातें मक्का आकर सुनीं और मान ली थीं और मदद का वादा किया था, और अपने यहां आ जाने की पेश कश की थी, मदीना वालों ने फिर इस पेशकश (आफ़र) को पूरी तरह निबाहा और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मदीने में अपने

www.abulhasanalinadwi.org

शहर के सरदार की हैसियत से ठहराया, यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन का तीसरा दौर था।

अतः अधिकांश मदीने वाले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा मान कर खुदा और उसके रसूल के हुक्मों के ताबेदार हो गए थे, इस लिए वह मुसलमान जो मक्के के १३ वर्ष काल में थोड़ी संख्या में थे और बिखरे हुए थे और अपने वतनी काफ़िरों का जुल्म झेल रहे थे, यहां मदीने में आकर मुसलमानों के साथ मिलकर एक प्रकार सुरक्षित हो गए और दोनों जगहों के मुसलमानों ने मिल कर पूर्ण रूप से एक क़ौम की हैसियत एख़्तियार कर ली और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नेतृत्व में उनका नियमानुसार दीनी व समाजी व्यवस्था स्थापित हो गई जिसके आदेश अल्लाह तआला की ओर से "वही" द्वारा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आते थे और आप स०अ० उन आदेश के अनुसार स्वयं भी अमल करते थे और अपने असहाब अहले मदीना को भी अमल कराते थे, यह अहले मदीना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के और मक्का के मुसलमानों के आने से पहले मक्का के क़बीले से अलग क़बीले के लोग थे और उनके बीच कशमकश (असमंजस) भी थी, लेकिन इस्लाम क़ुबूल करने के बाद मक्का और मदीना के मुसलमान आपस में भाई भाई की तरह एक क़ौम बन गए, मक्का के मुसलमान मुहाजिर कहलाए और मदीना के मुसलमान अन्सार, मदीना के मुसलमानों ने मक्का से आने वाले अपने भाइयों की पूरी मदद की और हर चीज़ में उनको शरीक किया, इन दोनों के अलावा एक तीसरी क़िस्म यहूदी क़बाएल की भी थी जो मदीने में आबाद थे, लेकिन वह मुसलमानों से अलग रहे, अलबत्ता हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे शान्ति पूर्वक साथ रहने का समझौता कर लिया।

मदीने की बड़ी आबादी के मुसलमान हो जाने की वजह से वहां नियम पूर्वक इस्लामी समाज स्थापित हो गया, जिसमें ईमानी एकाई के प्रभाव से मौलिक बासी और मक्का से आए हुए मुहाजिर मुसलमान सब एक वहदत (एकाई) बन गए, इससे हुज़ूर स०अ० की संरक्षता में इस्लामी मूल्यवाहक समाज बन गया, उसका हर अमल अपने नबी के आदेशानुसार होता था और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी पूरी तरबियत (प्रशिक्षण) करते थे और वह पूरी ताबेदारी के साथ आप स०अ० की तरबियत के अनुसार अपनी ज़िन्दगी को उच्च आचरण के अनुसार ढालते थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर चलते थे, उधर दूसरी ओर मक्के के मुशरिकों ने जब यह देखा कि उनके क़बीले के मुसलमान उनके कब्ज़े से निकल गए और वह मदीना पहुंच कर मदीने के मुसलमानों से मिल कर एक बड़ी ताक़त बन गए और अब उन पर रोक लगाना उनके एख़्तियार में नहीं रहा तो वह पूर्ण रूप से फ़ौजी ताक़त द्वारा मुसलमानों

www.abulhasanalinadwi.org

को कुचलने की तदबीरें (उपाय) करने लगे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस ख़तरे को महसूस करके अपने असहाब को भी तैयार रहने का हुक्म दिया और मालूम करते रहे कि मक्के वाले क्या साज़िश (षड़यन्त्र) कर रहे हैं, ताकि उन्हें रोका जा सके।

इस तरह मदीने के इन दस सालों में मुसलमानों को कई क़िस्म की ज़िम्मेदारियों और आज़माइशों का सामना करना पड़ने लगा, एक तो पैग़ामे इलाही को दूसरों तक पहुंचाना जो कि इस्लाम का वास्तविक मिशन था और उसको नसीहत और इन्सानी हमदर्दी की भावना से अन्जाम देना था, केवल स्थानीय ही नहीं, बल्कि दूसरे शहरों और क़बीलों के लोगों को भी अपनी ज़िन्दगियों को अपने पालनहार के आदेशों के अनुसार संवारने का उपदेश करना था, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूरी दुनिया के लिए नबी बना कर भेजे गए थे, दूसरे मदीने के अपने असहाब की दीनी व इल्मी और अख़लाक़ी तरबियत करना ताकि गुणों व आचरण के लिहाज़ से उत्तम से उत्तम विशेषताओं का समाज वजूद (अस्तित्व) में आए, क्योंकि इस्लाम इसी बात का पूरा उपदेश करता है कि इन्सान केवल अपनी इच्छाओं पर अमल करने वाला इन्सान न हो, बल्कि अपने रब की नेमतों का शुक्रगुज़ार और सदाचारी व सुचरित्र इन्सान बने, तीसरे मदीने के अपने साथियों व मित्रों की जमाअत की सामाजिक व्यवस्था स्थापित करना ताकि सामाजिक जीवन अनुशासन और पारस्परिक सहानुभूति के साथ हो और दुशमनों के ख़तरात के मुक़ाबले के लिए जो आवश्यक सुरक्षा उपाय हों उनका प्रबंध किया जा सके, अतः इसी व्यवस्था और उत्तम उपाय के आधार पर मक्का वालों के कई फ़ौजी आक्रमणों का मुक़ाबला किया और दुशमन को उसकी साजिश (षड़यन्त्र) में नाकाम बना दिया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने इस पूरे काम में रहनुमाई के लिए अल्लाह तआला ने कलामे मुक़द्दस पर आधारित किताब कुरआन मजीद प्रदान किया, आप स०अ० उस से रोशनी प्राप्त करते थे और उसके साथ साथ "वही" द्वारा जो हुक्मे इलाही आता था उस पर अमल करते और कराते थे, इन तमाम मामलात में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा केवल आदेश देना नहीं था, बल्कि अपने असहाब के साथ क्रियात्मक शिरकत और मुहब्बत व अख़लाक़ के साथ बात करने का था, उन्हें भलाई की फ़िक्र करने और भलाई को फ़ैलाने के लिए अपनी निजी ज़िन्दगी से नमूना पेश करते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के असहाब पर इसका अच्छा असर पड़ता था कि वह दिल व जान से आप स०अ० की ताबेदारी करते और आप स०अ० के इशारों पर चलते फिर आप स०अ० की सब बातों को अपनी स्मरण शक्ति द्वारा सुरक्षित कर लेते थे, फिर इस सबको अपने बाद में आने वालों तक पहुचाया, इस तरह हुज़ूर

www.abulhasanalinadwi.org

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पूरी ज़िन्दगी अपने विभिन्न पहलुओं के साथ आने वाली नस्लों के लिए महफ़ूज़ (सुरक्षित) भी हो गई, और अल्लाह तआला की दी हुई किताब कुरआन मजीद जो बुनियादी रहनुमाई के लिए पहले से हासिल हो गई थी, लिखित रूप में किताबों में आ जाने पर आने वाले ज़मानों के लोगों के लिए प्राप्त करना आसान हो गया, इस तरह अल्लाह तआला के उस हुक्म के अनुसार जो उसके कलामे इलाही में आया है :-

"कि तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में अच्छा नमूना है, यह हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह से फ़ज़्लो करम की उम्मीद क़ायम (स्थापित) करे और आख़िरत और हिसाब के दिन का ख़्याल करे और अल्लाह को खुब याद करे"। (सूरः अहज़ाब-21)

क़यामत तक तमाम अहले ईमान के लिए दस्तूरे हयात (जीवन पद्धति) बन गई, जिको जानने और उसके अनुसार अमल करने की ज़िम्मेदारी उन सब इन्सानों के लिए ज़रूरी हो गई जो खुदा को मानते हों और मरने के बाद की ज़िन्दगी में नजात (मोक्ष) चाहते हों और अपने खुदा की याद अपनी ज़िन्दगी में बसाना चाहते हों।

इसी लिए मुसलमान अहले इल्म हज़रात ने हुजूर स०अ० के अक़वाल (कथन) और आपकी सीरत (जीवन चरित्र) की जो तफ़सील से क़लम बन्द हो गए थे, ज़्यादा से ज़्यादा प्रचार करने की कोशिश की ताकि क़यामत तक आने वाले फ़ाइदा उठा सकें।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व हालात जिनसे उम्मते मुस्लिमा को क़यामत तक लाभान्वित होना है दो पहलुओं पर आधिारित हैं, एक आप स०अ० की शिक्षा व आदेश जो आप स०अ० ने अपने सहाबा को विभिन्न अवसरों पर दीं, उसको हदीसे नबवी कहते हैं, दूसरे वह हालात जो खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अमल में लाए उनको सीरते नबवी कहते हैं, इन दोनों पहलुओं की बातों को हुजूर स०अ० के सहाबा ने अपने बाद की नस्ल के अहले ईमान को पहुंचाया, उन्होंने उनको अपने बाद के लोगों को पहुंचाया और किताबों में सब क़लमबन्द कर लिया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उन हालात में जो आप स०अ० की सीरत में मिलते हैं उनमें ऐसे हालात भी पेश आए जिनमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने दुशमनों से मुक़ाबला करना पड़ा, जिनको तादाद (संख्या) ताक़त और पोज़ीशन में मुसलमानों पर उच्चता हासिल थी और वह अपने साधनों को इस छोटे से समूह को ख़त्म करने के लिए इस्तेमाल करने में हमेशा आगे आगे रहे, इस तरह जंग के बादल मुसलमानों के सर पर हमेशा मन्डलाते रहे, अपने बचाव में मुसलमानों को तलवारों और दूसरे हथियारों को जो मुशकिलों से मिल पाए इस्तेमाल करना पड़ा, आप सल्लल्लाहु

www.abulhasanalinadwi.org

अलैहि वसल्लम के उन सशस्त्र मुक़ाबलों को जो अपने डिफेन्स में थे, बाद में उन इतिहासकारों ने जो इस्लाम को क़ुबूल करने के लिए राज़ी न हो सके, बल्कि उसके विरोध का तरीक़ा एख़्तियार किया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ज़ुल्म और जंग पसन्दी का इल्ज़ाम दिया, हालांकि आप स०अ० की कोई जंग ऐसी नहीं हुई जो आप स०अ० ने दुशमन की कार्यवाई का खतरा महसूस किए बग़ैर केवल मुल्कगीरी के लिए एख़्तियार की हो, जब भी आप स०अ० ने जंग की, किसी जंग के ख़तरे को रोकने के लिए की और जंग के बाद क़ैदियों और दुशमनों के साथ जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एख़्तियार में आए आप स०अ० ने मआफ़ी और रहम (दया) का बर्ताव किया।

सत्य की सुरक्षा में जो मेहनत व कोशिश हो और इस सिलसिले में अपनी जानों को ख़तरे में डाला जाए उसको "जिहाद" क़रार दिया गया, जिहाद का अर्थ वास्तव में जद्दु जुहद (प्रयास) करने के हैं, इस तरह सत्य की हिमायत और सत्य को लागू करने के लिए और नैतिक उच्चता के लिए प्रयत्नों का विरोध करने वालों से मुसलमानों को जो मुक़ाबला करना पड़ा उसके लिए भी जिहाद का शब्द प्रयोग किया गया, परन्तु इसके माना (अर्थ) यह रखे गए कि यह जद्दु जुहुद (प्रयास) सच्चाई और परवरदिगार की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए हो, अपने व्यक्तिगत लाभ और स्वार्थ के लिए न हो और इस राह में जो परिश्रम और कुरबानी हो उसको बर्दाश्त किया जाए, चाहे शान्ति की हालत में हो चाहे जंग की हालत में हो, लेकिन इस्लाम के विरोधी लोगों ने जिहाद के माना (अर्थ) मुल्कगीरी और दुनिया तलबी के लिए ताक़त के इस्तमोल करने को क़रार दे दिया जो बिल्कुल ग़लत है, मुसलमानों के विरोधियों ने इसी संदर्भ से इस्लाम के विरूद्ध अपनी किताबों में बहुत सख़्त आलोचना की, हालांकि जिहाद के विषय में साफ़ साफ़ यह आदेश है कि तुम केवल उससे लड़ो जो तुमसे लड़े और उस लड़ाई में ख़ुदा को राज़ी रखने की नियत रखो और किसी बेगुनाह को नुक़्सान न पहुंचाओ और केवल सत्ता की इच्छा के आधार पर जंग न करो, केवल सच्चाई की मदद और हिफ़ाज़त की ज़रूरत पड़ने पर जंग करो और अन्य सूरतों में अम्नो अमान और सुलह पसन्दी के तरीक़े एख़्तियार करो, अतः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सब सहाबा ने इसी तरह अमल किया और फिर इसी का नतीजा था कि आप स०अ० की सारी जंगों में अपने विरोधियों और दुशमनों के मुक़ाबले में उच्च मानव आचरण एख़्तियार किया गया, अतएव मुसलमानों के हाथों दुशमनों के मुक़ाबले में बहुत कम संख्या में दुशमनों की जानें गईं।

अलबत्ता बाद के ज़मानों में कुछ मुस्लिम शासकों से उनकी अपनी व्यक्तिगत राजनीतिक हितों की बिना पर इस्लाम के निश्चि नियमों की पाबन्दी करने में कोताहियां भी हुईं, लेकिन उनकी जंगों में भी मुसलमानों ने अपने

www.abulhasanalinadwi.org

दुशमनों की बहुत कम जानें लीं और उनके विपरीत उनके दुशमनों ने मुसलमानों को बड़ी संख्या में मारा और शहीद किया, इसके विपरीत मुसलमानों के हाथों जो दुशमन मारे गए उनकी संख्या बहुत कम है जैसा कि खुद दुशमन के क़लम से लिखी गई किताबों में अंकित है बहरहाल किसी शासक ने अगर कुछ ज़्यादती की हो तो यह उसका निजी अमल क़रार दिया जाएगा, इसका इल्ज़ाम (आरोप) इस्लाम और रसूले इस्लाम स०अ० को नहीं दिया जा सकता, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके तरीक़े पर अमल करने वालों के इस सिलसिले के भी बलन्द अख़लाक़ और उच्च आचरण को चरित्र व आचरण के निष्पक्ष अध्ययन से भलीभांति समझा जा सकता है, इस विषय में कई इस्लाम विरोधी इतिहासकारों ने जो ग़लतफ़हमी (भ्रान्ति) पैदा की और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र और इस्लामी इतिहास को विरोधात्म अन्दाज़ में पेश किया, इससे मुसलमानों और ग़ैर मुसलमानों के बीच एक खाड़ी बाधक बन गई, इस्लाम की उचित तसवीर प्रस्तुत करके गलत फ़हमियां (भ्रान्तियां) दूर की जा सकती हैं जिसकी वर्तमान काल में विशेषरूप से बड़ी आवश्यकता है।

इस प्रकार की भ्रान्तियां दूर करने के लिए ज़रूरी हुआ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अहवाल (वचन और जीवन चरित्र) को उनके सही शक्ल में लोगों के सामने लाया जाए, यह एक बड़ी मानव आवश्यकता है, ताकि इस्लाम और रसूल इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वास्तविक हाल और आचरण सामने आए और इससे ग़लतफ़हमी में फंसे लोगों की ग़लतफ़हमी दूर हो और वह इस्लाम की सत्यता को समझ सकें और सच्चाई को जान सकें, इसी उद्देश्य से विभिन्न ज्ञानात्मक लोगों ने इसकी आवश्यकतानुसार किताबें तैयार करने का आयोजन किया।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र के लेखकों ने अपने अपने ज़माने की ज़रूरत और हालात को सामने रखते हुए किताबें संकलित कीं, इस तरह हर किताब की उपयोगता और विशेषता अपनी अपनी जगह खूब है और बड़ी हद तक वह सब किताबें ज़रूरत को पूरा करती हैं और उद्देश्य के अनुकूल हैं।

मुझ नाचीज़ (तुच्छ) को भी कम इल्मी के बावजूद मेरे कुछ प्रिय सत्य दोस्तों ने इस महत्वपूर्ण उद्देश्य के लिए एक औसत मोटाई की किताब तैयार करने का मशवरा दिया, जिसमें सीरते तैयबः (पवित्र जीवन चरित्र) को सरल शैली और अमली शकल में पेश किया जा सके, इस विषय के महत्व और इसकी महानता देखते हुए मैं इस काम से डरा लेकिन फिर यह ख़्याल आया कि इस पवित्र और प्रिय विषय की सेवा में अपना कुछ समय लगाना और क़लम चलाना चाहे बेहुनरी के साथ हो बरकत वाला और सआदत का काम है, हिम्मत करली,

www.abulhasanalinadwi.org

और इस काम की अन्जाम दही में अपने कुछ साथियों और अज़ीज़ों के मशवरे से भी फ़ायदा उठाता रहा, जिनका मैं शुक्र गुज़ार हूं कि उन्होंने पूरा सहयोग दिया, साथियों में अज़ीज़ भाई मोलवी मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी साहब, (शिक्षा सचिव) नदवतुल उलमा लखनऊ, मोलवी बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी साहब का मशवरा शामिल रहा, और सहायकों में मोलवी महमूद हसनी नदवी (रिसर्च फेलो दारे अरफ़ात रायबरेली) और अज़ीज़ी मोलवी मुहम्मद वसीक़ नदवी (अध्यापक अरबी भाषा व साहित्य विभाग, दारूल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ) का व्यापक और विस्तृत सहयोग प्राप्त रहा जिसको मैं बड़ी क़द्र की निगाह से देखता हूं, ख़ासतौर पर अज़ीज़ी मोलवी वसीक़ नदवी का शुक्रगुज़ार हूं कि उन्होंने इस सहयोग में परिश्रम और प्रयास का भी सुबूत दिया और संदर्भों को संग्रह करने में सहायता दी, इस तरह उनका इल्मी व अमली पहलुओं में विशेष सहयोग रहा, इन सब सहायकों की वजह से काम मेरे लिए आसान हो सका, अल्लाह तआला इन सब की मदद को कुबूल फ़रमाए और बहुत जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए।

किताब के प्रकाशित होने के बाद दोस्तों ने इसको हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने की सलाह दी, अल्हमदोलिल्लाह यह काम भी अन्जाम दिया गया, इसके लिए हम बिरादरम मोलवी मुहम्मद गुफरान नदवी के शुक्रगुज़ार हैं कि उन्होंने बहुत जी लगाकर हिन्दी में इसका अनुवाद किया जो अब पाठकों के सामने प्रस्तुत है।

मुहम्मद राबे हसनी नदवी
25 अप्रैल 2010 ई०

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवादक की बात

मेरे लिए अति सौभाग्य की बात है कि जब मैं हज की मुबारक यात्रा से 30 दिसंबर 2008 को वापस आया तो अपने आदरणीय और सम्मानीय गुरू हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी अध्यक्ष आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की ओर से उर्दू किताब "रहबरे इन्सानियत" हिन्दी अनुवाद के लिए बिरादरे अज़ीज़ मोलवी मुहम्मद वसीक़ नदवी द्वारा प्राप्त हुई, उस समय मेरी प्रसन्नता असीमित हो गई।

एक ओर हज से वापसी पर अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत और अक़ीदत के जज़बात से दिल लबरेज़ (परिपूर्ण) था, दूसरी ओर अपने किसी बड़े और बुजुर्ग का एक ऊंचे काम के लिए एतिमाद (विश्वास) की प्राप्ति।

"रहबरे इन्सानियत" जिसका हिन्दी अनुवाद "जग नायक" सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम से आपके सम्मुख प्रस्तुत है, यह किताब जैसा कि नाम से स्पष्ट है हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पूर्ण जीवन चरित्र है, आपके जीवन काल की हर छोटी बड़ी बात सामने आ गई है।

यह किताब ऐसे व्यक्ति के क़लम से लिखी गई है जिसने अर्ध शताब्दी से अधिक अपना जीवन अरबी भाषा और साहित्य, इसके अतिरिक्त अरबद्वीप के भुगोल और इतिहास के पढ़ने और पढ़ाने में व्यतीत किया, उसने अपनी जानकारी केवल किताबों तक नहीं रखी बल्कि वहां जा कर स्वयं एतिहासिक स्थानों को देखा, इस प्रकार लेखक महोदय ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी का गहराई से अध्ययन किया।

इस किताब को पढ़ते समयआप महसूस करेंगे कि मानव जगत के एक महान और आदर्श इन्सान के जीवन चरित्र को पढ़ रहे हैं, जिसने वास्तविक रूप में मानव इतिहास में ऐसे अनमिट चिन्ह छोड़े हैं जिसका संसार के इतिहास में उदाहरण नहीं मिलता, उस आदर्श और महान इन्सान द्वारा एक विश्व व्यापक

www.abulhasanalinadwi.org

क्रान्ति आई, जिसने मानव जीवन की धारा का रूख़ मोड़ दिया, इस प्रकार संसार के पालनहार ने मानवता को जो तबाही के कगार पर पहुंच गई थी, तबाही से बचा लिया।

बहार अब जो दुनिया में आई हुई है।
यह सब पौद उन्हीं की लगाई हुई है।।

अनुवाद का काम कितना कठिन और नाजुक होता है इसका अनुभव वही लोग कर सकते हैं जिनका इस काम से सम्पर्क हो, विशेषकर जब किसी महान व्यक्तित्व से संबंधित हो, बड़ी दुआओं के साथ इस पवित्र काम को प्रारंभ किया और अल्लाह के फ़ज़्लो करम से यह काम परिपूर्ण हुआ, वरना मैं अपने को इस का योग्य नहीं समझता हूं।

हमें इस काम में कितनी सफलता मिली इस का निर्णय मैं अपने पाठकों पर छोड़ता हूं, वह किताब पढ़ने के बाद इसका निर्णय देंगे कि यह अनुवाद कितना सफल है।

इस महान और पवित्र काम में मैं अपने दो बुजुर्गों को नहीं भूल सकता जिनकी सहायता और सहयोग से हमें बड़ी शक्ति मिली, और यह काम मेरे लिए सरल हुआ, एक आदर्णीय श्री मुहम्मद हसन अन्सारी सुल्तानपुरी[1] जिन्होंने पूर्ण रूप से इसकी पुरूफ़रीडिंग की और एक एक शब्द को देखा और परखा, और अपने बहुमूल्य परामर्श दिए। दूसरे बुजुर्ग हाफ़िज़ डाक्टर हारून रशीद साहब संपादक मासिक पत्रिका "सच्चा राही" नदवतुल उलमा, लखनऊ, अनुवाद संबंधित जब भी कोई कठिन समस्या आती डाक्टर साहब से सम्पर्क करता, वह उचित सलाह देते और मार्गदर्शन करते, इन दोनों बुजुर्गों को बहुत बहुत धन्यवाद!

अन्त में फिर अपने सम्मानीय गुरू हज़रत मौलाना राबे हसनी नदवी साहब के प्रति कृतज्ञता की भावना प्रकट करता हूं कि उन्होंने इस पवित्र और मुबारक काम के योग्य समझा और सेवा करने का अवसर प्रदान किया।

समस्त प्रशंसाएं उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें साहस और शक्ति प्रदान की।

अपने पाठक वर्ग से कहना है कि यह किताब एक पैग़ाम है और एक दावत है इसको स्वयं पढ़ें और दूसरों से पढ़वाएं ताकि लोग सत्य मार्ग अपना सकें।

---

[1] बहुत ही दुख और अफ़सोस के साथ किताब के पाठकों को सूचित कर रहे हैं कि 31 दिसम्बर 2010 को अचानक हसन अन्सारी साहब का देहान्त हो गया। अल्लाह तआला उनकी मग़फ़िरत फ़रमाये और दरजात बलन्द फ़रमाये।

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह तआला आपको बेहतरीन बदला अता फ़रमाए।

हज़ारों दुरूद व सलाम हो अल्लाह के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जिनके द्वारा भटकी हुई इन्सानियत को मार्गदर्शन मिला और प्रत्येक मानव वर्ग ने अपना सम्मानित स्थान पाया, अन्त में हम मानवता के इस सर्वश्रेष्ठ उपकारी के लिए श्रद्धांजली अर्पित करते हैं।

यह आंखों की नमी, दिल की जलन
सदके़ में तुम्हारे हम को मिली
क्या दौलते उज़्मा हाथ लगी
सरकारे दो आलम सल्ले अला

गुफ़रान नदवी
शोबा दावत व इरशाद
नदवतुल उलमा, लखनऊ
6 जून 2010 ई०

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय एक

इन्सान के मूरिसे आला (वंश प्रवर्तक) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम

इस ज़मीन और आसमान और पूरी दुनिया को बनाने वाली ज़ात अल्लाह तआला ने यह ज़मीन और आसमान बना कर उसमें रहने और उससे फाइदा उठाने वाली मख़लूक़ (प्राणि वर्ग) पैदा कीं इनमें सबसे अहम और बड़ी मख़लूक़ इन्सान को बनाया, इन्सानी मख़लूक़ के लिये सबसे पहले एक आदमी को मिट्टी से बनाया, फिर उनके साथ रहने और एक दूसरे से मिलकर ख़ानदान (परिवार) बनाने के लिये उन्हीं से उनकी बीवी कौ पैदा किया, फिर इन दोनों से नस्ले इन्सानी (मानव जाति) क्रमशः पूरी दुनिया में फैली और इस मानव जाति को इस ज़मीन के कारोबार को पूरा करने की ज़िम्मेदारी सौंपी, और ज़मीन में इन्सान की ज़रूरत का सारा सामान पैदा किया कि इन्सान अपनी समझ से जो उसके पैदा करने वाले और मालिक अल्लाह तआला की तरफ़ से दी गयी है अपनी ज़रूरत के अनुसार सामान निकाले और फिर उस को अपनी ज़रूरत की चीज़ें बनाने का तरीक़ा बताया और हुक्म दिया कि यह सब चीज़ें और ज़िन्दगी तुम को दी गयी है ताकि तुम उस से फ़ायदा उठाओ, लेकिन ज़मीन पर तुमको अच्छा बन कर रहना है और अपने परवरदिगार के हुक्म के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारना है, अगर ग़लत काम करोगे तो फिर तो तुम को सज़ा दी जायेगी।

इन्सान के मूरिस (पित्र) और प्रथम इन्सान हज़रत आदम को जब पैदा किया तो उनको शुरू में सबसे राहत की जगह जन्नत में रखा (1) उनसे पहले अल्लाह तआला एक दूसरी मख़लूक़ जिन्नात को पैदा कर चुका था।(2) और उमें एक व्यक्ति इबलीस को जो देखने में बहुत इबादत गुज़ार बन्दा हो गया था, अल्लाह तआला ने उसकी नेकी के बदले में उसको पहले से जन्नत में ठहरा रखा था, लेकिन उसने यह मुर्खता की कि जब आदम अलैहिस्सलाम को पैदा करके अल्लाह तआला ने बड़ी इज़्ज़त दी और जन्नत में रखा तो उनसे इबलीस को जलन हुई कि उसके होते हुए इस नई नस्ल के व्यक्ति को इतना सम्मान क्यों दिया गया? और जब

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह ने सबको हुक्म दिया कि सब आदम की तअ़ज़ीम (प्रतिष्ठा) में आदम के सामने झुक जायें, तो फ़रिश्तों जैसी आसमानी मख़लूक़ ने अपने रब के हुक्म की फ़ौरन तामील की, लेकिन इबलीस ने मानने से इनकार किया और अभिमान का ढंग अपनाया जिसके परिणाम स्वरूप अल्लाह ने उसे जन्नत से निकाल कर नीचे ज़मीन पर उतार दिया और उस पर लअ़नत लागू कर दी, इबलीस ने अपने इस अपमान का बदला आदम से लेने के लिये आदम और उनकी बीवी हज़रत हव्वा को जन्नत के एक वर्जित पेड़ में से जिसके खाने से हज़रत आदम और हव्वा को अल्लाह तआला ने शुरू ही में मना कर दिया था, और उनसे कहा गया था कि जन्नत के हर पेड़ पौदे से फ़ाइदा उठाओ लेकिन इस पेड़ को न खाना, शैतान ने समझा बुझा कर कुछ तोड़ कर खाने की रग़बत (इच्छा) दिलाई और उसका बड़ा फ़ाइदा बताया और किसी तरह यक़ीन दिला कर कि उस पेड़ से खाने में कोई ख़ास ग़लत बात नहीं है और फ़ाइदा बहुत है, इस तरह उनसे नाफ़रमानी (अवज्ञा) करादी, अल्लाह तआ़ला हज़रत आदम से नाराज़ हुवा कि हमारे मना करने के बअ़द भी तुमने यह हरकत की, और सज़ा के तौर पर उनको भी जन्नत की फ़ज़ाओं से निकाल कर आसमान के नीचे भेज दिया, इब्लीस अपनी नाफ़रमानी पर डटा रहा और मआ़फ़ी तक नहीं मांगी, चुनांचे उसको और उसकी अवलाद को हमेशा के लिये नालायक़ और मरदूद (धुतकारा हुवा) क़रार दिया गया।

लेकिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अपनी नाफ़रमानी की मआ़फ़ी बड़े दर्द और तड़प के साथ रो रो कर मांगी, चुनांचे अल्लाह ने उनको मआ़फ़ कर दिया लेकिन उनकी तबीअ़त में नाफ़रमानी का जो पहलू ज़ाहिर हुआ था उसकी बिना पर उनको और उनकी औलाद को ज़मीन पर रहने के साथ उनकी फ़रमाबरदारी का इम्तिहान (परीक्षा) लेने का इरादा फ़रमाया ताकि वह अपने रब (पालनहार) की नाफ़रमानी से बचने का सुबूत अपने अमल से देकर साबित करें कि वह जन्नत में वापस आने के लायक़ हैं, और यही हुक्म जिन्नात के लिये भी रखा गया, जिसका सिलसिला इस दुनिया के ख़त्म होने और क़ियामत आने तक जारी रखा गया ताकि आदम अलैहिस्सलाम की औलाद और जिन्नात में वह लोग जो इब्लीस की औलाद और उसकी पैरवी करने वाले नहीं हैं उनकी जांच हो सके कि वह अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दे बनेंगे या नाफ़रमान।

दीनी रहनुमाई (धार्मिक पथ प्रदर्शन) नबूवत के रूप में

दुनिया में इन्सानी ज़िन्दगी का सिलसिला शुरू होने के बअ़द एक के पीछे एक इन्सानी नसलों ने दुनिया को आबाद किया और अल्लाह के हुक्म को माना और उस पर चले, लेकिन आहिस्ता आहिस्ता अपनी ज़मीनी इच्छाओं और आराम, मज़ेदार ज़िन्दगी को अपनी दीनी व अख़लाक़ी जिन्दगी से आगे बढ़ाना

शुरू कर दिया और अपने पैदा करने वाले और पालनहार की इबादत से लापरवाही करने लगे और अपने जी चाहने पर अपने मालिक और पैदा करने वाले अल्लाह तआ़ला के हुक्मों की ख़िलाफ़वर्ज़ी (अवहेलना) करने लगे, इसलिये उनको समझाने के लिये बार बार अल्लाह तआ़ला उन्ही में से किसी समझदार और नेक इन्सान को अपना पैग़म्बर बना कर उनको समझाने के लिये नियुक्त करता रहा जो नबी कहलाता था यह नबी आवश्यकतानुसार क़ौमों (जनसमूहों) में आते रहे, जब जब मानव जाति में बुरी बातें फैलीं, नबी आया, दुनिया में जहां जहां आबादी हुई और अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी बढ़ी तो नबी आया, इस तरह हर जगह नबी आया और यह नबी अपनी अपनी क़ौमों को हमदर्दी और सहानभूति के साथ बताते रहे और उनको समझाने में दिल और जान लगाते रहे।

इन अंबिया अलैहिस्सलाम में पले शख़्स खुद इन्सानों ही के मुरिसे अव्वल (मूल पुरूष) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम नबी की हैसियत से अपनी औलाद को सीधे रास्ते पर और खुदा की बन्दगी पर क़ायम रखने की फ़िक्र व कोशिश के लिये मुक़र्रर हुए, इस लिये उनकी औलाद बराबर अपने मूरिस हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बताए हुए रास्ते पर चलती रही लेकिन जब वक़्त और नस्लों के गुज़रने के साथ उनमें बिगाड़ आता गया तो आवश्यकतानुसार उनमें नबी भेजे जाते रहे, अल्लाह ने फ़रमाया :-

कोई क़ौम ऐसी नहीं जिनमें डराने वाला न आया हो। (सूरह फ़ातिर:24)

अल्लाह तआ़ला ने अपने उन नबियों में से कुछ का तज़किरः (वर्णन) क़ुरआन मजीद में मिसाल के तौर पर किया है और बाक़ी के बारे में सिर्फ यह बताया है कि हर क़ौम में नबी आऐ जिन नबियों का तज़किरः अल्लाह तआला ने अपनी किताब में किया उनमें सबसे पहले हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का तज़किरह किया, यह इन्सानों के मूरिस हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बअ़द उनकी नस्लों में बहुत वर्षों बअ़द नबी नियुक्त किये गए, उनकी क़ौम आहिस्ता आहिस्ता (शनैः शनैः) अपने नेक और बड़े लोगों की तअ़ज़ीम (सम्मान) में उनकी यादगार बनाकर तअ़ज़ीम (सम्मान) करते करते इबादत (उपासना) करने लगी थी और अपने पैदा करने वाले और मालिकों को जो एक ही है छोड़ कर गुज़रे हुए नामवर लोगों को खुदा का स्थान देकर उनकी इबादत (उपासना) में लग गई थी और इसी के साथ दूसरी ओर गुनाहों (पाप) और अत्याचार के कामों में मुब्तला (ग्रस्त) थी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने साढ़े नौ सौ साल उनमें रह कर नबूवत का सुधारात्मक और भलाई की ओर बुलाने का फ़र्ज़ पूरा किया, इतने लम्बे समय तक समझाने और सुधार का काम अन्जाम देने के बअ़द भी गिन्ती के थोड़े लोग एक अल्लाह की बन्दगी और अख़लाक़ी व इन्सानी हालत के सुधार पर आ सके और जब अक्सर व बेशतर (अधिकांश) लोगों के सीधे रास्ते पर आने की उम्मीद ख़त्म हो गई तो

www.abulhasanalinadwi.org

उनके नबी ने उनको सज़ा दिये जाने की दरख़्वास्त (प्रार्थना) की, इसी लिये अल्लाह की ओर से उनके लिये तूफ़ान मे हलाक (विनाश) कर दिये जाने का फ़ैसला हुआ और सज़ा दिये जाने से पहले हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को कश्ती (नाव) बनाने का हुक्म हुआ ताकि उसके ज़रिये (द्वारा) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और उनके थोड़े मानने वाले बचा दिये जाएं क्योंकि क़ौम के नाफ़रमानों (अवज्ञाकारियों) को बहुत भयंकर तूफ़ानी सैलाब से सज़ा दिये जाने का फैसला हुआ :

"और हमने नूह को उनकी क़ौम की ओर भेजा, वह उनमें साढ़े नौ सौ साल तक रहे, फिर तो उन्हें तूफ़ान ने धर पकड़ा और वह थे भी ज़ालिम (अत्याचारी), फिर हमने उन्हें और कश्ती (नाव) वालों को नजात दी और इस वाक़िए (घटना) को हमने सारे संसार के लिये एक निशानी बना दिया" (अल-अनकबूत-14.15)

बअ़द में उन नजात पाने वाले इन्सानों की औलाद इस दुनिया में चली, अल्लाह तआ़ला ने उनका तज़किरह (उल्लेख) अपनी किताब कुरआन मजीद में किया, उनके बअ़द के नबियों में से कुछ दूसरे नबियों की क़ौमों का हाल भी कुरआन मजीद में बयान किया गया है, जो अरबी इलाके (क्षेत्र) और उसके आस पास की क़ौमों में जब वह अपने रब (स्वामी) की नाफ़रमानी और गुनाहों (पापों) पर इस्रार (आग्रह) करने लगीं मबऊ़स (औतारित) किये गए, और वह क़ौमें जब जब अपने नबियों की नाफ़रमानी (अवज्ञा) में बहुत आगे बढ़ गईं और नबी की बात नहीं मानी तो उन पर अज़ाब आया उनमें हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम के बअ़द उन्हीं की बअ़द की नस्लों में क़ौम आद का ज़िक्र किया गया है, यह यमन के पूर्बी इलाक़े में आबाद थी, उनमें भी अपने असली मालिक और पैदा करने वाले को छोड़ कर अपनी पसन्द के बुतों और मूर्तियों की पूजा उनमें फैल गई और इसी के साथ कमज़ोरों और ग़रीबों पर ज़ुल्म ज़ियादती, घमण्ड, गुरूर (अभिमान) और बद अमली (दुष्कर्म) की बातें रिवाज पा गई थीं, उनमें हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को नबी मुक़र्रर किया, उनकी क़ौम के लोग भी शिर्क (अनेकेश्वरवाद) और अपने बिगाड़ पर क़ायम रहे और अपने नबी हज़रत हूद अलैहिस्सलाम का मज़ाक़ उड़ाते रहे, जिस के नतीजे में उन पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हुवा।

इस क़ौम के तज़किरे (वर्णन) के बअ़द क़ौमे समूद का तज़किरः (वर्णन) आया है, यह हिजाज़ के उत्तरी क्षेत्र के पहाड़ी इलाक़े में आबाद थे, उनमें हज़रत स्वालेह अलैहिस्सलाम नबी बनाऐ गऐ, यह क़ौम भी भांति भांति के खुदा बनाके उनकी पूजा करती और कमज़ोरों पर ज़ुल्म और अश्लील बातों में ग्रस्त थी, उन नबी के साथ भी क़ौम ने बड़ी ज़ियादती की और किसी तरह भी अपने को सुधारा नहीं, उनके लिये एक ऊँटनी हज़रत स्वालेह अलैहिस्सलाम की नबूवत की तसदीक़ (पुष्टि) के लिये अल्लाह ने पैदा की और उसकी हिफ़ाज़त (रक्षा) का

www.abulhasanalinadwi.org

हुक्म दिया, लेकिन उन्होंने उसको मार डाला और सरकशी (अवज्ञा) पर क़ायम (स्थिर) रहे, इस लिये वह लोग भी तबाह (नष्ट) कर दिये गये, सिर्फ नेक (सदाचारी) लोग बचे, और वह और उनकी औलाद नेकी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने लगे, लेकिन नस्ल (वंश) बदलने और समय गुज़रने के साथ उनमें भी बुराइयां और शिर्क (अनेकाशुवर वाद) पैदा होने लगा, उनके सुधार के लिये उन ही में से नबी आए, कुरआन मजीद में क़ौमे समूद के बअ़द क़ौमे लूत और कौमे मदयन का ज़िक्र (वर्णन) आया, उन सब क़ौमों ने अपने अपने नबी को परेशान किया और अपना अपना ग़लत और अप्रिय कामों का ढंग नहीं बदला।

क़ौमे लतू फ़िलिस्तीन के एक हिस्से (भाग) में आबाद थी, और उनकी बड़ी ख़राबी शिर्क (अनेकेश्वरवाद) के साथ हम ज़िन्सी (समलैंगिक सम्बन्ध) की लअ़नत (फटकार) थी जो उनमें बुरी तरह फैल गई थी, और उसमें भी वह ज़ोर ज़बरदस्ती बेहयाई (अश्लीलता) दिखाने लगे थे, इसी के साथ दूसरे गुनाहों (पापों) पर अड़े हुवे थे। उनमें हज़रत लूत अलैहिस्सलाम जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे, मबऊ़स (औतारित) किये गए, उन्होंने बहुत कोशिश की, लेकिन उनकी बात नहीं मानी गई, चुनांचे उन पर सख़्त ज्वाला मुखी भूचाल आया वह तबाह व बरबाद कर दिये गऐ।

क़ौमे मदयन हिजाज़ के उत्तरी भाग में आबाद थी, शिर्क के साथ कारोबार में ख़ियानत और बददियानती (कपट और विश्वासघात) करती थी और दूसरे गुनाहों में मुब्तला (ग्रस्त) थी उनमें हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम भेजे गए, उन्होंने समझाने की बहुत कोशिश की, जब आख़िर आख़िर तक वह अपने दुष्कर्मों पर जमे रहे तो उनपर अज़ाब आया।

कुरआन मजीद में क़ौमे मदयन के बअ़द मिसरी क़ौम की हालत का तज़किरा (वर्णन) किया गया, वहां उनके बादशाह फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम ने बहुत उधम मचाया था, वहां बनी इसराईल अल्पसंख्यक में थे, उनमें जब कोई बच्चा पैदा होता तो उसको मार दिया जाता और लड़की पैदा होती तो उसको छोड़ दिया जाता ताकि फ़िरऔन की क़ौम के घरों में उनसे ख़िदमत ली जाया करे और मुल्क की कमज़ोर नस्ल के लोगों के साथ बड़ा ज़ुल्म किया जाता था, फिर इसी के साथ साथ फ़िरऔन अपने आपको ख़ुदा क़रार देकर अपनी पूजा कराता था, और साफ़ साफ़ कहता था कि मेरे अलावा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं, बनी इसराईल के नबी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसे बहुत समझाया, और समझाते समझाते जब एक लम्बा समय बीत गया और फ़िरऔन का ज़ुल्म और अत्याचार नहीं रूका तो अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) आया और फ़िरऔन और उसके साथी, संगती समुद्र में डुबो दिये गए, फिर यह बनी इसराईल एक समय बीतने पर अपने नबियों की रहनुमाई (मार्गदर्शन) से पीछा छुड़ाने लगे यहां तक

www.abulhasanalinadwi.org

कि शिर्क (अनेकेश्वरवाद) के कामों में लिप्त हो गए और अपनी चरित्रहीन बुराइयों पर अड़े रहे और धांधली करते रहे, जिसके नतीजे में अल्लाह ने उन्हें दूसरों के ज़रिये मुसीबत में डाला, लेकिन उन्होंने अपनी बुरी आदतों और बुरे कामों को नही छोड़ा, हद यह है कि नबियों को सताया और क़त्ल किया, आख़िर में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को भी क़त्ल करवाने का पूरा इन्तिज़ाम कर दिया था, जिसको अल्लाह ने नाकाम बना दिया.....

यह कुछ मिसालें हैं जिनका तफ़सील के साथ कुरआन मजीद में तज़किरा आया है वरना हज़ारों क़ौमें हुईं और उनमें नबी आए और नाफ़रमानियों और बद अमलियों (दुष्कर्मों) के आखिरी दर्जे पर पहुंच जाने पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से उन पर तबाही आई।

बनी इसराईल मिस्र और शाम (सीरिया) में आबाद थे, उनके बिगाड़ के हालात एक तरफ़ यह थे, दूसरी तरफ़ दुनिया के विभिन्न भागों में जो क़ौमें आबाद थीं वहां भी अल्लाह तआ़ला को छोड़ कर या उसके साथ दूसरे बहुत से मअ़बूद (ईश्वर) बना लिये गए थे और उनमें भी नाना प्रकार की बुराइयां फैल गई थीं और यह सब क़ौमें शिर्क, कुफ़्र, ज़ुल्म और अख़लाक़ी (नैतिक) बिगाड़ में डूब गई तो अल्लाह तआला को बहुत नाखुशी हुई और उसने कुछ समय के लिये नबियों को भेजने का सिलसिला रोक दिया, और शायद यह देखना चाहा कि इन्सान अपने को नफ्स परस्ती (मनमानी) और जानवरों जैसी ज़िन्दगी को मनमाने ढंग से गुज़ारने में कहां तक जाता है, इसी लिये हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बअ़द छः सौ साल तक अल्लाह तआ़ला ने कोई नबी नहीं भेजा और इन्सानों को गिरावट में जाने दिया, इन छः सौ सालों में पूरी इन्सानियत बहुत बुरी आदतों तक पहुंच गई, और बड़ी क़ाबिले नफ़रत बन गई, क़रीब था कि रब्बुल आलमीन इस की सज़ा में इन्सानों की नस्ल ख़त्म कर दे, जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीस से ज़ाहिर (स्पष्ट) होता है :- "अल्लाह तआ़ला ने ज़ीमन वालों पर नज़र दौड़ाई तो उसको उनसे नफ़रत हुई, अरबों से भी और ग़ैर अरबों से भी, अलावा कुछ बचे खुचे अहले किताब के"।

लेकिन रब्बुल आलमीन (विश्व पालक) की दया उसके क्रोध पर ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) रही और उसने उनको समझाने का एक मौक़अ़ फिर दिया और इसके लिये सबसे ज़ियादा खूबियों और सलाहियतों (योग्यताओं) वाला नबी भेजा, यह हमारे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे, उनके मबऊस (अवतारित) किये जाने का इशारा पिछले नबियों पर उतारी जाने वाली आसमानी किताबों अर्थात तौरैत और इन्जील में भी पहले से ही कर दिया गया था कि सब नबियों की उम्मतों के बअ़द सारी दुनिया में जब बुराइयां बहुत बढ़ जांएगी और इन्सानों की अख़लाक़ी और दीनी सतह बहुत गिर जाएगी और खुदा की नाफ़रमानी आख़िरी दर्जे पर हो जाएगी तो इन्सानों के सुधार के लिये आख़िरी बार और ज्यादा मुकम्मल सिफ़ात (पूरी

विशेषताओं) का नबी भेजा जाएगा, और इसकी ख़बर हज़रत मुहम्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहमद के नाम से भी देदी गई थी, फिर उसके मुताबिक़ उस बलन्द मर्तबः नबी को अल्लाह रब्बुल आलमीन ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से छः सौ साल बअ़द मध्य पूर्व की अनपढ़ और अमभ्य क़ौम अरब की सबसे बेहतर नस्ल से उठाया, यह क़ौम अरब द्वीप की सख़्त दुश्वार गुज़ार (दुर्गम) सरज़मीन में सीमित और इस तरह दूसरी क़ौमों के प्रभाव और शहरी ख़राबियों से सुरक्षित थी, उनमें नागरकिता नहीं थी परन्तु स्वाभाविक हालत में थे, उनके दिल व दिमाग़ दूसरी क़ौमों के असरात (प्रभाव) से ख़ाली थे, और बड़ी ज़िम्मेदारियों के उठाने के लायक़ थे, उनको सिर्फ़ अरबों का ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया की हिदायत (मार्गदर्शन) की ज़िम्मेदारी सुपुर्द करने का फ़ैसला किया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस ज़िम्मेदारी को फ़िक्र व तवज्जुह (चिन्ता, ध्यान) और मेहनत से अन्जाम दिया, जिससे हालात में ज़बरदस्त सुधार आया, और इस तरह पूरी इन्सानियत जो सारी की सारी अपने ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) और मालिक अल्लाह तआला के नाराज़ होने पर अज़ाबे इलाही का शिकार हो सकती थी, बच गई और इन्सानियत की तारीख़ में एक नया दौर शूरू हुआ और एक ऐसा इन्सानी समाज वजूद में आया जो नमूने का और इन्सानों की रहबरी (मार्गदर्शन) की ख़िदमत अन्जाम देने की सलाहियत (योग्यता) रखने वाला बना और दुनिया तबाह होने से बच गई। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ऐसी ख़ुसूसियात (विशेषताएं) योग्यता और सिफ़ात (गुण) प्रदान किये गए कि वह सारे जहानों के लिये रहमत (कृपा, दया) साबित हुवे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने परवरदिगार के आदेशानुसार अद्भुत ज्ञान, उचित उपाय से काम लिया, और अल्लाह तआला ने विशेष रूप से सहायता की जिसकी वजह से कम समय में एक ऐतिहासिक क्रन्ति आ गई जो अरब से शुरू होकर सारी दुनिया में पहुंची, इन्सानों की वह ज़िन्दगी जिसको अल्लाह ने नापसन्द किया था और जिससे नफ़रत (घृणा) ज़ाहिर की थी, वह ज़िन्दगी बदल कर इतनी अच्छी ज़िन्दगी हो गई कि अल्लाह उस ज़िन्दगी से प्रसन्न हो गया, और ऐसे लोगों के लिये जिन्होंने एक अल्लाह की बन्दगी का रिकार्ड क़ायम कर दिया, यह फ़रमाया अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वह अल्लाह से राज़ी हुए।

नबी का काम और पैग़ाम

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक जितने नबी आए सबने शिर्क (अनेकेश्वरवाद) छोड़ने और तौहीद (एकेश्वरवाद) पर चलने की सख़्ती से हुक्म दिया, इस लिये कि अल्लाह तआ़ला जो इस पूरी दुनिया का पैदा करने वाला और इस दुनिया में हर तरह की ज़रूरत का सामान रखने वाला और उस सामान को इन्सान के इस्तेमाल के लायक़ बनाने

वाला और सरलता पूर्वक उसको पहुंचाने वाला है, इन्सान उससे भरपूर फ़ायदा उठाता है, और उसकी ज़िन्दगी उस पर निर्भर हो तो क्या उस अल्लाह के एहसान को भुलादे और उसको छोड़ कर इधर उधर की चीज़ों को जिनसे उसको फायदा या नुक़सान का ख़तरा महसूस होता है, एख़्तियार करले और अपनाले और यह कहने लगे कि हमारी मदद तो फ़लां करता है, और हमारी ज़रूरत तो फ़लां पूरी करते हैं, और फलां चीज़ हम पर एहसान करती है और जो एहसान ख़ालिस उसके ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) और मालिक अल्लाह तआला का है वह उसको दूसरों का बताता और उससे अपनी ज़रूरत मांगता है और अस्ली (वास्तविक) मोहसिन (उपकारी) जो सबसे बड़ा और सब तरह का एहसान करने वाला है, उसको छोड़ कर असके साथ दूसरी छोटी चीज़ों को अपना मुहसिन और मालिक कहता है तो बात बिल्कुल स्पष्ट और साफ़ है कि अल्लाह जिसने सब कुछ बनाया और सब कुछ दिया और बराबर देता है कैसे वह इस बात की इजाज़त देगा और नाराज़ न होगा, इस लिये अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादह नाराज़ी शिर्क (साझेदारी) से होती है और यह बात बिल्कुल बरहक़ और सत्य है।

इस लिये सारे नबी और मुसलिहीन (सुधारक) ने सबसे पहले और सबसे ज़्यादह शिर्क (अल्लाह के साथ दूसरों को साझेदार बनाने) से रोका, फिर उसके साथ इन्सान के किरदार और अख़लाक़ (चरित्र और आचरण) में जहां जहां बिगाड़ पैदा होता उसके सुधार और इस्लाह की दअ़वत देते रहे, जैसे किसी आबादी में शिर्क के साथ जिन्सी बद अख़लाक़ी (यौन संबन्धी बिगाड़) या दूसरी बुराइयां फैल गई थीं, जैसा क़ौमे लूत में हुआ, उनके नबी ने उन बुराइयों से मना किया, किसी आबादी में शिर्क के साथ नाप तौल में गड़ बड़ करने की आदत आम हो गई थी, जैसे क़ौमे मदयन में, उनके नबी ने उस बुराई से मना किया, किसी आबादी में शिर्क के साथ घमण्ड और कमज़ोरों पर ज़ुल्म करने की आदत आम हो गई थी जैसा कि क़ौमे फ़िरऔन मिस्र में, वहां हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को नबी मुक़र्रर (नियुक्त) किया गया, उन्होंने फ़िरऔन को बहुत समझाने और अल्लाह तआला के अज़ाब (प्रकोप) से डराने की कोशिश की और उस शिर्क व ज़ुल्म से रोका, किसी आबादी में शिर्क के साथ कमज़ोरो को सताने और दूसरों का हक़ मारने का शौक हो गया था वहां के नबी ने उसको उससे भी रोका, और इसी तरह शिर्क (अनेकेश्वरवाद) के साथ दूसरे जो जो ऐब (दोष) होते, नबी तौहीद ख़ालिस अर्थात् तन्हा अल्लाह तआ़ला पूरी दुनिया और मख़लूक़ (सृष्टि) का अकेला परवरदिगार (पालनहार) है, सिर्फ़ उसी की इबादत (उपासना) की दअ़वत (बुलावा) के साथ उसकी दूसरी ख़राबियों से भी रोकते थे।

अध्याय-दो

छटी सदी ईसवी में दुनिया की हालत

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से छः सौ साल पहले बनी इसराईल में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नबी पैदा हुवे थे, उनको रब्बुल आलमीन (विश्वपालक) ने मोजिज़े (ईश्वरीय चमत्कार) के तौर पर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तरह बग़ैर बाप के पैदा किया था ताकि उनकी अहमियत मअ़लूम हो और फिर उनको अल्लाह तआ़ला ने नबी बनाया ताकि वह बनी इसराईल के बहुत बढ़े हुए बिगाड़ को सुधार दें लेकिन बनी इसराईल ने उनका विरोध किया और उनके काम को रोका और नाफ़रमानी करते रहे, उनके छः सौ साल बअ़द आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबी बनाए गए यह बीच का ज़माना जो नबियों से ख़ाली गुज़रा मज़हबी व अख़लाक़ी लिहाज़ से बड़े बिगाड़ और ख़राबियों तक पहुंच गया था और बुराइयां आख़िरी हद् तक बढ़ गई और इन्सानों ने सभ्य वर्गों की देख रेख में अपने परवरदिगार के हुकमों की सख़्त नाफ़रमानी का तरीक़ा अपना लिया था, खुद बनी इसराईल के लोगों का हाल बहुत ख़राबी तक पहुंच गया था हालांकि यह लोग नबियों की औलाद थे और उनके बुज़ुर्गों (पूर्वजों) पर अल्लाह तआला के बेहद इन्आ़मात (उपकार) हो चुके थे, उन्होंने अल्लाह की उतारी हुई किताब में तहरीफ़ (परिवर्तन) कर डाली और अपनी इच्छा अनुसार उसके आदेशों में परिवर्तन किया और अपनी ख़ुवाहिशात (इच्छाओं) का तरीक़ा एख़्तियार किया।

उन्हीं के पड़ोस में दुनिया के पच्छिमी भाग में रूमी मुशरिकों (अनेकेश्वरवादियों) का दौर दौरा था, उनमें तो और भी अख़लाक़ी ख़राबियां, नफ़्स परस्ती, बेहयाई अय्याशी (विलासता), खुदगर्ज़ी (स्वार्थ परता) और ज़ुल्म ज़्यादती आख़िरी हद तक पहुंची हुई थी, और सभ्य दुनिया का पूर्वी भाग जो ईरान और उसके पूरब के क्षेत्रों पर फैला हुआ था, वहां के लोग भी शिर्क के साथ, बादशाही ज़ुल्म व ज़ोर, और सख़्त समाजी ज़्यादतियों और ख़राबियों में पूरी तरह फंसे हुए थे।

www.abulhasanalinadwi.org

इस तरह यह सदियां ख़राबी की चरम सीमा तक पहुंच गई थी और यह ज़माना इन्सानियत के नाम पर एक धब्बा बन गया था जिसकी तफ़सील निम्नलिखित है :-

यूरोप के मुल्कों का हाल

उन देशों में शुरू में शिर्क व बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) आम थी और अख़लाक़ी ख़राबियां और ज़्यादतियां बहुत थीं फिर यहां के लोगों ने ईसाइयत क़बूल कर ली लेकिन यह बुराइयां बढ़ती ही गईं, उनका हाल त्वइमतज ठतपनिसज लिखता है कि :-

"पांचवी सदी से लेकर दसवीं सदी तक यूरोप और उत्तरी पश्चिमी ऐशिया के इलाक़ों में मुशरिकाना तरीक़े और अख़लाक़ी व दीनी लिहाज़ से बड़ी बुराइयां और ज़ुल्म ज़्यादतियां हर तरफ़ फैली थीं और हर दिन यह ख़राबियां ज़्यादा और भयानक होती जा रही थीं, उस ज़माने की वहशत, बरबरियत (अनाचार व अत्याचार) और ज़ुल्म पुराने ज़माने की वहशत और ज़ुल्म से कई गुने ज़्यादा बढ़ी हुई थीं यहां तक कि उसकी मिसाल एक बड़े कल्चर की लाश की तरह हो गई थी जो सड़ गई हो, अतः उस कल्चर के निशानात मिट रहे थे और उस पर पतन की मुहर लग चुकी थी, वह देश जहां यह कल्चर बढ़ा और फला फूला पिछले ज़माने में उन्नति की सीमा को पहुंच गया था, जैसे, इटली, फ्रांस वहां तबाही, निराज और मनमानी ज़िन्दगी का दौर दौरा था।

उन देशों में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बअ़द दीनी लिहाज़ से ईसाईयत के क़ुबूल कर लिये जाने पर अपने शुरू ही ज़माने में इन्तिहा पसन्दों की तहरीफ़ (कट्टरपंथियों का अर्थ परिवर्तन) जाहिलों की तावील (अर्थपन) और रूमी नसरानियों की बुत परस्ती का शिकार हो गई थी, हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की सादा व पाकीज़ः तअ़लीम उस तमाम मलबे के नीचे दफ़न हो गई थी, तौहीद और एख़लास (निःस्वार्थता) के साथ अल्लाह की इबादत का नूर गहरे बादलों के अन्दर छुप चुका था।

चौथी सदी के आख़िर में ईसाई सोसाइटी में तसलीस (त्रेश्वरवाद) का अक़ीदः किस तरह सरायत कर गया था उसके बारे में एक ईसाई विद्वान लिखता है :-

"यह अक़ीदह कि एक ख़ुदा तीन सूत्रों (इकाइयों) से मिल कर बना है, ईसाई दुनिया की पूरी ज़िन्दगी में चौथी शताब्दी के अन्त ही में रच बस गया था, जिसको मसीही दुनिया सरकारी और मान्यता प्राप्त अक़ीदे की हैसियत से बहुत दिनों तक मानती रही, यहां तक कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इस अक़ीदे के परिवर्तन तथा इस स्वरूप तक पहुंचने का भेद खुला"।

www.abulhasanalinadwi.org

साउथ एशिया का हाल

मजूस

"ईरान में बहुत पुराने ज़माने से सल्तनत क़ायम थी उन्होंने लगभग भू-मण्डल के एक तिहाई हिस्से पर जो उस समय आबाद था, हुकूमत की, हुकूमत से अमन, अमन से ऐश व इशरत (भोग विलास) पैदा हुआ, अय्याशी ने दिल व दिमाग़ को कमज़ोर कर दिया, और हुकूमत की बुनियादों को हिला दिया।

मानी के मज़बह ने पुराने क़ानून को बिल्कुल ख़त्म कर दिया, औरत और मर्द की तबीअ़तों में आज़ादी और आवारगी पैदा कर दी, मुज़दुक के धन, धरती, नारी, पर से मिल्कियत (स्वामित्व) उठाने के कारण अश्लीलता, अत्याचार, और अवज्ञा का तूफ़ान उठ खड़ा हुआ, मांए अपने बेटों के इश्क़ का शिकार बनीं, ताज और तख़्त की मालिक शहज़ादियां अपने फ़ौजी अफ़सरों के हैवानी भावनाओं से मौत के तख़्ते पर लिटाई गईं, हराम हलाल का फ़र्क़ मिट गया, फरहाद जैसे नमक हराम नौकर अपने बादशाह के दुशमन बन गए और शेरवैह जैसे नालाएक़ लड़के ने हैवानी जोश में बाप का पेट फाड़ कर के शीरीं पर क़ब्ज़ा किया, दुष्ट सिपाही बहराम चोबीं महारानी पोरान दख़्त के इश्क़ की आग का ईंधनबना,[1]

ईरान की सासानी हुकूमत के पूरब में भारत की सभ्यता और शासन की अपनी व्यवस्था थी, बहुत सख़्त शिर्क (अनेकेश्वरवाद) और मानवहीनता का माहौल छाया हुआ था।

बुद्ध धर्म

"हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से छः सदी पहले बुद्ध धर्म की पैदाइश हुई, बुद्ध ने पाली भाषा को अपनाया और संस्कृत के पढ़ने पढ़ाने पर रोक लगा दी थी, वेदमत की जगह बुद्धमत स्थापित हो जाने से प्राचीन धर्म की किताबें नष्ट हो गईं और उनका जानने वाला भी कोई नहीं रहा।

शंकराचार्य ने उन लोगों से कुछ मुनाज़रे (तर्कवितर्क) किये और अपनी विद्या और ज्ञान का प्रदर्शन किया परन्तु वह 33-34 साल की आयू में मर गए, उनकी कोशिश और परिश्रम का परिणाम इतना हुआ कि संस्कृत को फिर दरबार में जगह मिल गई, लेकिन इसके साथ साथ कविता में इतनी रूचि बढ़ी कि वास्तविकता कल्पना और विचारों में छुप गई।

पुरानी किताबों में से एक किताब महाभारत पाई जाती है मगर वह भी चार लोगों की कांट छांट और परिवर्तन की वजह से सुरक्षित न रही बीस हज़ार श्लोक इस किताब में जअ़ली तौर पर सम्मलित कर लिये गए।

---

[1] "रहमतुललिल आलमीन" लेखक क़ाज़ी सुलैमान मन्सूरपूरी, भाग–3,पृ0 70.71

www.abulhasanalinadwi.org

बुद्ध धर्म की उन्नति राजा अशोक के काल तक रही उसके बअ़द बुद्धइज़्म पतन की ओर चला गया, बुद्धइज़्म के सिद्धांत सभ्य दुनिया के साथ साथ नहीं चल सकते थे, भिक्षुकों की बड़ी संख्या बुद्धमत ने तय्यार करदी जिसके कारण इस धर्म का शीघ्र पतन हुआ और देश की सीमा से बाहर भी यह धर्म हो गया, इससे भी इन्कार नहीं कि पुराणमत ने भी इसको निकालने में बड़ा प्रयास किया था।

बुद्धमत के बअ़द देश की हालत बहुत ज़ियादा ख़राब हो गई फ़िस्क़ व फ़ुजूर (दुष्कर्म, पथभ्रष्टता) और फ़वाहिश (निर्लज्जता) का दौर दौरा हो गया, चक्रान्त वाम मार्गी, सहस्र भग, दर्शनान मुक्ती, शाक्त, नन्वार आवक, राम उपास डन्डी आदि बीसियों ऐसे फ़िरक़े (सम्प्रदाय) पैदा हो गए जिन्होंने अख़लाक़ व तहज़ीब को जलाकर राख कर दिया।

यह फ़िरक़े तमाम हिन्दुस्तान में छाए हुए थे, उन्होंने शराब, जुवा, बदकारी को मज़हब का लिबास पहना कर पवित्र क़रार दिया था।

हिन्दुस्तान की यही बदतरीन हालत थी जब सिन्ध और उत्तर पच्छिमी सीमा और दक्षिणी भारत से इस्लाम के मुबल्लिग़ (प्रचारक) पहुंचे, उन्होंने देश को इस्लाम की वास्तविकता और ज्ञान से परिचित कराया, पवित्र आत्मा वालों को एक एहसास हुआ, अधिकांश ने इस्लाम स्वीकार किया और अधिकांश ने अपना सुधार किया"[1]

इतिहासकार लिखते हैं :-

"बौद्ध धर्म जो हिन्दुस्तान और मध्य एशिया में फैला हुआ था वह भी एक ऐसे मूर्ति पूजा वाले धर्म में बदल चुका था कि बुत उसके साथ चलते थे जहां उसके क़ाफ़िले का पड़ाव होता वहां गौतम बुद्ध की मूर्ति स्थापित की जाती और देखते-देखते एक मअ़बूद (पूज्य) तय्यार हो जाता, विद्धानों को इस धर्म और इसके संस्थापक के बारे में अभी तक यह सन्देह है कि आकाश धरती और स्वयं इन्सान के बनाने वाले खुदा के अस्तित्व पर उनका अक़ीदा व ईमान था या नहीं। उनको आश्चर्य है कि ईमान व अक़ीदा के बिना यह महान धर्म कैसे क़ायम रह सका।

हिन्दू धर्म

जहां तक हिन्दू धर्म का सम्बन्ध है वह देवी देवताओं की कसरत (बाहुल्यता) में दूसरे धर्मों से बहुत आगे है, छटी शताब्दी में इस धर्म में मूर्ति पूजा अपनी चरम सीमा पर थी। मअ़बूदों (पूज्य) की तअ़दाद उस शताब्दी में तैंतीस करोड़ तक बताई जाती है, प्रत्येक महान, हैबतनाक (भयावह) अथवा नफ़ा पहुंचाने वाली वस्तु मअ़बूद थी, मूर्ति कला भी अपनी चरम सीमा पर थी और उसमें नई नई बातें निकाली जाती थीं"[2]

---

[1] "रहमतुललिल आलमीन" लेखक क़ाज़ी सुलैमान मन्सूरपूरी, भाग–3,पृ0 70.71
[2] नबी रहमत, पृ0 58

www.abulhasanalinadwi.org

रूमी व ईरानी इलाक़ों की सल्तनतें

हकीमुल इस्लाम हज़रत शाह वली उल्लाह देहलवी जो अपने इल्मी व फ़िक़्ही काम और मक़ाम के लिहाज़ से अपने ज़माने के मुजददिद व इमाम क़रार पाए, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत के ज़माने अर्थात छटी सदी ईसवी के हालात पर नज़र डालते हुए ईरानी व रूमी हुकूमतों के बारे में जिनमें से एक हिन्दुस्तान के पश्चिमी किनारे से शुरू हो कर पश्चिम के पूर्वी भाग तक और दूसरी सीरिया के इलाक़े से शुरू हो कर स्पेन के मुल्क तक फैली हुई थी और उस ज़माने की सबसे बड़ी ताक़तें और महान सभ्यता का केन्द्र समझी जाती थीं, लिखा है कि :-

"उस समय ईरान और रूम अर्थात सासानी और बाज़नतीनी की हुकूमतें जो दुनिया की महान साम्राज्यवाद के रूप में इस भूमन्डल पर छाई हुई थीं, उनको इस ज़मीन पर हुकूमत करने का अवसर कई सदियों से मिलता रहा था और वह दुनिया की लज़्ज़त में मस्त हो रहे थे और आख़िरत (प्रलोक) की ज़िन्दगी सब भूल चुके थे और उन पर शैतान का असर व ग़लबा छा चुका था, ज़िन्दगी के लुत्फ़ व राहत के साधनों में बहुत गहराई तक चले गए थे और उसमें एक दूसरे पर फ़ख़्र (गर्व) कर रहे थे और दुनिया के कोने कोने से विद्वान और हुनर मन्द उनके पास इकट्ठा हो गए थे और वह उनके लिये ज़िन्दगी के बारीक पहलुओं और तक़ाज़ों के लिये रास्ते निकाल रहे थे, जिन पर वह बराबर अमल पैरा हो रहे थे और उस पर एक दूसरे से बाज़ी ले जाना चाहते थे और एक दूसरे से मुक़ाबला कर रहे थे, यहां तक कि यह कहा गया कि उनके बड़े लोगों में से कोई अपनी बड़ाई के प्रदर्शन के लिये कमर में पटका, या सर पर टोपी अगर एक लाख दरहम से कम की लगाता तो उसको लोग आ़र (लज्जा) दिलाते, इसी तरह अगर उसका ऊँचा महल न होता जिसमें फ़व्वारा लगा होता और शानदार हम्माम (स्नानगृह) और बाग़ीचे और उसके पास सवारी के लिये शानदार जानवर न होते और ख़ूबसूरत दिल कश (हृदयाकर्षक) ख़िदमतगार न होते और खाने की क़िस्मों (विराइटीज़) में फैलाव न होता और लिबास में जमाल और वक़ार (सुन्दरता और प्रतिष्ठा) का अन्दाज़ न होता, इसी तरह और चीज़ें जिनके वर्णन से बात लंबी होगी अगर न होतीं तो उसको महान और महत्वपूर्ण आदमी न समझा जाता, और यह चीज़ें उनकी ज़िन्दगी की बुनियादों में सरायत कर गई थीं जो उनके दिलों से निकल नहीं सकती थीं सिवाए इसके कि वह दिल चीर दिये जाएं या काट डाले जाएं। यह ऐसी बीमारी पैदा हो गई थी जिसका कोई इलाज नहीं था वह बुरी तरह इसमें फँस गए थे और जकड़ गए थे, उनके समाज का कोई वर्ग छोटा बड़ा, अमीर, ग़रीब, कोई इस बीमारी से सुरक्षित नहीं था,

www.abulhasanalinadwi.org

यह मुसीबत सब पर छा गई थी और उसने उनको मज़बूती से पकड़ लिया था और उनको उससे बचने की कोई सूरत नहीं थी, उसने उन पर ऐसी परेशानिं और फ़िकरें ग़ालिब (प्रभत्वशाली) कर दी थीं कि जिनका कोई सिरा नज़र नहीं आता था, इस लिये उनके सारे तक़ाज़े बग़ैर इस के हासिल नहीं हो सकते थे कि ज़बरदस्त माल व दौलत ख़र्च किया जाए और यह माल व दौलत हासिल नहीं हो सकता था मगर टेक्स पर टेक्स लगाने से जो काश्तकारों और ताजिरों और उन्हीं जैसे लोगों पर लगाया जाता था और उसका दाएरा (क्षेत्र) उन पर बराबर तंग किया जा रहा था और वह अगर उनके अदा करने से मजबूर होते तो उन पर ज़बरदस्ती की जाती थी और उन पर मुसीबत ढाई जाती थी, वह उनको गाय बैल की तरह अपने इस्तेमाल में लाते थे कि जिनको पानी ढोने और खलियान में काम करने या खेतियां काटने के लिये इस्तेमाल किया जाता और जिनको इसी लिये रखा जाता है कि तरह तरह की इन्सानी ज़रूरतों में उनसे काम लिया जाए और फिर उनको मेहनत के काम से एक घड़ी भी नहीं छोड़ा जाता था वह इस हाल में हो गए थे कि उनके सामने आख़िरत की राहत और कामयाबी का कोई मसला नहीं था, पूरा पूरा मुल्क ऐसे लोगों से ख़ाली हो गया था जिनको अपने दीन का ख़्याल हो जो लोग उनके पास आते जाते थे वह उन बड़ों के रंग ढंग की नक़ल करते थे और अगर ऐसा न करते तो उनके यहां कोई इज़्ज़त और सम्मान न होता और उन का कोई ख़्याल भी नहीं किया जाता।

आ़म इन्सान अपने हाकिम के मोहताज हो के रह गए थे उनके सामने हर वक़्त हाथ फैलाए रहते थे, कभी इस तअल्लुक़ से कि वह लड़ाई और जंग के कारिन्दे हैं, और देश की प्रबंध व्यवस्था के ज़िम्मेदार हैं और वह उन्हीं के तरीक़े की नक़ल करते थे, इसका मक़सद ज़रूरत पूरी करना न था बल्कि अपने बड़ों के तरीक़े पर चलना था, कभी इस तअल्लुक़ से उनसे जुड़े होते थे कि वह शाएर (कवि) हैं और बादशाहों का तरीक़ा उनको इनआ़म एकराम (पुरस्कार और सम्मान) देने का है और कभी इस तअल्लुक से कि वह संसार त्यागी क़िस्म के लोग हैं कि उनकी परेशानी की फ़िक्र बादशाह के लिए करना उचित समझा जाता था और उनमें से कोई किसी को परेशान भी करता था और उनकी आमदनी का ज़रीअः बादशाहों की सोहबत एख़तियार करने में और उनके साथ तअ़ल्लुक़ क़ाएम करने में और उनके साथ अच्छी बातें करने में और चापलूसी में होता था, और यह सब चीज़ें ज़िन्दगी का फ़न (आर्ट) बन गई थीं कि जिसमें उनकी अक़्ल (बुद्धि) सोच, चिन्तन भांति भांति के रूप धारण करती थीं और इसमें उनका सारा समय बेकार होता था, इन सबका नतीजा यह हुआ था कि इस तरह के

www.abulhasanalinadwi.org

कामों से लोगों के दिलों में बहुत घटिया विचार पैदा हो रहे थे और अच्छे विचारों और उच्च स्तर की नैतिकता से लोग हट गए थे"।[1]

अरबद्वीप

इधर अरबों का हाल शिर्क, कुफ्र व गुमराही में किसी से कम न था, वह अपने को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दीन पर कहते थे, लेकिन उसके ख़िलाफ शिर्क और सख़्त बेदीनी में मुब्तला (ग्रस्त) थे, जाहिल थे और इल्म से दूर थे इसकी वजह से तमद्दुन से आने वाली ख़राबियां उनमें नहीं थीं, इस तरह वह फ़ितरी (स्वाभाविक) मिज़ाज रखते थे और केवल अपने अपने ख़ानदान की परमपराओं के पाबन्द थे, अपने पूर्वजों के रीति-रिवाज को मूल आधार समझते थे, वह जिस बात को पसन्द करलें उस पर जम जाते थे, अपनी बात और सम्मान पर अड़ जाते थे, जान ले लेते और जान दे देते थे, वह मुशरिक थे बुत परस्त थे, जुल्म व हयासोज़ी (लज्जाहीन) के जो तरीक़े उनमें फैल गए थे उन पर जमे हुए थे।

इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता कि बुत परस्ती उस ज़माने में पूरी दुनिया में फैली हुई थी अटलांटिक महासागर से प्रशान्त महा सागर तक दुनिया बुत परस्ती में डूबी हुई थी ईसाइयत, सामी धर्म वाले, बुद्धमत, सानो बुतों (मूर्तियों) के आदर सम्मान में एक दूसरे से आगे बढ़ जाने में प्रयत्नशील थे।

विश्वव्यापी स्तर पर इन्सानों की पस्ती (पतन) और बिगाड़

सारांश यह है कि मानव इतिहास में यह स्थान ऐसा आ गया था कि पूरी मानवता आत्म हत्या के रास्ते पर तेज़ी के साथ चल पड़ी थी, इन्सान अपने पैदा करने वाले मालिक को भूल चुका था और स्वयं अपने आपको और अपने भविष्य और परिणाम को भुला दिया था उसके अन्दर भलाई और बुराई गुण और अवगुणा के बीच अन्तर करने की क्षमता नहीं रह गई थी। ऐसा मअ़लूम होता था कि इन्सानों के दिल और दिमाग़ किसी चीज़े में खो चुके हैं, उनको दीन व आख़िरत (परलोक) की ओर सर उठा कर देखने की भी फ़ुरसत नहीं और रूह व क़ल्ब (आत्मा व हृदय) की ग़िज़ा, आख़िरत की कामयाबी, इन्सानियत की ख़िदमत और हाल को सुधारने के लिये उनके पास एक लमहा (क्षण) ख़ाली नहीं, कभी कभी पूरे देश में एक व्यक्ति भी ऐसा नज़र न आता था जिसको अपने दीन की चिन्ता हो, जो एक खुदा को पूजता हो और किसी को उसका शरीक न ठहराता हो, जिसके अन्तः करणा में मानवता के लिए दर्द हो तथा उसके अन्धकारमय भविष्य के प्रति बेचैनी हो यह स्थिति अल्लाह तआ़ला के इस इरशाद की हूबहू तस्वीर थी कि :-

---

[1] हुज्जतुलाहिल बालिग़ा, भाग प्रथम, अध्याय "इक़ामतुल इरतिफ़ाक़ाल व इसलाहुर्रुसूम"

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद :- जल और थल में लोगों के कर्म के कारण फ़साद फैल गया है, ताकि खुदा उनको उनके कुछ एक कर्मों का मज़ा चखाए, अजब नहीं कि वह बाज़ आजाएं।[1] (सूरः रूम-41)

शाह वलीउल्लाह हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत से पहले दुदनिया के मज़हबी, तमद्दुनी (सांस्कृतिक) और सामाजिक हालात का जाएज़ा लेने के बाद आलमी (विश्वव्यायी) नबी की ज़रूरत पर रौशनी डालते हुए लिखते हैं :-

"यह मुसीबत जब हुत बढ़ गई और यह मर्ज़ सख़्त होता चला गया तो अल्लाह तआ़ला की उन पर बहुत नाराज़गी हुई और अल्लाह के मुक़र्रब (सम्मानित) फरिश्ते भी उनसे नाराज़ हुए और अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी उस मर्ज़ के इलाज के सिलसिले में उस मर्ज़ की जड़ ही काट देने की हुई और इसी लिये ऐसे नबी को भेजा जिसका पालन पोषण शिक्षा के रास्ते से नहीं हुआ था और वह उम्मी (अनपढ़) था, (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और न वह ईरानी विद्वानों से मिला था और न वह रूमी विद्वानों से मिला था और न उसने उन लोगों के तौर तरीक़े (जीवन पद्धति) को अपनाया था, और अल्लाह तआ़ला ने उस नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक तराज़ू का अन्दाज़ अता फ़रमा दिया था, कि जिस से वह अच्छे तौर तरीक़े को जो अल्लाह को पसन्द हैं, बुरे तौर तरीक़े से जो अल्लाह को नापसन्द हैं, जुदा, अलग करता था और अल्लाह तआ़ला ने उसकी ज़बान को बोलने की वह ताक़त दी जिस से वह बुरे कामों और बुरी आदतों की निन्दा करता था, जैसे रेशम आदि के कपड़े पहनना, सोने चांदी के बरतन इस्तेमाल करना, घरों को तस्वीरों और फूल बूटों से सजाना, अल्लाह के अलावा दूसरों की बड़ाई ख़त्म करके अल्लाह की बड़ाई क़ायम की और यह बात तय कर दी कि अब किसरा के ख़ातिमे के बाद फिर किसरा नहीं पैदा होगा, और क़ैसर के ख़त्म होने से नया क़ैसर नहीं पैदा होगा।"[2]

महान नबी की ज़रूरत

अल्लाह तआला के इल्म में मानव संसार अब जिस मरहले में दाख़िल होने जा रहा था वह मरहला दुनिया के कोने कोने के एक दूसरे से क़रीब आजाने और वैज्ञानिक व व्यवहारिक अनुभवों से अधिक से अधिक लाभ उठाने का मरहला था, अतः उस आख़िरी नबी को उन हालात व कैफ़ियात के साथ मबऊस (अवतारित) फ़रमाया और उसको जो आसमानी किताब अता की वह उन पहलुओं की जामेअ़ रहनुमा बनी, और उस किताब की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी खुद ली,

---

[1] नबी रहमत, पृ0 58

[2] हुज्जुललाहिलबालिग़ा, प्रथम भाग

www.abulhasanalinadwi.org

ताकि इन्सानों के दुष्ट स्वभाव लोग उसमें कभी ज्यादती न कर सकें और नबी की नबुवत का सिलसिला जिस तरह क़यामत तक हो उसी तरह उस किताब की सच्ची रहनुमाई भी क़यामत तक हो उसी तरह उस किताब की सच्ची रहनुमाई भी क़यामत तक हो और इन दोनों की सरपरस्ती में उम्मते मुस्लिमः के सामने राहे हिदायत (सत्य मार्ग) बिना किसी तबदीली (परिवर्तन) के चमकता रहे और जो वास्तव में हिदायत (सत्यमार्ग) का चाहने वाला हो वह हिदायत पा सके और जो गुमराही (पथ भ्रष्ठता) को अपनाए वह वास्तव में गुमराह (पथ भ्रष्ठ) हो।

अल्लाह तआ़ला के निश्चित प्रबंध और ज्ञान में दुनिया का जो नया दौर प्रारंभ होने वाला था उसके लिये भी अल्लाह तआ़ला का यह फैसला हुआ कि इस आख़िरी और अन्तर्राष्ट्रीय और क़यामत तक रहने वाली नबूवत के हामिल (भारवाहक) नबी के ज़रिये शुरू हो और उसकी उम्मत अर्थात उसके अनुयायी उसको दुनिया में फैलाएं, अतः उस नबी को दी हुई किताब के ज़रिये और उस नबी की हिदायत (आदेशों) और स्वयं उसके व्यावहारिक जीवन द्वारा दुनिया का वह रूख़ बना, जिसकी बिना पर दुनिया की ज़िन्दगी में इल्म का चलन हुआ और उसका निज़ाम (प्रबन्ध) आलमी (सांसारिक) बना यह निज़ाम आलमी (विश्वव्यापी व्यवस्था) वह निज़ाम नहीं जिसको दुनिया की स्वार्थी और मनमानी करने वाली ताक़तों ने अपनी सत्ता को फैलाने के लिये आलमी निज़ाम (सांसारिक प्रबन्ध) का नाम दिया है, यह इस्लामी और नबवी निज़ाम (प्रबन्ध) था, जिसमें भलाई को फैलाना, और हर छोटे बड़े, ग़रीब अमीर ताक़तवर, कमज़ोर, बेसहारा सबको समान सहूलत, समान अधिकार, जीवन के समान साधन प्रदान करने और सबको एक ही तरह एक अल्लाह का अज्ञाकारी बनाने का आलमी निज़ाम (सांसारिकी प्रबंध) है जो सारे संसार के पालनहार अल्लाह की ओर से उसके समस्त बन्दों के लिये अपने अन्तिम नबी द्वारा प्रदान किया है और इस आयते क़ुरआनी की तफ़सीर (व्याख्या) है कि (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमने तुम को सारे जहानों के लिये रहमत बना कर भेजा और यह तुम्हारी उम्मत एक उम्मत है और मैं तुम सब का रब हूँ, लिहाज़ा मेरी ही इबादत करो।

अरब प्रायद्वीप का हाल बेअसते मुहम्मदी के समय

बेअसते मुहम्मदी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सन्देष्टा बनाया जाना) के समय दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के पूर्व वर्णित हालात और फिर अरब प्रायद्वीप के वासियों की अशिक्षित और असभ्य आबादी को जिस पथरीली और सूखी ज़मीन में ज़िन्दगी गुज़ारना पड़ रहा था उनमें उस नए मबऊस होने वाले नबी को कितनी अहम (महत्वपूर्ण) ज़िम्मेदारी पूरी करनी थी, यह एक बहुत साहसी और उच्च कोटि के आध्यात्मिक इन्सान का काम था, एक ओर अरब

www.abulhasanalinadwi.org

क़ौम को जो अनपढ़ और असभ्य होने की बिना पर अपनी बात पर अड़ने वाले और सख़्ती से जमने वाले मिज़ाज के थे, जिन आदतों में वह पक्के हो गए थे, उन आदतों से उनको छुड़ाना और उनका सुधार करके ऐसे उच्च स्थान पर पहुंचाना जहां से वह नेतृत्व के योग्य हो सकें, फिर उनके द्वारा दूसरी क़ौमों को सत्य मार्ग पर लाना, उनमें वह सभ्य क़ौमें भी थीं जो अरबों को देहाती और पिछड़ा वर्ग समझ कर उनका अपमान करती थीं और उनको निगाह में नहीं लाती थीं, इसी रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह मुहिम अन्जाम देनी थी, जो कि नाक़ाबिले तसव्वुर और अज़ीम तरीन काम था, इसके लिये अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इन्तिख़ाब फ़रमाया, फिर उनके काम के हर मरहले में अपनी हिदायत (आदेश) और रहनुमाई (मार्गदर्शन) "वह्य" (ईशवरीय वांणी) के ज़रिये फ़रमाई। अल्लाह रब्बुल आलमीन अकेला समस्त संसार का बनाने वाला और पूरी सृष्टी का रचयता है, वह भली भांति जानता है कि उसका कौन बन्दा क्या और किस सीमा तक अपनी ज़िम्मेदारी निभाएगा, अल्लाह तआ़ला के यह इन्तिख़ाब किये हुए (चयनित) नबी अरब क़ौम के ही एक फ़र्द (व्यक्ति) थे, लेकिन अल्लाह तआला के बनाए हुए उसके द्वारा चयनित थे। अल्लाह तआला फरमाता है :- "कि अल्लाह तआ़ला ही जानता है कि कहां वह अपनी पैग़म्बरी के काम को रखे"। बहरहाल उस महान नबी के कारनामे जानने से पहले उसकी क़ौम को और दुनिया के जिस भूखण्ड में वह क़ौम आबाद थी उसको समझ लिया जाए ताकि उसके काम की महत्तवता स्पष्ट हो सके।

अरब प्रायद्वीप में इन्सानी आबादी

अरब, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम पर आए हुए अज़ाब से बचे हुए लोगों की औलाद दर औलाद से थे और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बाद दुनिया में इन्सानी आबादी केवल उनकी उसी अज़ाब से सुरक्षित रहने वाली औलाद से ही बनी थी, इतिहास से मालूम होता है कि उनके बज़ाहिर तीन बेटे ऐसे थे जो आगे आने वाले इन्सानों के मूरिस (पूर्वज) हुवे, उनमें एक "साम"थे उनकी औलाद आम तौर पर उस इलाक़े में जिस को मध्य पूर्व कहा जाता है, जिसमें ईराक़, अरबद्वीप, और मिस्र है, फैली, दूसरे "ह़ाम" थे उनकी औलाद अफ़रीक़ा और दूसरे दक्षिणी इलाक़ों में बसी, तीसरे "याफ़िस" थे उनकी औलाद दुनिया के उत्तरी व पूरबी इलाक़ों में बसी। साम की औलाद में आराम हुए, उनके क़बीले (गोत्र) अरब के विभिन्न इलाक़ों में फैले। और सारांश यह कि वह सब गुमराहियों (पथ भ्रष्टता) में पड़ कर अपने नबियों की बात न मानने पर समय समय पर अज़ाबों के आने से तबाह हुए, उनके अलावा दुसरे क़बीलों में

एक क़बीला "क़हतान" था जो अरब प्रायद्वीप के दक्षिणी यमन आदि में बसा, और उसकी एक शाख़ ईराक़ में रही, "कहतान" की ही औलाद में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ख़ानदान हुआ और वह इराक़ ही में रहा और उनमें उनके सुधार के लिये हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम नबी मुक़र्रर किये गए। [1]

हज़रत इब्राहीम और उनकी औलाद

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बेटे साम की औलाद में "अरफ़खशज़" की नस्ल से थे [2] वह इराक़ में कुलदानी ख़ानदान के एक बड़े व्यक्ति के बेटे थे, यह ख़ानदान सितारा परस्त मुशरिक खानदान था[3] बचपने में अपने खानदान और अहले वतन की बुत परस्ती और शिर्क उनको अजीब सा मालूम हुआ, कि यह लोग सितारों (नक्षत्रों) को खुदा समझ कर उनकी अलामतें (चिन्ह) बुतों की सूरत में बनाकर इबादत (पूजा) करते हैं यह सितारे ऊपर सही लेकिन यह खुदा कैसे हो सकते हैं उन्होंन ने पहले सितारों पर ग़ौर किया, फिर चाँद पर फिर सूरज पर और उनका दिल नहीं माना, उन्होंने ख़ुदा को उससे ऊँचा महसूस किया और इसका ख़्याल करके अपनी बराअत (निर्दोष) की दुआ की और दुआ क़बूल हुई, और अल्लाह की बड़ाई फिर वहदानियत (ख़ुदा एक है) उनके दिल में बैठ गई [4] फिर वह भी ख़ुदा की तरफ से नबी मुनतख़ब (चयनित) हुए और उन्होंने बुतों को तोड़ डाला और अपनी क़ौम को तौहीद (ऐकेश्वरवाद) की दअ़वत दी [5] इस पर क़ौम बहुत नाराज़ हुई और उनको आग में डाला, लेकिन अल्लाहने उनको आग में जलने से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रखा, फिर वह वतन छोड़ कर शाम (सीरिया) के इलाक़े में आ गए और फिलिस्तीन में क़याम (स्थान) किया, उनके साथ उनके भतीजे लूत अलैहिस्सलाम भी आए और उन्होंने अपने अपने इलाक़े में इस्लाह (सुधार) और अल्लाह की ओर बुलाने का काम किया।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के एक बेटे इसहाक़ हुए, उनके एक बेटे यअ़क़ूब अलैहिस्सलाम हुए जिनका नाम इसराईल भी था, उनकी जो नस्ल (शाख़) हुई वह पहले शाम (सीरिया) में फिर मिस्र में बसी, और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दूसरे बेटे इस्माईल हुए जिनको उनके पिता हज़रत इब्राहीम

---

[1] अल–कामिल फ़ित्तारीख़, 1/781

[2] अल–बिदायह वननिहायह, 1/139, अल–मुफ़स्सल फ़ित्तारीखिल अरब क़बलल इस्लाम, भाग प्रथम,
लेखक डॉ0 जव्वाद अली,

[3] अल–बिदाया वननिहाया, 140

[4] अल–बिदाया वननिहाया, 140

[5] अल–बिदाया वननिहाया, 140

www.abulhasanalinadwi.org

अलैहिस्सलाम ने अरबद्वीप के मध्य क्षेत्र के मक्का मुकर्रमः के बनजर इलाके में जहां न पानी न हरयाली उनकी माँ के साथ बल्कि बचपने की हालत में अपने रब के हुक्म पर ले जा कर ठहरा दिया, वहां बाद में यमन के क़बीले "क़हतान" की शाख़ क़बीला "जरहम" भी आकर बस गया और बाद में हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम का उनसे रिश्ता होने पर हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का ख़ानदान बना, उस ख़ानदान की शाखें नज्द व हिजाज़ वग़ैरह में बसीं, उनमें हिजाज़ में ठहरने वालों के मूरिस (पूर्वज) मुज़र नामी शख़्स थे और उन्हीं की औलाद में आगे चल कर क़ुरैश हुए।

मक्का मुकर्रमः की आबादी हज़रत इस्माईल से शुरू हुई थी, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उनको बचपने ही में मक्का के बेआब व गियाह (बिना पानी व हरयाली) मैदान में उनकी मां के साथ जाकर अल्लाह के हुक्म से ठहरा दिया था जो कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की अज़ीम (महान) क़ुरबानी थी कि अपने दूध पीते बच्चे और उनकी माँ को ज़िन्दगी के किसी क़ाबिले एतिबार (भरोसा योग्य) सहारे के बगैर मक्का जैसी बनजर बिन पानी और हरयाली, आबादी से खाली जगह ठहराया और अपने मालिक का आज्ञा पालन बिना झिझक किया, यह जगह वह थी कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम भी यहां आ चुके थे और यहां मस्जिद की बुनियाद रखी थी जो बाद में मिट गई थी, क़ुरआन मजीद में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का बयान इस तरह आया है :-

अनुवाद - "ऐ हमारे पालनहार! मैंने अपनी कुछ औलाद इस बेखेती की घाटी में तेरे रहमत वाले घर के पास बसाई है, ऐ हमारे पालनहार यह इस लिये कि वह नमाज़ क़ायम रखें, अतः तू कुछ लोगों के दिलों को झुका दे और उन्हें फलों और पैदावार की रोज़ी प्रदान करे ताकि यह शुक्र गुज़ारी करें" (सूरः इब्राहीम-37)

उस बंजर इलाके में अल्लाह तआला की विशेष कृपा से माँ और उनका दूध पीता बच्चा दोनों ज़िन्दा रहे, फिर जब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम कुछ बड़े हुए और स्वस्थ्य हुए, वह माँ-बाप के बड़े आज्ञाकारी थे, हज़रत इब्राहीम को हुक्म हुआ कि हज़रत इस्माईल को अल्लाह की राह में कुर्बान करदें, इस क़ुरबानी पर भी अमल हज़रत इब्रहीम ने अपनी तरफ़ से कर दिया। अपनी आंख पर पट्टी बांध कर छुरी चलादी, लेकिन अल्लाह को सिर्फ़ इम्तिहान लेना था, इसी लिये हज़रत इब्राहीम की छुरी उनको नहीं लगी, बल्कि एक मेंढे को अल्लाह तआला ने भेज दिया और इब्राहीम की छुरी उसकी गरदन पर लगी और वह ज़बह हुआ, और अल्लाह तआला ने उसको हज़रत इस्माईल की ही क़ुरबानी मान लिया और हज़रत इब्राहीम को अपना सबसे बरगुज़ीदा और मुख़लिसतरीन (सर्वश्रेष्ठ एवं सत्यप्रिय) बन्दे के रूप में स्वीकार कर लिया और उनको अपना

www.abulhasanalinadwi.org

मित्र क़रार दिया[1] और फिर उन को और उनके बेटे इस्माईल को हज़रत आदम की शुरू की हुई मस्जिद की जगह में काबा के निर्माण का आदेश दिया और इस तरह वह दुनिया में अल्लाह के पहले घर के तौर पर स्थापित हुआ और अल्लाह तआ़ला की इबादत व इताअ़त (आज्ञापालन) का सर्व प्रथम और वास्तविक केन्द्र बना और उसको क़यामत तक के लिये अल्लाह तआ़ला की ओर से तौहीद (एकेश्वरवाद) का घर और सत्य धर्म का केन्द्र क़रार दे दिया गया, हज़रत इस्माईल की औलाद बढ़ती और फैलती रही और उनमें से मक्का मुकर्रमः में आबाद रहने वाले, अल्लाह के उस घर की हिफ़ाज़त को अपना फ़रीज़ा (कर्तव्य) समझते रहे।

हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम की औलाद में कई नस्लों के बाद अदनान नामी व्यक्ति हुए, उनकी औलाद "मअ़द", "नज़ार" फिर आगे चल कर "मुज़र" और रबीअः हुए, रबीअः पूर्वी क्षेत्र नज्द में जाकर बस गए और "मुज़र" मक्का ही में रहे। उनमें आगे चलकर क़ुरैश हुए, और अल्लाह के घर की तवल्लियत (प्रबन्ध) उनके पास आई, अल्लाह का घर, मुक़द्दस (पवित्र घर) समझा जाता रहा और सारे अरब के आस पास के इलाक़े उसका हज करने आते और क़ुरैश उनके ठहरने का इन्तिज़ाम करते, अल्लाह की तरफ़ से उस घर की और उसके तअल्लुक़ (संबंध) से पूरे शहर की हिफ़ाज़त (सुरक्षा) होती रही।[2]

मक्का मुकर्रमा (पवित्र मक्का)

मक्का मुकर्रमा, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के वहां ठहराए जाने से पहले बिल्कुल एक निर्जन स्थान और बंजर ज़मीन का भाग था, मक्का दो सूखे पहाड़ों के बीच की घाटी थी, घाटी के आस पास जब बारिश होती तो घाटी पानी की गुज़रगाह बन जाती थी, बंजर और ख़ुश्क (शुष्क) होने के बावजूद उस जगह पर अल्लाह का ख़ास (विशेष) फ़ज़्ल व करम (दया व कृपा) था, इन्सान के प्रारंभिक काल से अल्लाह तआला की ओर से उस ज़मीन का इन्तिख़ाब (चयन) हो चुका था, और वहां प्रथम इन्सान हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा की इबादत की जगह बना दी थी, कुछ मालूमाती ज़राए से यह बात सामने आती है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ज़मीन पर आमद (आगमन) के समय उनका और उनकी पत्नी हज़रत हव्वा अलैहिस्सलाम का निवास मक्का के क़रीब हुआ, यदि पूरी इन्सानी आबादी के भूमन्डल को देखा जाए तो मक्का ज़मीन के बिलकुल मध्य में है, जिस प्रकार इन्सान के शरीर में नाफ़ (नाभ) को जो स्थान प्राप्त है उसी प्रकार

---

[1] अल–कामिल फ़ित्तारीख, 1/112

[2] अल–रौज़तुल अनुफ़ 1/7–8, अल–बिदाया वन–निहाया 2/198–210

www.abulhasanalinadwi.org

इन्सानी आबादी के भूमन्डल के मध्य में मक्का को वह स्थान प्राप्त है, इस तरह यह मक्का इन्सानी आबादी का केन्द्र है और इसको अल्लाह तआ़ला ने अपनी इबादत गुज़ारी का केन्द्र बना दिया, चारों ओर से नमाज़ पढ़ने वाले इसी ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं और उसके मरकज़ (केन्द्र) में अल्लाह का वह घर है जो उसकी ज़मीन पर उसकी इबादत का पहला मुकाम (स्थान) है, और वहां पहुंच कर उसके इर्द गिर्द इबादत के तौर पर तवाफ़ (परिक्रमा) किया जाता है।[1]

अतः अल्लाह तआला के अन्तिम नबी को भी जिसकी शरीअ़त (धर्मशास्त्र) और आदेशों को दुनिया के अन्तकाल तक प्रचलित रहना है वहीं पैदा किया गया, और ऐसे कुटुम्ब में पैदा किया गया जो पूरे अरब क्षेत्रों के निवासियों की दृष्टि में सर्वश्रेष्ठ कुटुम्ब और कुटुम्ब के अन्दर भी सर्वश्रेष्ठ शाखा में आपको पैदा किया गया, मक्का की जनसंख्या जो अन्त में केवल कुरैश के क़बीले पर आधारित थी आपके सबसे बड़े दादा (पितामह) कुसई बिन किलाब की अध्यक्षता में एक शक्तिशाली लोकतंत्र व्यवस्था पर आधारित मानी जाती थी, और वहां के धार्मिक और सांसारिक दोनों प्रकार के कामों को निपटाने के लिये एक अच्छा प्रबन्ध व्यवस्था थी, जिसकी व्यवस्था की ज़िम्मेदारियाँ परिवार की विभिन्न शाखाओं पर बाँट दी गई थीं, इस प्रकार लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित हो गई थी जो अपने ज़माने के प्रचलित व्यवस्था के बीच उजागर व्यवस्था थी जबकि उस समय दुनिया के शिक्षित और सभ्य राष्ट्रों में साम्राज्यवाद और डिकटेटरशिप का चलन था, ऐसे ही ज़माने में उन्होंने एक लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित की जो एक छोटे से क्षेत्र में थी और बहुत महत्वपूर्ण थी, इस लोकतांत्रिक व्यवस्था को उनकी औलाद में क़ायम रखा गया, और कुसई का घर इस का केन्द्र बना जिसकी हैसियत एक तरह से लोकतांत्रिक पारलीमेन्ट की सी थी, इस व्यवस्था के विभिन्न कामों में अल्लाह के उस घर की ज़ियारत (दर्शन) करने वालों, और आने वालों की राहत और मेहमानी की भी ज़िम्मेदारी थी जो हुज़ूर सल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूर्वजों को मिली थी और इस को उन बुज़ुर्गों ने भली-भांति निभाया जिसकी वजह से पूरे अरबद्वीप में उनकी महानता और बड़ाई लोगों के दिलों में बैठ गई।[2] हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब को इस सिलसिले में बड़ी विशेषता प्राप्त थी और उन्होंने अपनी ज़िम्मेदारी को बहुत अच्छे ढंग से पूरा किया।[3]

---

[1] मक्का की तफ़सील के लिये देखियेः तारीख़ मक्का, अज़रक़ी 1/38, अल–मुफ़स्सल फ़ी तारीखिल अरब क़बलल इस्लाम।

2 अनसाबुल अषराफ़ बलाज़री

3 अल–रौज़तुल अनुफ़ 1/89

www.abulhasanalinadwi.org

ज़मज़म कुवें की तलाश

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब ने जहां और चीज़ों की फ़िक्र की, जिसका इशारा उनको सपने में मिला था, कि वह उस मुबारक चश्मा (स्रोत) ज़मज़म को जो कुछ समय पश्चात वर्जित होकर ऊपर से बन्द हो गया था, दुबारा ज़मीन के अन्दर से बाहर लाए[1] वह जब इसमें कामयाब हुए तो इस मुबारक काम का सेहरा उनके सर बन्धने को देख कर ख़ानदान की दूसरी शाख़ों ने उसको सबके साझे का क़रार देकर अपना हक़ जमाया, उनके झगड़ा करने पर वह सब लोग और आप उसके लिये शाम (सीरिया) के इलाक़े की तरफ़ किसी ज्योतिषी के पास जाकर फ़ैसला कराने के लिये तय्यार हुए, लेकिन सफ़र के दौरान अब्दुल मुत्तलिब के साथ अल्लाह तआला की तरफ़ से ऐसी मदद होती नज़र आई कि अब्दुल मुत्तलिब की विशिष्ट हैसियत सबके सामने खुल कर आई, जिनको अपनी उम्र के अन्तिम ज़माने में उस आख़िरी नबी के बचपने की सरपरस्ती (संरक्षता) करने की सआदत (सौभाग्य) मिली, और फिर उस नबी आख़िरूज़्ज़मां के जरिये मक्का और उसमें आदि काल से सुनिश्चित इबादत खाना को अन्तर्राष्ट्रीय और क़ियामत तक इबादत का केन्द्रीय स्थल क़रार देने का कर्तव्य पूरा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

"निसंदेह इबादत के लिये पहला घर जो मानव के लिए बनाया गया वही है जो मक्का में है, बरकत वाला और सर्वथा मार्गदर्शन, संसार वालों के लिए"। (आले-इमरान : 96)

फिर अल्लाह के उस आख़िरी नबी को जो उन्हीं अब्दुल मुत्तलिब के यतीम (अनाथ) पोते थे, संसार के पालनकर्ता द्वारा नबी आखिरूज़्ज़मां का उच्च स्थान प्रदान हुआ, और उसको परवरदिगार आलम (दुनिया के पालनहार) की इबादत और इताअ़त (उपासना और आज्ञा पालन) की पूरी व्यवस्था और लागू करने का काम सुपुर्द किया गया कि जिसकी बुनियाद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने प्यारे दूध पीते बच्चे और उनकी मां को बे यार व मददगार वहां ठहरा कर रखी, और जिसको उनकी औलाद ने अपनी इच्छाओं और दुनयावी उद्देश्यों को सामने रखते हुए लगभग उनकी इच्छाओं और कामनाओं को दबा दिया था, और अपने एक रब की पासदारी (संबंध) को अनगिनत खुदाओं की पूजा करने के पीछे छुपा और दबा दिया था।

मक्का की भौगोलिक और प्राकृतिक स्थिति

मक्का मुकर्रमा जहां सबसे पहले सत्य का सन्देश दिया गया, और नबी आख़िरूज़्ज़मां की जन्म भूमि थी दो पहाड़ी श्रंखलाओं के बीच की घाटी मे स्थित

1—अल—रौज़तुल अनुफ़ 1/89

www.abulhasanalinadwi.org

है, समुद्र तल से उसकी ऊँचाई लगभग साढ़े तीन सौ फ़िट बताई जाती है, इसका आक्षांश २१ अंश दक्षिणी और देशान्तर ३९.५ अंश पूर्वी है, समुद्र तट से लगभग ७५ किलो मीटर पूरब में स्थित है, "बक्का" "मक्का" "उम्मुल क़ुरा" और "अल-बलदुल अमीन" इसके नाम हैं यह जिस घाटी में आबाद है वह पथरीली और तंग घाटी है, इसमें शहर मक्का मुकर्रमा पूरब से पच्छिम तक लगभग कई मील में फैला हुआ है, शहर का फैलाव भी दो मील का है, इसकी घाटी "अब्तह" और "बतहा" भी कही जाती है, मक्का की यह घाटी दो पहाड़ी श्रंखलाओं से घिरी हुई है, जो पच्छिम से शुरू होकर पूरब तक चले गए हैं, उनमें एक श्रंखला उत्तरी है और एक दक्षिणी, इन दोनों सिलसिलों को "अख़शबान" कहते हैं।[1]

शहर में पानी का एक ही चश्मा (स्रोत) है जिसको "ज़मज़म" कहते हैं, इसके अलावा यहां पानी का कोई ख़ास कुवां नहीं है, पानी की कमी की वजह से यहां की ज़मीन में कुछ खेती नहीं हो सकती थी, अब दो एक नहरें शहर में दूसरी जगह से ले आई गई हैं, उनकी वजह से पानी की सहूलत हो गई है, उसकी मदद से कुछ घास और पौधे लगा दिये गए हैं, अब्बासी काल में "ताएफ़" के करीब से यहां एक नहर ले आई गई है, यह नहर, नहर जुबैदह कहलाती है, यह अब्बासी ख़लीफ़ा अमीन की मां जुबैदा ने बनवाई थी और बाद में उसको तरक़्क़ी दी जाती रही, अब पानी पहुँचाने के दूसरे साधन भी प्रयोग किए गए हैं, जिनकी वजह से अब पानी की क़िल्लत नहीं रही, मक्का चूंकि एक घाटी में है इस लिए बीते दिनों में बड़े सैलाबों से उसमें पानी भर जाया करता था और "हरम शरीफ़" में बहुत पानी जमा हो जाता था, अब हुकूमत ने "मुअल्लात" से पहले एक बन्ध बना दिया है, और उसके अलावा एक अन्डर ग्राउन्ड नाला भी बना दिया है जिससे शहर का गन्दा पानी और सैलाब का पानी बह कर मक्का के ढलान "मिसफ़लह" की ओर से निकल जाता है।

पहाड़ों के बीच विशेष रूप से घिरे होने की वजह से मक्का मुकर्रमा में गर्मी ज़्यादा और सर्दी कम होती है, शहर का मौसम गर्मियों में सख़्त होता है और बारिश केवल जाड़ों में होती है, उसकी वार्षिक मात्रा चार पांच इंच से ज़्यादा नहीं, इस लिये गर्मी का मौसम मार्च से शुरू हो कर आख़िर अक्तूबर तक रहता है, पहाड़ों से घिरे होने की वजह से जाड़ों में सर्दी कम होती है, हवाओं में सबसे अच्छी हवा पछुवा होती है यह समुद्र की ओर से आती है, उसके बाद उत्तरी हवा, यह भी समुद्र की ओर से आती है और सबसे गर्म पूर्वा हवा होती है।

इसके पहाड़ों को "तौरैत" में "जिबाले फ़ारान" बताया गया है, यह नाम संभवतः फ़ारान बिन अमर बिन अमलीक़ सम्राट के सम्बन्ध से हुआ।

---

1. तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4.7

www.abulhasanalinadwi.org

प्रारंभिक काल में मक्का की आबादी केवल ख़ेमों में रहती थी, हिजरत से केवल दो शताब्दी पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक दादा कुसई बिन क्लाब जब शाम (सीरिया) से आए तो उनके मशवरे से मकानात बनना आरंभ हुए और मक्का के समाज को और उसकी सामाजिक और धार्मिक जिम्मेदारियों को संगठित किया गया और उनको वास्तव में कुसई बिन क्लाब ही ने संभाला, इस से कुरैश की अहमियत (महत्ता) बढ़ी और यह ज़िम्मेदारियां उनमें मख़सूस (मुख्य) हो गई, इस्लाम के आने के पश्चात शहर की बराबर उन्नति हुई, अब यह अपने आस पास में दूर दूर तक सबसे बड़ा और पूरे इस्लाम जगत का सबसे महत्तवपूर्ण और केन्द्रीय नगर हो चुका है।[1]

अरबों की बुतपरस्ती

मक्का के लोग जैसा कि ऊपर ज़िक्र हुआ शुरू में बतुपरस्त न थे, उनके असली लोग हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद थे, और अपने को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के मानने वाले समझते थे, और उनके दीन को अपना दीन समझते थे, उनके साथ यमनी क़बीला "जरहम" फिर "खुज़ाअः" के लोग आकर बस गए थे, वह हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद से अलग दीन रखते थे, इस्माईली लोगों में बतुपरस्ती बाद में आई इस तरह कि मक्का के एक शख़्स "अमर बिन लुह्य जो जरहम क़बीले से संबंधित था उसके ज़रिये आई थी, जिसने अपने सीरिया और इराक़ की यात्रा के अवसर पर वहां बुत परस्ती देखी और वह उसको अच्छी लगी और वहां से बुत लाकर मक्का मुकर्रमा में उसका परिचय कराया और "कअ़बः" के दरवाज़े पर उसकी स्थापना की, उसका "हुबल" नाम था और वह इन्सान की सूरत (रूप) में था, कुछ समय बाद मक्का वाले उसे बड़ा और अहम बुत समझने लगे, और उसके साथ विभिन्न जगहों पर दूसरे बुत स्थापित होते चले गए, अन्ततः इस प्रकार बुतों की संख्या बढ़ गई, अरब उन बुतों को खुदा के सर्वश्रेष्ठ बन्दे और उसके अधीन काम करने वाले क़रार देकर उनका सम्मान इबादत के रूप में करने लगे, वह उनसे मुरादें मांगते और समझते कि वह उनकी सहायता खुदा के समान कर सकते हैं, फिर बुत परस्ती ऐसी फैली कि घर घर बुत, यहां तक कि काबे के अन्दर बुत रख लिये गए, वह यह कहते कि उनको हम असली खुदा नहीं मानते, उनको हम छोटे छोटे खुदा मानते हैं, जैसा कि सम्राट के अधीन विभिन्न विभागों और कामों के लिये हाकिम होते हैं। इसी प्रकार यह हमारी ज़िन्दगी के विभिन्न कामों के लिये छोटे पैमाने के खुदा हैं, उनको खुश करके हम बड़े खुदा को खुश कर सकते हैं,

---

1 लेखक की पुस्तक जज़ीरतुल अरब– पृ0 222–225

www.abulhasanalinadwi.org

यह खुदा के यहां हमारी सिफारिश करेंगे, और हमारा काम इस तरह आसानी से हो जाएगा और हम को बड़े खुदा से कहने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, वह बुत (मूर्ति) को प्राचीन काल के किसी महान व्यक्ति की निशानी क़रार देते थे और उनकी इबादत को काफी समझते थे, हालांकि अल्लाह रब्बुल आलमीन (संसार के पालनहार) को छोड़ कर या उसकी ज़ात पाक (पवित्र व्यक्तित्व) के साथ किसी दूसरे को उसके किसी काम में किसी तरह से भी खुदाई काम में शरीक (साझेदार) समझना यही शिर्क (अनेकेश्वरवाद) है, क्योंकि उसने सबको पैदा करके बाक़ी काम किसी दूसरे को सुपुर्द नहीं कर दिया है, वह संसार और उसमें रहने वाले समस्त प्राणियों का प्रबंध स्वयं करता है, किसी का उसके काम में कोई हस्तक्षेप नहीं, वह जो चाहता है करता है और अपने बन्दों की दुआ को सुनता है, उसके साथ किसी को शरीक करना उसको बहुत ही ज़्यादा नापसन्द है और इससे सख़्ती के साथ रोका गया है, और इसके ख़िलाफ़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक हर नबी ने आवाज़ बुलन्द की और अपनी अपनी क़ौम से झगड़ा मोल लिया और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तो इसी शिर्क के विरोध में अपने बाप को, अपने घरबार को और अपनी इज़्ज़त व राहत को ख़ैरबाद कहा (छोड़ दिया) अब यह दावत अरबों में मबऊस (अवतारित) होने वाले नए नबी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहले अपनी क़ौम को फिर दूसरी क़ौमों को देना था।

कुरैश यूं तो कई बुतों की इबादत करते थे, लेकिन "हुबल" को खुदा का प्रतिनिधि और प्रभावशाली समझ कर अपनी बड़ी ज़रूरतों के लिये उसी से कहते थे और उसको अपना ख़ास और अहम माबूद (महत्पवूर्ण पूज्य) मानते थे, इसके अलावा "असाफ़" और "नाएला" नाम के बुत बनाए थे, जो क़रीब ही थे, मक्का के बाहर भी कई अहम बुत रख लिये गए थे जिनको कुरैश भी मानते थे, उनमें एक "उज़्ज़ा" था जो मक्का से कुछ दूर "नख़ला" के स्थान में रखा गया था, एक दूसरा बुत "मनात" था, यह मक्का से कुछ दूरी पर मक़ामे "कुदैद" में रखा गया था यह बुत ख़ासतौर पर मदीने वालों का बुत समझा जाता था, तीसरा बुत "लात" था जो "ताएफ़" में था और "ताएफ़" वालों का खास बुत समझा जाता था, इनके अलावा हर हर क़बीले ने अपने अपने अलग बुत भी रख लिये थे, "कअ़बा" के अन्दर हर क़बीले ने अपनी पसन्द के बुत अपने प्रतिनिधित्व के लिये रख दिये थे, इस तरह "कअ़बा" में बहुत ज़्यादा बुत इकट्ठा हो गए थे जिसकी संख्या आहिस्ता आहिस्ता तीन सौ साठ तक पहुंच गई थी, हर क़बीला और हर खानदान ने अपने बुत के नुमाइन्दे के तौर पर "कअ़बा" में बुत रख दिया था, इसी के साथ सब अरब खान-ए-काबा को

www.abulhasanalinadwi.org

अपना धार्मिक केन्द्र और इबादत घर जानते थे और "हज" करते और उसका तवाफ़ करते थे और बुतों से भी मन्नतें मांगते थे।[1]

इस तरह अरबों की इबादत का मिज़ाज (स्वभाव) तौहीद (एकेश्वरवाद) से हट कर बुत परस्ती हो गया, और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तरीक़े से दूर हो गए फिर अपनी ज़िन्दगी के दूसरे विभागों में भी ग़ैर अल्लाह की अक़ीदत (श्रद्धा) व इबादत दाख़िल करली, जानवरों के सिलसिले में भी तरह तरह के अक़ीदे गढ़ लिये उनमें "बुहीरह", साइबह, वसीलह, और हामी नाम से जानवरों को खास कर देते और उनको इस्तेमाल न करते और उनके बारे में तरह तरह के अक़ीदे बना लिये थे जिनकी सख़्त बुराई कुरआन मजीद में आई है :-

"अल्लाह ने न कोई "बुहीरा" ठहराया है और न "सायबा" और न "वसीला" और न "हाम" परन्तु इन्कार करने वाले अल्लाह पर झूठ का आरोपण करते हैं और उनमें अधिकतर बुद्धि से काम नहीं लेते।" (अल-माइदा-१०३)

इसमें सन्देह नहीं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत से पहले फ़ैज़े इलाही (अल्लाह की दानशीलता) की हलकी किरनें अरब में फैलना शुरू हो गई थीं, चुनांचे "किस बिन साइदा" "वरक़ा बिन नौफ़ल" उबैदुल्लाह बिन जहश, उस्मान बिन हुवैरस और ज़ैद बिन अमर बिन नुफ़ैल ने बुत परस्ती से इन्कार कर दिया था, उनमें वरक़ह बिन नौफ़ल और उस्मान बिन हुवैरस ने "नसरानियत" अपना ली और "ज़ैद बिन अमर" ने नसरानियत नहीं अपनाई और अपने बाप दादा की बुत परस्ती का तरीक़ा छोड़ दिया।[2]

नैतिक दशा और स्वभाव (मिज़ाज)

अरब दुष्कर्म और बलातकारी से लज्जित नहीं होते थे, अपने बुरे कामों पर फ़ख्र (गर्व) करते हुए अपनी कविता द्वारा उसका परिचय कराते, शराब और मादक वस्तुओं का प्रयोग प्रचलित था, बेहोशी में जो बुरे काम और बुरी बातें हो जाती थीं उन पर लज्जित नहीं होते थे .....

लौंडियों को जो क़ैनात कहलाती थीं गाने बजाने के लिये पाला करते थे उनकी ज़िनाकारी (बलातकारी) की आय को उनके मालिक अच्छी आमदनी समझा करते थे, जो औरतें लड़ाई में गिरफ्तार हो कर आतीं उनको क़ैनात में दाखिल किया जाता था, औरत किसी जानवर का दूध नहीं दूह सकती थी, अगर किसी घराने की औरत ऐसा कर बैठती तो सारा ख़ानदान मुक़य्यद (बन्दी) समझा जाता था।

विरासत के माल में सिर्फ़ बालिग़ मर्द हिस्सा पाते थे, तमाम औरतें और बच्चे, मां बाप, रिश्तेदारों की विरासत से बिल्कुल महरूम (वंचित) रखे जाते थे,

---

2 अल-मुफ़स्सल फ़ी तारीख़िल अरब क़बलल इस्लाम 6/227-289

1 सीरत बिन हिषाम, 1/89-90

www.abulhasanalinadwi.org

बेवह (विधवा) औरत पर मृतक पति का क़रीबी रिश्तेदार अपनी चादर डाल देता था, औरत खुश हो या नाखुश, वह चादर वाले की बीवी बन जाती थी, सौतेले बेटे भी अपनी सौतेली माओं पर इसी तरह क़ाबिज़ हो जाया करते थे अर्थात अधिकार प्राप्त कर लेते थे।

औरतें बेपरदा खुले आम निकला करती थीं और अपने शरीर का गुप्त से गुप्त अंग लोगों को दिखाने में शर्म नहीं महसूस करती थीं मर्द और औरतें बदन को नील से गोदा करती थीं, औरतें बनावटी बाल लगाती, दांतों को दरांती से तेज़ बनातीं और इन बनावटी तरीक़ों से खुद को नौजवान बनाकर जवानों को "जुल" दिया करती थीं जो खानदान ज़्यादा शरीफ़ समझे जाते थे वह जीवित लड़कियों को ज़मीन के नीचे दफ़न कर देते या गहरे कुएं में ढकेल कर मार डालते थे इस पर वह फ़ख्र (गर्व) करते और इसे ऊँची शराफत का निशान (प्रतीक) समझते, जुवा खेलना उनका बहुत ही मन पसन्द काम था और मशहूर लोगों के घर "आम जुवा घर" समझे जाते थे गन्दी रूहों का अक़ीदा आम था और इन्सान पर ऐसी रूहों का पूरा अधिकार तसलीम करते थे, ख्याली व वहमी देवता और देवियां मानी जाती थीं, उनकी शकलें और सूरतें अजीब अजीब बनाते और उसी के मुवाफ़िक़ उनके बुत गढ़े जाते थे, फिर मन्दिरों में उनकी स्थापना होती और पूजे जाते थे, आमतौर पर हर एक क़बीला अपना अपना बुत अलग तजवीज़ किया करता था और अपनी क़िस्मत उसी बुत के क़ब्ज़े में समझा करता था, अगर एक क़बीले की अदावत दूसरे क़बीले से हो जाती तो उसके बुतों से भी अदावत व नफ़रत की जाती थी, घोड़ दौड़ पर बाज़ी लगाने का बहुत रिवाज था उसे "रहान" कहते थे, घोड़ दौड़ में तीन या सात घोड़े शामिल किये जाते थे।

घोड़ों के नम्बर लगाने में कभी इतना एख़्तिलाफ (विरोध) बढ़ जाता कि लड़ाई छिड़ जाती और बरसों तक जारी रहती थी, अगरचे गुलामों का आज़ाद करना गर्व और अभिमान की बात थी लेकिन आज़ाद किये हुए गुलामों पर मिलकियत का हक़ क़ाएम रहता था, उस हक़ को आक़ा दूसरे के पास फ़रोख़्त या हिबा भी कर सकता था।

खेती बाड़ी में ज़मीन का बेहतरीन हिस्सा बुतों के नाम पर खास होता, अगर उस हिस्से की पैदावार किसी प्राकृतिक हादसे की शिकार हो जाती तो ज़मीन के दूसरे हिस्से की पैदावार से उसकी कमी को पूरा किया जाता, भूक और अकाल के समय मवेशी (पशु) का खून पी जाते थे, जिन्दा जानवर के शरीर से गोश्त काट कर खा जाते थे, जानवरों की हरकतों से या आवाज़ों से शगून लिया करते, टुटके, मंत्र माने जाते थे उनकी अक़्ल व सोच पर अन्ध विश्वास की पूरी हुकूमत थी।

www.abulhasanalinadwi.org

इन्तिक़ाम और कीना (प्रतिशोध और वैमनस्य) को अच्छा समझा जाता, एक एक, दो दो नस्ल ऊपर के वाकिआत का बदला लिया जाता और उसे बहादुरी का लाज़िमा (उपकरण) समझा जाता।

अरब के पड़ोसी देशों में जो बुराइयां मौजूद थीं उनको जल्द अपना लिया जाता, हसब नसब (गोत्रवंश) पर बढ़ चढ़ कर फ़ख़्र (गर्व) किया करते, हर एक क़बीला दूसरे क़बीलों को ज़लील व हक़ीर (तुच्छ) समझा करता और यही बात अधिकांश दुशमनी, नफ़रत, लड़ाई का सबब बन जाती।

ख़ानदानी रूसूम की हुकूमत दिल व दिमाग़ पर कानून और मज़हब से बढ़ कर हुकमरां (शासक) थी, रूसूम के मुक़ाबले में आज़ादि-ए-राय कम थी।

अपने दुश्मनों को नेस्त व नाबूद करने के लिए अपने सीमावर्ती क़ौमों से साज़ बाज़ (कपट मंत्रण) करते, फ़ारस, रूम, हबश को अपने ही मुल्क पर चढ़ा लाने पर होशयारी से काम लेते।[1]

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अरब प्रायद्वीप के केन्द्र मक्का मुकर्रमा में क्यों मबऊस हुए?

अरब अपने साधारण जीवन में बुद्धि विवेक और अनुभव की दृष्टि से किसी से कम न थे, लेकिन शिक्षा न होने की वजह से उन बातों से अज्ञान थे जो विद्या व शिक्षा द्वारा प्राप्त होती है, वह अपने विस्तृत और बनजर क्षेत्र में महसूर (घिरे हुए) रहते हुए अपने अनुभव और निरक्षण से प्राप्त किये हुए ज्ञान से काम चलाते, उन पर किसी सभ्यता और नज़रियः की छाप नहीं थी, बहर हाल अल्लाह तआला की मर्ज़ी और हिकमत का फ़ैसला था कि मानवता की मुक्ति एवं मार्गदर्शन का यह सूरज जिस से समस्त संसार में रोशनी फैली, अरब प्रायद्वीप के क्षितिज से उदय हो जो सभ्यता और विद्या की दृष्टि से दुनिया का सबसे अन्धकारमय क्षेत्र था और जिसको उत्तम और उज्जवल पैग़ामे ज़िन्दगी की सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी अरब अपने सीधे और प्राकृतिक मिज़ाज में पक्के और मज़बूत इरादे की वजह से अल्लाह की ओर से हिदायत (सत्यमार्ग) मिलने पर क़ौमों और इन्सानों के नेतृत्व के मनसब पर नियुक्त कर दिये गए।

अल्लाह तआला ने इस महान और बड़े काम के लिये अरबों का चयन इस लिये किया और उनको सारी दुनिया में इसके प्राचार व प्रसार का ज़िम्मेदार बनाया कि उनके दिलों की पाटी (तख़्ती) बिल्कुल साफ़ थी उसमें पहले से कुछ न था, जिसको मिटाना कठिन होता, अपेक्षाकृत रूमियों, ईरानियों या हिन्दुस्तानियों के

---

1 रहमतुल-लिलआलमीन, लेखक क़ाज़ी सुलैमान सनसूरपूरी 3/63

www.abulhasanalinadwi.org

जिनको अपने विकास कला, कौशल, सभ्यता व संस्कृति तथा दर्शनाशास्त्र पर बड़ा गर्व था और इसके कारण उनके अन्दर कुछ ऐसी मनोवैज्ञानिक गुत्थियां तथा मानसिक उलझनें पैदा हो गई थीं, जिनका दूर होना आसान न था। अरबों के मन मस्तिष्क की सादा तख्तियां केवल उन मामूली और हल्के फुल्के लेखों से परिचित थीं जिनको उनकी आज्ञानता, निरक्षरता तथा बदवी जीवन ने उनमें लिख दिया था और जिनका धोना व मिटाना और उनके स्थान पर नया लेख लिखना बहुत आसान था वर्तमान ज्ञान की शब्दावली में वह "सहज अज्ञानता" का शिकार थे और यह वह गलती है जिसका निरकरण हो सकता है। दूसरी सभ्य और विकसित क़ौमें तरह तरह के असर और सभ्यता के बनावटी असर के कारण "भौतिक अज्ञानता" से ग्रसित थीं, जिसका इलाज और उसे मिटाकर नये अक्षर लिखने का काम हमेशा अत्यन्त कठिन होता है।

यह अरब अपने मुल स्वभाव पर थे, मज़बूत और दृढ़ संकल्प के मालिक थे, अगर हक़ बात उनकी समझ में न आती तो वह उसके विरूद्ध तलवार तक उठाने में कोई संकोच न करते और हक़ खुलकर सामने आजाता तो वह उससे जी जान से अधिक मुहब्बत करते उसको गले से लगाते तथा उसके लिये जान तक देने में सोच विचार न करते।[1]

सभ्यता व संस्कृति और भोग विलास व आराम तलबी की पैदा की हुई उन तमाम बीमारियों और ख़राबियों से अरब सुरक्षित थे, अन बीमारियों का इलाज बड़ा कठिन होता है और न ईमान व अक़ीदा की राह में हमेशा रूकावट डालती है और प्रायः आदमी के पैरों में बेड़ियां डाल देती है।

अरबवासियों के अन्दर सच्चाई भी थी, ईमानदारी भी और बहादुरी भी उनकी प्रावृत्ति दोहरी नीति व षडयन्त्र को पसन्द न करती उनमें वह सभी गुण थे जो दुनिया में कोई महान कार्य करने वाली क़ौम के लिये आवश्यक होते हैं, विशेषकर उस समय जब लड़ाइयों का युग हो और बहादुरी का आम चलन हो। अरब जी जान से लड़ने वाले, घोड़े की पीठ पर अधिक समय बिताने वाले, सुदृढ़, सुरक्षात्मक शक्ति और सहनशीलता के मालिक, सरल जीवन के आदी, घुड़सवारी और युद्ध कला के रसिया थे।

दूसरी बात यह कि उन की सोच और जन्मजाल क्षमतायें सुरक्षित थीं और ख़याली, बेफ़ायदा बहसों, तर्क-वितर्क, बाल की खाल निकालने अथवा स्थानीय व क्षेत्रीय घरेलू-कलह में नष्ट नहीं हुई थीं। यह एक उभरती हुई क़ौम थी और ज़िन्दगी व हरारत, जोश व उत्साह तथा दृढ़ संकल्प से भरपूर थी।

---

1 नबी रहमत, पृ0 59–60

www.abulhasanalinadwi.org

वह धुन के पक्के इरादे के सच्चे थे, काम में उनकी लगन और हक़ के सामने नतमस्तक हो जाने का पता उस वाक्य से भी मिलता है जो इस्लामी फ़ौज के विख्यात सेनापति उक़्बा बिन नाफ़े रज़ि० ने कहा था, जब उनकी विजय की राह में अटलांटिक महा सागर के कारण रूकावट पैदा हुई तो उन्होंने कहा "ख़ुदाया! यह महासागर रास्ते में है अन्यथा जी चाहता है कि बराबर आगे बढ़ता जाऊँ और जल थल में तेरे नाम का डंका बजा दूँ"।[1]

1 नबी रहमत, पृ0 62–63

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय तीन

वंशज, जन्म और पालन-पोषण का ज़माना

अरब क़बीलों का नसब (वंश)

जैसा कि ऊपर ज़िक्र किया जा चुका है तूफ़ाने नूह के बाद ज़मीन पर सिर्फ़ हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की नस्ल बाक़ी रही, प्रायद्वीप अरब की आबादी उनके "साम" नामी बेटे की औलाद में बताई जाती है, साम के कई बेटे थे, लेकिन इतिहास कारों के यहां उनके सिर्फ दो बेटों की नस्लों का पता मिलता है, उनमें से एक का नाम "आराम" या "अरम" दूसरे का "अरफ़ख़शज़" था[1] अरब प्रायद्वीप में जिनकी नस्लें आगे बढ़ीं या जिनका अमल दखल रहा उनका सम्बन्ध इन्हीं दोनों बेटों से है, इनमें से अरम की कई नस्लें अरब प्रायद्वीप में बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहीं, और तरक़्क़ी करती रहीं और उनका बड़ा रोब व दबदबा रहा, लेकिन वह कई बुराइयों में ग्रस्त रहीं और फिर तकब्बुर (अभिमान) और ज़ोर दस्ती, शिर्क के ज़रिये अपने परवरदिगार की सख़्त नाराज़ी की हक़दार बनीं, उनमें नबी आऐ और उन्होंने समझाया और जब नाफ़रमानी हद तक पहुंची तो अज़ाब में ग्रस्त हुई, और एक के बाद दूसरे अल्लाह तआला की नाफ़रमानी की वजह से तबाह होती रहीं और आखिर में अरब प्रायद्वीप से बिल्कुल मिट गईं उनको अरबी में "उमम बाइदा" कहा जाता है, उनमें से उल्लेखनीय नस्लें आ़द, समूद, जरहम, तस्म, जदीस, अब्दे ज़ख़्म, और "अमालक़ा" हैं, अ़मालक़ा के सिलसिले में यह भी कहा जाता है कि मिस्र के फ़राइना भी इसी की एक शाख थे, जो उत्तरी अरब प्रायद्वीप से मिस्र स्थानांतरित हो गए थे।

"अरफ़ख़शज़" की नस्ल में भी कई शाखें हुईं, उनमें क़हतानी नामी नस्ल अरब प्रायद्वीप के दक्षणी क्षेत्रों में आबाद हुई, दूसरी नस्ल में हज़रत इब्राहीम और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम और इन दोनों के ख़ानदान हुए, हज़रत इब्राहीम वाली शाख़ इराक़ के दक्षणी क्षेत्रों में आबाद हुई इसमें शिर्क की सितारह

---

1 मिरवजुज़-ज़हब, दारूल मआ़रिफ़, लबनान, बेरूत, सन्2005 ई0

www.abulhasanalinadwi.org

परस्ती की क़िस्मों का चलन हुआ जिसके विरूद्ध हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आवाज़ उठाई, और तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत दी, वहीं उनके एक बेटे हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम की औलाद बनी-इस्राईल कहलाई, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने दूसरे बेटे को जो पहले से थे अल्लाह के हुक्म से उनकी मां के साथ ले जाकर मक्का में ठहराया, तीसरे बेटे मदयन हुए, उनकी औलाद ऐशिया के दक्षिणी क्षेत्र में आबाद हुई, उनका इलाक़ा मदयन कहलाया।

इस प्रकार अरब प्रायद्वीप में सबसे प्राचीन निवासी आरामी नस्ल के हुए उनके बाद क़हतानी आए, और उनके बाद वह नस्लें जो हज़रत इब्राहीम से सम्बन्धित हैं, उनमें हज़रत इस्माईल की औलाद मध्य प्रायद्वीप अ़रब में मक्का और उसके इर्द गिर्द इलाक़े में आबाद हुई, मदयन की औलाद उनके उत्तरी इलाक़े हिजाज़ के उत्तरी किनारे पर आबाद हुई। हज़रत इस्माईल की औलाद में कई पुश्तों के बाद "अदनान" नामी एक शख़्स हुए वही बाद में हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की लगभग तमाम नस्लों के मूरिस (पूर्वज) हुए।

जैसा कि ऊपर बातया गया है कि आरामी नस्लें प्राय द्वीप अरब की पहली बसने वाली नस्लें थीं जो कुछ ज़माने बाद रह कर अपने हट धर्मी, अत्याचार और अपने रब की नाफ़रमानी (अवज्ञा) के नतीजे में आसमानी सज़ा की हक़दार हुईं और अधिकांश अरब प्रायद्वीप से मिट गईं, उनके बाद अरब प्रायद्वीप के नंबर-२ के प्राचीन निवासी क़हतानी नस्ल के लोग हुए, इसी लिये "क़हतान" की औलाद को "अरब आरिबा" अर्थात असली अरब कहा जाता है, अरब प्रायद्वीप में इब्राहीमी ख़ानदान की इस्माईली शाखा जो अरब प्रायद्वीप में पहुंची, क़हतानियों के मुक़ाबिले में ज़रा बाद में अरब होने के कारण अरब आरिबा के स्थान पर अरब "मुसतारिबा" कही गई।

क़ुरैश का क़बीला

मक्का मुकर्रमा में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बड़े बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को ठहरा कर उनके बड़े होने पर "बैतुल्लाह शरीफ" का निर्माण किया जो भू-मण्डल पर अल्लाह तआला का पहलाघर कहलाया, हज़रत इब्राहीम ने अपने परवरदिगार से दुआ की कि ऐ अल्लाह! इस घर को आबाद रख और हमारी औलाद को इस घर की हिफ़ाज़त (रक्षा) की तौफ़ीक़ (क्षमता) दे, और तौहीद (एकेश्वरवाद) का इसको केन्द्र बना, और हमारी औलाद को इस ग़ैर आबाद खित्ते (जन रहित क्षेत्र) में रोज़ी पहुंचा और तमाम मोमिन बन्दों को इस घर में आकर इबादत करने की तौफ़ीक़ दे, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ की मक़बूलियत (स्वीकृति) का असर था, कि बैतुल्लाह शरीफ की महानता और पवित्रता पर अरब प्रायद्वीप के समस्त वासी सहमत हो

www.abulhasanalinadwi.org

गए और हैसियत के अनुकूल वहां हाज़री देने लगे और यह अमल "हज" कहलाया, इसी तरह मक्का मुकर्रमा का सम्मान सबके दिल में क़ायम रहा, और वहाँ के निवासी क़बीला कुरैश को "बैतुल्लाह" की तवल्लियत (प्रबन्ध) हासिल हुई, इस कारण यह क़बीला सबकी नज़र में सर्वमान्य हो गया, अतएव इस क़बीले को अपनी इस विशेषता की वजह से अरब प्रायद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों में जाने और सफर करने में खतरा नहीं महसूसू होता था, और सब अरबों के लिहाज़ से उसी केन्द्रीय हैसियत की वजह से कुरैश का सम्बन्ध विभिन्न क़बीलों से भी होता था अैर वह उत्तर, दक्षिण व्यापारिक यात्रा भी करते और वहां के निवासियों से उनका सम्बन्ध भी होता।

अतः वह दूसरों की अपेक्षा जीवन की आवश्यकताओं को समझने में अधिक समझदार थे, अशिक्षत और अनपढ़ होने के बावजूद सभ्य क्षेत्रों में आने जाने और वहां के लोगों से मिलने जुलने की वजह से दूसरे अरबों के मुक़ाबले में अधिक उन्नतशील और अनुभवी थे, और इसी हैसियत से देखे जाते थे, कुरैश के एक प्रमुख व्यक्ति कुसई बिन कलाब ने अपनी समझ और योग्यता के कारण मक्का मुकर्रमा में नगर के प्रशासक के रूप में अपनी हैसियत बना ली थी, वर्तमान काल की भाषा में उन्हें नगर का "मेयर" समझा जा सकता है, अनके देहान्त के बाद उनकी नाना प्रकार की प्रबंधिक ज़िम्मेदारियां उनकी औलाद में विभाजित हो गईं थीं, हाजियों की मेहमानी और आवभगत का विभाग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परदादा हाशिम बिन अब्दे मनाफ़ के हिस्से में आया था जो उनकी औलाद में परिवर्तित होता हुआ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुरब्बी (प्रतिपालक) चचा अबू तालिब तक आया था, हाजियों की मेहमानी का यह विभाग ऐसा विभाग था जिसके द्वारा पूरा अरब प्रायद्वीप इस शाख़ के लोगों को पहचानता और इज़्ज़त की निगाह से देखता था क्योंकि सारे अरब से हाजी आते और सब उनकी मेहमानी से वास्ता पड़ने की वजह से इस शाख़ (ब्रांच) से वाक़िफ़ (परिचित) हो गए थे।

अल्लाह तआला ने कुरैश को अपनी इस दी हुई नेमत और प्रतिष्ठा का ज़िक्र अपने कलामे इलाही में कुरैश को संबोधित करते हुए, अपना एहसान बताते हुए फ़रमाया :-

"कुरैश को सफर में उल्फ़त का सहारा दिया, उनको जाड़े और गर्मी के सफ़र से बड़ी सहूलत हासिल रही, उन पर लाज़िम (अनिवार्य) है कि उनको इस घर के मालिक की इबादत करनी चाहिये, जिसने उनको भूक में खिलाया और उनको ख़ौफ़ से बचा कर अम्न दिया" (सूरह कुरैश : १-४)

वास्तव में इस बड़े इबादते इलाही के केन्द्र के ख़ादिम (सेवक) और प्रबंधक होने के नाते कुरैश को सारे अरब में सम्मान और प्रतिष्ठा हासिल हुई

www.abulhasanalinadwi.org

और कुरैश में से बनू हाशिम को हाजियों के मेज़बान (आतिथ्यकर्ता) होने की वजह से अधिक इज़्ज़त मिली, इस इज़्ज़त दुन्यावी मान और लोकप्रियता के साथ यह सौभाग्य भी मिला कि अल्लाह तआला ने उनको दूसरे अरबों के मुक़ाबले में अच्छी विशेषताओं का हिस्सा ज़्यादह प्रदान किया, हुज़ूर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसी कुरैशी शाख़ के महान सपूत हुए।[1]

नसब मुबारक

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नसब (वंश) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बड़े बेटे से शुरू होता है, अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दूसरे पिछले नबियों के मआमले में ज़्यादा पसन्दीदा (मनोनीत) नबी क़रार दिया, इस सिलसिले में उनकी कुरबानियों को वह मुक़ाम अता फ़रमाया जो दूसरे नबियों की कुरबानियों के मुक़ाबले में ज़्यादा बाला व बरतर (सर्वश्रेष्ठ) थीं जिनकी बिना पर अल्लाह तआला ने उन्हें तमग़-ए-खलीली (मित्रता पदक) अता फरमाया, जिसका ज़िक्र कुरआन मजीद में फ़रमाया "वत्तख़ज़ल्लाहु इब्राहीम ख़लीला" (अन्निसा : १२५) और इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अपना दोस्त बनाया लिया। और अल्लाह तआला अपनी इस पसन्द (अभिरूचि) को उनकी औलाद तक परिवर्तित कर दिया जिसकी दुआ खुद इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने की थी, लेकिन अल्लाह तआला ने उनकी यह दुआ कुबूल करते हुए यह भी फ़रमा दिया कि यह चाहत और पसन्द सिर्फ़ उनकी उन्हीं औलाद तक महदूद (सीमित) रहेगी जो सही रास्ते (सत्य मार्ग) पर रहेंगे और अपने को इसके योग्य बनाएंगे, अल्लाह ने फ़रमाया :

"जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम को उनके रब ने कई कई बातों से आज़माया और उन्होंने सबको पूरा कर दिया तो अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें लोगों का इमाम (नायक) बना दूंगा, अर्ज़ (निवेदन) करने लगे और मेरी औलाद को। फ़रमाया मेरा वादा (प्रतिज्ञा) ज़ालिमों से नहीं" (सूरह अल-बक़रा : १२४)

सूरह इब्राहीम में अल्लाह ने फ़रमाया :

"और जब इब्राहीम ने अपने परवरदिगार से यह दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार इस शहर को अम्न वाला (शान्ति वाला) बना दे और मुझे और मेरी औलाद को बुत परस्ती से पनाह दे, ऐ मेरे पालने वाले माबूद (उपास्य)! उन्होंने (बुतों ने) बहुत से लोगों को राह से भटका दिया है पस मेरी ताबेदारी (आज्ञा

---

1 क़बीले कुरैष की तफ़सील के लिये देखें: अल–बिदाया वन–निहाया 2/200–205

www.abulhasanalinadwi.org

पालन) करने वाला मेरा है और जो मेरी नाफ़रमानी (अवज्ञा) करे तो तू बहुत माफ और करम (दया) करने वाला है, ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने अपनी औलाद को इस बेखेती की वादी (घाटी) में तेरे हुरमत वाले (सम्मान वाले) घर के पास ला बसाया है, ऐ हमारे परवरदिगार (पालनकर्ता) यह इस लिये कि वह नमाज़ क़ायम रखें, तू लोगों के दिलों को ऐसा करदे कि उनकी ओर झुके रहें, और उनको मेवों से रोज़ी (आजीविका) दे ताकि तेरा शुक्र अदा करें"। (सूरह इब्राहीमः 35-37)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने रब (पालनहार) की रज़ा (प्रसन्नता) की चाहत में उसके अति कठिन आज्ञा का पालन पूरी निष्ठा के साथ किया और उसकी वजह से आपको आपके रब की आरे से "ख़लीलुल्लाह" (अल्लाह का मित्र) की उपाधि मिली और आप अपने परवरदिगार के बहुत महबूब (प्रिय) नबी हुए आपकी एक कुरबानी तो यह हुई कि आप अपने परवरदिगार का हुक्म पाकर अपने दूध पीते बच्चे को माँ के साथ ऐसी ग़ैर आबाद (जन रहित) और खुश्क जगह ठहरा दिया जहां कोई मददगार और हमदर्द (सहान भूतिकर्ता और सहायक) न था, और न खाने पानी का साधन था, फिर उस बेटे के जवान होने पर उसको ज़बह कर देने का हुक्म हुआ, उन्होंने पूर्ण रूप से आज्ञा पालन किया लेकिन अल्लाह तआला ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को बचा दिया और फिर उनकी नस्ल से ही आख़िरी (अन्तिम) नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैदा किया।

चुनांचे इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दोनों बेटे इस्माईल और इस्हाक़ फिर इस्हाक़ के बेटे याक़ूब और उनके बेटे हज़रत युसुफ़ अलैहिमुस्सलाम यह सब नबी हुए और खास तौर पर हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में अल्लाह तआला ने महान और अन्तिम नबी बनाना तय (निश्चित) किया, जिसको इन हालात में हिदायत और रहनुमाई (मार्गदर्शन और नेतृत्व) का काम सुपुर्द करना था जबकि दुनिया अपने बिगाड़ और गिरावट की बहुत निचली सतह (स्तर) पर पहुंचने वाली थी।

यह आख़िरी (अन्तिम) नबी हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल (वंश) में पैदा हुए और उनकी वंशावली अपने कुटुम्ब व वंश में सबसे उत्तम शाखा द्वारा हज़रत इस्माईल तक पहुंची थी। आपका नसब मुबारक इस प्रकार है :

मुहम्मद (स०) बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम अब्द मनाफ़ बिन कुसई बिन किलाब बिन मुर्रा बिन कअ़ब बिन लोई बिन ग़ालिब बिन

www.abulhasanalinadwi.org

फ़हर बिन मालिक बिन नज़र बिन कनाना बिन खुज़ैमा बिन मुदरिका बिन इलयास बिन मुज़र बिन नज़ार बिन मअ़द बिन अदनान।[1]

अदनान

अदनान का नसब (वंश) सय्यदना इस्माईल बिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम तक पहुंचता है, अदनान से ऊपर के सिलसिल-ए-नसब (वंश श्रंखला) के मुक़ाबले में अदनान से नीचे का सिलसिला ऐतिहासिक लिहाज़ से ज़्यादा प्रमाणित कथन से बताया गया है, अदनान की औलाद में "मुज़र" और "रबीअः" ज़्यादा मशहूर हुए, मुज़र अरब प्रायद्धीप के पश्चिमी हिस्से हिजाज़ में आबाद रहे और "रबीअः" पूरबी हिस्से "नज्द" में चले गए, मुज़र की औलाद में इलयास और क़ैस मशहूर हुए, इलयास की औलाद में "कनाना" को शोहरत हुई और उनके नाम से उनकी औलाद मशहूर हुई "कनाना" की औलाद में "नज़र" और उनकी औलाद में फ़हर हुए, उनके लिये "कुरैश" का शब्द प्रयोग हुआ जो बाद में मशहूर हुए, और उनकी औलाद ने मक्का ही में निवास किया, उनकी औलाद में "कुसई" महत्वपूर्ण व्यक्ति हुए, उनके समय तक मक्का का प्रबन्धिक अधिकार "खुज़ाआ" के पास था, "कुसई" ने उसे प्राप्त कर लिया और मक्का का प्रबन्धिक ढांचा बहुत अच्छा बनाया जिसकी ज़िम्मेदारी शहरों में रहने वाली कुरैशी शाखाओं में विभाजित हुई। क़ैस की औलाद "हिजाज़" के दूसरे हिस्सों में जैसे ताएफ़ और मक्का के आस पास के इलाक़ों में जा कर बसी, उनसे "सक़ीफ़" ताएफ़ में और हवाज़िन मक्का और ताएफ के मध्यवर्ती क्षेत्र में आबाद हुई, कुरैश की औलाद में कुसई के बेटे अब्द मनाफ़ हुए, अब्द मनाफ़ के चार बेटे मुत्तलिब, नौफ़ल, अब्द शम्स और हाशिम हुए, इन चारों में हाशिम को उनके चरित्र और प्रबन्ध व व्यवस्था के कारण बड़ा सम्मान और मान्यता प्राप्त हुई, हाशिम की औलाद में अब्दुल मुत्तलिब हुए, जो बड़े होकर अपने वालिद (पिता) की विशेषताओं और ज़िम्मेदारियों के वारिस हुए, और मक्का में उनको ख़ासतौर पर सम्मानित स्थान प्राप्त हुए, आप ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के दादा थे, उनके दस बेटे हुए जिनमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिद माजिद (आदर्णीय पिता) अब्दुल्लाह हुए, दूसरे बेटों के नाम अबू तालिब (अब्द मनाफ़), ज़ुबैर, हमज़ा, अब्बास, अबू लहब (अब्दुल उज़्ज़ा), अल-हारिस, हजिल, मुक़व्विम, ज़रार हैं, अबू तालिब को अपने खानदान वालों में अधिक विशेषता और शुहरत हासिल हुई, और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुनियावी एतिबार से ख़ास

---

1 अल–बिदाया वन–निहाया 2/252–259ए अनसाबुल अशराफ़–बिलाज़री, रिसर्च डॉ0 हमीदुल्लाह।

www.abulhasanalinadwi.org

मदद और ताक़त मिली, दूसरे बेटों में हज़रत अब्बास और हज़रत हमज़ा इस्लाम भी लाए, और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खासतौर पर साथ दिया, अबू लहब ने नबूवत से पहले तो हमदर्दी की, लेकिन इस्लाम की दअ़वत का दुशमनी के साथ मुक़ाबला किया और अ़दावत दिखाई।

अब्दुल्लाह : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिदे मोहतरम (आदर्णीय पिता) अब्दुल्लाह ने बहुत कम उम्र पाई, लेकिन उनको शराफ़त और इज़्ज़त का मुक़ाम हासिल होने के साथ यह खुसूसियत (विशेषता) भी हासिल हुई कि उनके बाप अब्दुल मुत्तलिब ने यह दुआ की थी कि अगर उनके दस बेटे हुए तो शुक्रगुज़ारी के तौर पर उनमें से एक को ज़बह करेंगे, चुनांचे दस की गिनती पूरी होने पर उनमें से एक का इन्तिख़ाब (चयन) करना था, उनको इस सिलसिले में हज़रत अब्दुल्लाह को ज़बह करने का इशारा मिला चुनांचे वह उनको ज़बह करने के लिये तैय्यार हुए, लेकिन उनको मशवरह दिया गया कि उनको ज़बह करने के बजाए ज़बह करने का बदल (दियत)[1] दे कर उनको सुरक्षित रखें, दियत को तय (निश्चित) करने के लिये (फ़ाल) ली तो बड़ी ऊंची और गरां दियत बहुत ऊँटों को ज़बह करने की आई, और उन्होंने इसको अन्जाम दिया अर्थात पूरा किया[2] और इस प्रकार उनको ज़बह करने से जो कुरबानी उनकी ओर से हुई वह इस प्रकार पूरी हुई, और अब्दुल्लाह की इस शकल में गोया कुरबानी हुई, और उनको हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की नक़ल हासिल हुई कि हज़रत इस्माईल को उनके वालिद (पिता) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के लिये अपने इरादे के मुताबिक़ ज़बह कर दिया था, और अल्लाह ने वक़्त पर एक मेंढा भेज कर छुरी को उस पर चलवा दिया, इस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे की कुरबानी की पेश-कश की, लेकिन अल्लाह तआला ने उसको बदल दिया और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को बचा दिया।

हज़रत अब्दुल्लाह का नसब (वंश) उनके तमाम समवर्ती कुरैशियों के मुक़ाबले में ज़्यादा प्रमुख विशेषताओं और उच्च चरित्र वाले व्यक्तियों पर आधारित था, कुछ तो इस प्रकार कि उनके नसब (वंश) की ऊपर से आने वाली कड़ियों के अन्य खानदानी कड़यों में उच्च कोटि की थी, अरबों में नसब की बुलन्दी ऊपर के लोगों के आचारण और उनके चरित्र की बुलन्दी के लिहाज़ से देखी जाती थी कि कितने लोग कितने उच्च आचरण और उत्तम चरित्र वाले गुज़रे हैं, हज़रत अब्दुल्लाह की बुलन्दी (उच्चता) स्वयं अपनी ज़ाती विशेषताओं के लिहाज़ से भी नेक तबीअ़त (सदाचारी स्वभाव) गंभीरता और अच्छे गुणों के

---

1 वह धन जो किसी की हत्या करके उसके घर वालों को दिया जाए।
2 सीरत इब्ने हिशामः 1/55

www.abulhasanalinadwi.org

लिहाज़ से भी अपने बराबर वालों में श्रेष्ठ थे, उनकी शादी भी बनू ज़हरा में हज़रत आमिना बिन्त वहब से हुई थी[1] जो अपने हसब व नसब (गोत्रवंश) में बहुत साफ़ और उच्च आचरण की कुरैशी शाखा से थीं, "वहब" क़बीले बनी ज़ुहरा के सरदार थे, उनके नसब का सिलसिला "फ़हर" जिनकी शोहरत कुरैश से है, जा मिलता है, इस तरह दादीहाल और नानीहाल दोनों तरफ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नसबी दर्जा बहुत ही बुलन्द रहा, और नसब (वंश) व आचरण दोनों लिहाज़ से आपके उच्च स्थान पर होने की तसदीक़ (पुष्टि) अल्लाह तआला की तरफ से भी की गई, एक तो यह कि दूसरों के मुक़ाबिले में अल्लाह तआला ने "नबूवत" और "रिसालत" के लिये मुनतख़ब फरमाया और क़ुरआन मजीद में फ़रमाया कि "तुम ऊंची सीरत (चरित्र) किरदार (आचरण) के हो" और फ़रमाया कि "अल्लाह तआला खूब जानता है कि अपनी रिसालत का शरफ़ (प्रतिष्ठा) कहाँ रखे।

विलादत (जन्म)

फिर अल्लाह तआला को यह मन्ज़ूर हुआ कि आप अपने बाप का साया न पाएं और अल्लाह तआला की तरफ़ से खुसूसी (विशेष) देख भाल हो, अतः अल्लाह तआला ने यह निश्चित किया कि आपके आदर्णीय पिता हज़रत अब्दुल्लाह, आपके पैदा होने के कुछ महीने पहले जब आप माता के गर्भ में थे, मदीना की यात्रा करते समय देहान्त कर गए, और वहीं आपको दफ़न कर दिया गया, इस प्रकार उनकी मृत्यु के पश्चात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुबारक जन्म हुआ, 9 रबीउल अव्वल, सोमवार का दिन था (17 अप्रैल 570 ई०)[2]

अतएव आपकी पैदाइश होने पर आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब को अपने इस पोते की ओर विशेष ध्यान और ममता की ज़िम्मेदारी मिली, उन्होंने "मुहम्मद" (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नाम रखा[3] और ऐसी ममता और चिन्ता की कि पिता के न होने की यथा संभव पूर्ति की।

रज़ाअ़त (दूध पीने का ज़माना)

मक्का मुकर्रमा में पैदा होने वाले बच्चों की पैदाइश के मौक़े पर बच्चों की रज़ाअ़त और प्रारंभिक पालन पोषण के लिये शहरों से अधिक देहातों को पसन्द किया जाता था, इस लिये कि वहां की जलवायु अधिक साफ सुथरी और सादा, वहां के रहने वालों के आचरण और स्वभाव में सन्तुलन और शान्ति

---

1 सीरत इब्ने हिशाम, 1/157
2 अस्सीरतुन नबविया फी फ़तहिलबारी, इबन हज अस्क़लानी 1/212
3 अल–बिदाया वन–निहाया 3/266

www.abulhasanalinadwi.org

अधिक थी, शहरी ज़िन्दगी के शहरी और कारोबारी आचार व्यवहार से जो ख़राबियां पैदा होती हैं बचपने की सादा दिली और मासूमियत उन ख़राबियों से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रहती है। इस के अलावा देहात और उसके आस-पास की ज़बान (भाषा) शहरी ज़बान के मुक़ाबले में अधिक उचित और उत्तम मानी जाती थी।

हवाज़िन क़बीले की आबादी जो मक्का और ताएफ़ के बीच स्थित क्षेत्र में मक्का के उत्तरी दिशा में थोड़ी दूरी पर थी वहीं उसकी शाखा बनी सअ़द का घराना था, उसकी महिलाएं साल में एक मर्तबा मक्का आकर वहां के नव जन्मित बच्चों को उनके रज़ाअत के ज़माने (दूध पिलाने की अवस्था) में ले जाया करती थीं, और दो तीन साल तक अपने बच्चों के साथ रखती थीं, उनको उसकी मज़दूरी और मुआवज़ा बच्चों के माँ बाप की ओर से मिलता था और यह उनकी अजीविका का साधन बन जाता था, अतः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश के साल भी यह औरतें आईं, और जिन बच्चों के मां बाप हैसियत वाले दिखे उनके बच्चों को वह ले गईं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लेने में उन सब को संकोच हुआ कि आप यतीम थे, बाप न थे कि दूध पिलाने पर बहुत अच्छी मज़दूरी मिलने की उम्मीद होती, बच्चों को लेने के लिये आने वाली महिलाओं (औरतों) में हलीमा बिन्त अबी ज़ुवैब अस्सादिया को सवारी की कुछ दुशवारी (कठिनाई) की वजह से लोगों के घरों में पहुंचने में देरी हुई और खाते पीते घरानों के नवजात बच्चों को दूसरी औरतों ने हासिल कर लिये और हलीमा को आपको छोड़ कर दूसरा कोई बच्चा न मिल सका और उनको मजबूर हो कर आप ही को ले जाना पड़ा, उन्होंने आपको लिया तो मुआवज़ा की अच्छी उम्मीद न होने की बिना पर मायूसी की कैफ़ियत महसूस हो रही थी, लेकिन आपको ले जाने पर उन्होंने खुसूसी (विशेष) मामला देखा, कि हर बात में बरकत महसूस हुई, ऐसी बरकत कि दूसरी दूध पिलाने वालियों को ईर्ष्या हुई कि हज़रत हलीमा को हर चीज़ में फ़ाइदा महसूस हुआ, चुनांचे हज़रत हलीमा ने रज़ाअत (दूध पिलाने) के लिये बाहर रहने की जो मुद्दत (अवधि) होती है उससे अधिक मुद्दत के लिये आपको अपने पास रखा, हज़रत हलीमा इस घटना को इस तरह बयान करती हैं कि :-

"वह अपने गावं से अपने पति के साथ औरअपने एक दूध पीते छोटे बच्चे को लेकर क़बीला बनू साद बिन बक्र की औरतों के साथ दूध पीने वाले बच्चों की तलाश में निकलीं, वह कहती हैं कि यह वाक़िया उस साल का था जिसमें सूखा पड़ गया था और ग़रीबी थी, जिसकी वजह से हमारे पास कुछ नहीं रह गया था, कहती हैं कि मैं अपनी एक गद्दी की सवारी पर निकली जो ख़ाकी रंग की थी, हमारे साथ एक बूढ़ी ऊँटनी भी थी जो बड़ी मुश्किल से थोड़ा दूध

www.abulhasanalinadwi.org

भी नही नहीं दे पाती थी, चुनांचे हम सारी रात अपने उस बच्चे के साथ जो हमारे साथ था, सो नहीं पाते थे जो भूक से रोया करता था, खुद मेरी छातियों में इतना दूध न था जो उसकी ज़रूरत को पूरा करे, और न हमारी बूढ़ी ऊँटनी में दूध था जिससे उसको ग़िज़ा मिले, लेकिन हम उम्मीद करते थे कि मदद मिलेगी और तंगी दूर होगी, चुनांचे मैं अपनी उस गद्ही की सवारी पर निकली और मैंने क़ाफ़िले वालों को भी रास्ते में सवारी की सुस्त रफ़्तारी की वजह से जगह जगह इन्तिज़ार कराया यहां तक कि क़ाफ़िले वालों को हमारी सवारी की कमज़ोरी और दुबलेपन से परेशानी हुई, चुनांचे हम मक्का पहुंचे और दूध पीने वाले बच्चों को तलाश करने लगे, हम में से हर औरत को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यहां जाने का मौक़ा मिला और उनके सामने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पेश किया गया लेकिन वह कुबूल नहीं करती थीं जब यह बताया जाता था कि वह यतीम हैं, और बात यह थी कि हम कुछ फ़ाइदा हासिल करने की उम्मीद में होते थे कि जो हमको बच्चे के बाप से मिलता, चुनांचे हम आपको देख कर कहते कि यह तो यतीम हैं, उनकी मां और उनके दादा से कहां तक उम्मीद की जा सकती है, हम आपको इस वजह से पसन्द नहीं करते थे, होते होते कोई औरत ऐसी नहीं बची जो मेरे साथ आई मगर कोई बच्चा उसने हासिल न कर लिया सिवाए मेरे। फिर जब हम सबने वापस होने का फ़ैसला किया तो मैंने अपने शौहर (पति) से कहा बखुदा मुझे अच्छा नहीं लगता कि मैं लौटूं और मेरे साथ की सब औरतें लौटें और सिर्फ़ मैं कोई बच्चा न हासिल कर सकी हूं, मैं ज़रूर जाऊँगी और उस यतीम बच्चे ही को लेकर आती हूं, उन्होंने कहा कोई हरज नहीं, कि तुम ऐसा कर लो, हो सकता है कि अल्लाह तआला हमारे लिये इसी में बरकत रख दे, कहने लगीं मैं वहां गई और मैंने उनको ले लिया मुझे उनके लेने पर सिर्फ़ इस बात ने आमादा (तत्पर) किया कि मुझे उनके अलावा और कोई बच्चा मिल न सका था।

कहती हैं जब मैंने उनको लिया और लेकर अपनी जगह वापस आई और मैंने उनको अपनी गोद में रखा, मेरी छातियों में बच्चे को जितना चाहिये था, दूध आ गया, और उन्होंने पिया और वह सेर (तृप्त) हो गए और उनके साथ साथ फिर मेरे बच्चे ने जो उनके दूध शरीक भाई हुए पिया और वह भी सेर (तृप्त) हो गए, और दोनों सो गए, हालांकि हम इससे पहले अपने बच्चे के साथ सो नहीं पाते थे, और मेरे पति उस दुबली ऊँटनी की तरफ़ गए, उसके भी दूध भरा हुवा था, उसका दूध उन्होंने दूहा, इतना कि उन्होंने खुद पिया और उनके साथ मैंने भी पिया और हम दोनों पूरी तरह आसूदा हो गए, हमने बहुत अच्छी रात गुज़ारी, कहती हैं : सुबह होने पर मेरे शौहर (पति) कहने लगे खुदा की क़सम ऐ हलीमा तुम एक मुबारक बच्चा ले कर आई हो, कहती हैं कि मैंने

www.abulhasanalinadwi.org

कहा खुदा की क़सम मुझे इसी की उम्मीद है, कहती हैं कि अब हम निकले और मैं अपनी उसी गद्ही की सवारी पर बैठी और उनको भी अपने साथ उसी पर बिठाया था, खुदा की क़सम क़ाफ़िले मे हमने इस तरह रास्ता तै करना शुरू किया कि हमारे साथ की औरतों की सवारियां इस तेज़ी से नहीं तै कर पा रही थीं, यहां तक कि मेरी साथ की औरतें कहने लगीं कि "ऐ अबू जुवैब की बेटी तेरा भला हो, ज़रा हमारे ख़ातिर रूक कर चलो, क्या यह तुम्हारी वही गद्ही नहीं है जिस पर बैठ कर तुम आई थीं, इस पर मैं उनसे कहने लगी क्यों नहीं बखुदा यह वही सवारी है, वह कहने लगीं : खुदा की क़सम इसकी तो नई बात मालूम होती है।

कहती हैं कि फिर हम अपने घरों में आ गए जो क़बीले बनू साद के इलाक़े में थे, वहां की ज़मीन ऐसी ज़मीन थी कि मैं नहीं जानती कि कोई और दूसरी ज़मीन उससे ज़्यादा खुश्क रही होगी, अब यह हाल हआ कि मेरी बकरियां शाम को मेरे पास चर का वापस आतीं जब कि हम इस मुबारक बच्चे को अपने साथ ले आए थे बहुत पेट भरी और दूध देनी वाली हो कर, चुनांचे हम दूध दूहते थे और पीते थे, जबकि वहीं यह हाल था कि कोई दूसरा एक क़तरा दूध नहीं दूह पाता था, बकरियों के थनों से, यहां तक कि हमारे ख़ानदान के लोग अपने अपने चरवाहों से कहने लगे अरे तुम्हारी ख़राबी हो वहां ले जाके चराओ जहां अबू जुवैब का चरवाहा चराने ले जाता है, लेकिन (इस पर भी) उनकी बकरियां भूकी वापस आती थीं, इसी तरह सिलसिला चलता रहा और हम बराबर अल्लाह तआला की तरफ़ से भलाई की ज़्यादा से ज़्यादा बात देखते रहे, यहां तक कि दूध पिलाने के दोनों साल गुज़र गए और मैंने उनका दूध छुड़ा दिया, और उनकी सेहत की तरक्की इस तरह हो रही थी कि ऐसी दूसरे बच्चों की नहीं हुआ करती, कि वह अभी दो साल ही को पहुंचे थे कि एक मज़बूत बच्चे की तरह हो गए, कहती हैं कि मैं उनको लेकर उनकी मां के पास आई, हालांकि हमें बहुत ज़्यादा ख़्वाहिश थी कि वह अभी हमारे बीच और रहें, क्योंकि हम उनकी बरकत को देख रहे थे, चुनांचे हमने उनकी मां से बात की और मैंने उनसे कहा कि मेरे इस बच्चे को मेरे पास अभी और छोड़े रखें ताकि और मज़बूत हो जाए, मुझे यह डर लगता है कि मक्के की बीमारी का उन पर असर न पड़ जाए, कहती हैं कि मैं उनसे बराबर कहती रही यहां तक कि उन्होंने हमारे साथ वापस जाने की इजाज़त दे दी।

कहती हैं चुनांचे हम उनको अपने साथ लेकर वापस आए, लेकिन खुदा की क़सम हुआ यह कि हमारे उनको वापस लाने के कुछ महीने के बाद वह अपने भाई अर्थात मेरे बच्चे के साथ बकरियों में थे, जो हमारे घरों के पीछे थीं इतने में उनका भाई अर्थात मेरा बच्चा दौड़ता हुआ आया और मुझसे और अपने

www.abulhasanalinadwi.org

बाप से कहा कि मेरे इस कुरैशी भाई को दो आदमियों ने जो दो सफ़ेद कपड़े पहने हुए हैं पकड़ लिया और चित लिटा कर उनका पेट चाक कर दिया, और जैसे कि उनको निचोड़ रहे हैं, कहती हैं कि मैं फ़ौरन निकली और उनके बाप निकले, उनकी तरफ़ लपके तो हमने उनको पाया कि वह खड़े हैं और चेहरे पर परेशानी का असर है, कहती हैं कि मैंने उनको लिपटा लिया और उनके बाप ने भी लिपटा लिया, और हमने उनसे कहा कि तुमको क्या हुआ ऐ मेरे बेटे! उन्होंने कहा कि मेरे पास दो आदमी आए जो सफ़ेद कपड़ों में थे उन्होंने मुझे लिटा दिया और मेरा पेट चाक कर डाला, वह उसमें कोई चीज़ ढूंढ रहे थे मैं नहीं जानता क्या है, वह कहती हैं हम उनको लेकर लौटे और अपने खेमे में लाए।

कहती हैं कि मुझसे उनके बाप ने कहा कि ऐ हलीमा मुझे डर मालूम होता है कि इस बच्चे को कहीं आसेब तो नहीं हो गया, अतः उनको उनके घर वालों के पास लौटा दो, इस से पहले कि उनकी यह चीज़ ज़ाहिर होने लगे, कहती हैं हम उनको लेकर उनकी माँ के पास आए, तो माँ ने कहा इनको तुम क्यों लाई ऐ दाई! हालांकि तुम तो बहुत इसरार (ज़िद) करती थी उनको ले जाने के लिये और अपने पास रखने के लिये, कहती हैं कि मैंने उनसे कहा कि अल्लाह तआला ने मेरे इन बेटे को अच्छे हाल तक पहुंचा दिया है और मुझ पर जो ज़िम्मेदारी थी वह मैंने पूरी कर दी है मुझे वाक़िआत (घटनाओं) से डर मालूम होता है इस लिये आप तक उनको ऐसा पहुंचाना मुनासिब समझती हूं जैसा आप पसन्द करती हैं, उन्होंने कहा कि यह तुम्हारी बात समझ में आने वाली नहीं है, सच सच बताओ माजरा क्या है? कहती हैं उन्होंने मुझको छोड़ा नहीं यहां तक कि मैंने सच सच बता दिया, कहती हैं उन्होंने कहा तुमको जिन्न व शैतान का ख़ौफ़ हुआ कहती हैं कि मैंने कहा हाँ।

कहती हैं कि उन्होंने कहा हरगिज़ नहीं, खुदा की कसम शैतान के उन तक पहुंचने का कोई रास्ता नहीं, मेरे इस बेटे की बात ही कुछ और है, और कहा मैं उनकी बात तुम को न बताऊँ और मैंने कहा ज़रूर बताइये।

उन्होंने कहा जब उनका हमल (गर्भ) मेरे हुआ तो मैंने देखा कि मेरे अन्दर से एक नूर निकला जिस से शाम के इलाक़े के शहर बसरा के महल रौशन हो गए फिर यह कि जब उनका हमल मेरे हुआ तो इतना हलका और आसान हमल कभी देखने में नहीं आया, इसी तरह जब मैंने उनको जना तो यह अपने दोनों हाथों को ज़मीन की तरफ़ किये हुए थे और उनका सर ऊपर आसमान की तरफ उठा हुआ था, तुम छोड़ो उनको और खुशी खुशी वापस जाओ"[1]

---

1 सीरत इब्ने हिशाम, भाग प्रथम, पृ0 162–165

www.abulhasanalinadwi.org

ऊपर कहे हुए बयान के मुताबिक़ हज़रत हलीमा के यहां आप सेहत (स्वास्थ्य) के साथ रहे, वहां आपने अपने दूध शरीके भाई के साथ बकरियों के चराने में शिरकत की, आप का यह बकरी चराना बाद में आपके काम भी आया, जबकि आप कुछ बड़े हुए और ज़रूरत यह महसूस की कि आप मक्के के कुछ लोगों की बकरियां मज़दूरी पर चराईं, उस समय आपकी उम्र दस साल की बताई गई है वहां के माहौल में कम उमरों के लिये बकरियां चराना समाज में बुरा नहीं समझा जाता था और ख़ास तौर पर जबकि उससे माली ज़रूरत पूरी होती हो, चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अपनी माली ज़रूरत पूरी की, आपके चचा अबू तालिब जो आपके दादा के बाद आपके सरपरस्त (संरक्षक) हुए थे, माली लिहाज़ से खुशहाली नहीं रखते थे और यह बकरियां चराना ऐसा काम भी न था जो सिर्फ़ आपकी ज़िन्दगी में मिलता हो, बल्कि पिछले कई नबियों के यहां यह सिलसिला रहा है, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने भी उजरत पर बकरियां चराई थीं, और शायद यह अल्लाह तआला की तरफ से एक हिकमत के तौर पर कराया जाता होगा, क्योंकि बकरियां ऐसा जानवर है जो मिल जुल कर रहती हैं, इधर उधर भागती हैं उनको इकटठा रखना और एक तरफ़ चलाना यह इनसानी गिरोह की रहनुमाई करने और उनको एक रूख़ पर चलने की मश्क़ (अभ्यास) कराने का भी मिज़ाज बना सकता है, जिसकी ज़रूरत नबियों को पेश आ सकती है।

वालिदा की वफ़ात और दादा की तवज्जुह और सरपरस्ती

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वालिदा जो अपने यतीम बच्चे को अपनी हद दर्जे क़ीमती पूंजी समझती थीं, और बच्चा भी बाप के न होने पर माँ से मानूस (हिला हुवा) रहता था, बच्चे को लेकर मदीना बच्चे के दादा की नानीहाल गईं, शायद वहां से बच्चे को देखने के लिये बुलाया गया होगा, कई महीने रहकर वापस हो रही थीं, कि मक्का मदीना के बीच की बसती "अबवा" में बीमार पड़ीं और इन्तिक़ाल कर गईं, उनके साथ एक ख़ातून (महिला) उम्मे ऐमन थीं जो एक तरह बच्चे की खिलाई भी थीं, बच्चे की देख भाल में मददगार थीं, आपकी वालिदा माजिदा की तदफ़ीन वहीं हुई, और अब आप उम्मे ऐमन के साथ मक्का वापस आए, आपकी उम्र उस वक़्त छः साल की थी, और अब वालिदा और वालिद, दोनों की सरपरस्ती नहीं रही[1]

दादा की वफ़ात

अब मर्दों में आपके दादा थे जिन्होंने शफ़क़त (ममता) बढ़ा दी और ध्यान रखा, वह मक्के के बड़े सरदार थे, लेकिन दो साल बाद उनका भी

---

1 इब्नुल असीर फ़ी उसुदिल ग़ाबह, 1/15

www.abulhasanalinadwi.org

इन्तिक़ाल हो गया, फिर उनकी जगह चचा अबू तालिब ने संभाली, आप उस वक़्त आठ साल के हुए थे।

इस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइशा और नशो नुमा (विकास व उन्नति) मक्के के उस बाइज़्ज़त ख़ानदान के ऐसे फ़र्द की हैसियत से हुई जो पैदाइश से पहले ही अपने वालिद से महरूम (वंचित) हो गया था और छः साल की उम्र को पहुंचने पर वालिदा के साया से भी महरूम हो गया, और आठ साल के हुए थे कि मेहरबान व शफ़ीक़ दादा ने भी जुदाई का दाग़ दिया, शुरू उम्र में इन दो नुक़सानों का होना कम उमरी के ज़माने में बड़ा चैलेंज रखते थे[1]

चचा अबू तालिब की तवज्जुह और ज़िम्मेदारी

दादा के इन्तिक़ाल के बाद आप अपने उन चचा की सरपरस्ती में रहे जिनका तिजारती कारोकबार था, इस सिलसिले में उनका वतन से दूर जाना हुआ करता था, और मक्के के निवासियों का यही व्यापारी कारोबार था, आपकी उम्र बारह साल की रही होगी कि चचा तिजारत के लिये शाम जाने लगे तो आपने उनके चले जाने से तन्हाई के एहसास से अपने लिये भी इसरार किया, कि साथ चलेंगे, आपके इसरार पर आपको बावजूद कम उम्र होने के साथ ले लिया, चुनांचे आपने शाम का तिजारती सफ़र भी किया और तिजारती अन्दाज़ व तरीक़े को भी देखा और उसको समझा भी होगा, जैसा कि बाद में हज़रत ख़दीजा के कहने पर आपने तिजारती सफ़र को क़ुबूल करके अपनी जानकारी दिखा दी[2]

उस ज़माने के हालात पर नज़र डालने से यह ख़ास बात सामने आती है कि प्रारंभिक शारीरिक उन्नति और विकास की अवस्था (उम्र) में मां और बाप दोनों की सरपरस्ती न होने पर और माली हालात के अनुकूल न होने पर परेशान न होना और बेसहारा जैसी कैफ़ियत से गुज़रने के बावजूद बेचैन न होना, बल्कि सब्र, बरदाश्त (सहन) अपने ऊपर भरोसा, हिम्मत, हौसला, सच्चाई, दियानतदारी, ऊँचा हौसला जैसी अच्छाईयों को पैदा होना एक अजीब और शानदार बात ज़ाहिर होती है जो आपको हासिल हुई, और आप हालात के मुवाफ़िक़ न होने के बावजूद ऐसे किरदार (आचरण) और शख़सियत (व्यक्तित्व) के मालिक बने जिनको देख कर लोग आपके बारे में ऊँचा ख़याल रखने लगे।

चुनांचे आप नबूवत का मन्सब मिलने से पहले चालीस साल की उम्र तक मक्के के बाशिन्दों (निवासियों) में एक निहायत शरीफ़ाना, अच्छे अख़लाक़ और

---

1 तबक़ात इब्न सअ़द, 1/188–119
2 तबक़ात इब्न सअ़द, 1/188–119

www.abulhasanalinadwi.org

ऊँची इन्सानी क़दरों वाले इन्सान की शकल में देखे गए, और उनके वतन वाले, रिश्तेदार, उनसे उन्हीं ऊँची सिफ़ात की वजह से मुहब्बत करते और "सादिक़" व "अमीन" के ख़िताबात से नवाज़ते थे, कि सच्चा इन्सान, दयानतदार इन्सान, आप अपने वतन वालों और ख़ानदान के लोगों के साथ हर अच्छे काम में शरीक और मददगार और ग़लत कामों में अपने को अलग रखने वाले थे।

आपका पालन पोषण और शिक्षा-दीक्षा

सैय्यदना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की "बेसत" अनगिनत नबियों की अनगिनत क़ौमों में "बेसत" और नबूवत का काम अन्जाम देने के बाद वाक़े (घटित) हुई थी, उन क़ौमों ने नबियों की कोशिशों के बावजूद बहुत कम उनकी बात मानी और अपनी अपनी ख़ुवाहिशात की ज़िन्दगी को बहुत कम बदला और आख़िर में अल्लाह तआला ने छे सौ साल की मुद्दत, नबियों को भेजने से खाली रखी, विद्वानों और विचारकों पर मामले को छोड़ा कि इन्सान खुद से अपने को सही दीनी व अख़लाक़ी रास्ते पर लाएं, लेकिन इन्सानों की हालत और ज़्यादा खराब हो गई, और क़ाबिले नफ़रत हद तक पहुंच गई, जैसा कि हदीस शरीफ़ में इसका ज़िक्र आया है लेकिन अल्लाह तआला को फिर भी रहम आया और उसने ऐसा नबी भेजने का फ़ैसला फ़रमाया जो कि ज़्यादा मुअस्सिर (प्रभावी) और हमागीर (सर्व व्यापी) तरीक़े से इन्सानों के सुधार का काम करे और सिर्फ़ जिन्दगी के दीनी शोबों (विभागों) तक काम को महदूद (सीमित) न रखे बल्कि ज़िन्दगी के तमाम पहलुओं (विभागों) में अल्लाह रब्बुल आलमीन की मर्ज़ी पर चलने का मिज़ाज बनाए और तरबियत (ट्रेनिंग) दे, आपसे पहले विभिन्न क्षेत्रों मे विभिन्न क़ौमों में नबी भेजे जाते रहे, उन्होंने अपने इलाक़ों और क्षेत्रों तक अपने काम को अन्जाम दिया था, उनकी कोशिशों के बाद भी जब जब इस्लाह अर्थात सुधार की उम्मीद ख़त्म हो जाती और नबी को उसकी क़ौम बिल्कुल आजिज़ (विवश) कर देती बल्कि उसको मार कर ख़त्म कर देने के दरपै हो जाती तो फिर अल्लहा तआला अपना ग़ज़ब अज़ाब की शकल में नाज़िल करता और उनके बिगाड़ को ख़त्म करने के लिये दुनिया को उनसे पाक कर देता।

इस्लाह व दावत (सुधार और अल्लाह की ओर बुलाने) के लंबे सिलसिले के बाद अब छटी सदी ईसवी से जो ज़माना शुरू हो रहा था, वह इन्सानों की ज़िन्दगियों में बहुत बुरे हालात पैदा हो जाने का ज़माना महसूस किया जा रहा था, दूसरी तरफ़ मानव जीवन, इन्सानी तमद्दुन (संस्कृति) व्यवहारिक तजुरबों और उसकी टूट फूट के मरहले से गुज़र कर एक विश्वव्यापी जीवन व्यवस्था और शिक्षा के आम होने के ज़माने में दाख़िल होने जा रहा था, एक तरफ़ उसकी ज़िन्दगी अख़लाक़ी और दीनी हालात के लिहाज़ से बहुत ज़्यादा बिगाड़ की हद

तक पहुंच गई थी, जो अल्लाह तआला के बहुत ग़ज़ब और नफ़रत को खींचने का सबब बन रही थी, और उससे यह सूरत बन रही थी कि या तो इस बिगाड़ को ख़त्म करने के लिये रब्बुल इज़्ज़त इस दुनिया को ख़त्म करदें, या फिर बहुत छूट देकर सुधार का फिर मौक़ा दे दें।

इसके लिये ऐसे ही नबी की ज़रूरत थी जो बिखरे हुए हालात में तरह तरह की ज़िम्मेदारियों को संभाल सके और उसका पालन पोषण भी अच्छे ढंग से हुआ हो और उसके दिल व दिमाग़ की तख़्ती पर स्वार्थ परता और इच्छा भक्ति की छाप न आई हो, ताकि उसके दिल व दिमाग़ की तख़्ती इन्सानी तालीम से सादा हो, और उसकी शिक्षा और दीक्षा का अमल आसमानी तालीमात द्वारा अन्जाम पाए, ताकि ज़्यादा से ज्यादा असर करने वाली और जामे (व्यापी) नबूवत का बोझ उठाने की ज़िम्मेदारी की मज़बूत बुनियाद रखी जाए।

चुनांचे अल्लाह तआला ने इसके लिए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इन्तिख़ाब (चयन) किया और उनको बचपने ही से ऐसे हालात से गुज़ारा जिनसे उनमें उस मुजव्वज़ह (प्रस्तावित) मनसब को संभालने की सलाहियत अच्छी तरह पैदा हो सके और इस तरह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत सी खुसूसियात (विशेषताओं) वाला, मुकम्मल और महान गुणों वाला नबी बना कर मबऊस फ़रमाया, और आपमें उसी के अनुकूल विशेषताएं पैदा फ़रमाईं, उसी के अनुसार आपका पालन पोषण और विश्वव्यापी व्यक्तित्व की रचना हुई, जिसको हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक जिन्दगी में नुमायां (स्पष्ट) तरीक़े से देखते हैं कि आप मानव जीवन के लिये पूर्ण आदर्श और मार्ग दर्शक बने।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो ज़िम्मेदारी रखी गई उसमें एक तरफ़ तो व्यक्तित्व स्तर की उच्च कोटि की विशेषताएं, दूसरी तरफ़ ज़िन्दगी के विस्तृत क्षेत्र बल्कि विश्व स्तर की सलाहियतें रखी गई, इस में व्यक्तिगत स्तर पर आदर्श आचरण, मानव जीवन के सामूहिक तक़ाज़े शासन प्रबंध, आपस के संबंध, राजनीति, अर्थ व्यवस्था, विद्या, ज्ञान, इसके अलावा सभी मआमलात थे, और इस सब को अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ चलाने की सलाहियत थी और इस तरह दीन व शरीअत का जो आसमानी प्रबन्ध मुक़र्रर कियागया था उसको पूरा करना था। चूंकि दीन आप पर मुकम्मल हो गया था इस लिये ऐसी शरीअत का ऐलान करना था जिसमें क़यामत तक पैदा होने वाले मसाएल व मआमलात और दुनिया के विभिन्न भागों में बसने की सूरत में अखलाक़ी व समाजी ज़रूरतों को समझने और एख़्तियार करने की सूरतें, और इल्मी कोशिशों से पैदा होने वाले हालात और उनसे संबन्धित लोगों और मिज़ाजों की रिआयत रखी गई, इस तरह बहुत दूरदर्शिता और मानव जीवन की अनेकता का लिहाज़ रखने की व्यापक और लाभदायक शरीअ़त बनी।

www.abulhasanalinadwi.org

कुरआन मजीद में पिछली क़ौमों का जो तज़किरा आया है उसमें उन क़ौमों की शरीअत में उनके महदूद (सीमित) हालात के दाइरे के उमूर तक मआमला मिलता है लेकिन अब जो ज़माना शुरू हो रहा था उसमें अगरचे दुनिया और ज़िन्दगी के अपने इलाक़ाई (क्षेत्रीय) और नस्ली फ़र्क़ व एख़्तिलाफ़ के साथ इलाक़ों में बसने वाले लोग हो सकते थे जो यकसां मौसम और यकसां भौगोलिक हालात का भी फ़र्क़ था, सर्दी, गर्मी का फ़र्क़ पाया जाता है लेकिन समाजी और इल्मी तरक़्क़ियों से उनमें आपसी क़ुरबत (समीपता) बढ़ने लगी थी, और इन्सानों के खुद अपने इलाक़ाई और समाजी हालात का जो फैलाव हो सकता है उन सबका लिहाज़ इस ज़माने के नबी की शरीअत में रखा गया, इसी के साथ साथ आला इन्सानी क़दरों और रब्बुल आलमीन के हुक्मों की पाबन्दी वाली ज़िन्दगी के निज़ाम (प्रबन्ध) को क़ायम करने के लिये ताक़त के इस्तेमाल की ज़रूरत पड़ने पर दुशमन और मुख़ालिफ़ ताक़तों से मुक़ाबला करने का अन्दाज़ एख़्तियार करने का निज़ाम (प्रबन्ध) भी रखा गया, नया शुरू होने वाला ज़माना इल्म के फैलने का और वह हर इन्सान की ज़रूरत बन जाने का था, शायद इसी वजह से, इस ज़माने के शुरू होने के लिहाज़ में पहली "वही इलाही" (ईश्वरीयवाणी) के ज़रिये आपको जो हिदायत दी गई वह "इक़रा" (पढ़िये) के लफ़्ज़ से फ़रमाई गई और उसमें "क़लम" के किरदार (रोल) की भी अहमियत ज़ाहिर फ़रमाई गई जिससे साफ़ तरीक़े से नए ज़माने को "इल्मी ज़माना" का मुक़ाम अता किया गया, फ़रमाया :-

"पढ़ उस खुदा के नाम से जिसने दुनिया को पैदा किया, जिसने आदमी को गोश्त के लोथड़े से पैदा किया, पढ़ तेरा खुदा करीम (उदार) है वह जिसने इन्सान को क़लम के ज़रिये इल्म सिखाया वह जिसने इन्सान को वह बातें सिखाईं जो उसे मालूम न थीं"। (सूरः इक़राः१-५)

इन्सानों के लिये इल्म की अहमियत ज़ाहिर की गई और इल्म का अहम ज़रिया क़लम है, इसका हवाला (सन्दर्भ) खुसूसियत के साथ दिया गया और ताकीद की गई कि इल्म को खुदा के नाम से जोड़ा जाए और ज़ाहिर है कि इल्म को अब तक खुदा के नाम से जोड़ने के बजाए आज़ाद छोड़ दिया गया था इससे इन्सानों में अख़लाक़ी बिगाड़ पैदा हो गया था, साथ ही साथ यह भी बताया गया कि इन्सान को ताक़त व सलाहियत हासिल होने पर उसमें सरकशी (अवज्ञाकारी) ज़ुल्म और ज़्यादती का मिज़ाज बन जाता है लिहाज़ा उसको बताया कि वह एहतियात (सावधानी) करे, आख़िरत में अपने रब के सामने जवाब देह होता है, फ़रमाया :-

"मगर इन्सान सरकश हो जाता है जबकि अपने तेईं ग़नी (मालदार) देखता है, कुछ शक नहीं कि उसको तुम्हारे परवरदिगार ही की तरफ़ लौट कर जाना है"। (सुरः अलक़ ६-८)

www.abulhasanalinadwi.org

बाद की तारीख़ यह बताती है कि इल्म आम हो जाने का जो दौर (काल) इस्लाम की सरपरस्ती से शुरू हुआ उसमें इस्लाम के मानने वालों ने एक तरफ़ तो इल्म की सरबराही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर की, और इल्म को फैलाया और तरक़्क़ी दी और उसके लिये नए नए मैदान तलाश करके उनमें भी काम करने का सिलसिला क़ायम किया और अपनी इल्मी तरक़्क़ियों से इन्सानो को फ़ाइदा पहुंचाया और दूसरी तरफ़ इल्म को खुदा के नाम से जोड़ा और इन्सानी ज़िन्दगी की हलाकत और बरबारी के बजाए हिदायत और सुधार का ज़रिया बनाया, इस्लाम ने इल्म में निरन्तर चिन्तन और रेसर्च के ज़रिये और ग़ौर व फ़िक्र के उन्सुर (तत्व) को अहमियत देकर इज़ाफ़ा और नफ़ा के क़ाबिल बनाने की दावत दी, और उसको सरकशी व ज़ुल्म और ग़लत इस्तेमाल से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रखा, इसके विरूद्ध दूसरी कौमों के कि उन्होंने इल्म से नुकसान ही पहुंचाया, इल्म को खुदा से अपरिचित बल्कि खुदा से इन्कार और सरकशी का ज़रिया बना कर एटम बम और हलाक करने वाले घातक हथियार बनाए, और दिलों के बिगाड़ का काम किया और उसका ग़लत इस्तेमाल किया।

बहरहाल इस नबी की शरीअ़त इल्म से तअ़ल्लुक (संबन्ध) रखने वाली और इल्म के ज़रिये इन्सानी अक़्ल के तक़ाज़ों की पूरी रिआयत करने वाली हुई और इल्म खुदा को पहचानने और इन्सानों की ख़िदमत करने का ज़रिया बना, इल्म के साथ दौलत और खुशहाली के बारे में नया अन्दाज़ एख़्तियार किया, इन्सान की सरिश्त (प्रवृति) की तरफ़ इशारा किया गया कि वह सरकशी (बग़ावत) करने लगता है, खासतौर पर जब दौलत आती है और उसका ज़ेहन दीन से दूरी और खुदा की ताबेदारी से हटकर चलता है, वह समझता है कि यह उसकी मेहनत और इल्म के ज़रिये हासिल हुआ है और वह जिस तरह चाहे उसे इस्तेमाल कर सकता है, इस तरह दीने इस्लाम की जो शकल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सरपरस्ती में शुरू हुई उसमें इन्सानी ज़िन्दगी के तमाम पहलुओं की रहनुमाई रखी गई, जो बहुत मुकम्मल (परिपूर्ण) रहनुमाई थी और इन्सान की सलामती (कुशलता) और दुनिया व आख़िरत दोनों में कामयाबी रखी गई और इसका भरपूर आग़ाज़ (आरंभ) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खुद मुबारक ज़िन्दगी से हुआ और आपकी तरफ से उन तमाम पहलुओं के सिलसिले में ज़रूरी रहनुमाई हुई।

सबसे ऊँची खूबियों वाली शखसियत

अल्लाह रब्बुल आलमीन को अपने इस आख़िरी (अन्तिम) निश्चित नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ऐसा बड़ा बोझ डालना था जो आम इन्सान के बस में नहीं हो सकता, लिहाज़ा आपके ज़ाहिर व बातिन (प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष) को अल्लाह तआ़ला ने सब इन्सानों के मामले में ज़्यादा मज़बूत और बुलन्द सिफ़ात

www.abulhasanalinadwi.org

(उच्च विशेषताओं) वाला पैदाइश के वक़्त से बनाया था, फिर उसके लिये ख़ास तौर पर ज़िन्दगी की मुशकिल मन्ज़िलों और उतार चढ़ाव से आपको गुज़ारा जो इन्सान में मुख़तलिफ़ हालात को झेलने और पुख़्ता इरादे व हिम्मत से मुनासिब राह निकालने के लिये मददगार हो सके, सबसे पहले आपका सामना यतीमी की बेचारगी से कराया गया, पैदाइश के बाद जब आपने होश संभाला तो आपने देखा कि आप बाप के साये से महरूम (वंचित) हैं, आप छः साल की उम्र को पहुंचे थे कि माँ का भी साया उठ गया, जबकि आपके इर्द गिर्द सैकड़ों आपके हमसिनों को माँ बाप का साया हासिल था, यह बात एक मासूम और छोटी उम्र के बच्चे के दिल व दिमाग़ पर आम तौर पर एक सख़्त ज़ेहनी बेचारगी और दिल के टूटने का सबब हुआ करती है, छः साल की उम्र में माँ का भी साया उठ जाने के बाद प्यार मुहब्बत करने के लिये दादा थे वह भी आठ साल की उम्र में जुदाई का दाग़ दे गए, इन महरूमियों (वंचिताओं) को कोई बच्चा भली भांति नहीं झेल पाता और उसकी ज़िन्दगी का रास्ता पेचीदा हो जाता है और ज़िन्दगी में उसकी कामयाबी संदिग्ध हो कर रह जाती है लेकिन अगर इस बोझ को खुदा की दी हुई हिम्मत से वह झेल ले तो उसकी शख़सियत (व्यक्तित्व) में मुश्किल हालात को झेलने और उसमें ज़रूरत और पसन्द की राह निकालने की अच्छी तरह सलाहियत (क्षमता) पैदा हो जाती है, अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह हिम्मत ख़ासतौर पर अता फ़रमाई, जिसकी बिना पर आपमें हालात और वाक़िआत के तक़ाज़ों को मुनासिब ढंग से महसूस करने और ज़िन्दगी के चेलेंजों का मुनासिब (उचित) ढंग से मुक़ाबला करने की समझ और हिम्मत पैदा हुई और जल्द ही आपने इज़्ज़त वाली ज़िन्दगी का रास्ता एख़तियार किया, और ज़िन्दगी को मुश्किल हालात के बावजूद आत्म सम्मान और उच्च साहस से सुसज्जित किया।

चुनांचे प्रारंभिक जीवन काल ही से आप आस पास के खराब माहौल को नापसन्द करने लगे थे, आपने इस बात को बहुत महसूस किया कि लोगों में एक तरफ़ तो इज़्ज़त वाली ज़िन्दगी का शौक़, वीरता और साहस और विभिन्न मानव सम्मान की खूबियां हैं, लेकिन दूसरी तरफ़ धार्मिक भावना की तसल्ली के लिये मनगढ़न्त इन्सानी और हैवानी पुत्ले बना कर उनको पूजते और उनके सामने अपनी ज़रूरतें रखते, और यह ऐसा करते हैं जैसे किसी ज़िन्दा इन्सान बल्कि इन्सान से बड़ी ताक़त के सामने अपनी ज़रूरत का सवाल किया जाता है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दोनों बातों में कोई जोड़ नज़र नहीं आता था और एक टकराव मालूम होता था कि एक तरफ़ तो मानव उच्चता और महानता का एहसास बल्कि एहसास बरतरी (श्रेष्ठ होने का एहसास) और दूसरी तरफ़ इतना नीचे उतर आना कि बेजान मिट्टी और पत्थर जैसी चीज़ों के सामने अपने को गिराना और बेइज़्ज़त करना, आप इस खयाल से और ऐसी गिरी पड़ी

www.abulhasanalinadwi.org

बातों से अपने को अलग रखते और शायद यह भी एक वजह थी कि आपको "आसमानी वही" (ईश्वरीय वाणी) के आने और उसके ज़रिये रहनुमाई मिलने से पहले अपने इर्द गिर्द के हालात से मुतमइन (सन्तुष्ट) न होने पर तनहाई एख़्तियार करके आप में ज़िन्दगी और दुनिया के छूपे हुए राज़ों पर सोचने का ख़याल पैदा हुआ और उसके लिये आप शहर से बाहर पहाड़ के ग़ार (गुफा) में जाकर कुछ वक़्त गुज़ारने लगे थे।

हिलफुल फुजूल :-

एक ग़रीब और बाहरी (क़बील-ए-ज़बीद का) आदमी उसके हक़ की अदाइगी में एक सम्मानित पुरूष आ़स बिन वाएल की तरफ़ से ज़्यादती हो रही थी तो खानदान के कुछ सम्मानित लोगों ने हक़दारों के हक़ दिलाने के लिये एक कमेटी की तशकील (रचना) की, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उसमें शरीक हुए, और जब भी खानदान या शहर के जाएज़ मामलात में कुछ करने की ज़रूरत पड़ती आप उसमें शरीक होते, आपकी दयानत व अमानत को देखते हुए लोगों को इतना ऐतिबार हो गया था कि लोग आपके पास अपनी अमानतें रखाते और विश्वास करते।[1]

हज़रत ख़दीजा के साथ तिजारत में शिरकत और निकाह

एक शरीफ़ ख़ानदान की बाइज़्ज़त और मालदार ख़ातून (महिला) को जो तिजारती माल बाहर से मंगवाती और भेजवाती थीं, और बेवा (विधवा) हो जाने पर अपने व्यापारिक माल को बाहर भेजने के सिलसिले में किसी दयानतदार (विश्वसनीय) और समझदार मर्द की मदद की ज़रूरत महसूस करने लगी थीं जो उनके गुलाम के साथ सफ़र करे और गुलाम की सरपरस्ती और निगरानी (देख भाल) रखे, उन्होंने आपकी खूबियों से जानकारी की बुनियाद पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी मदद करने की फ़रमाइश (मांग) की और अपने गुलाम के साथ ज़िम्मेदार बना कर बाहर भेजा और इस तरह आपकी कार करदगी और अमली सलाहियत (कार्य कुशलता) को जांचा, आपने अपने उस सफ़र (यात्रा) से उन ख़ातून (महिला) का मामला बहुत नफ़ा के साथ पूरा किया, इसके अलावा आपके साथ गए हुए गुलाम ने भी आकर आप की कार करदगी और दयानतदारी (सच्चाई) की बहुत तारीफ़ (प्रशंसा) की।

चुनांचे उन खातून (महिला) ने जब कि दूसरे कई मुअ़ज़्ज़ज़ (सम्मानित) लोगों के पैग़ामात उनसे रिश्ते के आए थे और उनसे माज़रत (क्षमा याचना) कर दी थी, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खुद रिश्ते की पेशकश की, यह

---

1 अल–कामिल फ़ित्तारीख़ 2/41–42

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत ख़दीजा बिन्त खुवैलद थीं[1] यह उम्र में आपसे पन्द्रह साल बड़ी थीं, लेकिन आपकी जो खूबियां उन्होंने देखीं उनकी बिना पर आपसे शादी का रिश्ता क़ायमकरने का फ़ैसला किया, आपकी उम्र पच्चीस साल और हज़रत ख़दीजा की उम्र चालीस साल थी, लेकिन आप भी उनको जीवन साथी बनाने पर तैयार हो गए, और उम्र के इस अन्तर को अनदेखा किया और उनके समझदार ख़ानदान में उनकी जो इज़्ज़त थी उसको क़ाबिले तरजीह (प्रमुखता योग्य) समझा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह पहला निकाह था, जो आम इन्सान अपने से बड़ी उम्र की खातून (महिला) से नहीं करता, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अच्छाइयों और खूबियों को सामने रखने वाले मिज़ाज के थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसको खुशी से कुबूल कर लिया[2], निकाह कर लेने से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब बाक़ाएदा तौर पर घर वाले हो गए, दूसरी तरफ़ तिजारती मामले में एक दूसरे की कमी को पूरा करने के लाएक़ हो गए, दोनों ने बहुत मुहब्बत और तअल्लुक़ के साथ रिश्ता निभाया और शहर में भी नेकनामी के साथ ज़िन्दगी के फ़राएज़ (कर्तव्य) अन्जाम देते रहे।

इस निकाह के नतीजे में हज़रत ख़दीजा के जो आपकी अब अहलिया (पत्नी) हो गई थीं, कारोबार में आपको ज़्यादा अधिकार हासिल हुए और उसके प्रभाव से आपकी जो आर्थिक फ़िक्र थी वह क़रीब क़रीब जाती रही और आपको मक्का के माहौल में दीन के सिलसिले में जो गुमराही (पथ भ्रष्टता) नज़र आती थी उससे बचते हुए अल्लाह तआला की याद और इबादत की ओर ज़्यादा तवज्जुह देने लगे, यह अधिकतर तनहा जगह जाकर अपने रब का ध्यान करने और याद करने की सूरत में होता था, आप सल्ललाहु अलैहि वसल्लम की बीवी हज़रत ख़दीजा की तरफ़ से एक गुलाम भी जो हज़रत ज़ैद बिन हारिस थे आपको हासिल हुए, वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बड़े अच्छे मददगार बन गए थे, उनको आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्सानी जज़्बे (भावना) के तहत गुलामी से आज़ाद करके अपना साथी बना लिया, जो उस ज़माने में मुतबन्ना (मुंह बोला बेटा) बनाने के तरीक़े से भी किया जाता था।

अबू तालिब के बेटे हज़रत अली को अपनी कफ़ालत (पालन पोषण) में लेना :-

दूसरी तरफ़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मआशी तौर पर सहूलत मिलने पर अपने मुशफ़िक़ (कृपालू) और इन्तिहाई हमदर्द चचा अबू

---

1 अल–कामिल फ़ित्तारीख, 2/40
2 उसुदुल ग़ाबा, 1/16

www.abulhasanalinadwi.org

तालिब की तंगहाली का एहसास बढ़ गया, इसी एहसास की वजह से आपने अपने दूसरे चचा हज़रत अब्बास के सामने यह तजवीज़ (प्रस्ताव) रखी कि अबू तालिब के चूंकि कई लड़के हैं, उनका मआशी बोझ उनके लिये ज़्यादा है, लिहाज़ा उनमें से कम से कम दो को हम दोनों अपनी अपनी कफ़ालत में लेकर उनके लिये आसानी की सूरत पेश करदें, चुनांचे इस प्रस्ताव के अनुसार एक को हज़रत अब्बास ने अपने साथ कर लिया और दूसरे को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने साथ कर लिया, हज़रत अब्बास रज़िअल्लाह अन्हु ने अक़ील की ज़िम्मेदारी ली और आपने हज़रत अली को लिया, हज़रत अली की उम्र भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र से तीस साल कम थी, यह फ़र्क़ आम तौर पर बाप का बेटे से होता है, उनको अपनी कफ़ालत में लेते वक़्त उनकी उम्र लगभग पांच साल की रही होगी और आपकी उम्र पैंतिस साल रही होगी, यूं वह पूरी ज़िन्दगी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बेटे की तरह रहे, आपने चचाज़ाद भाई होने का भी ख़्याल रखा।

काबे की तामीर (निर्माण)

आप अपने दीनी जज़्बे (भावना) के तहत यूंतो बैतुल्लाह शरीफ़ में इबादत की ग़रज़ से जाया करते थे, और बैतुल्लाह शरीफ तामीर (निर्माण) करने वाले अपने महान पूर्वजों हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से मनक़ूल तरीक़े (चलित नियम) को जिस क़दर जान सके थे उस तरीक़े से इबादत करते थे, बुतों की इबादत की जो रस्म (रीति) मिलती थी उसको उनका ज़ेह्न क़ुबूल नहीं करता था, लिहाज़ा उनसे अलग रहते हुए अपने अन्दाज़ से अपने रब की इबादत कर लेते थे, इसी बीच काबा की मरम्मत की ज़रूरत महसूस की गई, उसकी छत नहीं थी, दीवारें भी सिर्फ़ मर्द बराबर थीं और मक्का चूंकि गहराई में है इस लिये सैलाब आने पर सब ख़राब हो जाता था, लिहाज़ा क़ुरैश को फ़िक्र हुई कि उसको ठीक करें, इसी बीच उनको यह ख़बर मिली कि जद्दा में एक जहाज़ टूट कर बेकार हो गया है, क़ुरैश के एक सरदार ने वहां जाकर क़ुरैश की तरफ़ से उसकी लकड़ी के तख़्ते हासिल किये और उनके ज़रिये काबा का नव-निर्माण किया, चूंकि यह मुक़द्दस इबादतगाह का काम था इस लिये उसमें क़ुरैश के सब ख़ानदानों के नुमाइन्दे (प्रतिनिधि) शरीक हुए, आप अपने कांधे पर पत्थर रख कर लाते और जगह तक पहुंचाते थे जिससे आप के कांधे छिल भी गए, फिर जब हज्रे असवद को उसकी ख़ास जगह रखने का समय आया तो क़ुरैश में झगड़ा हो गया कि हर एक उसको रखने की बरकत हासिल करना चाहता था, क़रीब था कि उस पर आपस में लड़ाई की नौबत आ जाए।

आख़िर में फ़ैसला हुआ कि अगले दिन सुबह सवेरे जो बैतुल्लाह शरीफ़ में सबसे पहले पहुँचे उससे इस सिलसिले में फ़ैसला कराया जाए और वह सबको कुबूल हो, अगली सुबह यह खुसूसियत (विशेषता) हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हासिल हुई, आप सबसे पहले वहां पहुंचे थे, आपको देख कर सब खुश हुए और कहा कि यह तो "अस्सादिकुल अमीन" हैं (सच्चे अमानतदार) यह बहुत ही मुनासिब (उचित) हैं, चुनांचे आपके ज़रिये फ़ैसला लिया गया आपने यह फ़ैसला दिया कि "हज्रे असवद" एक चादर में रख कर सब मिलकर उठाएं, हर एक अपनी तरफ़का किनारा पकड़े, चुनांचे सबने चारों तरफ से चादर पकड़ कर उठाया और जब उसकी निश्चित जगह पर पहुंचा दिया तो आपने सहारा देकर उसकी जगह पर रोक दिया।[1]

इस तरह आपने अपने हकीमाना फैसले (सूझ बूझ) के ज़रिये कुरैश के लोगों को सन्तुष्ट कर दिया और कुरैश के लोगों को इस कश मकश (संघर्ष) से बचा लिया कि "हज्र असवद" की बरकत न मिलने पर आपस में तलवारें चल जातीं, जैसा कि अरबों में इज़्ज़त की ख़ातिर हो जाया करता था, आपके इस अमल से सबकी नज़र में आपकी अहमियत और बढ़ गई, ख़ानदान के सब लोग आपकी सच्चाई और खूबियों की पहले से क़दर (आदर) करते थे, इस से और आपका सम्मान बढ़ा और महत्वपूर्ण अवसर पर आप पर अधिक विश्वास करने लगे।

खुदाई इनायत (कृपा) व तरबियत (प्रशिक्षण)

आपमें यह उच्च मानव विशेषताएं कुछ तो प्राकृतिक तौर पर और तबीअ़त की सलामती (शान्ति) और महान साहस से पैदा हुईं थीं जिन में ख़ानदान की सर्वोच्च विशेषताओं का भी प्रभाव था, फिर उनमें तरक़्क़ी और मज़बूती ज़िन्दगी के कठिन हालात से गुज़रने और सहनशीलता के अभ्यास से पैदा हुई थी जिनसे आप को बिल्कुल कम उमरी ही के ज़माने से साबिक़ा पड़ने लगा था।

बहरहाल सख़्त हालात और ज़िन्दगी की दुशावारियों और बहुत ही क़रीबी मुहब्बत करने वालों की कमी आपमें हिम्मत व अज़ीमत (पक्का इरादा) और किरदार की मज़बूती पैदा करने में मददगार बनीं, उत्कृष्ट मानव विशेषताओं को आपने अपनाया और उन बुरी बातों सेअपने को अलग रखा जो आम आज़ादाना तबीअ़त के नई उमरों और नव जवानों में पैदा हो जाती हैं और यह वास्तव में अल्लाह रब्बुल आलमीन की इनायत (कृपा) से था जिसकी तौफ़ीक़ ख़ास (विशेष सामर्थ्य) से आप अच्छे और खूबियों वाले तरीक़े पर चले, और

---

1 उसुदुल ग़ाबा, 1/17, अलकामिल फ़ित्तारीख़, 2/45, तारीख़ तबरी, 2/290 सीरत इब्ने हिशाम, 1/197

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त को इसी आज़ादाना माहौल से एक सच्चे और आला इन्सानी सिफ़ात व अख़लाक़ के फ़र्द को अपना ऐसा नबी बनाना था जिसको क़यामत तक दीने हक़ (सत्य दीन) का पैगाम्बर और रहबर होना था, क़ुरआन मजीद में रब्बुल आलमीन ने इसकी तरफ़ इशारा भी किया, यह उस मौक़े (अवसर) पर किया जब नबी बनाए जाने के बाद अल्लाह तआला की तरफ़ से आती रहने वाली "वही" (ईश्वरवाणी) में एक मौक़े पर देर हुई और आपको ख़ौफ़ हुआ कि कहीं अल्लाह तआला की नज़रे इनायत आपसे हट तो नहीं गई, तो सूरह नाज़िल हुई :-

"सूरज की रोशनी की क़सम और रात के अंधेरे की जब छा जाए कि ऐ (मुहम्मद) तुम्हारे परवरदिगार ने न तुम को छोड़ा और न तुमसे नाराज हुआ और आख़िरत तुम्हारे लिये पहली हालत (अर्थात दुनिया) से कहीं बेहतर है और तुम्हें परवरदिगार अनक़रीब वह कुछ अता फ़रमाएगा कि तुम खुश हो जाओगे, भला उसने तुम्हें यतीम पाकर जगह नहीं दी? (बेशक दी) और रास्ते से अनजान देखा तो रास्ता दिखाया, और ख़ाली हाथ पाया तो मालदार कर दिया तो तुम भी यतीम पर ज़्यादती न करना और मांगने वाले को झिड़की न देना और अपने परवरदिगार की नेमतों का बयान करते रहना"। (सूरह अज-ज़ुहा)

हज़रत अबू बकर की दोस्ती

क़ुरैश में आपके बराबर वाली उम्र के लोगों में आपको सबसे ज़्यादा लगाव और तअल्लुक़ हज़रत अबू बकर से हो गया था, वह भी मुहतात (संयमी) और साफ़ तौर तरीक़े के इन्सान थे इसकी बिना पर दोनों एक दूसरे की ख़ूबियों को पसन्द करके आपस में बहुत मानूस (परिचित) हो गए थे और क़रीबी रब्त व तअल्लुक़ पैदा हो गया था, यह तअल्लुक बाद में मिसाली तअल्लुक़ बन गया और नबूवत मिलने पर उन्होंने आप पर यक़ीन और आपकी मातहती (अधीनता) को दिल व दिमाग़ की पूरी हम-आहंगी (पूर्ण सहमति) के साथ क़ुबूल कर लिया जो आख़िर तक मिसाली अन्दाज़ में जारी रहा।[1]

ग़ारे हिरा में ऐतिकाफ़ के लिये वक़्त गुज़ारना

आप नबूवत मिलने से पहले ही दीनी व अख़लाक़ी हालात की ख़राबी को महसूस करके सोचने लगे कि यह सब क्या हो रहा है और इन्सान अपनी इन्सानियत से दूर होता चला जा रहा है, इस एहसास की वजह से आप जब तब शहर की आबादी से दूर निकल जाते और आबादी से अलग थलग एक ग़ार में

---

1 अल-मवाहिबुल-लदुननियह, क़स्तलानी, पृ0 38

www.abulhasanalinadwi.org

कुछ वक़्त गुज़ारते, ज़ाहिर है आप में तन्हाई और तख़लिये में कुछ वक़्त गुज़ारने का जज़्बा व तक़ाज़ा अस्ल हक़ीक़त की तलब और उसके सिलसिले में ग़ौर व फ़िक्र के लिये रहा होगा, जो आपके गहरे एहसास का नतीजा रहा होगा, फिर चूंकि परवरदिगारे आलम ने अरब और ग़ैर अरब इन्सानों में बहुत ज़्यादा ख़राबियों और बुराइयों के पैदा हो जाने पर उनकी नसीहत और सुधार के लिये नबी के भेजने का फ़ैसला फ़रमाया और उसके लिये आप का इन्तिख़ाब फ़रमाया, इस लिये जैसे जैसे नबूवत मिलने का वक़्त क़रीब आता गया आपको परद-ए-ग़ैब से उसके इशारे भी मिलने लगे, चुनांचे नबूवत मिलने से पहले ही पेड़ और पत्थर से अल्लाह के नबी के नाम से ख़िताब करने की आवाज़ें भी आने लगीं जिनको सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तअज्जुब से मुतवज्जेह हो जाया करते, लेकिन कोई सामने नज़र न आता।[1] चूनांचे चालीस साल की उम्र को पहुंचने पर, जो कि जिसमानी और अख़लाक़ी दोनों लिहाज़ से मुकम्मल है, आपको नबूवत का मुक़ाम अता (प्रदान) हुआ।

---

1 सीरते नबवीयह, इब्ने इस्हाक़, 1/91, सीरते इब्ने हिशाम, 1/234

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय-चार

"वही" (ईशवरीयवाणी) का शुभारम्भ, बेसत और दावत व तबलीग़

पहली "वही"

वही इलाही का शुभारम्भ इस तरह हुआ कि जब नबूवत के शुरूआत की उम्र चालीस साल पर आप पहुंचे तो अल्लाह तआला की रतफ़ से उसके फ़रिश्ते हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को आपके पास भेजा गया, उस वक़्त आप अपनी तनहाई के लिये क़रीबी पहाड़ जबले नूर के ऊपर "ग़ारे हिरा" में थे, हज़रत जिबराईल ग़ारे हिरा में पहुंचे और आपको पहला आसमानी पैग़ाम पहुंचाया और उसके ज़रिये नबूवत के मन्सब की शुरूआत हुई, और यह पहला आसमानी पैग़ाम इल्म के तज़किरे (उल्लेख) से शुरू हुआ जो एक उम्मी (अनपढ़) को जो शिक्षा के प्रचलित तरीक़े से नहीं गुज़रा था, इल्म को अल्लाह तआला के नाम से जोड़ने की ताकीद के साथ था, जिससे उस वक़्त तक इन्सान अपने को अलग रखे हुए था। जब आप पर "वही" उतरी तो शुरू में आपको ख़ौफ़ महसूस हुआ, क्योंकि वह आसमानी बुलन्दी व बड़ाई की बिना पर अपना ख़ास वज़न रखती थी, आपको उसकी अज़मत (महानता) का बोझ इतना महसूस हुआ कि ख़याल होने लगा कि उसको किस तरह संभालेंगे और कैसे निबाह सकेंगे, लेकिन अल्लाह तआला जिसने इस बड़ी ज़िम्मेदारी का बोझ डाला था, जानता था कि उसकी शख़सियत (व्यक्तित्व) में बरदाश्त और हिम्मत की सलाहियत ऐसी अता की जा चुकी है कि यह सब बोझ को सिर्फ़ यही नहीं कि उठा सकेंगे, बल्कि उसका पूरा हक़ अदा कर सकेंगे।

रमज़ान में "वही" का नुज़ूल

यह पहली "वही" 27 रमज़ान को उतरी जो अल्लाह तआला के अल्फ़ाज़ में थी और कुरआन मजीद की सूरतों में से सूरह "इक़रा" की पहली

www.abulhasanalinadwi.org

आयत क़रार पाई, उस "वही" में पढ़ने का हुक्म था, उसके ज़रिये आपको जबकि आप उस वक़्त तक उम्मी थे, अर्थात लिखना पढ़ना नहीं जानते थे, कहा गया कि पढ़िये, लेकिन पढ़ने के हुक्म के साथ पढ़ने को परवरदिगारे आलम के नाम से जोड़ने और उस पर यक़ीन करने का भी हुक्म हुआ कि तुम्हारा रब बहुत बहुत करीम है, यह मूल रूप में अल्लाह तआला के शब्दों में आने वाली पहली "वही" थी जो बाद में मुसलसल (निरन्तर) आती रही यहां तक कि कुरआन मजीद की पूरी किताब बन गई, उसमें इस्लाम और मुसलमानों के हालात और ज़रूरियात की बातें और हिदायात (आदेश) होती थीं, जिनके ज़रिये इस्लाम की शरीअत बनी, इस कुरआनी "वही" के अलावा और तरीक़ों से भी "वही" आने लगी जो कभी ख़ुवाब के ज़रिये और कभी मुक़द्दस फ़रिश्ता हज़रत जिबराईल अपने अल्फ़ाज़ में अल्लाह तआला का पैग़ाम पहुंचाते और इस तरह वही-ए-इलाही का सिलसिला जारी हो गया और नबूवत के काम की हिदायत आपके पास आने लगी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ौज-ए- मुतह्हरा हज़रत आयशा रज़ीअल्लाह अन्हा आपके पास पहली "वही" आने का हाल इस तरह बयान करती हैं कि जब ग़ारे हिरा में इबादत और ग़ौर व ख़ोज़ (मनन व चिन्तन) में एक मुद्दत गुज़ारने के बाद "वही" आने का वक़्त मुक़र्ररह (निश्चित) आ गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास फ़रिशता आया और उसने कहा : पढ़िये, आपने कहा : मैं पढ़ने का काम नहीं जानता, फ़रमाते हैं : उस फ़रिश्ते ने मुझको पकड़ लिया और ज़ोर से भींचा (दबाया) फिर मुझको छोड़ दिया और कहा पढ़िये, उस पर मैंने यही कहा कि मैं पढ़ने का जानने वाला नहीं हूँ, फ़रमाया : उसने फिर मुझको पकड़ा और ज़ोर से दबाया कि मैं बहुत थक गया, फिर मुझ को छोड़ा और कहा पढ़िये, मैंने कहा कि मैं पढ़ने का जानने वाला नहीं हूं, इस पर उसने मुझ को फिर पकड़ा और तीसरी बार भी ज़ोर से दबाया फिर मुझ को छोड़ा और अल्फ़ाज़ (शब्द) कहे :-

"पढ़िये अपने रबे के नाम से जिसने दुनिया को पैदा किया, जिसने आदमी को गोश्त के लोथड़े से पैदा किया, पढ़िये आप का रब बहुत करीम (उदार) है वह जिसने इन्सान को क़लम के ज़रिये इल्म सिखाया वह जिसने इन्सान को वह बातें सिखाईं जो उसे मालूम न थीं।" (सूरह इक़रा : **1—5**)

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन आयात के साथ जो फ़रिश्ते ने पढ़ाई थीं, घर लौटे, आप पर इतना बोझ और असर हो गया था कि दिल कांप रहा था, अपनी ज़ौजा मोहतरमा हज़रत ख़दीजा रज़ीअल्लाहु अन्हा के पास पहुंचे और फ़रमाया : मुझे उढ़ाओ तो उनको उढ़ा दिया गया, यहां तक आप पर जो परेशानी तारी (छाई) हुई थी वह दूर हुई, फिर आपने हज़रत

www.abulhasanalinadwi.org

ख़दीजा को अपना हाल सुनाया और इस वाक़िये (घटना) का और उसके बड़े बोझ महसूस करने का और अपने ख़ौफ़ का तज़किरा (उल्लेख) किया और कहा कि मुझे डर हो रहा था कि जान न चली जाए, तो उन्होंने दिल बढ़ाया और कहा : हरगिज़ नहीं, खुदा की क़सम है कि अल्लाह आपको हरगिज़ रूसवा (अपमानित) नहीं करेगा, बेशक आप का हाल तो यह है कि आप रिश्तेदारों के जो हुक़ूक़ हैं उनको पूरी तरह अदा करते हैं और किसी को परेशान और थका हुआ देखते हैं तो उसका सामान उठा कर पहुंचा देते हैं और कोई भूखा और परेशान हाल हो तो कमाई करा देते हैं और मेहमान आ जाए तो पूरी ख़ातिर करते हैं, अचानक मुसीबत पर मुसीबत वालों की मदद करते हैं।[1]

वरक़ा बिन नौफ़ल से मुलाक़ात

फिर हज़रत ख़दीजा आप को अपने चचाज़ाद भाई वरक़ा बिन नौफ़ल जो पिछली आसमानी किताबों का इल्म रखते थे, के पास ले गईं कि ज़्यादा इत्मिनान की बात मालूम हो, उन्होंने तसदीक़ (पुष्टि) की, कि यह नबी होने की बाते हैं, और आसमानी किताबों में ऐसा वाक़े (घटित) होने का ज़िक्र आया है, यह बातें उसी के मुताबिक़ मालूम होती हैं, मैं इत्मिनान दिलाता हूं और इसमें तरह तरह की मुश्किलात (कठिनाइयां) भी पेश आएंगी, आप उनको बरदाश्त करें, यह अल्लाह तआला की तरफ़ से है, उसकी मदद रहेगी, काश मैं जवान होता, काश मैं उस वक़्त तक रहता, जब आपकी क़ौम आपको यहां से निकालेगी, इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा : क्या मुझ को वह लोग निकालेंगे, उन्होंने कहा हां, जब भी कोई इस तरह का काम लेकर आया जैसा कि आपके सुपुर्द हुआ, उस के साथ दुशमनी की गई, और अगर वह वक़्त मेरे सामने आया तो मैं आपकी पूरी और मज़बूत तरीक़े से मदद करूंगा, उसके बाद कुछ दिनों में वरक़ा का इन्तिक़ाल हो गया।[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो पढ़ने लिखने से नावाक़िफ़ (अपरिचित) रहे थे इस लिये उनकी मालूमात किताबी नहीं थी, कि वह जान सकते कि आप से पहले आने वाले नबियों पर जो सहीफ़े नाज़िल हुए उनमें क्या लिखा है और आपके बारे में क्या पेशीनगोई (भविष्यवाणी) है, इस लिये आपको "वही" आने पर एक तरह से बिल्कुल नई बात मालूम हुई, हालांकि आपके ज़माने में यहूदी और ईसाई उलमा थे, उनको आपके आने के इशारे मालूम थे, उन्हीं इशारों को वरक़ा बिन नौफ़ल जानते थे जो कि उन्होंने आपको

---

1 बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी, मुसनद अहमद, तारीख़ तबरी, 2/299
2 बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी, मुसनद अहमद, तारीख़ तबरी, 2/299

www.abulhasanalinadwi.org

बताया, आपसे पहले की मुक़द्दस किताबों में जो इशारे आए उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं।

इनजील व तौरेत में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत की बशारत

इन्जील योहन्ना अध्याय **14** में एक आने वाले नबी की बशारत इन अल्फ़ाज़ में है :-

"और मैं अपने बाप से प्रार्थना करूंगा और वह तुम्हें दूसरा "फ़ारक़लीत" बख़्शेगा कि हमेशा तुम्हारे साथ रहे"। **(14:16)**

आगे बढ़ कर फिर है -

"लेकिन वह "फ़ारक़लीत" जो रूहुल कुदुस है जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा, वही तुम्हें सब चीज़ें सिखाएगा और सब बातें जो कुछ कि मैंने कही हैं तुम्हें याद दिलाएगा"। **(14:26)**

इसी इन्जील के अध्याय **15—16** में है।

"पर वह जब "फ़ारकलीत" जिसे मैं तुम्हारे लिये बाप की तरफ़से भेजुंगा अर्थात सच्चाई की रूह जो बाप से निकलती है तो वह मेरे लिये गवाही देगा"।

इसी इनजील के अध्याय **16—17** में है।

"लेकिन में तुम्हें सच कहता हूँ कि तुम्हारे लिये मेरा जाना ही फ़ायदा है क्योंकि अगर मैं न जाऊँ तो "फ़ारकलीत" तुम्हारे पास न आएगा, पर अगर मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा और वह आकर दुनिया को गुनाह से और सच्चाई और इन्साफ़ से कुसूरवार ठैराएगा, गुनाह के बारे में इस लिये कि वह मुझ पर ईमान नहीं लाए, रास्तबाज़ी (सत्य निष्ठता) के बारे में इस लिये कि मैं बाप के पास जाता हूं और तुम मुझे फिर नहीं देखोगे, अदालत इन्साफ़ के बारे में इस लिये कि दुनिया का सरदार मुजरिम ठैराया गया है, मेरी और बहुत सी बातें हैं कि मैं कहूं पर अब तुम उनको बरदाश्त नहीं कर सकते, लेकिन जब वह सच्चाई की रूह आएगी तो वह तुम्हें सारी सच्चाई की बात बताएगी, इस लिये कि वह अपनी न कहेगी, लेकिन जो कुछ वह सुनेगी सो कहेगी और तुम्हें आइन्दा की ख़बर देगी वह मेरी बुजुर्गी करेगी"।[1]

इसकी पुष्टि कुरआन मजीद की निम्नलिखित आयात में इस तरह मिलती है :-

"जो लोग इस उम्मी रसूल व नबी की पैरवी (अनुसरण) करते हें जिसे वह अपने यहां लिखा हुआ पाते हैं तौरेत व इन्जील में, उन्हें वह सदाचारी का

---

1 खुत्बाते अहमदिया, खुतब—ए—बषारते मुहम्मदी, बहवाले सीरतुन नबी, भाग—3, पृ0 432—433

www.abulhasanalinadwi.org

हुक्म देता है और उन्हें दुराचार से रोकता है और उनके लिये साफ़ सुथरी चीज़ें हलाल बताता है, और उन पर गन्दी चीज़ें हराम रखता है और उन पर से बोझ और क़ैदें जो उन पर अब तक थीं उतार देता है सो जो लोग उस नबी पर ईमान लाए और उसका साथ दियाऔर उसकी मदद की और उस "नूर" की पैरवी की जो उसके साथ उतारा गया है सो यही लोग तो हैं पूरी कामयाबी पाने वाले। **(सूरह आराफ़ : 157)**

कुरआन मजीद में दूसरी जगह फ़रमाया गया है :-

"और जब ईसा बिन मरयम ने कहा कि ऐ बनी इसराईल! मैं तुम्हारे पास खुदा का क़ासिद (दूत) बन कर, और मुझसे पहले जो तौरात आई, मैं उसकी तसदीक़ (पुष्टि) करता हूं और अपने बाद "अहमद" नाम एक पैगंबर की खुशख़बरी लेकर आया हूं"। (सूरह सफ़-6, पारा-28)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उस आने वाले पैगंबर की जो सिफ़तें, खूबियां गिनाई हैं वह हरफ़ ब हरफ़ (अक्षरशः) आं-हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सादिक़ आई है, तारीख़ व सियर और हदीस की मोतबर (विश्वस्त) किताबों में बहुत सी रिवायतें ऐसी हैं जिनसे सामूहिक रूप से यह साबित होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ुहूर (प्रकट) से पहले मदीने के यहूदियों में भी एक आने वाले पैगंबर के जल्द ज़ाहिर होने के चर्चे रहा करते थे, और उन्हीं से सुन सुन कर कबीले औस व ख़ज़रज के कानों में पैगंबरी की बेअसत की ख़बर पड़ी हुई थी, और अधिकतर लोगों के लिये यह ख़बर हिदायत का ज़रिया बनी, चुनांचे इब्ने साद के अलावा दूसरी तारीख़ व सियर और हदीस की किताबों में एक नौजवान अनसारी का वाक़िया सही सनद के साथ मज़कूर (चर्चित) है, वह कहते हैं : मैं छोटा था तो मदीने में एक यहूदी वाएज़ (प्रवाचक) थे, वाज़ के बीच में उन्होंने ने एक पैगंबर के ज़ुहूर की बशारत दी, लोगों ने पूछा कि वह कब तक ज़ाहिर होगा? उन्होंने उन अनसारी की तरफ़ जो उस सभा में सबसे छोटे थे, इशारा करते कहा कि अगर यह लड़का जीता रहा तो वह उसका ज़माना पाएगा, अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रवायत है कि एक यहूदी का लड़का आपकी ख़िदमत में रहा करता था, इत्तिफ़ाक़ से वह बीमार पड़ा, आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसकी अयादत (बीमार का हाल जानने) को गए, और उसके बाप से पूछा कि क्या मेरा ज़िक्र तुम तौरैत में पाते हो? उसने कहा नहीं, लड़के ने फौरन जवाब दिया हां या रसूलुल्लाह! आपका ज़िक्र हमने तौरात में पढ़ा है और यह कह कर उसने कलिमा पढ़ा और मुसलमान हो गया।[1]

अरबों और यहूदियों में जब लड़ाई होती तो यहूदी कहा करते थे कि एक पैगंबर आने वाले हैं, उनके ज़माने में हम को कामिल फ़तह (पूरी विजय)

---

1 बैहक़ी।

www.abulhasanalinadwi.org

होगी, कुरआन मजीद ने उनके इसी अक़ीदे को दोहरा कर उनके इस्लाम न कुबूल करने पर निन्दा की है।

"इस से पहले काफ़िरों पर इसी आने वाले पैगंबर का नाम लेकर फ़तह (विजय) चाहा करते थे, अतः जब वह सामने आगए जिसको उन्होंने पहचान लिया तो इन्कार कर दिया, काफ़िरों पर ख़ुदा की लानत (अभिशाप) हो"। (सूरा बक़रा : 11)

कुरआन मजीद ने इसके अलावा और भी कई जगहों पर यहूदियों को उनके पिछले यक़ीन के खिलाफ़ उनके मौजूदह कुफ़्र के ज़ाहिर करने पर, उनकी सरज़निश (पड़ताड़ना) की है :-

"जिन को किताब पहले दी जा चुकी है वह यक़ीनन (उन निशानियों की बिना पर जो उस किताब में मज़कूर (उल्लेख) है) जानते हैं कि यह हक़ है उनके परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल हुआ है"। (सूरा बक़रा : 10)

"जबकि हम पहले किताब दे चुके हैं, इस्लाम की सच्चाई को उसी तरह जानते हैं, जिस तरह वह अपने बेटों को जानते हैं, लेकिन उनमें से एक फ़रीक़ जान कर हक़ को छुपाता है"। (सूरा बक़रा-१७)

"जिसको हम पहले किताब दे चुके हैं वह उसको उसी तरह जानते हैं जिस तरह वह अपने बेटों को"। (सूरा अनआ़म : 2)

वेदों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विशेषताओं से संबंधित पेशीनगोइयां (भविष्यवाणी)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विशेषताओं का वर्णन हिन्दु क़ौम की धार्मिक पुस्तक वेदों में भी आया है जो इस प्रकार है :-

1. मुहम्मद (नराशंस) की प्रशंसा की जाएगी और वह सबको प्रिय होगा। (ऋग्वेद : 1—13—3)
2. मुहम्मद (नराशंस) सवारी के रूप में ऊँटों का प्रयोग करेगा, (अर्थवेद—2—127—20)
३. मुहम्मद (नराशंस) को इल्म इलाही (ईश्वरीय विद्या) दिया जाएगा। (ऋग्वेद संहिता 1—13—3)
४. मुहम्मद (नराशंस) बहुत खूबसूरत और इल्म की ओर बुलाने वाले होंगे। (ऋग्वेद 2:3:2)
5. मुहम्मद (नराशंस) लोगों को गुनाहों से निकालेगा। (ऋग्वेद 1:106:4)
6. मुहम्मद (नराशंस) का एक दुनियावी नाम मुहम्मद होगा। (अर्थवेद 20—127—3)
7. मुहम्मद (नराशंस) दस मालाओं वाला होगा। (अर्थवेद 20—127—3)
8. मुहम्मद (नराशंस) दस हज़ार गववों वाला होगा। (अर्थवेद 20—127—3)
9. मुहम्मद (नराशंस) की प्रशंसा की जाएगी (ऋग्वेद 1—13—3)

10. समाज में क्रान्ति लाएंगे और बुराइयों को समाप्त करेंगे। (भगवत् पुराण **12.** स्कन्द, अध्याय २० श्लोक)

11. जब कलकी के शरीर से खुशबू लोगों को छुवेगी तो उनका दिल गुनाहों से पाक हो जाएगा। (भगवत् पुराण **12**, स्कन्दर, अध्याय **21** वां श्लोक)

12. आखरी नबी को "जगत गुरू" जग नायक बनाकर भेजा जाएगा,[1]

जो लोग हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की "सीरत" के जानकार हैं वह भली भांति समझते हैं कि ऊपर दी गई तमाम विशेषताएं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ही केवल पूर्ण रूप से साबित होती हैं।

शरीअते मुहम्मदी का इल्म व क़लम से गहरा संबन्ध

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरने वाली पहली "वही" का आरंभ जो "इक़रा बिस्मे रब्बिका" से हुआ था उसमें साफ़ इशारा किया गया था कि सच्चे दीन की तालीम व तशरीह (व्याख्या) जो इस आख़िरी नबी के ज़रिये की जा रही है, यह इल्म व क़लम से गहरा वास्ता (संबन्ध) रखती है, अब तक इल्म व क़लम को इन्सान नफ़्स परस्ती (इच्छा भक्ति) अभिमान के एहसास की पूर्ति, महानता की नुमाइश, अपने ज्ञान को दुनियावी इच्छाओं के लिये, कमज़ोर इन्सानों को गुलाम बनाने और अपनी शान दिखाने के लिये करता रहा है, इसको अब इन्सानों के सुधार और अल्लाह के आदेशों पर अमल करने और इस्लाह व रूश्द हिदायत (पथ प्रदर्शन) का जो काम इन्सान को उसके रब ने ज़मीन पर अपने नाएब (प्रतिनिधि) की हैसियत से दिया है, जिसका बड़ा ज़रिया (माध्यम) इल्म व क़लम है, इसी क़लम व इल्म से उसको अपने नबी के माध्यम से मिलने वाली रहनुमाई में अनजाम देना है, इस तरह उस नबी को जो "उम्मी" था अर्थात पढ़ना लिखना न जानने वाले जो प्रवृति और अनुमति से प्राप्त की हुई जानकारी ही रखते थे, अपनी ही तरह की उम्मी (अनपढ़) क़ौम के लिये ही नहीं, बल्कि तमाम इन्सानों के शिक्षित वर्ग बल्कि बड़े बड़े माहिरीने इल्म, विद्वानों के भी मुअल्लिम (शिक्षक) और आसमानी शिक्षा के तन्हा पहुंचाने वाले और इन्सानों की मुकम्मल (पूरी) मज़हबी रहबरी करने वाले थे, और इस तरह उस "नबी-ए-उम्मी" पर जो वही नाज़िल होती रही, इन्सानियत की भलाई व सफलता वाले ज्ञान का स्रोत बनी, और इस तरह यह "वही" सच्चाई व हिदायत के रास्ते पर चलने वालों के लिये इल्मी रिसर्च, इल्मी कोशिश और तरक़्क़ी व रिसर्च का ज़ीना बनी, और "वही" के इन दो आदेशों अर्थात "इक़रा" और "अल्लमल

---

1 हज़रत मुहम्मद सल्ल० का ज़िक्र और मूर्ति पूजा की मुमानिअत वेदों की दुनिया में पृ० नं० 25–27, मुफ़्ती सरवर फ़ारूक़ी नदवी।

www.abulhasanalinadwi.org

इन्सान मालम यालम" (इन्सान को वह सिखाया व बताया जिससे वह नावाक़िफ़ था) के असर से इन्सानियत के वह चशमे फूटे जिनकी मिसाल इन्सानी तारीख में नहीं मिलती, पिछले इल्म और ज्ञान को काफ़ी नहीं समझा गया बल्कि उसमें बहुमूल्य वृद्धि (इज़ाफ़े) के साथ साथ कीमती उलूम पैदा हुए जो पहले नहीं थे, और इन नए उलूम में वह बारीकियां और गहराइयां पैदा हुईं कि इन्सानियत के लिये उच्चतम परिचय का कारण बनीं, क़ुरआन करीम के संबन्ध से नए उलूम और हदीस शरीफ़ के संबन्ध से अधिक और विभिन्न उलूम और दूसरे नए उलूम वजूद में आए और उनके पुस्तकालय के पुस्तकालय तैय्यार हो गए और इस तरह अन्तिम नबी की उम्मत इल्म और ज्ञान की और इसी के साथ साथ इन्सानियत की सफलता के लिये रहनुमाई करने वाले इल्म की उम्मत बन गई।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरने वाली उस पहली "वही" ने अपने मानने वालों को इल्म व दानिश (ज्ञान) का वह महान रास्ता बता दिया जो मानवता की सफलता की ज़मानत बना, इस में "इक़रा" के साथ बिस्मे रब्बिक" (पढ़ अपने रब के नाम से) के इज़ाफ़े से बड़ी बुनियादी हक़ीक़त (वास्तविकता) स्पष्ट कर दी गई कि उस में इन्सान के ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) के नाम से जोड़ा गया अर्थात इन्सान अपने ग़ौर व फ़िक्र तलाश व तहक़ीक़ (रिसर्च) से जो इल्म हासिल करे उसको अपने ख़ालिक़ व मालिक से वाबस्ता (संबन्धित) करके हासिल करे, ताकि वह ग़लत राह पर न चला जाए, क्योंकि वह ख़ुवाहिश (इच्छा) पसन्द व नापसन्द रखने वाला इन्सान है, गलती कर सकता है और ग़लत रूख़ पर जा सकता है, जब वह अपने इल्म को अपने "रब" के साथ वाबस्ता (संबन्धित) करेगा तो बहकने से महफ़ूज़ रहेगा, इसके अलावा उसको इल्म के वह हक़ाएक़ (वास्तविकताएं) भी मालूम होंगे जो सिर्फ़ उसका "रब" ही जानता है और बता सकता है, और जो बग़ैर उसके बताए मालूम नहीं हो सकते, और वह सिर्फ़ "वही-ए-इलाही" के ज़रिये ही मालूम हो सकते हैं, फिर इल्म का वसीला (माध्यम) क़लम को बनाया कि उसी के ज़रिए इल्म को महफ़ूज़ (सुरक्षित) किया जा सकेगा, और रहती दुनिया तक उसका फ़ाइदा क़ायम रखा जा सकेगा, इस तरह इल्म की दो शाख़ें हुईं, एक वह जो सिर्फ़ दुनियावी तक़ाज़ों और ज़रूरतों से तअल्लुक़ रखती है, और उनकी फ़िक्र करने की भी इजाज़त परवरदिगार आलम ने दी है और दूसरी इस ज़िन्दगी के बाद जो आख़िरत की लंबी ज़िन्दगी है जो दुनियावी ज़िन्दगी में गुप्त रूप में हैं, उसके संबन्ध रहनुमाई करने वाला इल्म है, दुनियावी ज़िन्दगी के शारीरिक लाभ व हानि के ज्ञान के मार्गदर्शन के लिये अल्लाह तआला ने इन्सान की बुद्धि और उसके अनुभवों को ज़रिया बनाया है, और आख़िरत के विषय में रहबरी के लिये जो कि इस दुनियावी ज़िन्दगी में नज़र नहीं आती उसका इल्म इन्सान के ख़ालिक़

(पैदा करने वाले) के बताने ही से हासिल हो सकता है जिसको इन्सान का ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) अपने बरगुज़ीदा (सर्वश्रेष्ठ) बन्दा अर्थात नबी के ज़रिये उसको जानकारी कराता है, और अब रहती दुनिया तक अल्लाह तआला ने अपने आख़िरी बरगुज़ीदा बन्दा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़रिए बताया और उनको अल्लाह तआला ने विशाल और व्यापक और न बदलने वाले इल्म के बताने और समझाने के लिये नियुक्त किया जिसमें इन्सान के लिये इस दुनिया में भी और आख़िरत में भी कामयाबी है।

इस इल्म की तफ़सीलात (विवरण) से अल्लाह तआला ने अपनी किताब कुरआन मजीद के ज़रिए और फिर अपने नबी को "वही" के ज़रिए वाक़िफ़ कराया और उससे वाक़िफ़ हो जाने के बाद इन्सान उसको मानने और उस पर अमल करने पर ज़िम्मेदार नियुक्त किया गया है और उसका क़यामत तक जारी रहना तय कर दिया और उसके न मानने पर अपने ख़ालिक़ व मालिक (स्वामी) अल्लाह तआला की तरफ़ से सख़्त सज़ा का मुसतहक़ (पात्र) क़रार दिया, चुनांचे इस सूरते हाल में नबी के लाए हुए इल्म से वास्तविक ज़रूरत तक वाक़िफ़ होना ज़रूरी क़रार दिया गया और इसी का नाम "शरीअ़त" है, ऐसे इल्म से नबियों के ज़रिये ज़मीन पर बसने वालों को वाक़िफ़ कराया जाता रहा है, लेकिन नबियों और रसूलों के सरकिल क्षेत्रीय होते थे और एक रसूल दूसरे रसूल के ज़माने तक के लिये होता था, लेकिन यह आख़िरी रसूल दुनिया के निश्चित काल के लिये नियुक्त किये गए।

सर्व व्यापी और सर्वकालिक शरीअ़त

चुनांचे जो शरीअ़त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दी गई वह आख़िरी ज़माने तक जारी रहने वाली शरीअ़त क़रार दी गई और विश्व स्तर पर हर इलाक़े, हर मुल्क के लोगों के लिये यकसां रखी गई है, इसी बिना पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को "खातमुल अंबिया व रूसुल" (नबियों और रसूलों के अंतक) क़रार दिया गया, और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअ़त को ऐसी मुकम्मल (पूर्ण) शरीअत बनाया गया है जिसमें अब कोई तरमीम (संशोधन) नहीं होना है और "शरीअ़ते इलाही" की हिफ़ाज़त व बक़ा (सुरक्षा व स्थिरता) इसी शरीअत में रखी गई है, इस लिये इस से वाक़िफ़ होना और अपनी ज़िन्दगी को उसके मुताबिक़ ढ़ालना लाज़िम क़रार दिया गया है, जो शरीअत आपको दी गई वह बुनियादी तौर पर पिछले नबियों को दी गई शरीअत ही की तरह है, इस तरह वह कोई नई शरीअत नहीं है, बल्कि वह पिछले नबियों को दी गई शरीअत के तसलसुल (अनुक्रम) से जुड़ी हुई है। अलबत्ता उनकी "शरीअत" अपने अपने ज़माने के लिये और अपनी अपनी

www.abulhasanalinadwi.org

क़ौमों के लिये होती रही है और आख़िरी नबी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीअत मुकम्मल और सारे इन्सानों, ज़मानों और आइन्दा (आगामी) आने वाले इन्सानों के हालात के लिहाज़ से व्यापी और क़यामत तक बाक़ी रहने वाली शरीअत है।

शरीअते मुहम्मदी के बुनियादी अरकान (स्तंभ)

तमाम पिछले नबियों और आख़िरी नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दी गई शरीअत में संयुक्त और केन्द्रीय बिन्दु "तौहीद" का बिन्दु है इस लिये एक अल्लाह को इन्सानों और दूसरी तमाम मख़लूक़ात (सृष्टि) का ख़ालिक़, मालिक, राज़िक़ और यह आसमान व ज़मीन और सारी कायनात (सृष्टि) को पैदा करने वाला और चलाने वाला मानना है, उस पर ईमान लाना और उसकी इबादत को उसी के साथ ख़ास करना लाज़मी (अनिवार्य) है, और उसके साथ किसी को शरीक करना, किसी और को ख़ुदा समझना, यह उस ख़ुदाए मालिक व राज़िक़ के ख़िलाफ़ बल्कि उसको नाराज़ करने वाला अमल है, किसी ज़ात को ख़ुवाह इन्सानी हो या किसी दूसरी मख़लूक़ (सृष्टि) से संबन्ध रखती हो, अल्लाह के साथ शरीक करने की इजाज़त नहीं है, यही वह मुक़ामे तौहीद (एकेश्वरवाद) है जिसकी दावत हर नबी ने दी, और इसका पैग़ाम उसकी नाज़िल की हुई तमाम किताबों और "वही" के ज़रिए नबियों को दिया गया। तौरैत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर, ज़बूर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर, इन्जील हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर और क़ुरआन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा गया।

२. फिर अल्लाह तआला के इन्हीं हुक्मों को मानने के लिये उसके बताने वाले लोग अल्लाह तआला की तरफ़ से नियुक्त किये हुए नबी होते रहे, उनका क़ौल व अमल अल्लाह तआला की तरफ़ से ही होता रहा, लिहाज़ा उसका मानना भी ज़रूरी है, क्योंकि उसके ज़रिए बताई हुई बात रब्बुल आलमीन की बताई हुई बात होती है, और वह ख़ुदाई पैग़ाम (रिसालत) होता है, इसको हर नबी अपने रब की तरफ़ से पहुंचाता है, वह कहता है कि मैं अल्लाह का भेजा हुआ "पैग़म्बर" हूं और मेरी बात अल्लाह की तरफ़ से है, उसको मानो, लिहाज़ा नबी और उसकी बात मानना दूसरा बुनियादी नुक़्ता (बिन्दु) है।

३. इसके बाद तीसरा बुनियादी नुक़्ता (बिन्दु) आख़िरत का बिन्दु है कि इस दुनियावी ज़िन्दगी के बाद दूसरी सर्व कालिक और अनन्त ज़िन्दगी, आख़िरत की ज़िन्दगी होगी, जिसमें हर इन्सान को जाना है, उसमें इन्सान को वहां जो राहत, सहूलत हासिल होगी वह सिर्फ़ उसी क़दर होगी जिस क़दर अपने नबी की बात मानी होगी।

www.abulhasanalinadwi.org

४. इन तीन बुनियादी बातों के बाद इस बात के भी मानने की ज़रूरत होती है कि अल्लाह तआ़ला की एक मख़लूक़ फ़रिश्ते भी हैं और वह आसमानी मख़लूक़ हैं जो इन्सानी आंखों से नज़र नहीं आते, वह आम तौर पर अपनी न देखी जाने वाली शकल में आते और परवरदिगार का पैग़ाम नबियों तक पहुंचाते हैं, वह अल्लाह तआला के मुकम्मल ताबेदार (आज्ञाकारी) बन्दे होते हैं और अपने परवरदिगार की इच्छा और प्रसन्नता के अनुकूल काम करते हैं और हर समय रब्बुल आलमीन की तसबीह व इबादत में रहते हैं।

५. इसी तरह यह बात भी मानना है कि सारी मख़लूक़ात (सृष्टि) और सारे जहानों को तन्हा एक खुदा ही ने पैदा किया है, और उनको यूंही बेसमझे बूझे पैदा नहीं किया, बल्कि उनके पैदा करने का मक़सद (उद्देश्य) और पैदा किये जाने के बाद उनकी ज़िन्दगी की तफ़सील पहले से तय कर दी थी, लिहाज़ा जो कुछ होता है उसी के मुताबिक़ होता है, अच्छा हो या बुरा, और इसी को तक़दीर कहते है।, और दुनिया की इस ज़िन्दगी के बाद "आख़िरत" की न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी होगी जिसमें दुनिया वाली ज़िन्दगी के आमाल का हिसाब किताब, जज़ा व सज़ा होगी, यह दीन की वह बुनियादें हैं जिनको मानने के बाद उनके मुताबिक़ अमल करने के जो अहकाम व हिदायत हैं उनको "शरीअत" कहते हैं और इसी को रब्बुल आलमीन की तरफ़ से तय किया हुआ दीन बल्कि दीने इस्लाम कहते हैं, फ़रमाया : (इन्नद्दीना इन्दल्लाहिल इस्लाम) कि दीन अल्लाह तआला की तरफ़ से "इस्लाम" ही है।

उपरोक्त बातों के मानने को इन अल्फ़ाज़ में बयान किया गया है "मैं ईमान लाया अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर, आख़िरत के दिन पर, और इस बात पर कि जो कुछ अच्छा बुरा होता है वह सब अल्लाह के हुक्म और तक़दीर से है और मैं ईमान लाया मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा किये जाने पर"।

इन बुनियादी बातों को मानने के बाद उन सब पर अमल करने का मआ़मला आता है, जिसको "शरीअत" कहते है।, इसमें ज़िन्दगी के तौर तरीक़ (आचार व्यवहार) को खुदा के हुक्मों के मुताबिक़ अन्जाम देने के आदेश और शिक्षा होती है जो नबी को "वही" के ज़रिए दी जाती है, हर नबी इन्सानों को अपने परवरदिगार की मर्ज़ी के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने, एक दूसरे के साथ सुलूक व मआमलात, खुदा की तरफ़से दी गई नेमतों के हासिल करने व इस्तेमाल का तरीक़ा और खुदा के हुक्मों पर चलने का तरीक़ा बतलाता है और नबी को यह सारी तालीम "वही" के ज़रिए दी जाती है, इस तरीक़े से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मुकम्मल किया जाने वाला दीन इल्म व अमल दोनों पर मुशतमिल (आधारित) है।

www.abulhasanalinadwi.org

सारी इन्सानियत के लिये तौहीद का पैग़ाम

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से लगभग ढ़ाई तीन हज़ार साल पहले आपके ही ख़ानदान के बहुत बड़े और अहम मूरिस (पूर्वज) और अल्लाह तआला के सर्वश्रेष्ठ नबी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ज़बरदस्त कुर्बानी दे कर तौहीद (एकेश्वरवाद) की विश्व आन्दोलन की बुनियाद डाली थी, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की शान्ति प्रिय प्रकृति ने बचपन ही से तौहीद (एकेश्वरवाद) को समझ लिया था और शिर्क (अनेकश्वरवाद) को छोड़ करके तौहीद की दावत शुरू कर दी थी, उनका वाक़िया (घटना) खुद कुरआन मजीद में बयान किया गया है :-

"और हमने इब्राहीम को पहले ही से हिदायत दी थी, और हम उनके (हाल) से वाक़िफ़ थे, जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि यह क्या मूर्तें हैं जिनकी इबादत पर तुम लोग जमे हुए हो, वह कहने लगे कि हमने अपने बाप दादा को उनकी इबादत करते देखा है, (इब्राहीम ने) कहा तुम भी गुमराह हो और तुम्हारे बाप दादा भी खुली गुमराही में पड़े रहे"। (सूरह अंबिया : **51—53**)

फिर ऐसी बरकत हुई कि अल्लाह तआला के बहुत से नबी उनके बेटे हज़रत इसहाक़ की औलाद में होते रहे और इस पैग़ाम को आगे बढ़ाते रहे, उनकी इसी विशेषता की वजह से अल्लाह तआला ने उनकी शाख़ को बड़ा मरतबा अता फ़रमाया लेकिन फिर हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम की यह शाख़ जो बनी इसराईल के नाम से मशहूर हुई सोपानवार सीधे रास्ते से हटती चली गई।

फिर आख़िर में अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दूसरे बेटे हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम की औलाद में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को विश्व व्यापी नबी बनाकर मबऊस किया और उनको ताकीद की, कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का रास्ता तुम्हारा रास्ता है, जिनकी औलाद में अल्लाह तआला ने नबी भेजे और उन सब ने अपने अपने ज़माने में "तौहीद" की दावत दी और अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल करने की दावत देते रहे थे जैसा कि हज़रत इब्राहीम ने उनको ताकीद व तलक़ीन (उपदेश) की थी, कुरआन मजीद में है :-

"और इब्राहीम ने अपने बेटों को इसी बात की वसीयत की और याकूब ने भी (अपने फ़रज़न्दों से यही कहा कि) बेटो! खुदा ने तुम्हारे लिये यही दीन पसन्द फ़रमाया है तो मरना तो मुसलमान ही मरना"। (सूरह बक़रा : **132**)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पूरी ताक़त और ज़ोर इसी दावत पर उसके मुताबिक़ अमल करने में सर्फ़ कर दिया था और बड़ी तकलीफ़ें और

www.abulhasanalinadwi.org

कुरबानियां बरदाश्त करने के साथ मक्का मुअज़्ज़मा के मक़ाम पर बैतुल्लाह शरीफ की पहले से नियुक्त जगह पर अल्लाह के घर का नव निर्माण किया ताकि वहां से तौहीद का परचम बुलन्द हो, वहां पर उन्होंने अपने दूध पीते पहले बच्चे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को उनकी मां के साथ बसाया, उनका यही बच्चा हज़रत इस्माईल यहां तौहीद (एकेश्वरवाद) की इशाअत (प्रचार) का ज़रिया बना और उसकी औलाद सबसे कट कर एक अल्लाह की इबादत पर क़ायम रही उनका अहद व पैमान (प्रतिज्ञा) था कि लोगों को तौहीद की दावत देंगे और हक़ बात की तलक़ीन (उपदेश) करेंगे, यह सिलसिला क़ायम था कि वहां का एक शख़्स इराक़ और शाम के सफ़र में बुतों की इबादत देख कर प्रभावित हुआ और बुत यहां ले आया, उसके असर (प्रभाव) से बुत परस्ती का अमल व दख़ल शुरू हो गया, अन्ततः फिर उसी ख़ानदान के एक अद्वितीय व्यक्ति को अल्लाह तआला ने दावते इब्राहीमी ताज़ा करने और उसी फ़िक्र व अक़ीदे पर दुनिया को लाने के लिये इन्तिख़ाब (चयन) किया, उन्हीं पर नबूवत को मुकम्मल किया और उनके मानने वालों को यह काम सुपूर्द किया कि वह नस्ल दर नस्ल इस मिशन को तरक़्क़ी दें कि सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत का पाबन्द बनाएं और अपने ख़्याली और हाथ से बनाए हुवे खुदाओं को बातिल (मिथ्या) समझें, और इस बात पर यक़ीन को आम (प्रचलित) करें कि तमाम दुनियाओं का काम काज सिर्फ एक अल्लाह के हाथ में है उसी ने सबको पैदा किया, और पैदा करके यूंही छोड़ नहीं दिया, बल्कि अपनी इबादत व इताअत की पाबन्दी का हुक्म दिया कि सारी मख़लूक़ (सृष्टि) को उसी के हुक्मों (आदेशों) पर चलना है जो भी उसके हुक्मों से मुंह मोड़ेगा उसे दूसरी आने वाली ज़िन्दगी में जवाब देह होना पड़ेगा और सज़ा पाएगा।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत से पहले मक्के वाले तौहीद (एकेश्वरवाद) के मामले में अपने रास्ते से बहुत भटक गए थे जिसके सुधार की सख़्त ज़रूरत थी, उस ज़रूरत को अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी बनाकर पूरा किया, मक्के वालों के मूरिसे आला (मूल पुरूष) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से पहले ही यह दुआ कर ली थी कि इन लोगों की इस्लाह व तज़किया (आत्म सुधार) और तालीम के इन्हीं मे से नबी भेजिये, अल्लाह ने उनकी दुआ क़ुबूल कर ली थी, फिर एक लंबे समय का अवसर देकर उन्हीं की औलाद में से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुन्तख़ब (चयनित) किया और यह ऐलान भी कर दिया कि अब इनके बाद कोई दूसरा नबी किसी भी जगह और कभी भी नहीं आएगा, यही आख़िरी नबी हैं जो सबके लिये हैं और सारे ज़मानों के लिये हैं, इस तरह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिली हुई नबूवत उनके जद्दे

www.abulhasanalinadwi.org

आला (पितामह) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नबूवत का एक तरह का तसलसुल (निरंतरता) थी, और दोनों एक ही राह के राही थे।

अल्लाह तआला ने अपनी किताब में जो अपने नबी पर नाज़िल फ़रमाई हालात और ज़रूरत के मुताबिक़ सोपानवार आपको अपने फ़रिश्ते के ज़रिए "आयतें" पहुंचाई और ईमान और नेक अमल की रहनुमाई के साथ साथ बड़े अच्छे और प्रभावशाली ढंग से पिछली क़ौमों और नबियों के ऐसे हालात भी बयान किये जिनसे मालूम हो कि शिर्क (अनेकश्वरवाद) और गुनाहों पर अमल करते रहने पर किस किस तरह अल्लाह तआला का ग़ज़ब (प्रकोप) नाज़िल हुआ।

लिहाज़ा अगर इसी तरह के हालात मक्के वाले अरबों और उनका साथ देने वाले अरब क़बीलों में होंगे तो उन पर भी अल्लाह तआला का ग़ज़ब (प्रकोप) अज़ाब की सूरत में नाज़िल हो सकता है, लिहाज़ा यह लोग इन वाक़िआत (घटनाओं) से सबक़ लें और समझें कि पिछली क़ौमों की नाफ़रमानी (अवज्ञा) और बद दीनी पर कैसी सख़्त सज़ाएं दी गईं, लिहाजा नबी की बात मानें और सत्य मार्ग पर आ जाएं और नबी की रहनुमाई (मार्गदर्शन) में अपने को दुरूस्त (यर्थात) करें, जिनकी सीरत और अख़लाक़ (जीवन चरित्र और सद्व्यवहार) के गुण से वह भली भांति पहले ही से परिचत हैं।

क़ुरआन मजीद

अल्लाह की यह किताब पवित्र क़ुरआन जिसमें पिछली क़ौमों के हालात और तौहीद व शिर्क (एकेश्वरवाद व अनेकश्वरवाद) का फ़र्क़ और नेकी और बदी का अन्जाम (परिणाम) प्रभावशाली ढंग से बताया गया, यह किताब अरबों की ऐसी फ़सीह ज़बान में उतारी गई कि जिसको सुन कर अरब यह यक़ीन करने पर मजबूर हो गए थे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जबकि उम्मी हैं खुद से ऐसी जानकारी नहीं बयान कर सकते, फिर इसमें ऐसी फ़साहत व बलाग़त और ताक़त (अलंकरित संक्षिप्त और शक्तिशाली भाषा) है जो इन्सानों के बस की नहीं, यह ज़रूर ऊपर से रब्बुल आलमीन की तरफ़ से भेजी गई है, इस तरह यह किताब इन्सानी ताक़त से बाहर होने की वजह से एक मोजिज़ा (ईश्वरीय चमत्कार) बनी, यह "मोजिज़ा" नबी आख़िरूज़्ज़मां (अन्तिम नबी) को दिया गया, जिस से लोगों को यह यक़ीन कराया जासके कि आप जो कह रहे हैं वह आप की ताक़त व सलाहियत (क्षमता) से आगे की बात है, और यह आसमान की तरफ़ से पैग़ाम आने की खुली दलील है, चुनांचे साबित हुआ कि यह अल्लाह की तरफ़ से "वही" है और उसकी हर "आयत" अल्लाह की एक निशानी है और "मोजिज़ा" है, और वाक़िआत से भी यही साबित हुआ, क्योंकि जिसने भी ग़ैर जानिबदार (निष्पक्ष) हो कर इसको सुना वह

प्रभावित हो कर ईमान ले आया, इस तरह बड़ी संख्या ईमान लाने वालों की ऐसी थी जो कलामे इलाही सुन कर ईमान लाई।

ग़लत अक़ीदों के सुधार की दावत

मक्का मुकर्रमा पूरे अरब देश का केन्द्रीय पवित्र स्थान था, इसी लिये यहां के लोगों को सत्य दीन इख़्तियार करने की दावत देना ज़्यादा ज़रूरी और अहमियत का काम था कि यहां जो होगा उस का असर पूरे अरब पर पड़ेगा, इस लिये आप बराबर काम में लगे रहे और जहां तक क़ाबिले अमल था अपनी बात लोगों के सामने रखते रहे कि एक अल्लाह पर ईमान लाओ, बुतों की इबादत को छोड़ो, तुम को यह बुत और मूर्तियां कुछ भी फाइदा नहीं पहुंचा सकतीं और अल्लाह के भेजे हुए नबी को मानो, यह अल्लाह के आख़िरी नबी हैं, अब कोई दूसरा नबी नहीं आएगा, और इस हक़ीक़त को भी तसलीम करो, कि इस मौजूदा ज़िन्दगी के बाद की भी एक ज़िन्दगी है, वह आख़िरत की ज़िन्दगी है, इस के लिये तैय्यारी करो, दुनिया की ज़िन्दगी तो आख़िरत की ज़िन्दगी की खेती है, जो यहां बोओगे वह आगे वहां खाओगे।

क़ाफ़िरों और मुशरिकों के अक़ीदे में फ़रिश्तों और जिन्नता के वजूद को मानने का अक़ीदा भी था, लेकिन वह फ़रिशतों को अल्लाह तआला की बेटियां क़रार देते थे, गोया कि उनको भी खुदा की सी ताक़त रखने वाला समझते, और ऐसा ही मुक़द्दस (पवित्र) जानते और जिनों को बुरी रूहें समझ कर उनको प्रभाव कारी समझते और उनको खुश करने के लिये उनकी ताज़ीम (सम्मान) और उनसे मदद लेने की ज़रूरत समझते थे, और भी इस सिलसिले में तरह तरह की ख़ुराफ़ात और ग़लत ख़्यालात दिल व दिमाग़ में बिठा रखे थे, नबी आख़िरूज़्ज़मां (अन्तिम नबी) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके उन ख़्यालात की दुरूस्ती फ़रमाई कि फ़रिशते भी अल्लाह की मख़लूक़ हैं और वह भी अल्लाह के हुक्मों के मुहताज और पाबन्द हैं, अलबत्ता यह न देखी जाने वाली मख़लूक़ है यह अल्लाह तआला की तरफ़ से दिये हुवे हुक्मों की तामील के लिये मुक़र्रर हैं और उसी के मुताबिक़ काम करते हैं और जिन्नात इन्सानों की तरह अल्लाह की मख़लूक़ हैं उन पर भी इन्सानों की तरह अपने ख़ालिक़ को मानने और अपने ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) की इबादत करने को ज़रूरी क़रार दिया गया है, इन्सानों को अल्लाह ने सर्वोत्कृष्ट बनाया, और इन्सानों के ही सबसे श्रेष्ट व्यक्ति को सारी सृष्टि में उच्चतम क़रार दिया।

सद्व्यवहार और मानवता के सन्देश की दावत

अक़ाएद की इस्लाह (सुधार) की दावत के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको अच्छे अख़लाक़ की भी भरपूर दावत देते थे कि इन्सानी विशेषताओं

www.abulhasanalinadwi.org

और इन्सान के साथ ख़ैर-खुवाही (शुभ चिन्तन) आपसी हमदर्दी व भाई चारा को इख़्तियार करो, दूसरों को तकलीफ़ देने से बचो, और उन तमाम कामों से दूर रहो जिनसे ख़राबी पैदा होती है और सभी के साथ मेहरबानी करो और नर्मी से पेश आओ, आपने अल्लाह तआला का यह तरीक़ा बताया कि : "रहम करने वाले वह लोग हैं जिन पर सबसे बड़ा रहम करने वाला अर्थात अल्लाह रब्बुल आलमीन रहम करता है, तुम लोग ज़मीन वालों पर रहम करो तुम पर वह ज़ात मेहरबान होगी जो आसमान पर है"। और आपने नैतिक शिक्षा और आदेश को जो कुरआन मजीद के ज़रिए उतारे गए हैं और जो आपको प्रत्यक्ष रूप में बताए गए, उनकी ओर ध्यान दिलाया, पिछली क़ौमों को उनके नबी द्वारा जो आदेश दिये गए थे, कुरआन मजीद में उनका ज़िक्र लाकर उन तालीमात (शिक्षा) को हर ज़माने में मार्ग दर्शक बना दिया गया, कुरआन की आयतों में जो नैतिक शिक्षा दी गई है उनमें पहली दावत व तालीम तौहीद और एक अल्लाह की इबादत है, उसके साथ अच्छे और नेक और इन्सानी हमदर्दी के अख़लाक़ की तलक़ीन (उपदेश) है, उदाहरण में सूरह असरा की निम्नलिखित आयतें प्रस्तुत हैं :-

"और तुम्हारे परवरदिगार ने फ़ैसला कर दिया है कि उसके अलावा किसी की इबादत न करो, और माँ बाप के साथ भलाई करते रहो, अगर उनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं, तो उनको "उफ़" तक न कहो, और न उन्हें झिड़कना, और उनसे बात अदब के साथ करना, विनम्रता से उनके साथ रहो और उनके हक़ में दुआ करो कि ऐ परवरदिगार! जैसा उन्होंने मुझे बचपन में मुहब्बत से पाला तूभी उनके हाल पर रहम फ़रमा, जो कुछ तुम्हारे दिलों में है तुम्हारा परवरदिगार उससे भली भांति वाक़िफ़ है अगर तुम नेक होगे तो वह रूजू करने वालों को क्षमा करने वाला है, और रिश्तेदारों और मुहताजों और मुसाफ़िरों को उनका हक़ अदा करो और फ़ुजूलखर्ची से माल न उड़ाओ कि फ़ुजूलखर्ची करने वाले शैतान के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुकरा है, और अगर तुम अपने परवरदिगार की रहमत (अर्थात मालदारी) के इन्तिज़ार में जिसकी तुम्हें उम्मीद हो उन (हक़दारों) की तरफ़ तवज्जुह न कर सके तो उनसे नर्मी से बात कह दिया करो, और अपने हाथ को न तो गर्दन से बंधा हुवा (अर्थात बहुत तंग) करलो (कि किसी को कुछ दो ही नहीं) और न ही बिल्कुल खोल दो (कि सभी कुछ दे डालो और अन्जाम यह हो कि) निन्दित और असहाय हो कर बैठ जाओ, बेशक तुम्हारा रब जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और जिसकी रोज़ी चाहता है तंग कर देता है। वह अपने बन्दों से ख़बरदार है और उनको देख रहा है और अपनी औलाद को मुफ़लिसी के ख़ौफ़ से क़त्ल न करना, क्योंकि उन को और तुमको हम ही रिज़्क़ देते है।, कुछ शक नहीं कि उनका मार डालना बड़ा सख़्त गुनाह है, और ज़िना (बलातकारी) के पास भी न

www.abulhasanalinadwi.org

जाना कि वह बेहयाई और बुरी राह है, और जिस जानदार का मारना खुदा ने हराम किया है उसे क़त्ल न करना, मगर जाएज़ तौर पर, (अर्थात शरई फ़तवा के मुताबिक़) और जो शख़्स जुल्म से क़त्ल किया जाए हमने उसके वारिस को इख़्तियार दिया है (कि ज़ालिम क़ातिल से बदला ले) तो उसको चाहिये कि क़त्ल के क़िसास (हत्या दण्ड) में ज़्यादती न करे, उसकी सहायता की जाएगी और वह विजयी है, और यतीम के माल के पास भी न फटकना, मगर ऐसे तरीक़े से कि बहुत बेहतर हो यहां तक कि वह जवानी को पहुंच जाए और अहद (वचन) को पूरा करो कि अहद के विषय में ज़रूर पूछ गछ होगी, और जब कोई चीज़ नाप कर देने लगो तो पैमाना पूरा भरा करो और जब तौल कर दो तो तराजू सीधी रख कर तौला करो, यह बहुत अच्छी बात है और अन्जाम (परिणाम) के लिहाज़ से भी बहुत बेहतर है, और ऐ बन्दे जिस चीज़ का तुझे इल्म नहीं उसके पीछे न पड़ कि कान, और आंख और दिल इनमें से प्रत्येक के विषय मे पूछा जाएगा और ज़मीन में अकड़ कर और तन कर मत चल कि तू ज़मीन को फाड़ तो नहीं डालेगा और न लम्बा होकर पहाड़ों की चोटी तक पहुंच जाएगा, इन सब आदतों की बुराई तेरे परवरदिगार के नज़दीक बहुत ना पसन्द है, ऐ पैग़म्बर यह उन आदेशों मे से है जो खुदा ने दानाई (ज्ञान) की बातें तुम्हारी तरफ़ "वही" की हैं, और खुदा के साथ कोई और माबूद (पूज्य) न बनाना कि ऐसा करने से जहन्नम में डाल दिये जाओगे निन्दित ठुकराए हुए"। (सूरा बनी इस्राईल : २३-३९)

यह वह बातें थी जो इस्लाम के अन्तर्गत नबी-ए-मुकर्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से मक्का के रहने वालों को बताई गईं और फिर अरबों को उनकी ओर मुतवज्जह किया गया और फिर क़यामत तक आने वाली क़ौमों के लिये उनको पहुचांने की ज़िम्मेदारी दी गई।

उनको यह बताया गया कि इस्लाम अक़ीदा और अमल दोनों पर सम्मलित है, अक़ीदा का ज़िक्र (उल्लेख) ऊपर बयान हुआ उस अक़ीदा (आस्था) के अन्तर्गत अमल के सिलसिले में चार काम बताए गए, उनको मिला कर इस्लाम पांच स्तंभों पर आधारित है एक "अक़ीदा" जिसमें तौहीद, रिसालत, आख़िरत और आसमानी किताबों, मलाएका और तक़दीर पर यक़ीन शामिल है, यह इस्लाम का पहला रूक्न (स्तंभ) हुआ, बाक़ी चार अरकान (स्तंभ) जो अमली हैं, जिन में नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज शामिल हैं जिसको हदीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में इस तरह बयान किया गया है : "इस्लाम की बुनियाद पांच बातों पर है। १.इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके रसूल हैं, २.नमाज़ क़ाएम करना, ३. ज़कात देना, ४. बैतुल्लाह का हज करना, ५. रमज़ान के रोज़े रखना"।

www.abulhasanalinadwi.org

और बताया गया कि यह तो इबादत और इताअ़त (आज्ञा पालन) के बुनियादी आमाल हैं उनके बाद ज़िन्दगी को नेक और अच्छे अख़लाक़ व सिफ़ात (सद्व्यवहार और सद्गुणों) से सुसज्जित किया जाए, ज़ुल्म व ज़्यादती और बुरे कामों से बचा जाए।

इस्लाम की यह वह दावत है कि जिसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मुकम्मल और दाइमी तौर पर (परिपूर्ण और सर्वकालिक रूप में) उतारा गया और कामयाबी सफलता को क़यामत तक के लिये आप ही की दी हुई हिदायत व तालीमात (आदेश व शिक्षा) के दायरे (वृत्त) में विशेष कर दिया गया और फ़रमा दिया गया कि "दीन तो खुदा के नज़दीक इस्लाम है" (आले इमरान : १९)

और यह भी कह दिया गया :-

"और जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन का तलबगार होगा वह उससे हरगिज़ कुबूल नहीं किया जाएगा और ऐसा शख़्स (व्यक्ति) आख़िरत में नुक़सान उठाने वालों मे होगा।" (आले इमरान : ८५)

इस तरह यह बात स्पष्ट कर दी गई कि इस्लाम के दिये गए आदेश और शिक्षा ही पर चलने में नजात का सामान है, उनको छोड़ कर कोई दूसरा रास्ता इख़्तियार करके कामयाबी और आख़िरत में नजात हासिल करना चाहेगा तो वह मक़सद (उद्देश्य) हासिल न कर सकेगा, नाकाम हो जाएगा, यह सारी तालीमात व हिदायात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मिलने वालों को जहां तक आप पहुंचा सकते थे चहुंचा दिया और उनमें जिनका अमली नमूना ज़ाहिर किया जा सकता था उनका अमली नमूना भी दिखलाया, चुनांचे यह तालीमात व हिदायात और उस्व-ए-नबवी (नबी के नमूने वाले आचरण) इन्सानी ज़िन्दगी के तमाम पहलुओं पर फैला हुआ मिलता है, और इन्सानों के ख़ालिक़ व मालिक की तरफ़ से अता (प्रदान) किया गया है जो इन्सानों की ज़रूरतों और मिज़ाजों से खूब वाक़िफ़ है लिहाज़ा उसके नबी के ज़रिए जो चीज़ें मुक़र्रर की गई हैं उनमें इन्सानों के फायदे और मसलहत (हित) का पूरा लिहाज़ रखा गया है, जबकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ज़ात वह ज़ात है जिसने सबको पैदा किया, और वही सबके मिज़ाजों और ज़रूरतों को खूब समझता है, वह कृपालु व दयालु है, और उसने अपने को कृपालु व दयालु कहा भी है, वह फ़रमाता है :

"क्या वह न जानेगा उसको जिनको उसने ही पैदा किया वह तो बड़ी बारीक बातों का जानने वाला और बड़ा ही बाख़बर है"। (सूरः मुल्क : १४)

यह वह बातें हैं जिनको लेकर इस्लाम शुरू हुआ, और क़यामत तक इन बातों पर इस्लाम के मानने वालों और ईमान लाने वालों को चलते रहने का हुक्म हुआ।

बहरहाल इस दावत व पैग़ामे इलाही को पहुंचाने के लिये नबियों के भेजने का जो सिलसिला शुरू हुआ था वह सय्यदना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

www.abulhasanalinadwi.org

अलैहि वसल्लम पर मुकम्मल कर दिया गया और इन्हीं नबी आख़िरूज़्ज़मां (अन्तिम नबी) ने दीने हक़ (सत्य धर्म) को जिसकी इशाअत (प्रचार) की ज़िम्मेदारी उन पर डाली गई थी सख़्त मुजाहिदों और तकलीफ़ों को बर्दाश्त करते हुए आगे बढ़ाया और चलाया यहां तक कि उसको मुक़ामे कमाल (परिपूर्णता के स्थान) तक पहुंचा कर अपने कर्तव्य की अदाईगी को पूरा कर दिया, इस में उनके धैर्य, सहनशीलता, सहानुभूति और शुभचिन्तन पूर्ण रूप से प्रकट हुए और जो भी उनकी बात को मानता गया उसने भी आपकी उपरोक्त विशेषताओं की पैरवी (अनुसरण) करते हुए बर्दाश्त से काम लेने और सच्चाई के रास्ते पर क़ायम रहने का सुबूत दिया।

अल्लाह तआला का फ़ैसला था कि यह काम अन्जाम पाना है और नबी और उनके जो भी मानने वाले हों उनको इस काम की अन्जाम दही में हर तरह की तकलीफ़ बर्दाश्त करना है, और ख़ास बात यह कि सिर्फ़ मक्का और उसके आसपास के लोगों की इस्लाह (सुधार) काफ़ी नहीं समझना है बल्कि पूरे विश्व के सुधार के उद्देश्य सामने रखना है और अल्लाह तआला की तरफ़ से उनकी मदद का वादा आया है, फ़रमाया गया :-

"अगर तुम अल्लाह तआला की मदद करोगे (अर्थात उसकी नियुक्त की हुई दीनी बातों को फैलाओगे) तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दमों को जमा देगा"। (सूरा मुहम्मद : ७)

चुनांचे व्यक्तिगत रूप में आप को और आपके मानने वालों को मक्का में आपके १३ वर्षीय काम के बीच हर तरह की तकलीफ़ बर्दाश्त करनी पड़ी और फिर सामूहिक रूप से काम को अन्जाम देने के लिये क़रीब के शहर मदीना तय्यबा जो "यसरिब" कहलाता था उसको इख़्तियार करना पड़ा और उस शहर को इख़्तियार करने की बिना पर और वहां के लोगों का पूरा सहयोग करने के बाद उस शहर को अल्लाह तआला की तरफ़ से कई विशेषताओं के लिहाज़ से दावत का मरकज़ (केन्द्र) बनाया गया, कि दावत के काम को फैलाने के लिये वहाँ से बराबर कुमुक (सहायता) भेजी जाए और सारे विश्व को अल्लाह तआला के इस पसन्दीदा (मनोनीत) जीवन व्यवस्था को कुबूल करने की तरफ़ बुलाया जाए और जब आपकी मुबारक ज़िन्दगी की मुद्दत ख़त्म होने के क़रीब आई जिससे आपने अपनी ज़िम्मेदारी को तै किये हुए निशाने तक पूरा करा लिया था, तो फ़रमाया :-

"आज मैंने तुम सबके लिये दीन को तकमील के दर्जे तक पहुंचा दिया और तुम पर अपना इनाम पूरा कर दिया और तुम सबके लिये इस्लाम ही को दीन होने पर राज़ी हुआ"। (अलमाइदा : ३)

www.abulhasanalinadwi.org

सूरा मुद्दस्सिर का नुजूल

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर "वही" के आने में एक वक़्फ़ा (विराम) हुआ जिसमे "वही" नहीं आई जिससे आपको इन्तिज़ार रहा फिर "वही" आना जारी हो गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसको इसतरह बयान फ़रमाते हैं कि मैं इस हाल में था कि चल रहा था कि मैंने आसमान की तरफ से आवाज़ सुनी, मैंने अपनी निगाह उठाई तो यह नज़र आया कि वही फ़रिश्ता जो मुझे ग़ारे हिरा में नज़र आया था एक कुर्सी पर ज़मीन व आसमान के बीच मौजूद है मैं यह देख कर दहशत में आ गया और मैंने कहा मुझे उढ़ाओ इसी हाल में अल्लाह तआला की तरफ़ से यह "वही" नाज़िल हुई :-

"ऐ कम्बल ओढ़ने वाले! ख़ड़ा होजा, और आगाह करदे, और अपने रब ही की बड़ाइयां बयान कर, अपने कपड़ों को पाक कर, नापाकी को छोड़ दे, और एहसान करके ज़्यादा लेने की ख़ुवाहिश न कर और अपने रब की राह में सब्र कर, अतः जब सूर में फूंक मारी जाएगी तो वह दिन बड़ा सख़्त दिन होगा, जो काफ़िरों पर आसान न होगा"। (अल-मुद्दस्सिर : १-१०)

इस तरह आपको तवज्जुह दिलाई गई कि इस ज़िम्मेदारी के बोझ से इतना न घबराओ, उठो अपनी ज़िम्मेदारी की अन्जामदही शुरू करो, अपने रब की बड़ाई बयान करो और गन्दे अमल से अलाहदगी रखो, देखो जब क़यामत का दिन होगा, हक़ से मुंह फेरने वालों के लिये आसान न होगा इस तरह नबूवत व रिसालत का बड़ा बोझ डाला गया जो इस वुसअत (विस्तार) के लिहाज़ से दूसरे नबियों पर नहीं डाला गया था, इस "वही" (ईश्वरवाणी) के पश्चात फिर निरंतर "वही" का सिलसिला क़ायम हो गया और "वही" मुसलसल आने लगी।

इस प्रकार अल्लाह तआला की ओर से आपको नबूवत का महान स्थान प्रदान हुवा, और इन्सानों की हिदायत का वह काम सुपुर्द हुआ जो पहले के नबियों के काम से ज़्यादा विस्तृत और व्यापी काम था और इसी के साथ आपको नबियों के सिलसिले का ख़ातम (अन्तिम नबी) बनाया गया और क़यामत तक दीने हक़ पर चलने और चलाने का रास्ता आपके बताए हुए मार्ग दर्शक सिद्धान्तों के अनुसार तय करा दिया गया, और वादा फ़रमाया गया कि आपकी कोशिशों को कामयाबी मिलेगी और दुनिया आपकी उम्मत के सामने नतमस्तक हो जाएगी लेकिन उससे पहले कठिन और दुर्गम रास्ते के हालात से गुज़रना होगा, और पथरीली ज़मीन में दावते हक़ का काम करना होगा और सब्र और मज़बूती के साथ हालात को झेलना होगा, और जब तक अल्लाह तआला की इजाज़त नहीं आ जाती है सिर्फ सब्र व बर्दाशत से काम लेना होगा।

यह पैग़ाम चूंकि ख़ुदा की तरफ़ से "वही" की सूरत में और फ़रिश्ते के ज़रिए आया जो कि अल्लाह की नूरानी और आसमानी मख़लूक़ है, और पैग़ाम

www.abulhasanalinadwi.org

भी रब्बूल आलमीन का था आप इन्सान थे, इन्सानी मख़लूक़ को पैग़ाम के वज़न से साबिक़ा पड़ा, आपका जिस्म उस वज़न से हिल गया, यह पैग़ाम विशेष पैग़ामे इलाही था और "वही-ए- इलाही" इतनी बुलन्द और आसमानी स्तर की है कि इन्सान पर बराहे रास्त (प्रत्यक्ष) उतारे तो वह उसको बरदाशत नहीं कर सकता, जल जाए या कुचल जाए, इसी लिये उसको फ़रिश्ता लाता और उसके वास्ते से नबी पर उतरती, फ़रिश्ते के वास्ते से आने पर भी उसका बोझ इतना होता था कि आप उसके बोझ से दब जाते और सख़्त दबाव झेलना पड़ता, अगर सवारी के जानवर के ऊपर होते तो सवारी पर भी बड़ा बोझ पड़ता, इस लिये आप अपनी ज़बान से "वही" को अदा करने के लिये अपने होटों को ज़ोर से हरकत देते, इस पर यह हिदायत (आदेश) आई :-

"अपनी ज़बान को ज़्यादा हरकत न दो कि जल्दी की वजह से ऐसा करने लगे, "वही" को एकत्र करना और उसका पढ़ाना हमारे ज़िम्मे है"। (सूरः क़यामत : १६-२०)

चुनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जब हज़रत जिब्राईल आते तो उनके पढ़ने को आप ग़ौर से सुनते फिर वह आपको पूरी याद हो जाती, हज़रत आयशा कहती हैं कि मैंने एक मौक़े पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया कि आपके पास "वही" कैसे आती है, आपने फ़रमाया : कभी तो घन्टी की आवाज़ की तरह आती है और वह मुझ पर बहुत सख़्त होती है, जब वह पूरी हो जाती है तो मुझे वह पूरी याद हो जाती है, और कभी फ़रिश्ता इन्सान की शकल में आता है और मुझसे बातें करता है और मैं खूब समझ लेता जो वह कहता, हज़रत आयशा रज़ि० कहती हैं कि मैंने आपको आप पर "वही" आते वक़्त देखा कि सख़्त सर्दी का मौसम है और आपके माथे पर "वही" के ख़त्म होने पर पसीना दर पसीना नज़र आता।

पहली "वही" के थोड़े वक़्फ़े (विराम) के बाद से वफ़ात तक २३ सालः मुद्दत में आप पर "वही" आती रही, ज़रूरी और ध्यान देने योग्य बातों के सिलसिले में थोड़ी थोड़ी आती, उसके अलफ़ाज़ भी कलामे इलाही होते जो कुरआन मजीद में महफ़ूज़ (सुरक्षित) होते रहते, अल्लाह तआला की तरफ़ से वादा है कि वह क़यामत तक अपनी सही शकल में महफ़ूज़ रहेंगे, उन्हीं से ईमान व नेक अमल वाली ज़िन्दगी का दस्तूरे असासी (मौलिक विधान) बना, इसी "वही" को "वही मतलू" कहते हैं अर्थात वही की वह क़िस्म जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के अल्फ़ाज़ (शब्दों) में है जिसकी तिलावत अर्थात उसको आंखों या ज़बान से पढ़ना इबादत है, इसके अलावा दूसरी क़िस्म की "वही" थी जो पैग़ामे इलाही की सूरत में फ़रिश्ते के ज़रिए या ख़ुवाब के ज़रिए या दिल में "इल्क़ा" (ईश्वरीय संकते) के ज़रिये आती थी वह कलामे इलाही के अल्फ़ाज़ में नहीं होती थी,

www.abulhasanalinadwi.org

लिहाज़ा उसका बोझ और दबाव भी वह न होता था जो कुरआन मजीद वाली "वही" का होता था, वह "वही" भी अल्लाह तआला के हुक्म पर आधारित होती थी, और यह कुरआन मजीद की "वही" की व्याख्या और वज़ाहत और ज़िन्दगी के अहम मामलात के सिलसिले में आदेशों पर आधारित होती थी जो खुद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कलाम या अमल की सूरत में ज़ाहिर (प्रकट) होती थी, इस "वही" को भी हुक्मे इलाही की ही हैसियत हासिल थी क्योंकि यह भी खुदा की तरफ़ से ही होती थी, खुद कुरआन ने भी इसके "वही" होने की तसदीक़ (पुष्टि) की, फ़रमाया :

"आप अपनी ख्वाहिश से नहीं कहते, यह वास्तव में "वही" है जो आपके पास भेजी जाती है"।

इस "वही" को "वही" ग़ैर मतलू (न पढ़ी जाने वाली) कहते हैं।

दावते हक़ (सच्चाई की दावत) का शुभारंभ

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नबूवत मिलने पर अपनी ज़िम्मेदारी अन्जाम देना शुरू फ़रमा दी। दीन की सही हक़ीक़तों (वास्तविकताओं) से बाख़बर करना शुरू किया, और उस पर अमल करने की ताकीद की, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "ऐ लोगो! कहो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, कामयाब हो जाओगे" इसकी ज़द (मार) उन लोगों पर पड़ी जिन्होंने ख़याली ज़ेहन से पत्थर, लकड़ी और ग़ैर जानदार चीज़ों को खुदा का दर्जा दे दिया था और उनकी इबादत किया करते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि तुम ऐसी चीज़ों की इबादत क्यों करते हो जिनमें न बोलने की ताक़त है और न कुछ कर सकने की ताक़त, और तुम उनको एक अल्लाह के साथ शरीक करते हो, यह कैसी बेअक़्ली की बात है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया (इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम) मैं तुम्हारे रब की तरफ़ से भेजा गया हूं, कि तुमको उसका पैग़ाम पहुंचाऊँ, कि तुम उसकी इबादत करो जो तुम्हारा खुदा है, और इधर उधर न फिरो, और मेरी बात मानो, कि मैं तुमको सही राहे अमल और अच्छे अख़लाक़ व किरदार की नसीहत करता हूं, और जो कुछ मेरे परवरदिगार मुझको बताते हैं मैं तुम को बताता हूं।

हज़रत खदीजा, अबू बक्र सिद्दीक़, अली और ज़ैद बिन हारिसा का कुबूले इस्लाम

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने अपने इस नए मन्सब के लिये काम का मैदान पहले आपके हम वतन और ख़ानदान के लोग थे, फिर बाहर के लोगों की बारी थी, चुनांचे आपने यह काम अपने घर से शुरू किया

www.abulhasanalinadwi.org

और आपको इसमें फ़ौरी (तुरन्त) कामयाबी हासिल हुई, आपकी अहलिया साहिबा (पत्नी) हज़रत ख़दीजा बिन्त खुवैलद और साथ रहने वाले चचाज़ाद भाई हज़रत अली बिन अबी तालिब और आपके गुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा और क़रीब तरीन दोस्त हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ बिन अबी क़हाफ़ा आप पर ईमान लाए, पहली "वही" आने के बाद से आपने "दावत" का यह काम ख़ामोशी के साथ और सिर्फ़ तअल्लुक़ वालों से शुरू किया जिनसे मान लेने की पूरी उम्मीद थी, इस तरह एक तादाद इस्लाम में दाखिल हुई, लेकिन यह तादाद थोड़ी थी, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने ईमान लाने के बाद अपने दोस्तों और क़रीब के लोगों को बात बताई और ईमान की रग़बत (रूचि) दिलाई, इस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत और दावत का इल्म हो जाने पर क़ुरैश के कई दूसरे लोग भी ईमान लाए, जिनमें ख़ासतौर पर उस्मान बिन अफ़्फ़ान, ज़ुबैर बिन अव्वाम, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, साद बिन अबी वक़्क़ास, तल्हा बिन उबैदुल्ला, अबू उबैदा बिन जर्राह, अरक़म बिन अरक़म, उस्मान बिन मज़ऊन, उबैदा बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब, सईद बिन ज़ैद, खब्बाब बिन अरत, अब्दुल्ला बिन मसऊद, अम्मार बिन यासिर, सुहैब वग़ैरह हैं, अल्लाह तआला उन सबसे राज़ी हो इस तरह इस्लाम लाने वाले धीरे धीरे बढ़ते रहे, लेकिन शुरू के इस मरहले में खुल कर दावत का काम नहीं क़िया जाता था।

सुब्ह व शाम की नमाज़ें

इबादत के सिलसिले में दो वक़्त की नमाज़ पढ़ना होता था जो कि छुप कर पढ़ते थे, एक सूरज निकलने से पहले, दूसरी सूरज डूबने से पहले होती थी और यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तालीमात (शिक्षा) के मुताबिक़ थी, बैतुल मुक़द्दस के रूख़ पर पढ़ी जाती थी।

दारे अरक़म

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अरक़म बिन अरक़म के घर को जो सफ़ा पहाड़ से क़रीब था, मुसलमान होने वालों से मिलने और इकट्ठा होने वालों के लिये इख़्तियार कर लिया था, जिसकी ख़बर सिर्फ़ मुसलमानों को थी वहां आपस में आकर मिलते थे।

सफ़ा पहाड़ पर एलाने आम

तीन साल तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शख़्सी (व्यक्तिगत) और मुक़ामी (स्थानीय) तरीक़े से दावत देते रहे फिर हुक्म हुआ कि उठो और खुलकर दावत दो (या अय्युहल मुद्दस्सिर कुम फ़अनज़िर) "ऐ चादर के कपड़े पहने हुए शख़्स! उठो और लोगों को ग़लत बातों के अन्जाम से डराओ"। चुनांचे

आपने खुल कर दावत देना शुरू कर दी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने "काबा" के सामने के एक छोटे पहाड़ "सफ़ा" पर चढ़ कर हंगामी (एमरजेन्सी) हालात में लोगों को जमा करके अहम ख़बर सुनाने का जो तरीक़ा था कि "वासबाहा" (अरे सुब्ह बड़ी ख़तरनाक है) के मुताबिक़ आवाज़ लगाई, सब पहाड़ के सामने जमा हो गए, आपने उनसे कहा कि अगर मैं यह बताऊँ कि पहाड़ के पीछे जो मेरी नज़र मे है दुशमन हमले के लिये आ रहा है तो मेरी बात मानोगे, लोगों ने कहा क्यों नहीं, तुम उस तरफ़ देख रहे हो, हम नहीं देख रहे हैं, आपने फ़रमाया : तो सुन लो, मैं तुम को तुम्हारी दूसरी ज़िन्दगी में जिसका इल्म मुझे खुदा की तरफ़ से दिया गया है, सख़्त अज़ाब के पेश आने के ख़तरे से आगाह करता हूं, यह सुन कर कई लोग बहुत सख़्त गुस्से में आ गए और कहने लगे : क्या इसके लिये तुमने हम सबको जमा किया, और बुरा भला कहा, और इसमें आपका एक चचा अबू लहब और क़ुरैश का एक दूसरा लीडर अबू जहल पेश पेश था और सख़्त बात कही, इसके बाद ही क़ौम के ज़िद्दी और राहे हक़ (सच्चाई के मार्ग) से भटके हुए लोगों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुख़ालिफ़त (विरोध) शुरू कर दी और आपके खिलाफ़ दुशमनी का माहौल बनाने लगे और इस तरीक़े से एक ख़ामोश जंग शुरू हो गई जो एक तरफ़ः थी क्यों कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस दुशमनी और मुख़ालिफ़त को सब्र के साथ सहन करने का हुक्म अल्लाह की तरफ से दिया गया, ताकि क़ौम दावते हक़ को मुल्कगीरी या लीडरी हासिल करने की बात न समझे, बल्कि इस्लाह (सुधार) और अपने रब और ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) की ताबेदारी की तलक़ीन (उपदेश) समझे, क्योंकि मुल्कगीरी और सियासत में अवाम की पसन्द की बात कही जाती है ताकि वह साथ दें लेकिन "दावत" में हक़ की बात कही जाती है चाहे सब मुख़ालिफ़ हो जाएं, असली हमदर्दी और सहानुभूति कौम को भले बुरे से वाक़िफ़ (जानकारी) करने में है, लेकिन आपकी बात पर गौर न करने की वजह से आपके खिलाफ़ एक तरफ़ा जंग की कैफ़ियत इख़्तियार कर ली गई है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से इस्लाह (सुधार) व उपदेश का निरन्तर अमल

इसके बाद नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबको आमतौर पर समझाना शुरू किया, हर एक मेले में जहां बात करने का मौक़ा होता जा जा कर लोगों को तौहीद (एकेश्वरवाद) की ख़ूबी बताते, अच्छे अमल की तलक़ीन करते, बुराइयों से, ज़ुल्म से और बेहयाई की बातों से रोकते, बुतों, पत्थरों और दरख़्तों की पूजा को ग़लत, बेफ़ायदा और गुनाह की बात क़रार देते, आप लोगों को तलक़ीन (उपदेश) फ़रमाते कि ख़ुदा की ज़ात को हर नक़्स (दोष) से, हर ऐब

www.abulhasanalinadwi.org

से, और बुराई से पाक समझें, इस बात का पुख़्ता एतिक़ाद (विश्वास) रखें कि ज़मीन व आसमान, चांद सूरज, छोटे, बड़े सब के सब ख़ुदा के पैदा किये हुए हैं, सबउसी के मुहताज हैं, दुआ का कुबूल करना, बीमार को सेहत व तन्दुरूस्ती देना, मुरादें पूरी करना अल्लाह के इख़्तियार में है, अल्लाह की मरज़ी व हुक्म के बग़ैर कोई भी कुछ नहीं कर सकता, फ़रिश्ते और नबी भी उसके हुक्म के ख़िलाफ़ कुछ नहीं करते, अरब में उकाज़, उयैना और ज़िल मजाज़ के मेले बहुत मशहूर थे दूर दूर से लोग वहां आया करते थे, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन मक़ामात पर जाते और मेले में आए हुए लोगों को इस्लाम की और तौहीद की दावत फ़रमाया करते थे क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान मनसूरपूरी रहमतुल्ला अलैहि लिखते हैं : "नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर रोज़ इसी काम में लगे रहते थे, मक्का की आबादी के अन्दर हर एक मजमा (जन समूह) में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहुंचते थे और कुरआन सुनाते थे, हर शख़्स से तन्हाई में मिलते थे और उसे पैग़ामे इलाही पहुंचाते थे।

आबादी से बाहर भी जितने रास्ते आने जाने वालों के थे उन सब पर दिन की रौशनी और रात की तारीकी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जा पहुंचते थे, और कुरआन की तिलावत से आने जाने वालों के कानों में हुक्मे इलाही डालते थे, अरब की कोई मशहूर मण्डी और मशहूर मेला ऐसा न होता था जहां हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न पहुंचे हों और दीन की तलक़ीन बज़रिये तिलावत और इशाअत (प्रचार) बज़रिये दावत न फ़रमाई हो, उक्काज़ का ज़र्रह ज़र्रह और ताएफ़ का पत्ता पत्ता हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तिलावत का गहवारा है"।

क़ुरैश की मुख़ालिफ़त (विरोध)

बहरहाल जिस वक़्त से क़ुरैश के सामने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नबूवत की ज़िम्मेदारी अनजाम देते हुए अल्लाह तआला का पैग़ाम रखा और दीने हक़ की दावत दी, क़ुरैश ने अपना रवैय्या बदल दिया और आपकी बात सुनने से भी इनकार करने लगे हालांकि वह आपको बहुत सच्चा और अमानतदार और बहुत मोतबर (विश्वास पात्र) ख़ानदान का आदमी जानते और मानते थे यहां तक कि आपको "सादिक़", "अमीन" का खिताब (उपाधि) भी दे चुके थे, और मुख़ालिफ़त के ज़माने में भी आप को ऐसा ही अच्छा समझते रहे, वही जाना पहचाना और समझा हुवा और बड़ा सच्चा और अमानतदार आदमी अगर एक नई और माक़ूल (उचित) बात बताता है तो उसकी सच्चाई पर एतिबार करते हुए मान लेना चाहिये था, क्योंकि आप वह बातें बता रहे थे जिनको क़ुरैश बुनियादी तौर पर सही समझते थे और वह अक़्ल में भी आती थीं

www.abulhasanalinadwi.org

और उनकी असल हक़ीक़त उनके ज़ेहनों में मौजूद थी, क्योंकि कुरैश हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अपना पेशवा (धर्मगुरू) मानते थे और उनकी शिक्षा की बाज़ बातें उनमें राएज (प्रचलित) भी थीं और उनमें मबऊस होने वाले "नबी-ए-मुहतरम" ने अपने उसी जद्दे अकबर (बड़े दादा) नबी-ए- आज़म (सबसे बड़े नबी) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ही एलान कर्दा अक़ीदा व अमल को अपनी सच्ची और अमानत दाराना हैसियत के हवाले (संदर्भ) से बयान किया और वाज़ेह (स्पष्ट) किया कि नस्ले इब्राहीमी के उन्हीं लोगों को अपने जद्दे अमजद (पूर्वज) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से जो अक़ीदा मिला है उसकी अस्ल और सही शकल (रूप) तौहीद ख़ालिस है, जिसकी शकल में सिर्फ़ वहम और सरसरी अन्दाज़े से "शिर्क" शामिल कर लिया गया है।

कुरैश असलन अल्लाह तआला ही को सबसे बड़ा मानते थे, बाद में बाहर से आए हुए ख़यालात और उनसे पड़ने वाले असरात (प्रभाव) के नतीजे में वह अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात के साथ दूसरों को भी शरीक करने लगे थे मसलन फ़रिश्तों को अल्लाह तआला की बेटियां क़रार देने लगे थे, और अल्लाह तआला की बहुत सी विशेषताओं में अपने कुछ सम्मान योग्य पुरूषों को शरीक करते हुए खुदाई हैसियत देकर उनकी इबादत करने लगे और होते होते यह खुला हुआ शिर्क उनमें आम हो गया था, लेकिन अब जबकि कुरैश हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबूवत का मुक़ाम मिलने और शिर्क छोड़ने की दावत देने से पहले ही से एक उच्चतर गुणों वाला और सच्चा व ईमानदार और अच्छा इन्सान समझते और मानते थे, तो अब उनकी तरफ़ से ऐसी बात जो उनके जद्दे अमजद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दावत से हम आहंग (समान) थी, मानने में क्या दुशवारी थी? इसी प्रकार आख़िरत का अक़ीदा कि इस ज़िन्दगी के बाद दूसरी ज़िन्दगी होगी, और उसमें अच्छे और बुरे कामों का हिसाब होगा और सज़ा व जज़ा (बदला) मिलेगी, उसकी ख़बर भी कुरैश को उसका यह सच्चा और उच्च विशेषताओं और आचरण वाला अद्वितीय इन्सान दे रहा है और यह बात ज़रा सा भी ग़ौर करने से माकूल (उचित) भी समझी जा सकती थी, तो कुरैश के लिये माकूल रवय्या यही था कि इन बातों का इनकार न किया जाए।

लेकिन कुरैश एक तो अपने बाप दादा से चले आए तरीक़ों के तअस्सुब (पक्षपात) में और कुछ लोगों ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मक़बूलियत (लोकप्रियता) देख कर उसके हसद (ईर्ष्या) में उन बातों को सुनने से भी इनकार कर दिया और कह दिया कि तुम कौन हो हम को नसीहत करने वाले? हमारा कोई बड़ा सरदार ऐसी कोई बात कहता तो उसको हक़ बनता था, तुम कौन होते हो ऐसा कहने वाले? हम अपने बाप दादा के जिस तरीक़े पर

www.abulhasanalinadwi.org

चलते रहे हैं वही करेंगे, और जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पर ज़ोर दिया कि हम जो कह रहे हैं नबी होने के तअल्लुक़ से, वह अपने मूरिसे आला (मूल पुरूष) हज़रत इब्राहीम ही की बात के मुताबिक़ और उसी काबा के रब की तरफ़ से आए हुए पैग़ाम के तहत कह रहे हैं और उसी पर अल्लाह तआला की तरफ़ से चलने का हुक्म खुद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुआ है :

"कि इब्राहीम का तरीक़ा इख़्तियार करो और वह शिर्क करने वाले नहीं थे"। (सूरह नहल : १२३)

लेकिन कुरैश ज़िद पर आगए और इनकार ही करते रहे, तौहीद और नेक बातों के लिये अपने रीति रिवाज को छोड़ना नहीं चाहते थे, बल्कि उनसे हटना वह अपनी नखूवत (अभिमान) खुद पसन्दी (स्वेच्छा चारी) के खिलाफ़ मानते थे और कहते थे कि हम अपने इख़तियार किये हुए और पहले से चले आ रहे तरीक़े और अक़ीदे को कैसे छोड़ें, इसी के साथ साथ चूंकि अरबी मिज़ाज सादा और हक़ीक़त पसन्दाना था इस लिये अपनी ज़िद और मुख़ालिफ़त के बावजूद जब बराहे रास्त (प्रत्यक्ष) कुरआन मजीद की आयतें सुन लेते और खुद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात खुले ज़ेहन से सुन लेते थे तो वह उसको मान लेते थे, क्योंकि कुरआन मजीद की आयतों को सुन कर उनका ज़ेहन इस बात का यक़ीन कर लेता था कि यह इन्सानी कलाम नहीं हो सकता है और जब खुले ज़ेहन से उसको सुन लेते तो मान लेते कि यह इन्सान से ऊपर वाले का ही कलाम है, लिहाज़ा यह खुदा ही की तरफ़ से होगा और ईमान ले आते।

इस्लाम लाने वालों की आज़माइश

ईमान लाने वालों की संख्या आहिस्ता आहिस्ता बढ़ती गई, कोई कलामे इलाही के एजाज़ (चमत्कार) से प्रभावित हो कर, कोई रसूले खुदा सल० के अख़लाक़, एख़लास और आपके हमदरदाना तरीक़-ए-दावत से प्रभावित हो कर और आपके अमीन व सादिक़ होने का तजुरबा (अनुभव) रखने की बिना पर इस्लाम की तरफ माएल हुआ, इस तरीक़े से इस पैग़ामे हक़ को रोकने वाले प्रभावशाली लोगों की मुखालिफ़त के बावजूद इस्लाम में दाखिल हो जाता था, लेकिन मुखालिफ़ों की सख़्त मुखालिफ़त (विरोध) की वजह से इस दावत को कुबूल करने वालों को बड़े जुल्म व ज़्यादती का भी सामना करना पड़ता था, जो उनके सब्र व बरदाश्त का बहुत बड़ा इम्तिहान था, और अल्लाह तआला का हुक्म भी था कि अपने हाथों को रोके रखो और नमाज़ व दुआ से ताक़त हासिल करते रहो, यह ऐसी हालत में था कि अरबों का मिज़ाज लड़ने भिड़ने का था और मुक़ाबिले में हिम्मत न हारने का था मगर वह इस मौक़े पर अपने मिज़ाज

www.abulhasanalinadwi.org

को दबाए रहे और अल्लाह की तरफ़ से सब्र का हुक्म मिलने पर सब्र पर क़ायम रहे।

लेकिन मक्के वालों की दुशमनी मुसलसल बढ़ती रही, और तकलीफ़ देने और तशद्दुद (हिंसा) का रवय्या इखतियार करने का सिलसिला भी बढ़ गया और बात इतनी बढ़ी कि एक मौके पर एक सहाबी ने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह हम कहां तक बरदाश्त करें, पानी सर से ऊँचा हो गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम टेक लगाऐ बैठे थे सीधे हो गए और ज़ोर देकर फ़रमाया कि अल्लाह की मदद ज़रूर आएगी, सब्र और हिम्मत से काम लो और देखो तुमसे पहले की क़ौमों में जिन्होंने दीने हक़ कुबूल किया उनको इस से भी ज़्यादा तकलीफ़ें पहुंचीं, आरा तक चला।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ पहुंचाना

कुफ़्फ़ारे कुरैश जिनमें आगे आगे अबू जहल, अबू लहब, अस्वद बिन अब्दे यग़ूस, वलीद बिन मुग़ैरह, उमय्या बिन ख़लफ़, नज़र बिन हारिस, मुनब्बा बिन हज्जाज, उक़बा बिन अबी मुईत, हकम बिन अबिल आस जैसे चोटी के लीडर थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रास्ते में कांटे बिछाते, नमाज़ पढ़ते वक़्त हंसी उड़ाते, सज्दे में आपकी गर्दन मुबारक पर ओझड़ी डाल देते, गले में चादर लपेट कर इस ज़ोर से खींचते कि गर्दन मुबारक में बद्धियां पड़ जातीं, जादूगर कहते, दावा-ए-नबूवत सुन कर मजनूं कहते, बाहर निकलते तो शरीर लड़के पीछे पीछे झुण्ड बांध कर चलते, नमाज़ में कुरआन मजीद ज़ोर से पढ़ते तो कुरआन करीम, कुरआन मजीद लाने वाले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और कुरआन के उतारने वाले (रब्बुल आलमीन) को गालियां देते।

एक दफ़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम "हरम" में नमाज़ पढ़ रहे थे, रउसा-ए-कुरैश भी मौजूद थे, अबू जहल ने कहा : काश इस वक़्त कोई जाता और ऊँट की ओझड़ी नजासत समेत उठा लाता कि जब मुहम्मद (स०अ०) सजदे में जाते तो उनकी गर्दन पर डाल देता, उक़बा ने कहा : यह ख़िदमत मैं अन्जाम देता हूं, चुनांचे वह ओझ लाकर आप (स०अ०) की गर्दन पर डाल दी, कुरैश मारे खुशी के एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे, किसी ने जाकर हज़रत फ़ातिमा रज़िअल्लाह अन्हा को खबर दी, वह अगरचे उस वक़्त सिर्फ़ पांच-छः वर्ष की थीं, लेकिन जोशे मुहब्बत से दौड़ आईं और ओझड़ी को हटा कर उक़बा को बुरा भला कहा और बद दुआएं दीं।

जब किसी मजमा में हुज़ूर सल्ल० अल्लाह की तरफ़ बुलाते तो अबू लहब आपके प्रवचन के साथ कहता जाता कि यह झूठ कहता है। एक सहाबी का बयान है कि एक दफ़ा जब कि मैं उस समय तक इस्लाम नहीं लाया था हुज़ूर सल्ल०

www.abulhasanalinadwi.org

बाज़ार जुलमजाज़ में गए और घुस कर लोगों से कहा, "ला इलाहा इल्लल्लाह' कहो, अबू जहल आप पर ख़ाक फेंकता जाता था और कहता था कि इस के फ़रेब में न आना, यह चाहता है कि तुम लात व उज़्ज़ा को पूजना छोड़ दो।

एक दफ़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम "हरम काबा" में नमाज़ पढ़ रहे थे, उक़बा ने आपकी गर्दन में चादर लपेट कर ज़ोर से खींची, इत्तिफ़ाक़न हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़िअल्लाह अन्हु आ गए और आप का शाना (कन्धा) पकड़ कर उक़बा के हाथ से छुड़ाया और कहा कि ऐसे शख़्स को तुम मार डालना चाहते हो जो सिर्फ़ यह कहता है कि खुदा एक है।

क़बीले दौस के सरदार तुफ़ैल बिन अमर का कुबूल इस्लाम

हज़रत तुफ़ैल बिन अमर दौसी जो क़बीले दौस के सरदार थे और मक्का ज़ियारत के लिये आए थे अपना हाल बयान करते हैं कि मैं एक रोज़ सुब्ह के वक़्त खान-ए-काबा गया नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ रहे थे, मैंने सुना कि एक निहायत अजीब कलाम पढ़ रहे हैं, कुरैश ने अगरचे मुझको मना किया था कि उनका कलाम न सुनना, यह जादू भरा कलाम है, तुमको बहका देगा लेकिन मेरे दिल ने मुझसे कहा कि मैं खुद शाएर (कवी) हूं, इल्म वाला हूं, अच्छे बुरे की तमीज़ रखता हूं, मैं कैसे धोखा खा जाऊंगा और अच्छे बुरे के दरमियान फ़र्क़ न कर सकूंगा, फिर क्या वजह है और कौन सी रोक है कि मैं उसकी बात न सुनूं, अच्छी बात होगी तो मानूंगा, वरना नहीं मानूंगा, मैं यह इरादा करके ठहर गया, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस घर चले तो मैं भी पीछे हो लिया और जब मकान पर हाज़िर हुआ तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना वाक़िया मक्का आने, लोगों के बहकाने, कानों को बन्द करने, और आज हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान से कुछ सुन पाने का कह सुनाया, और अर्ज़ किया : मुझे अपनी बात सुनाइये नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरआन पढ़ा, बखुदा मैंने ऐसा पाकीज़ा कलाम कभी सुना ही न था, जो इस क़दर नेकी और इन्साफ़ की हिदायत करता हो, अलग़रज़ तुफ़ैल दौसी उसी वक़्त मुसलमान हो गए, उनका मुसलमान होना इस्लाम की एक ताक़त का सबब बना, क्योंकि वह अपने खानदान दौस के सरदार थे जिसका असर पूरे क़बीले पर पड़ा।

इसी तरह दूसरे लोगों का भी मामला था, जब आप की मुख़ालिफ़त (विरोध) करने वाले अरबों में से कोई भी सादा दिली के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिलता और आपकी बात को तअस्सुब (पक्षपात) से खाली ज़ेहन से सुन लेता तो फ़ौरन मान लेता, इस तरह धीरे धीरे लोगा मुसलमान होते गए, अलबत्ता वह लोग जो क़बीले कुरैश के अन्दर सरदार और बड़े समझे जाते थे और अपने को श्रेष्ठ और ऊँचे मुक़ाम पर समझते थे उनको यह दुशवारी पेश

www.abulhasanalinadwi.org

आ जाती थी कि अपने क़बीले के अन्दर किसी दूसरे के मातहत कैसे आजाएं, और अपने सरदाराना मुक़ाम से कम पर कैसे राज़ी हो जाएं, वह न सिर्फ यह कि इस्लाम कुबूल नहीं करते थे बल्कि सख़्त मुख़ालिफ़त करते थे।

इस्लाम लाने वालों पर कुरैश के अत्याचार

इस तरह कुरैश के यह दो मौक़िफ़ (दृष्टि कोण) हो गए थे कि एक तरफ़ तो बाज़ लोग आहिस्ता आहिस्ता इस्लाम कुबूल करते जाते थे, दूसरी तरफ़ वह लोग थे जो अपनी बड़ाई या खानदानी उत्तमता के एहसास से काम लेते थे, इनकार करते थे और बिला सोचे ग़ौर किये मुसलमान होने वालों पर गुस्सा करते और उन पर हर तरह दबाव डालते, तकलीफ़ पहुंचाते कि वह खानदान के राएज तरीक़े की तरफ़ लौट आएं, और मक्का में जो कुरैशी न थे बल्कि बाहर के होने की वजह से कमज़ोर हैसियत के थे, उनको तो सख़्त जुल्म का निशाना बनाया जाता था यहां तक कि बाज़ बाज़ की उस जुल्म की वजह से मौत भी हो गई।

हज़रत बिलाल रज़िअल्लाहु अन्हु हबशी थे, उमय्या बिन ख़लफ़ के गुलाम थे, जब उमय्या ने सुना कि बिलाल मुसलमान हो गए हैं भांति भांति के अज़ाब उनके लिये ईजाद किये गए, गर्दन में रस्सी डाल कर लड़कों के हाथ में दी जाती और वह मक्के की पहाड़ियों में उन्हें लिये फिरते, रस्सी का निशान गर्दन में नुमायां हो जाता, मक्का घाटी की तप्ती हुई रेत पर उनको लिटा दिया जाता और गरम गरम पत्थर उनकी छाती पर रखवा दिया जाता, मुश्कें बांध कर लकड़ियों से पीटा जाता, धूप में बिठाया जाता, भूखा रखा जाता, हज़रत बिलाल रज़िअल्लाह अन्हु इन सब हालतों में "अहद" "अहद" के नारे लगाते रहते कि खुदा एक, खुदा एक।

इस हालत में एक मरतबा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाह अन्हु उनके पास से गुज़रे और उमय्या को हज़रत बिलाल के बदले में एक उनसे ज़्यादा मज़बूत व तवाना और सियाह फ़ाम (काला कलूटा) गुलाम देकर हज़रत बिलाल को आज़ाद करा दिया।

अम्मार और उनके वालिद यासिर, उनकी वालिदा सुमय्या मुसलमान हो गए थे, बनी मखजूम उनको बाहर लाते और उनको मक्के की सख़्त गर्मी और तपिश में तरह तरह की तकलीफ़ें पहुंचाते, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उधर से गुज़र होता तो आपको रंज और अफसोस होता, लेकिन आप उस वक़्त और कुछ नहीं कर सकते थे, सिवाए उस तलक़ीन के कि "आले यासिर ज़रा सब्र रखो! तुम्हारी मन्ज़िल जन्नत है" उन पर जुल्म इस क़दर बढ़ा कि कमबख़्त अबू जहल ने बीबी सुमय्या की शर्मगाह में नेज़ा मारा जिसके असर से वह शहीद हो गईं।

अबू फ़कीह जिनका नाम "अफ़लह" था, के पावों में रस्सी बांध कर उन्हें पथरीली ज़मीन पर घसीटा जाता। खब्बाब बिन अरत के सर के बाल खींचे जाते, गर्दन मिरोड़ी जाती, बारहा आग के अंगारों पर लिटाया गया।

कुरैश का यह सुलूक गुलामों और कमज़ोरों के ही साथ न था, बल्कि अपने बेटों और अज़ीज़ो के साथ भी वह ऐसी ही संगदिली का बरताव किया करते।

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान के इस्लाम लाने की खबर उनके चचा हकम बिन अबिल आस बिन उमय्या को हुई तो वह हज़रत उस्मान को खजूर में बांध देता और नीचे से धुवां दिया करता।

हज़रत मुसअब बिन उमैर को उनकी मां ने उनको घर से निकाल दिया था, इसी जुर्म में कि वह इस्लाम ले आए थे।

बाज़ सहाबा को कुरैश गाय, ऊँट के कच्चे चमड़े में लपेट कर धूप में फेंक देते थे, बाज़ को लोहे की ज़िरह (कवच) पहना कर जलते जलते पत्थरों पर लिटा दिया करते।

दूसरी तरफ़ मुसलमान हो जाने वालों को उनके नबी का हुक्म था कि तकलीफ़ों पर सब्र ही करें, कोई जवाबी कार्यवाई न करें, क्योंकि अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़रमा दिया गया था : (कुफ़्फ़ू ऐदियाकुम व अक़ीमुस्सलात) "अपने हाथ रोके रखो और नमाज़ को क़ायम करो"।

इस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़रिये इस बात की तरफ़ तवज्जुह दिलाई गई कि चूंकि अस्ल मक़सद (उद्देश्य) लोगों को समझाना और उनको दीने हक़ मानने वाला बनाना है, अगर उनकी मुख़ालिफ़त (विरोध) का जवाब इन्तिक़ामी अन्दाज़ (बदले की भावना) में दिया जाएगा तो उनमें दीने हक़ (सत्यधर्म) से इन्कार में ज़्यादा सख़्ती बढ़ेगी, और ज़िद में इज़ाफ़ा होगा, फिर मुसलमानों को उस वक़्त तक ऐसी ताक़त भी हासिल नहीं थी, कि कुफ़्फ़ार की ताक़त का अपनी ताक़त से मुक़ाबिला कर सकें, और वह उस ज़ुल्म का जवाब ताक़त से देते तो उस वक़्त की कमज़ोर दावत का काम जो कि जब्र से नहीं बल्कि समझा बुझा कर करना था पीछे रह जाता, एक दूसरे के दरमियान गुस्सा और दुशमनी की ताक़त आज़माई होने लगती, लिहाज़ा अस्ल मक़सद (उद्देश्य) को सामने रखते हुवे सब्र व बर्दाश्त से काम करना था, उस वक़्त की कमज़ोर पोज़ीशन में सब्र और इन्तिज़ार और परवरदिगार से नुसरत (मदद) की तलब व दुआ पर इक्तिफ़ा (सन्तोष) करना था।

बहरहाल इन्सानों की इस्लाह (सुधार) और उनके अक़ीदे व इबादत की दुरूस्तगी की कोशिश अस्ल काम था, लिहाज़ा जहां तक गुनजाइश थी उसको इख़्तियार किया गया और यह रवय्या इख़्तियार किया गया कि इस राह में चलने

www.abulhasanalinadwi.org

वालों को तकलीफ़ और दुशवारी पेश आए और इस मुद्दत में जो आज़माइशी सूरतेहाल हो उसको बर्दाश्त करना है, हालात का तक़ाज़ा भी यही था और मुसलमान का मआमला यह है कि उसकी तकलीफ़ें उसकी दुनियावी ज़िन्दगी में कितनी भी ज़्यादा हों इस छोटी उम्र ही तक रहती हैं, उसकी मुख़्तसर और फ़ानी (थोड़ी और मिट जाने वाली) दुनियावी ज़िन्दगी के बाद हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी शुरू होगी, जहां हर इन्सान के लिये चाहे किसी वर्ग या क़ौम से संबन्ध रखता हो उसके इख़्तियार किये हुए अक़ीदे व इबादत और उसके किरदार (आचरण) व अमल के मुताबिक़ अमल होगा, सही अक़ीदा और अच्छा अमल रहा होगा तो अच्छा मामला होगा, ग़लत अक़ीदा और बुरा अमल रहा होगा तो बुरा नतीजा भुगतना पड़ेगा और अगर सच्चाई के रास्ते में तकलीफ़ें आई हों तो तकलीफ़ों का सिला ज़ाएद और भरपूर मिलेगा, और आख़िरत की ज़िन्दगी चूंकि लंबी से लंबी तर होगी, लिहाज़ा यह सिला (बदला) भी लंबातर मिलेगा, और उसकी दुनियावी तकलीफ़ों की तलाफ़ी (क्षतिपूर्ति) बढ़ चढ़ कर हो सकेगी।

चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सरपरस्ती (संरक्षता) में दावत के काम अन्जाम देने और दीन पर अमल करने में जो मुसीबतें और तकलीफ़ें पेश आईं, उनको बर्दाश्त करने का हुक्म हुआ, ऐसे ऐसे वाक़ियात पेश आए जो एक तरफ़ बड़े दिल दहलाने वाले थे लेकिन ऐसे वाक़ियात भी सामने आए जो ईमान वालों के दिल बढ़ाने वाले भी थे, बहरहाल उनके साथ अल्लाह की मदद थी, यह मदद खासतौर पर क़ुरआन मजीद की आयतों के ज़रिये तसकीन देने के ज़रिये थी, जो एक तरफ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत और दीने हक़ लाने वाले की हैसियत से तसदीक़ व तहसीन (पुष्टि व प्रशंसा) करती थी और दूसरी तरफ़ मुसलमानों के अज़्म व यक़ीन (संकल्प व विश्वास) को बढ़ाने वाली थी, और नए इस्लाम लाने वालों को जब इन तकलीफ़ों से परेशानी का एहसास बढ़ता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तसकीन देते और अच्छे नतीजे (परिणाम) की उम्मीद दिलाते।

तकलीफ़ पहुंचाने के लिये नियमानुसार कमेटियों की रचना

क़ुरैश मक्का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसलमानों पर जो ज़ुल्म व अत्याचार कर रहे थे उनके असर से जब मुसलमानों में कोई तबदीली (परिवर्तन) होती नहीं देखी तो क़ुफ़्फ़ार ने अधिक तकलीफ़ देने के तरीक़े तय किये और उसके लिये बजाए अलग अलग तरीक़ों की कोशिशों के नियम पूर्वक कमेटियां बनाई गईं।

एक कमेटी बनाई गई जिसका इन्चार्ज अबू लहब था और मक्के के 25 सरदार उसके मेम्बर थे, उस कमेटी में एक बड़ा सवाल यह भी था कि जो लोग

www.abulhasanalinadwi.org

दूरदराज़ से मक्के में आते हैं उनसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तअल्लुक़ से ऐसी बात कही जाए कि वह आपसे मिलने और आपकी बात सुनने से बचें ताकि वह लोग आप की बातों से प्रभावित हों न आपकी बात पर ध्यान दें।

एक ने कहा कि हम नए आने वालों को बतलाया करें कि वह काहिन (ज्योतिषी) हैं।

वलीद बिन मुग़ैरह (जो एक खुर्रान्ट बुडढा था) बोला मैंने बहुतेरे काहिन (ज्योतिषी) देखे हैं, लेकिन कहां काहिनों की तुकबन्दियां और कुजा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कलाम, हम को तो ऐसी बात न कहनी चाहिये, जिससे क़बाइले अरब यह समझें कि हम झूट कह रहे हैं।

एक ने कहा : हम उसे दीवाना बताया करेंगे।

वलीद बोला : मुहम्मद को दीवानगी से क्या निस्बत (लगाव) है।

एक बोला : अच्छा हम कहेंगे वह शाएर (कवि) है।

वलीद न कहा : हम जानते हैं कि शेर (कविता) क्या होता है।

उसके गुण और अवगुण से हम भली भांति परिचित हैं, मुहम्मद के कलाम को शेर (कविता) से ज़रा मुशाबिहत (समानता) नहीं।

एक बोला : हम बताया करेंगे कि वह जादूगर है।

वलीद ने कहा : जिस तहारत व लताफ़त व नफ़ासत (पवित्रता, कोमलता, शुद्धता) से मुहम्मद रहता है वह जादूगरों में कहां होती है, जादूगरों की मनहूस सूरतें और नजिस आदतें अलग ही होती हैं।

आखिर इस कमेटी ने निम्नलिखित प्रस्तावना पर इत्तिफ़ाक़ किया और उससे सब लोग सहमत हुए।

"मुहम्मद को हर तरह से दिक़ किया जाए, बात बात में उसकी हंसी उड़ाई जाए, अधिक से अधिक उन्हें तकलीफ़ दी जाए और मज़ाक़ उड़ाया जाए, मुहम्मद को सच्चा समझने वालों को इन्तिहा दर्जे की तकलीफ़ों का शिकार बनाया जाए।

कुरैश के सरदारों की अबू तालिब से मुलाक़ात

अब कुरैश में हर तरफ़ और हर वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चर्चा होने लगा, लोग एक दूसरे को आप की मुख़ालिफ़त और दुशमनी पर आमादा करते और उसके लिये फ़िज़ा तय्यार करते, चुनांचे एक मरतबा कुरैश के सरदारों का एक वफ़्द (प्रतिनिधि मंडल) अबू तालिब के पास गया और उनसे कहा :

"ऐ अबू तालिब आप बड़ी उम्र के हो गए हैं और हमारी निगाह में आपकी बड़ी क़द्र और इज़्ज़त है, हमने आपसे पहले ज़िक्र किया था कि आप

www.abulhasanalinadwi.org

अपने भतीजे को मना करदें लेकिन आपने इस सिलसिले में कुछ भी न किया, अब खुदा की क़सम हम इस से ज़्यादा सब्र न करेंगे, जितना हमने अब तक सब्र का सुबूत दिया है, अब हम अपने बाप दादा की बातों को गलत करार देना, और हमको नासमझ और बेअक़्ल ठहराना और हमारे माबूदों में ऐब निकालना ज़्यादा बर्दाश्त नहीं कर सकते, या आप उनको इस हरकत से बाज़ रखें (रोकें) या फिर हम उनसे और आपसे समझ लेंगे, यहां तक हम में से कोई एक फ़रीक़ (पक्ष) ख़त्म हो जाए"।

अबू तालिब पर अपनी क़ौम की जुदाई और दुश्मनी भी शाक़ (भारी) थी, लेकिन वह इस पर भी राज़ी न थे कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मदद से हाथ उठालें और उनको क़ौम के हवाले करदें, उन्होंने आप को बुला भेजा और कहा :-

"मेरे भतीजे! तुम्हारी क़ौम के लोग मेरे पास आए थे और ऐसा ऐसा कह रहे थे, भतीजे! मेरी जान का भी ख़्याल करो, और अपनी जान का भी, मुझ पर इतना बोझ न डालो जिसको मैं न उठा सकूं"।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह सुन कर ख़्याल हुआ कि शायद अबू तालिब अब उनके मामले में संकोच में पड़ गए हैं और अब आपके बचाव और हिफ़ाज़त की फ़िक्र न कर सकेंगे, आपको रंज हुआ और आपने अपनी मजबूरी बताते हुए फ़रमाया :-

"चचा खुदा की क़सम (मुझ पर ऐसी ज़िम्मेदारी डाली गई है कि) अगर यह लोग मेरे दाहिने हाथ में सूरज और बाएं हाथ में चांद लाकर रखदें और (उसके बदले) यह चाहें कि मैं इस काम को छोड़ दूं तो भी मैं ऐसा नहीं कर सकूंगा, मुझे तो यह काम करना है यहां तक कि अल्लाह तआला इस काम को ग़ालिब (प्रमुखशाली) करदे या मैं इसी रास्ते में हलाक हो जाऊँ"।

यह कहते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आंखों में आंसू आगए, क्योंकि आपको यह एहसास हुआ कि यह मेहरबान चचा भी जो आपको आपकी आठ साला उम्र के वक़्त से यतीम भतीजा समझ कर बचाव और हिफ़ाज़त की फ़िक्र रखा करते थे और उनकी हिमायत से आपकी दुशवारियों में कमी होती थी शायद अब बदलते हुए मालूम होते हैं, और आप रो दिये और वापस तशरीफ़ ले जाने के लिये उठे, आपको इस तअस्सुर (प्रभाव) के साथ जाता देख कर मुशफ़िक़ चचा पर असर पड़ा और उन्होंने आपको आवाज़ दी और कहा कि मेरे भतीजे! आओ आप सामने तशरीफ़ लाए, उन्होंने कहा, जाओ और जैसा तुम्हारा दिल चाहे करो, खुदा की क़सम मैं तुमको अपने से जुदा करके किसी के हवाले न करूँगा।

www.abulhasanalinadwi.org

अबुल वलीद उतबा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात चीत

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बराबर इस्लाम की दावत में लगे रहे और कुरैश की तरफ़ से रूकावटों और तकलीफ़ों को सब्र और बर्दाश्त से झेलते रहे, कुरैश हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़बील-ए-कुरैश की शाख अब्दे मनाफ़ जो आपकी खानदानी शाख थी के दबाव और उसके सरदार अबू तालिब की हिमायत की वजह से क़त्ल कर देने का इरादा तो न कर सके थे, लेकिन तरह तरह की अज़ीयतें (तकलीफ़ें) देते थे, बदज़बानियां करते थे, कुरैश तअज्जुब में थे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह सब सख़्तियां क्यों झेलते हैं? इन्सानी दिमाग़ ऐसी नफ़्स कुशी और जांबाज़ी (त्याग और बलिदान) का मक़सद (उद्देश्य) जाह व दौलत और नाम व शुहरत के सिवा और क्या खयाल कर सकता है, लिहाज़ा कुरैश ने भी यही खयाल किया, इस बिना पर कुरैश के एक बड़े शख़्स उतबा बिन रबीआ को कुरैशी सरदारों ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजा और वह आया और कहा कि तुम से ज़रूरी बात करना है, तुमने कुछ दिनों से यह जो झगड़े का काम शुरू कर दिया है, जिससे खानदान में कशमकश (असमंजस) और मुसीबत खड़ी हो गई है।

यह तुम क्यों कर रहे हो, तुम्हारा इसके पीछे क्या मक़सद है? तुम क्या चाहते हो? अगर कोई ऐसा मक़सद (उद्देश्य) है जिसको पूरा करने में हम लोग कुछ कर सकें तो हम करदें और तुम यह दावत छोड़ दो, मक्का की रियासत चाहते हो तो वह बताओ, किसी बड़े घराने में शादी चाहते हो तो वह बताओ, दौलत का ज़ख़ीरा चाहते हो तो वह बताओ, हम कुछ कर सकते हैं तो करेंगे, हम इस पर राज़ी हैं कि कल मक्के का बादशाह मान लें, अगर आसेब और जिन् वग़ैरह के असर से यह बात है तो हम इसको दूर कराने का कोई ज़रिया फ़राहम (उपलब्ध) करेंगे और उस पर पूरी फ़य्याज़ी (उदारता) से अपना माल खर्च करेंगे यहां तक तुमको उससे शिफ़ाए कामिल (पूर्ण स्वास्थ्य) हासिल हो जाए लेकिन इन बातों से बाज़ आओ (रूक जाओ) उतबा को इस दरख्वास्त (प्रार्थना) की कामयाबी का पूरा यक़ीन था, जब उतबा सब कुछ कह चुका तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो कुछ कहना था आप कह चुके? उसने कहा : हाँ,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अब मेरी बात सुनिये!

इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूर-ए-फ़ुस्सिलत की कुछ आयतें सजदह तक उनके सामने तिलावत कीं :

www.abulhasanalinadwi.org

"शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है, यह कलाम उतारा हुआ है बड़े मेहरबान, बहुत रहम वाले की तरफ़ से, ऐसी किताब है जिसकी आयतें वाज़ेह (स्पष्ट) रखी गई हैं, यह कुरआन है अरबी ज़बान में उन लोगों के लिये जो (वास्तविकताओं का) ज्ञान रखते हैं, खुशखबरी सुनाने और डराने वाला है फिर भी उनमें से बहुत से लोगों ने उससे अपना मुंह फेर लिया, और वह सुनते ही नहीं (इसके अलावा) उन्होंने यह कहा कि तू जिसकी तरफ़ हमें बुला रहा है हमारे दिल उससे परदे में हैं और हमारे कानों (तक पहुंचने) में (कानों की) गरानी बाधक है, और हम में और तुम में एक परदा (रूकावट) है (फिर अल्लाह तआला ने अपने नबी से फ़रमाया कि) अच्छा तो अब अपना काम किये जाओ, हम भी यक़ीनन अपना काम करने वाले है"।

उतबा के कान में जब यह कलाम पड़ा तो उसने खामोशी के साथ उसको सुनना शुरू किया, उसने दोनों हाथ पीठ की तरफ़ टेक लिये थे और कान कलामे रब्बानी के सुनने में महव (मग्न) थे, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आयत सजदह तक पहुंचे तो आपने सजदह फ़रमाया और इरशाद हुआ : अबुल वलीद! तुम्हे जो कुछ सुनना था सुन लिया, अब जैसा तुम समझो।

कलाम पाक सुनने से महवियत का एक आलम तारी हो गया था, वह हाथों पर सहारा दिये गर्दन पुश्त (पीठ) पर डाले हुए सुनता रहा और आख़िर में चुपचाप उठ कर चला गया, उतबा वापस गया तो वह उतबा न था, कुरैश के सरदारों ने पूछा क्या देखा? क्या कहा? क्या सुना? उतबा बोला : ऐ कुरैश के लोगो! मैं ऐसा कलाम सुन कर आया हूं जो न कहानत है, न शेर (कविता) है, न जादू है, न मनतर है, तुम मेरा कहा मानो, मेरी राय पर चलो, मुहम्मद को अपने हाल पर छोड़ दो, अगर वह कामयाब हो कर अरब पर ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) आजाएंगे तो यह तुम्हारी ही इज़्ज़त है, वरना अरब उनको खुद फ़ना करदेंगे, लोगों ने यह राय सुन कर कहा : लो उतबा पर भी मुहम्मद का जादू चल गया और उतबा की राय मनजूर न की।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० के साथ कुफ़्फ़ारे कुरैश का मामला

एक दिन अबू बक्र रज़िअल्लाह अन्हु एक मजमा (जन समूह) में तब्लीग़ की नियत से ख़ड़े हुए और अल्लाह और उसके रसूल की दावत देनी शुरू की, तो मुशरिकीन ग़ैज़ व ग़ज़ब के आलम में उन पर टूट पड़े और उनको बहुत ज़्यादा मारा पीटा, उतबा बिन रबीआ दो फटे पुराने जूतों से उनके चेहरे को इस तरह मारता रहा कि बाद में उनके चेहरे के ख़द व ख़ाल (रंगत व बनावट) पहचाने न जाते थे।

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत अबू बक्र के खानदान के लोग बनू तमीम हज़रत अबू बक्र रज़ि० को इस हालत में उठा कर ले गए कि उनको उनकी मौत में कोई शक न था, दिन ढले आप को होश आया और पहला लफ़्ज़ (शब्द) जो आपकी ज़बान से निकला वह यह था कि बताओ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खैरियत से हैं? उन लोगों ने इस पर उनको बुरा भला कहा (कि इस हाल में भी उनको अपने से ज़्यादा उनकी फ़िक्र है जिनकी वजह से यह सारी परेशानी उठानी पड़ी) उसी वक़्त उम्मे जमील जो इस्लाम ला चुकी थीं उनसे क़रीब हुईं तो उन्होंने उनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में दरयाफ़्त किया, उन्होंने कहा आपकी वालिदा क़रीब खड़ी हैं सुनलेंगी, उन्होंने कहा मेरी अल्लाह से नज़र है कि मैं उस वक़्त तक न कुछ खाऊंगा, न पियूंगा, जब तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत बाबरकत में हाज़िर न हो जाऊं, यह सुन कर वह दोनों वहां रूक गईं, जब लोगों की आमद व रफ़्त बन्द हुई और सन्नाटा हुआ तो वह दोनों हज़रत अबू बक्र रज़ि० को सहारा देकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में लाईं, उनकी यह हालत देखकर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी वालिदा के लिये बहुत दुआ की, और उनको इस्लाम लाने पर आमादा किया और वह उसी वक़्त मुसलमान हो गईं।

हज़रत हमज़ा रज़ि० का कुबूले इस्लाम

एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कोहे सफ़ा पर बैठे थे, अबू जहल वहां पहुंच गया उसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहले गालियां दीं, लेकिन रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चुप रहे, फिर उसने एक पत्थर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर पर फेंक मारा, जिससे खून चलने लगा और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बर्दाश्त किया, जवाबी कार्यवाई नहीं की, थोड़ी देर में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत हमज़ा तीर कमान लगाए हुए एक शिकार से वापस आए, वह उस वक़्त आपकी नबूवत पर ईमान नहीं लाए थे, वह कुरैश के मज़बूत, वीर और साहसी नौजवान समझे जाते थे, उनको अब्दुल्लाह बिन जदआन की बांदी ने जो अबू जहल की हरकत को देख रही थी, माजरा सुनाया, हज़रत हमज़ा को यह सुन कर गुस्सा आया और वह गुस्से में उसी वक़्त अबू जहल के पास पहुंचे और उसके सर पर ज़ोर से कमान खींच मारी उससे वह जख़मी हो गया और मारते हुए कहा कि तुम्हारी यह जुरअत कि तुम मेरे भतीजे मुहम्मद को बुरा भला कहो और गाली दो, अब मैं भी उनके दीन को माने लेता हूं और वह जो कहते हैं वही मैं कहता हूं, अबू जहल खामोश रहा, इस तरह हज़रत हमज़ा रज़ि० इस्लाम ले आए और उनके इस्लाम लाने से कुरैश के इस्लाम दुशमन लोगों पर उनकी शुजाअत

www.abulhasanalinadwi.org

(बहादुरी) रूसूख और वजाहत (मान और पहुंच) की वजह से एक बड़ी ज़र्ब (मार) लगी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत हमज़ा रज़िअल्लाह अन्हु के इस्लाम लाने से ताक़त मिली, क्योंकि वह मज़बूत आदमी थे, कुरैश कुछ उनसे दबते थे, लेकिन फिर भी आपकी मज़ीद तक़वियत की खुवाहिश थी, चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने परवरदिगार से दुआ की कि कुरैश के दूसरे दो ज़बरदस्त जवानों उमर बिन खत्ताब और अबू जहल में से किसी को इस्लाम की तौफ़ीक़ मिल जाए आपकी यह दुआ हज़रत उमर बिन खत्ताब के लिये कुबूल हो गई।

हज़रत उमर का कूबूले इस्लाम

हज़रत हमज़ा के इस्लाम लाने से तीन दिन बाद हज़रत उमर बिन ख़त्ताब को भी जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुखालिफ़त (विरोध) में दूसरे कुरैशियों से कम न थे, इस्लाम की तौफ़ीक़ (साहस) मिल गई, वह ज़ाती तौर पर बड़े बहादुर और दिलेर थे, और कुरैश की आरे से बाहरी देशों की सिफ़ारत (प्रति निधित्व) का काम भी उनसे संबंधित होता था, कुरैशी नौजवानों की एक बैठक में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खिलाफ़ तदबीरें (उपाय) सोची जा रही थी कि हज़रत उमर (रज़ि०) लोगों की बात चीत और इस मसअले का हल निकालने के लिये विचार और चिंतन से प्रभावित हो कर कहने लगे रोज़ रोज़ के झनझट की ज़रूरत नहीं, क़िस्सा ही ख़त्म कर देता हूं और अपनी बहादुरी के भरोसे पर नबी (स०अ०) के क़त्ल का इरादा करके मजलिस (बैठक) से निकले, बदन पर सब हथियार सजा रखे थे, रास्ते में एक मुसलमान नईम बिन अब्दुल्लाह मिले और हज़रत उमर के दम ख़म देखकर बोले कि उमर कहां का इरादा है? उमर बोले : अरे यह मुहम्मद जिन्होंने एक मुसीबत खड़ी कर रखी है उनको ख़त्म करने का इरादा है, हज़रत नईम पर असर पड़ा और वह उनका ज़ेहन मोड़ने के लिये बोले : पहले अपनी बहन और बहनोई को भी देखो, वह दोनों भी मुसलमान हो चुके हैं, यह सुन कर हज़रत उमर बहन के घर गए, और बहन व बहनोई दोनों को खूब मारा, यहां तक कि बहन के जिस्म से खून भी निकला, खून को देख कर हज़रत उमर को कुछ खज़ालत (लज्जा) हुई, क्योंकि अरब शुरफ़ा में औरत को इस तरह मारना ऐब समझा जाता था, बदनामी होती, उनकी बहन फ़ातिमा ने कहा कि करलो जो चाहो, और जब यह देखा कि उमर को खून देख कर शर्मिन्दगी हुई, तो कहा उमर! तुम पहले वह किताब तो सुन लो जिसे सुन कर हम ईमान ले आए हैं, अगर वह तुमको अच्छी न लगे तो जो चाहना करना, उमर ने कहा : अच्छा, उस वक़्त उनके घर में एक सहाबी

www.abulhasanalinadwi.org

ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि०) मौजूद थे जो उमर के आ जाने से घर में अन्दरूनी कमरे में छुप गए थे वह निकल आए और उन्होंने कुरआन मजीद (सूरह ताहा का पहला रूकू) सुनाया, कुरआन सुन कर हज़रत उमर बोल उठे : यह पाकीज़ा और लाएक़ एहतिराम (सम्मान योग्य) कलाम है, मैं मुहम्मद से मिलना चाहता हूं, वह कहां हैं? उनको बताया गया कि वह दारे अरक़म में हैं, वहां उमर गए, दरवाज़ा खटखटाया और अन्दर जाते ही नबी और कुरआन पर ईमान ले आए।

यह था दावते हक़ का असर कि जो घर से क़ातिल बनकर निकला था, वह हक़ीक़त से वाक़िफ़ हो जाने पर जांनिसार बन गया, आगे चल कर उनका लक़ब (उपाधि) फ़ारूक़ हुआ उन्होंने इस्लाम के लिये बड़े बहादुराना मारके (संग्राम) अन्जाम दिये।

वहां से निकल कर, हज़रत उमर ने अपने मुसलमान होने का खुल कर ऐलान किया, यह बात कुरैश में फ़ौरन फैल गई वह हज़रत उमर से भी लड़ने पर आमादा हो गए, लेकिन हज़रत उमर भी सख़्त बने रहे और मुख़ालिफ़ीन और दुश्मनाने इस्लाम उनसे कुछ दबे, लेकिन जिन मुसलमानों पर बस चलता उनको ज़्यादा से ज़्यादा तंग करते और तकलीफ़ पहुंचाते रहे।

हबशह की हिजरत

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि आपके असहाब और साथियों को सख़्त आज़माइशों (परीक्षा) का सामना करना पड़ रहा है और आप उनकी हिफ़ाज़त और बचाव नहीं कर पा रहे हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया अगर तुम लोग हबशह की तरफ़ निकल जाओ तो अच्छा है वहां का जो बादशाह है उसकी हुकूमत में कोई दूसरे पर जुल्म नहीं करता, वह एक अच्छा मुल्क है,यहां तक अल्लाह तआला तुम्हारे लिये नजात व कुशादगी (विशालता) का कोई सामान पैदा कर दे।

इस मौक़े पर मुसलमानों में से जो बहुत परेशान हो गए थे, उन्होंने हबशह की तरफ़ हिजरत की, यह इस्लाम में पहली हिजरत थी, यह दस आदमी थे, उन्होंने अपना अमीर हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़िअल्लाह अन्हु को मुक़र्रर किया था, उसके बाद हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब ने हिजरत की, फिर बहुत से मुसलमान एक के बाद एक वहां पहुंचे, उनमें कुछ तन्हा थे और कुछ अहलो अयाल के साथ थे, उन सब लोगों की जिन्होंने हबशह की तरफ़ हिजरत की, कुल तादाद **83** बताई गई है।

कुरैश का तआकुब (पीछा करना)

कुफ़्फ़ारे कुरैश ने हबशह हिजरत करने वाले मुसलमानों का समन्दर तक पीछा किया मगर यह कश्तियों में बैठ कर रवाना हो चुके थे, कुरैश ने जब यह

www.abulhasanalinadwi.org

देखा कि मुसलमान वहां पहुंच गए, जहां उनको और आराम व सुकून मिल गया है तो उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ़ और अमर बिन आस बिन वाएल को वहां भेजा, यह दोनों नुमाइन्दे (प्रतिनिधि) बहुत से तोहफे और हदाया लेकर शाहे हबश नजाशी के पास गए और जा कर कहा कि इन लोगों को जो हमारे मुल्क से भाग कर आए हैं, हमारे सुपुर्द कर दिया जाए, लेकिन नजाशी ने उनकी बात मानने से इन्कार कर दिया और मुसलमानों को बुलाया और अपने पादरियों को जमा किया और मुसलमानों से कहा, वह दीन क्या है जिसके लिये तुमने अपनी क़ौम को छोड़ दिया और उसको छोड़ने के बाद न मेरे दीन को कुबूल किया और न किसी और मशहूर दीन व मज़हब को इख़्तियार किया, उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचाज़ाद भाई जाफ़र बिन अबी तालिब खड़े हुए और उन्होंने नजाशी से कहा : मैं इन लोगों से कुछ सवालात करना चाहता हूं आप उनसे जवाब तलब फ़रमाऐं :-

१. क्या हम किसी के गुलाम हैं जो अपने आक़ाओं (मालिकों) से भाग कर आए हैं? अगर ऐसा है तो बेशक हम वापसी के लाएक़ हैं।

नजाशी ने अमर बिन आस से मुख़ातब (संबोधित) हो कर कहा : क्या यह लोग किसी के गुलाम हैं? अमर बिन आस ने कहा : गुलाम नहीं, बल्कि आज़ाद और शरीफ़ हैं।

२. हज़रत जाफ़र ने नजाशी से कहा : आप उनसे यह भी मालूम करें कि क्या हम किसी का खून करके आए हैं? अगर हम किसी का नाहक़ खून करके आए हैं तो आप हमको बिला किसी संकोच के मक़तूल (वधित) के अभिभावकों के हवाले कर दीजिये।

नजाशी ने अमर बिन आस से मुख़ातब (संबोधित करके) हो कर कहा : क्या यह लोग कोई नाहक़ खून करके आए हैं?

अमर बिन आस ने कहा : खून का एक क़तरा भी नहीं।

३. हज़रत जाफर ने नजाशी से कहा : आप उनसे यह भी मालूम करें कि क्या हम किसी का माल लेकर भागे हैं? अगर बिलफ़र्ज़ हम किसी का माल लेकर आए हैं, तो हम उसको अदा करने के लिये तैयार हैं।

नजाशी ने अमर बिन आस से मुख़ातब हो कर कहा :

अगर यह लोग किसी का माल ले कर आए हैं तो मैं इसका कफ़ील (उत्तरदायी) और ज़ामिन और उसके तावान का ज़िम्मेदार हूं।

अमर बिन आस ने कहा : यह लोग तो किसी का एक क़ीरात अर्थात एक पैसा भी लेकर नहीं आए।

नजाशी ने कुरैश के वफ़्द से मुख़ातब हो कर कहा : फिर किस चीज़ का मुतालबा है?

www.abulhasanalinadwi.org

अमर बिन आस ने कहा : हम और यह एक दीन पर थे, हम उसी दीन पर क़ायम रहे और इन लोगों ने उसको छोड़ दिया और एक नया दीन इख़्तियार कर लिया।

नजाशी ने सहाबा से मुख़ातब हो कर कहा : जिस दीन को तुमने छोड़ा और जिस दीन को तुमने इख़्तियार किया वह क्या दीन है।

हज़रत जाफ़र रज़िअल्लाह अन्हु ने दोनों दीन की वज़ाहत (स्पष्टीकरण) करते हुए निम्नवत भाषण दिया :

हज़रत जाफ़र रज़िअल्लाह अन्हु की तक़रीर (भाषण)

"ऐ बादशाह! हम एक जाहिलियत वाली क़ौम थे, बुतों को पूजते थे, मुरदार खाते थे, हर क़िस्म की बेहयाई और गुनाहों में आलूदा (लिप्त) थे, हम में जो ताक़तवर होता वह कमज़ोर को फाड़ खाता, हम इस हाल में थे कि अल्लाह तआला ने हममें ही से एक रसूल भेजा जिसके खानदान और नसब व हसब (गोत्रवंश) से और जिसकी सच्चाई से, अमानतदारी, और इफ़्फ़त व पाकबाज़ी (संयम व पवित्राचारी) से हम पहले से परिचित थे, उन्होंने हम को यह दावत दी कि हम सिर्फ़ एक अल्लाह पर ईमान लाएं और उसी की इबादत करें, और हम और हमारे बाप दादा जिन बुतों और पत्थरों को पूजते थे उसको बिलकुल छोड़ दें और उनसे संबंध तोड़ दें, उन्होंने हमें सच बोलने, अमानत अदा करने, नाजाएज़ और हराम बातों और नाहक़ खून से परहेज़ करने का हुक्म दिया बेहयाई के कामों, झूट, फ़रेब, यतीम का माल खाने, पाक दामन व पाकबाज़ औरतों पर इल्ज़ाम लगाने से मना फ़रमाया, उन्होंने हमको हुक्म दिया है कि हम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करें और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराएं, उन्होंने हमें नमाज़ का, ज़कात का, रोज़े का हुक्म दिया, हमने उनकी तसदीक़ की, उन पर ईमान लाए, और जो तरीक़ा और तालीम वह अल्लाह की तरफ़ से लाए हैं उसकी पैरवी की, सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत इख़्तियार की, उसके साथ किसी और को शरीक नहीं किया, जो उन्होंने हराम किया उसको हराम माना जो उन्होंने हलाल किया उसको हलाल तसलीम किया, इस पर हमारी क़ौम हमारी दुशमनी पर कमरबस्ता हो गई, उन्होंने हम को तरह तरह की तकलीफ़ें पहुंचाईं और हमको इस दीन से फेरने के लिये बहुत सी आज़माइशों (परीक्षाओं) में डाला और इसकी कोशिश की कि अल्लाह की इबादत छोड़ कर हम बुतों की इबादत इख़्तियार करलें, और जिन गुनाहों और जिन जराएम को पहले जाएज़ समझते थे, फिर जाएज़ और हलाल समझने लगें, जब उन्होंने हमारे साथ बहुत ज़ोर ज़बरदस्ती की, हम पर ज़ुल्म किया, हमारा जीना दूभर कर दिया और हमारे दीन के रास्ते में दीवार बन कर खड़े हो गए, तो हम आपके मुल्क में पनाह लेने

www.abulhasanalinadwi.org

के लिये आए और इसके लिये आप ही का इनतिख़ाब किया, आपके जवार और पनाह की ख़्वाहिश की, ऐ बादशाह हम यहां यह उम्मीद लेकर आए हैं कि हम पर कोई ज़ुल्म न किया जा सकेगा"।

नजाशी की हमदर्दी (सहानुभूति)

नजाशी यह तक़रीर (भाषण) सुन कर सन्तुष्ट हुआ और प्रसन्नता के साथ कहा : जाओ तुम को यहां अमन (शान्ति) है, और कुरैश के भेजे हुए लोगों को उनके तोहफ़े वापस किये और उनकी बात नहीं मानी, दूसरे दिन यह दोनों कुरैशी फिर नजाशी के पास गए और कहा कि यह हज़रत ईसा बिन मरयम को भी नहीं मानते, नजाशी ने मुसलमानों को बुलाकर पूछा, इस पर हज़रत जाफर ने क़ुरआन मजीद से सूरः मरयम की शुरू की आयतें तिलावत कीं तो नजाशी ने ज़मीन से एक तिन्का उठा कर कहा : बखुदा इब्ने मरयम इससे ज़्यादा न थे और रो पड़ा, यहां तक कि आंसुओं से उसकी दाढ़ी तर हो गई, उसके दरबार के पादरियों पर गिरया (रोना) तारी हो गया यहां तक उनकी धार्मिक पुस्तकें आंसुओं से भीग गईं और नजाशी ने कहा : मुहम्मद वही रसूल हैं जिनकी ख़बर यसू मसीह ने दी थी, अल्लाह का शुक्र है कि मुझे उस रसूल का ज़माना मिला उसके बाद नजाशी ने मुसलमानों को बहुत सम्मान और आदर से रूख़सत किया, उनको पनाह दी और कुरैश के दोनों क़ासिद (दूत) वहां से बेइज़्ज़त हो कर निकले, और मुसलमानों ने बहुत अच्छे घर और अच्छे पड़ोस में इज़्ज़त की जगह पाई।

शअब अबू तालिब का घेरा

जब कुरैश ने देखा कि हज़ारो तकलीफ़ों और मुख़ालिफ़तों के बावजूद इस्लाम का सरकिल (क्षेत्र) बढ़ता जा रहा है, उमर और हमज़ा जैसे मज़बूत लोग इस्लाम ला चुके हैं,और नजाशी ने भी मुसलमानों को अपनी तरफ़ से हिफ़ाज़त दी है, कुरैश के दूत नाकाम वापस आए, मुसलमानों की संख्या में इज़ाफ़ा होता जाता है, अब यह उपाय सोचा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खानदान वालों को पहाड़ के दर्रे के अन्दर क़ैद करके मजबूर बेसहारा कर दिया जाए, और पहाड़ का यह दर्रा वही दर्रा था जिसमें अबू तालिब का ख़ानदान रहता था जो शअ़ब अबू तालिब के नाम से मशहूर था, चुनांचे तमाम क़बीलों ने एक मुआहिदा (समझौता) मुरत्तब (संकलित) किया कि कोई शख़्स न खानदान बनू हाशिम से कुरबत करेगा, न उनके हाथ ख़रीद व फ़रोख़्त करेगा, न उनसे मिलेगा, न उनके पास खाने पीने का सामान जाने देगा, जब तक वह मुहम्मद सलल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़त्ल के लिये हवाले न करदें, यह मुआहिदा (समझौता) मन्सूर बिन अकरमा ने लिखा और काबे के दरवाज़े पर लटकाया गया।

www.abulhasanalinadwi.org

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने शफ़ीक़ चचा व सरपरस्त हज़रत अबू तालिब की अगुआई में बनू हाशिम के अकसर लोगों के साथ जिनमें आपका दुशमन चचा अबू लहब शरीक नहीं हुआ लेकिन खानदान बनू हाशिम के वह सब भी शरीक थे जो मुसलमान नहीं हुए थे लेकिन खानदानी हमदर्दी रखते थे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ शअब अबू तालिब में पनाह गुज़ीं (शरणार्थी) हुए, यह ज़माना ऐसा सख़्त गुज़रा कि क़ैदी मुसलमान "तलह" के पत्ते खा खा कर रहते थे, बच्चे जब भूक से रोते थे तो बाहर तक आवाज़ जाती थी, क़ुरैश सुन सुन कर खुश होते थे, हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास का बयान है कि एक दफ़ा सूखा चमड़ा हाथ आ गया, मैंने उसको पानी से धोया फिर आग पर भूना और पानी मिला कर खाया, लेकिन बाज़ रहम दिलों को मुसलमानों की इस हालते ज़ार पर तरस भी आता था, एक दिन हकीम बिन हिज़ाम ने जो हज़रत खदीजा के भतीजे थे थोड़े से गेहूं अपने गुलाम के हाथ हज़रत खदीजा के पास भेजे राह में अबू जहल ने देख लिया और छीन लेना चाहा, इत्तिफ़ाक़ से अबुलबुखतरी कहीं से आ गया वह अगरचे काफिर था लेकिन उसको रहम आ गया और उन घिरे हुए लोगों की बात सुनी जो सब एक दूसरे के अज़ीज़ व क़रीब ही होते थे उनकी बेबसी पर तरस खाकर कहा कि एक शख़्स अपनी फूफी को खाने के लिये कुछ भेजता है तू क्यों रोकता है? इन्हीं हालात में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी क़ुरैशी शाख बनू हाशिम के अकसर अफ़राद के साथ तीन साल गुज़ारने पड़े।

मुहासरे (घेरे) से रिहाई

आख़िर वह दिन आया कि हिशाम बिन अमर, ज़ुहैर बिन अबी, उमय्या बिन मुग़ैरा, मुतइम बिन अदी और ज़मआ बिन अस्वद जो कि मुसलमानों के तईं कुछ नर्मी और इन्सानियत का पहलू रखते थे, क़ुरैश के ज़ुल्म व ज़्यादती से मुसलमानों को नजात दिलाने के लिये मशवरा करने लगे और आपस में सोच विचार और मज़लूमों पर इस क़दर सख़्ती को नापसन्द करते हुए इस बात पर मुत्तफ़िक़ (सहमत) हुए कि क़ुरैश से इन हज़रात की रिहाई के लिये कोशिश की जाए, चुनांचे यह सब लोग मिल कर हरम में गए, ज़ुहैर ने सब लोगों को मुख़ातब करके कहा : ऐ मक्के वालो! यह क्या इन्साफ़ है कि हम लोग आराम से बसर करें और बनू हाशिम को आब व दाना नसीब न हो, खुदा की क़सम जब तक यह ज़ालिमाना मुआहिदा चाक न कर दिया जाएगा, मैं बाज न आऊंगा, अबू जहल बराबर से बोला हरगिज़ कोई इस मुआहिदे को हाथ नहीं लगा सकता, ज़मआ ने कहा तू झूट कहता है, जब यह लिखा गया उस वक़्त भी हम राज़ी न थे, दूसरी तरफ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को "वही" के ज़रिये मालूम

www.abulhasanalinadwi.org

हुआ कि काबा के अन्दर रखी हुई वह दस्तावेज़ दीमक की नज़र हो गई है और उसमें सिवाए "बिस्मिल्लाह" के सब ख़त्म हो गया है, आपने यह बात अबू तालिब को बताई, उन्होंने कुरैश से कहा और इसी हाल में "मुतइम" ने अन्दर जा कर हाथ बढ़ा कर दस्तावेज़ निकाली तो उसके एक हिस्से को दीमक खा चुकी थी, और उसमें लिखी हुई इबारत ख़त्म हो गई थी, यह बात कुफ़्फ़ार को दिखा कर दस्तावेज़ चाक कर दी और मुतइम बिन अदी, अदी बिन क़ैस, ज़मआ बिन अस्वद, अबुल बुख़तरी, ज़ुहैर सब हथियार बांध बांध कर बनू हाशिम के पास गए और उनको दर्रे से निकाल लाए, मुसलसल तीन बरस तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और तमाम आले हाशिम शअ़ब अबू तालिब में महसूर रहे थे, उसके बाद उस हिसार (घेरे) से उनकी रिहाई हुई।

ग़म का साल

शअब अबू तालिब से रिहाई पाने के बाद कुरैश का मामला तकलीफ़ पहुंचाने का बराबर जारी रहा, अलबत्ता आप के लिये ज़्यादा परेशानी इस तौर पर बढ़ी कि आपके बड़े असर वाले चचा अबू तालिब और आपकी बड़ी दिलदारी और हमदर्दी करने वाली अहलिया मुहतरमा हज़रत खदीजा की वफ़ात हो गई, (निधन हो गया) यह दोनों आपके निहायत ख़ैर ख़ुवाह (शुभचिन्तक) और मुशफ़िक़ (कृपालू) थे, उनका रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बेहतरीन साथ, अच्छा सुलूक, वफ़ादारी और मदद व हिमायत का जो मामला था वह दिन के उजाले की तरह नुमायां था, दोनों का इन्तिक़ाल (निधन) वर्ष १० नबवी में शअ़ब अबी तालिब से रिहाई मिलने के बाद यके बाद दीगरे हुवा, उनकी वफ़ात का आपके दिल पर निहायत गहरा असर पड़ा, और इस तरह यह साल आपके लिये "आमुल हुज़्न" ग़म का साल बना और आपको अपनी हिमायत और हमदर्दी मिलने के मामले में फ़िक्रमन्दी बहुत बढ़ गई।

ताएफ़ का सफ़र

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मक्की ज़िन्दगी में नबूवत की ज़िम्मेदारी मिलने के शुरू के तीन साल तक मख़फ़ी (गुप्त) कोशिश के बाद दावते इस्लाम के एलान के वक़्त से कुफ़्फ़ार की तरफ़ से ईज़ा रसानी (तकलीफ़ पहुंचाना) और ज़ुल्म व सितम के जो सख़्त आज़माइशी मवाक़े पेश आए उनसे जिस्मानी ख़तरात और ज़ेहनी परेशानी तो पेश आती थी लेकिन चचा अबू तालिब की तरफ़ से मिलने वाली हिमायत की वजह से किसी बड़े वाक़िए का ख़तरा नहीं महसूस होता था इसके अलावा लोगों की ईज़ा रसानी (तकलीफ़ पहुंचाने) से तबीअत को जो मलाल (दुख) पेश आता था वह घर में जा कर अहलिया मुहतरमा हज़रत खदीजा रज़िअल्लाह तआला अन्हा की तरफ़ से तसकीन की

www.abulhasanalinadwi.org

आस से दूर हो जाता था, लेकिन अबू तालिब के न रहने से बाज़ संगीन ख़तरात का अन्देशा हो गया था इस सूरत में आपको खयाल आया कि मक्का के हमसर (समवर्ती) शहर ताएफ की किसी बड़ी व बा असर शख़सियत की हमदर्दी अगर हासिल हो जाए तो दावत के काम में ख़तरात की कमी हो सकती है।

लिहाज़ा आपको किसी मज़बूत खानदान की बड़ी शख़सियत की हमदर्दी व मदद के हासिल करने की ज़रूरत महसूस हुई जिसकी बिना पर आपकी नज़र ताएफ़ पर पड़ी, जहां के बा असर खानदान, क़बीले सक़ीफ़ की शखसियतों में कई एक शख़सियतें थीं, आपने वहां जा कर उनसे बात करने का इरादा किया, और बरवक़्त सफ़र करके वहां तशरीफ ले गए और वहां के तीन सरबराहों (ज़िम्मेदारों) अब्द यालील, मसऊद और हबीब से हक़ की हमदर्दी और हिमायत तलब की, लेकिन खुदा को यहां भी अपने रसूल के लिये अज़्म व इसतिक़ामत (संकल्प व दृढ़ता) और सब्र व बर्दाश्त को ही पसन्द करना था, लिहाज़ा वहां के बा असर लोगों से आपको हमदर्दी नहीं मिली बल्कि उसके विपरीत यह हुआ कि उन्होंने मुसाफ़िरों के साथ किया जाने वाला अरबी अख़लाक़ भी आपके साथ नहीं बरता, और कुरैश के मुख़ालिफ़ाना रवय्ये को बुनियाद बनाते हुए आपके साथ हमदर्दी करने पर आमादा नहीं हुए, उनमें से एक ने जो काबे का परदा सी रहा था कहाः "क्या तुम को खुदा ने पैगंबर बना कर भेजा है" दूसरे ने कहा : "क्या खुदाको तेरे सिवा और कोई नहीं मिलता था?" तीसरे ने कहा, "मैं बहरहाल तुझ से बात नहीं कर सकता, तू अगर सच्चा है तो तुझ से बात करना अदब के खिलाफ है और अगर झूटा है तो बात के क़ाबिल नहीं", और सिर्फ यही नहीं, बल्कि आम इन्सानी अख़लाक़ के खिलाफ़ शहर के ओबाश (दुराचारी) लोगों को पीछे लगा दिया, उन्होंने आप पर पत्थर चलाए, जिस से आपके क़दम लहूलहान हो गए और आप शहर के लोगों से मायूस और ज़ख़्मी हो कर निकले और शहर के बाहर बैठ गए।

अदास का कुबूले इस्लाम

वहां कुरैशी ख़ानदान के कुछ लोगों (उतबा बिन रबी व शैबा बिन रबी) का बाग़ था, वह बाग़ में इत्तिफ़ाक़न मौजूद थे, आपकी बेबसी और ज़ख़्म खुरदगी देख कर बावजूद मुख़ालिफ़ होने के रिश्तेदारी के तक़ाज़े से हमदर्दी का एहसास हुआ और अपने गुलाम "अदास" के ज़रिये अंगूर का एक ख़ोशा (गुच्छा) भेजा, अदास आए और उसको पेश किया आपने "बिस्मिल्लाह" कहते हुए तनावुल किया (खाया) तो "अदास" ने "बिस्मिल्लाह" पर तअज्जुब करते हुए पूछा, तो आपने अपने नबी होने का ज़िक्र किया, "अदास" इन्जील की बातें जानते थे उसकी बिना पर समझ गए कि यह वाक़ई नबी होंगे, और उनको बोसा

www.abulhasanalinadwi.org

(चुम्बन) देने लगे और मुसलमान हो गए और जब अपने मालिक के पास आए तो उन्होंने बुरा भला कहा और कहा उस शख़्स (व्यक्ति) पर एतिबार न करो "अदास" ने उनकी बात ख़ामोशी में टाल दी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बैठ कर अल्लाह तआला से अपनी परेशानी का ज़िक्र करते हुए दुआ की, आपने अपनी दुआ में भी सिर्फ़ अपनी बेबसी के इज़हार के साथ राहे हक़ में सब्र व बरदाश्त और रज़ाए इलाही पर इकतिफ़ा करने (बस करने) को इख़्तियार किया था, जिसका इज़हार (अभिव्यक्ति) आपकी दुआ से अच्छी तरह होता है :-

अनुवाद :-

(इलाही तेरे ही सामने अपनी कमज़ोरी, बेसरोसामानी, और लोगों की तरफ़ से तहक़ीर (अपमान) का बरताव किये जाने से अपनी परेशानी बयान करता हूं, तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है, दरमान्दा और अजिज़ों (निःसहाय और असमर्थों) का मालिक तू ही है, और मेरा मालिक भी तू ही है, मुझे किन के हवाले कर रहा है? क्या किसी ऐसे बेगाने के जो मेरे साथ तुर्शरूई (क्रोध) इख़्तियार करे, या किसी दुशमन के जिसको मुझ पर पूरा क़ाबू हासिल हो गया हो लेकिन अगर मुझ पर तेरा ग़ज़ब (प्रकोप) नहीं तो फिर मुझे किसी चीज़ की परवाह नहीं, लेकिन तेरी तरफ़ से मुझे आफ़ियत (शान्ति) मिले तो मेरे लिये ज़्यादा आसानी है, मैं तेरी ज़ात के उस नूर की पनाह में रहना चाहता हूं जिस से सब तारीकियां (अंधेरियां) रौशन हो जाती हैं, और जिस से दीन व दुनिया के काम ठीक हो जाते हैं, इस बात के मुक़ाबले में कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर उतरे, या तेरी नाराज़ी मुझ पर वारिद हो (आए) मुझे तो तेरी ही रज़ामन्दी हासिल करने की बराबर फ़िक्र करते रहना है यहां तक तू राज़ी रहे, इसके लिये कोशिश करता हूं, सारी हिफ़ाज़त और ताक़तें तेरे ही पास है)।

परदेस में अल्लाह तआला को अपने हबीब की यह कैफ़ियत देख कर खुसूसी रहम (विशेष दया) आया और खुसूसी मदद की पेशकश हुई, और हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम पैग़ाम लाए, कि ज़लज़ले (भूंचाल) के ज़रिये इन ज़ालिमों को तबाह व बरबाद कर देने के लिये फ़रिश्ता तय्यार है, आप कहें तो उनको अभी सज़ा दे दी जाए, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाह व इरशाद (सुधार व उपदेश) की मसलहत के आला मेयार (उत्तम आदर्श) को तरजीह देते हुए सज़ा देने की फ़रमाइश नहीं की।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ताएफ़ से वापस होते हुए यह भी फ़रमाया कि मैं इन लोगों की तबाही के लिये दुआ नहीं करता, अगर यह लोग खुदा पर ईमान नहीं लाए तो क्या हुआ, उम्मीद है कि उनकी आएन्दा नसलें एक खुदा पर ईमान लाने वाली हों।

www.abulhasanalinadwi.org

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताएफ़ से कामयाबी के बग़ैर वापसी आप के लिये मक्का में और पेचीदगी पैदा करने वाली बात थी, कि मक्का से बाहर की किसी शख़सियत की हिमायत हासिल करने में नाकामी हुई, इससे आपको मज़ीद कमज़ोर और बेसहारा समझते हुए मालूम नहीं कुरैशी अब क्या करें, लिहाज़ा आपको किसी बाअसर मक्की बाशिन्दे के पड़ोस के हासिल करने की ज़रूरत थी, पड़ोस हासिल होने पर आदमी एक तरह से महफ़ूज़ हो जाता है, हज़रत अबू बक्र रज़ि० जब हबशह की हिजरत से वापस आए थे तो इब्न दग़न्ना के जवार में वापस आए थे,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुतइम बिन अदी को जो एक ख़ैर पसन्द आदमी थे, इख़्तियार किया और उनका जवार हासिल करके मक्का में दाख़िल हुए।

इस जवार से आपको किसी सख़्त तरीन मामले से बचाव तो एक हद तक मिल गया, लेकिन कुरैश की ईज़ारसानी (तकलीफ़ पहुंचाने) से महफ़ूज़ नहीं रहे, आपकी क़ौम आपकी मुख़ालिफ़त, दुशमनी और आप का मज़ाक़ उड़ाने, तकलीफ़ पहुंचाने में जिस तरह अबू तालिब के ज़माने में सरगर्म अमल रही थी उसने उसको क़ायम रखा, बल्कि अबू तालिब जैसी बड़ी और मुअस्सिर शख़सियत (प्रभाव कारी व्यकतित्व) के बाक़ी न रहने से ज़्यादा सख़्ती और जुरअत जारी रखी।

नसीबैन के जिन्नातों के कुबूल इस्लाम का वाक़िआ (घटना)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ताएफ़ के ज़िम्मेदारों की ओर से अपमान जनक और कष्ट दायक व्यवहार से दुखी होकर वापस हुए, नख़ला के स्थान पर पहुंचे और तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने लगे, तो नसीबैन में रहने वाले जिन्नातों की एक जमाअत वहां से गुज़री और कुरआन मजीद की आयतें सुनने लगी और प्रभावित हो कर ईमान के साथ अपने निवास स्थान पर पहुंची, इस घटना को अल्लाह तआला ने "वही" द्वारा अपने कलामे कुरआनी में अपने रसूले मुकर्रम स०अ० को बताया, इससे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रन्जीदा हालात में तसकीन का सामान हुआ और आपको मालूम हुआ कि ताएफ़ के इन्सानों ने अगर सख़्त रवय्या एख़तियार किया तो उसके बदले अल्लाह ने दूसरी मख़लूक़ जिन्नात को आपकी पैरवी करने की तौफ़ीक़ दी जो आपकी दअ़वत के फैलने और लोकप्रियता की खुश करने वाली अलामत है और इस्लाम के विश्व व्यापी (इन्सान से जिनों तक फैल जाने) का वाक़िआ है।

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय - पांच

मेराज की घटना, बै-ए-ते अक़बा, मदीने की हिजरत

पिछले सात साल के विरोध और तकलीफ़ों को झेलते हुए आप के दिल पर जो बोझ महसूस होता था उसमें इज़ाफ़े के हालात पैदा हो जाने के बावजूद आप का अपने खुदा पर भरोसा और मुसतक़बिल (भविष्य) में बेहतर हालात के वाद-ए-इलाही का जो आपको यक़ीन था वह आपको संभाले हुए था, बहरहाल फिर भी इन्सान होने के नाते आपके दिल पर बोझ पड़ता था, अगरचे आपको यह सहारा हासिल था कि जो कुछ हुआ और जो हो रहा है, वह सब खुदा की तरफ़ से है हालात की शिद्दत (कठिनाई) हो या तस्कीन की कोई सूरत हो, तक़दीरे इलाही के अनुकूल है, शायद तक़दीरे इलाही की तरफ़ से ही यह था कि जिन कठिनाइयों से आपको गुज़ारा जा रहा था, वह आपके साहस व संकल्प के लिये और अल्लाह के वादे पर यक़ीन को मज़बूत करने में सहायक है।

बहर हाल जब आपकी हिम्मत व इरादा और वाद-ए-इलाही के पूरा होने का मज़बूत यक़ीन अपने पूरे मेयार (स्तर) पर पहुंच गया कि आप इस तरह के तमाम सहारों के ख़त्म हो जाने पर भी जिनसे आपको सख़्त हालात का मुक़ाबला करने में कुछ न कुछ मदद मिल रही थी, आपके मज़बूत यक़ीन, निरन्तर अमल और सब्र व रज़ा की बरक़रारी में फ़र्क़ नहीं आया, अगरचे हालात की सख़्ती से दिल बेचैन भी हो जाता था, अल्लाह तआला ने आपकी तक़वियत (शक्ति प्राप्त) और ढारस बंधाने के लिये और आपके रंजीदा दिल को खुश करने के लिये आपको आखिरत में जो होने वाला है और अल्लाह के नज़दीक आपका जो मुक़ाम है उसका हक़ीक़ी मन्ज़र (वास्तविक दृश्य) आपको मेराज के ज़रिये दिखा दिया और यह तक़रीबन उसी तरह हुआ जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ एक तरह से पेश आया था कि जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की रज़ा के लिये अपनी महबूबतरीन चीज़ों की कुरबानी दे दी जिसमें वतन की कुरबानी, बीवी बच्चे से मुहब्बत की कुरबानी और फिर नौजवान और होनहार बेटे की कुरबानी की अपनी हद तक तामील करदी, इस तरह उन्होंने उन इम्तिहानात (परीक्षा) में कामयाबी हासिल कर ली, लेकिन

www.abulhasanalinadwi.org

उन्होंने आपनी मज़ीद तसकीन (अधिक आश्वासन) के लिये अल्लाह तआला से दरख्वास्त की "यह देखने का जी चाहता है कि आप मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा करेंगे" जवाब आया "क्या तुम्हें यक़ीन नहीं? उन्होंने कहा "क्यों नहीं, यक़ीन पूरा है, लेकिन दिल की तक़वियत के लिये देखना चाहता हूं कि अल्लाह तआला किस तरह मुर्दे को ज़िन्दा करते हैं, तो अल्लाह तआला ने उनको इस का मनज़र भी दिखा दिया।

इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब हुक्मे इलाही पर अमल और रज़ा बिलक़ज़ा (अल्लाह के फ़ैसले पर रज़ामन्दी) के उस मुक़ामे बलन्द को हासिल कर लिया तो अगरचे उन्होंने मुतालबा नहीं किया, लेकिन अल्लाह तआला ने उनके दिल की ताक़त के लिये उनको आख़िरत (परलोक) के मुक़ाम व मन्सब का मुशाहिदा (निरीक्षण) करा दिया और अपने क़रीब तक बुलाकर इज़्ज़त अता फ़रमा दी, आप उस रात "हरम शरीफ" ही के अन्दर आराम कर रहे थे कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम आए और कहा चलिये आप बुलाए गये हैं और रातों रात आपको वहां से शाम (फ़िलिस्तीन) के शहर बैतुल मुक़द्दस की मस्जिदे अक़सा ले जाया गया, वहां अल्लाह तआला ने पिछले सारे नबियों से आपको मिलाया फिर आपने उनकी इमामत की और इस तरीक़े से आपको सारे नबियों के सरदार होने की हैसियत हासिल हो गई और इसको आपने अपनी आंखों से देखा और आपको आसमानों की तरफ़ सफ़र कराया गया, और अर्शे इलाही से क़रीबतर जहां तक आपका पहुंचना अल्लाह को मन्ज़ूर था वहां तक ले जाया गया, और रब्बुल आलमीन से कलाम (बात) करने की और तनहाई में क़रीब होने की सआदत (सौभाग्य) हासिल कराई गई।

अल्लाह तआला ने हक़ीक़त में इन्सान को ऐसी मख़लूक़ (सृष्टि) बनाया है जिसमें भौतिक व शारीरिक ढांचे और उसके असरात (प्रभाव) जो ज़ाहिरी एहसासात के ज़रिये देखे और समझे जा सकते हैं, इस के साथ मलकूती (फ़रिशतों) वाले हालात अलग भी रखे हैं, जिनको मलकूती एहसासात से ही समझा जा सकता है और इसका मुशाहिदा (देखना) असलन इन्सान की दूसरी ज़िन्दगी ही में किया जा सकता है लेकिन दुनियावी ज़िन्दगी में कभी कभी उन हालात का मुशाहिदा (अवलोकन) अल्लाह तआला अपने नबियों को करा देता है, यह हालात क्या हैं जो अपना एक तरफ़ ज़ाहिरी रूख़ रखते हैं जो देखे और सुने जा सकते हैं और दूसरी तरफ़ अनदेखे रूख़ रखते हैं जो इन दुनियावी आंखों और कानों से नहीं जाने जा सकते, यह मिसाल के तौर पर इस तरह हैं कि हलाल माल इन्सान के ज़ाहिरी और भौतिक एहसासात के लिहाज़ से हराम माल ही की तरह महसूस होता है लेकिन मलकूती (पवित्रता) के दायरे में हलाल माल पाक और साफ़ सुथरी कैफ़ियत रखता है और हराम माल गन्दगी और दुर्गन्ध वाला होता है, इसी तरह नेक आमाल इन्सान के ज़ाहिरी एहसासात में बुरे

www.abulhasanalinadwi.org

आमाल की तरह मालूम होते हैं, लेकिन अन्दरूनी एहसासात में जिसकी पहचान नबियों के ज़रिये की गई है, तकलीफ़ देह और मुसीबत के आमाल होते हैं, जिसकी मिसालें (उदाहरण) कुरआन मजीद और हदीस शरीफ़ में बताई गई हैं, उदाहरणतः सोने चांदी के हराम तरीक़े से हासिल करने को बताया गया है कि आख़िरत में जहां बातिनी खुसूसियत (अन्दरूनी विशेषता) ज़ाहिर होगी वहां वह हराम चांदी और सोना गर्म लोहे की तरह होंगे, जिससे उनसे फ़ाइदा उठाने वाले के पहलू और पेशानी दाग़े जाएंगे। इसी तरह हदीस शरीफ़ में आया है कि कोई किसी ज़मीन पर नाजाएज़ तरीक़े से क़ब्ज़ा करले तो आख़िरत में तौक़ बनाकर उसकी गर्दन में डाली जाएगी इसी तरह सूद और नाजाएज़ माल की हैसियत पाख़ाने जैसी होजाएगी, इस तरीक़े से इन्सान की ज़िन्दगी के आमाल दो पहलू (रूख़) रखते हैं, एह पहलू इस दुनिया का ज़ाहिरी है, जो अपनी ज़ाहिरी कैफ़ियत रखता है और दूसरा पहलू बातिनी (अन्दरूनी) है जो अल्लाह के रसूलों के ज़रिये बताया गया है जिससे दूसरी ज़िन्दगी में साबिक़ा (संबंध) पड़ेगा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी होने की बिना पर इस पहलू से जानकारी विश्वसनीय रूप से प्राप्त थी, फिर भी ज़्यादा तक़वियत (मज़बूती) के लिए मेराज में आपको उनका मुशाहिदा (अवलोकन) करा दिया गया जो इल्मुल यक़ीन (विश्वास के ज्ञान) से हक़्क़ुलयक़ीन (विश्वास की वास्तविकता) तक पहुंच गया, इस तरह आप नेकियों का जो उपदेश देते थे वह आपकी देखी हुई चीज़ बन गई, इस सिलसिले में इन्सानों को बताना था कि तुम जो कुछ करते हो उसके सिर्फ़ ज़ाहिरी पहलू से सन्तुष्ट न हो जाओ, क्योंकि यह दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी तक ही तुम्हें महसूस होता है, और आख़िरत की जो न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी है उसमें उसका बातिनी (अन्दरूनी) पहलू सामने आएगा, फिर वहां उससे बचने की कोई सूरत न होगी, यहीं से उससे बचने की फ़िक्र कर लो।

बहरहाल आपको जो चीज़ें दिखाई गईं उनका तज़किरा (उल्लेख) रवायात में आया है, मिसाल के तौर पर जैसा कि सुनन अबूदाऊद की रिवायत है जिसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया कि जब मेरी मेराज हुई मेरा गुज़र ऐसे लोगों के पास से हुआ जिनके तांबे के नाखुन थे, जिनसे वह अपने चेहरे और सीनों को नोच रहे थे, मैंने कहा ऐ! जिब्रईल यह कौन हैं? उन्होंने कहा : यह वह लोग हैं जो लोगों का गोश्त खाते थे और लोगों की नामूस (मर्यादा) का ख्याल नहीं करते थे अर्थात ग़ीबत करते और बदनाम करते थे।

सीरत इब्ने हिशाम और तफ़सीर इब्ने कसीर में और भी लोगों का ज़िक्र है, मसलन यतीमों (अनाथों) का हक़ मारने वाले, सूदख़ोर, ज़िनाकार (हरामकार) आदि, जिनका बुरा हाल उनके अपने अपने आमाल के ऐतिबार से आप पर ज़ाहिर हुआ इन बातों के अलावा अच्छे हाल वाली भी कुछ बातें दिखाई गईं,

www.abulhasanalinadwi.org

आपको जन्नत में आपके क़्याम की जगह दूर से दिखाई गई, आपने क़रीब से देखना चाहा तो बतायागया कि इस वक़्त इतना ही काफी है।

शबे मेराज में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह के यहां से तीन अतिये (पुरस्कार) दिये गए, सूरह बक़रा की आख़िरी आयतें, जिनमें इस्लाम के अक़ाएद व ईमान की तकमील (पूर्ति) और मुसीबतों के ज़माने के खात्मे की खुशख़बरी है रहमते खास ने शुभ सूचना दी कि उम्मते मुहम्मदी में से हर एक जिसने शिर्क न किया हो उसे करम और मग़फ़िरत से सम्मानित किया जाएगा, और आवाज़ आई : उम्मत पर पचास वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ की गई।

बुखारी में इब्ने अब्बास से रिवायत है कि शबे मेराज में दज्जाल भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिखाया गया मेराज की तफ़सील कुरआन मजीद में भी बयान की गई है एक तो सूरतुल इसरा में इसका ज़िक्र है, सूरतुन्नज्म में इसकी तफ़सील इस तरह बयान की गई है :-

"क़सम है सितारे की जब वह गिरे कि तुम्हारा रफ़ीक़ (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) न तो भटका है और न वह यह बातें अपने दिल से बना कर कहता है, बल्कि वह तो वही है जो उसको बताया जाता है, उसको उसने जो बड़ी ताक़तों वाला और बड़ी अक़्ल वाला है बताया है वह आसमान के ऊँचे किनारे सीधा हो कर नमूदार (प्रकट) हुआ, फिर क़रीब हुआ और झुका तो दो कमानों का फ़ासला रह गया, इस से भी कम, फिर उस ने बन्दे से जो बातें कीं दिल ने जो देखा उसने झूट बयान नहीं किया, ऐ लोगो क्या वह जो देखता है उस पर तुम उससे झगड़ा करते हो, उसने बिला शुबहा दोबार भी उसको उतरते देखा सिदरतुल मुन्तहा दरख़्त के मुक़ाम के पास जिसके क़रीब (नेक बन्दों) के रहने की बहिश्त है, जब उस दरख़्त पर छा रहा था, न नज़र बहकी न उचटी, इस लिये यक़ीनन अपने परवरदिगार की बड़ी निशानियां देखीं"।

मेराज की रात के बाद सुबह आपने अपनी मेराज का तज़किरा लोगों से किया तो जो लोग आपके मुख़ालिफ़ (विरोधी) और दुशमन थे वह मज़ाक़ उड़ाने लगे कि ऐसी सवारी कहां होती है जिसके ज़रिये कोई आदमी मक्का से बैतुल मुक़द्दस थोड़ी देर में पहुंच जाए और सुबह होने से पहले वापस आजाए यह तो सुबूत है कि यह झूठ बातें कहने वाले हैं, लेकिन मुसलमानों ने सुना तो कहा कि इससे बड़ी बातों को हम मानते हैं इसके मानने में क्या रूकावट है और उनका ईमान बढ़ गया।[1]

---

(1) सही बुख़ारी, बाब हदीसुल इसरा, सही मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबुल इसरा, अस्सीरतुल नबविया इमाम ज़हबी, 1/241–278, सीरत इब्न कसरी, भाग2, पृ0 96, सीरत इब्ने हिशाम, 1/399, दलाइलुल नबूवा बैहिक़ी, भाग–2 तबक़ात

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु अन्हु ने कहा कि अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसी बात कही है तो सच कही है, तुमको इस पर तअज्जुब क्यों? खुदा की क़सम आप मुझे ख़बर देते हैं कि "वही" आप के पास दिन रात के किसी हिस्से में आसमान से ज़मीन तक आ जाती है तो मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तसदीक़ (पुष्टि) करता हूं यह तो उससे भी मुश्किल है और बईद (दूर) है जिस पर तुम लोग तअज्जुब कर रहे हो।[1]

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि० का कुबूले इस्लाम

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० अपने शहर यसरिब में ही थे कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में कुछ उड़ती सी ख़बर सुनी, अपने भाई से कहा कि तुम उस वादी अर्थात मक्का में जाओ और ज़रा उन साहब का जो अपने को नबी कहते हैं, और जो वह यह दावा करते हैं कि उनके पास आसमान से "वही" आती है, उनका कुछ पता लगाओ, उनकी बात सुनो और फिर मुझे आकर बताओ, चुनांचे वह रवाना हुए उनके भाई अनीस खुद एक मशहूर अच्छे शाएर (कवि) और ज़बान के माहिर थे वह नबी-ए-करीम (स० अ०) से मिले, आपकी बात सुनी, फिर भाई को जाकर बताया कि मैंने देखा कि वह बहुत पसन्दीदा व आलातरीन (उच्चकोटि) सद्व्यवहार की शिक्षा देते हैं जो कलाम मैं सुन कर आया हूं उसे किसी तरह भी "शेर" (पद्य) नहीं कहा जा सकता है, हज़रत अबूज़र बोले, इत्नी सी बात से तो कुछ तसल्ली नहीं होती, आख़िर खुद पैदल चल कर मक्का पहुंचे।

हज़रत अबूज़र को नबी (सल्ल०) की पहचान न थी और किसी से दरयाफ़्त करना भी मुनासिब न समझते थे, इसी तलाश में रात हो गई, उस वक़्त हज़रत अली कर्रमुल्लाह वजहहू ने उनको देखा और उनको अन्दाज़ा हो गया कि यह कोई बाहरी आदमी और मुसाफ़िर है, अली मुरतज़ा ने कहा : अच्छा मेरे यहां चलो, यह रात को वहीं रहे, लेकिन किसी ने एक दूसरे से कुछ न पूछा, जब सुबह हुई तो वह अपना मशकीज़ा (पानी की छागल) और ज़ादेराह (सफ़र खर्च) लेकर फिर उसी मस्जिद में पड़ गए और यह दिन भी उसी तरह गुज़र गया,दिल में आंहुज़ूर (सल्ल०) की तलाश थी, मगर किसी से दरयाफ़्त न करते थे, अली मुरतज़ा फिर आ पहुंचे, उन्होंने फ़रमाया, शायद तुम्हें अपना ठिकाना नहीं मिला, अबूज़र ने हां में जवाब दिया, अली मुरतज़ा फिर साथ ले गए, अब उन्होंने पूछा, तुम आख़िर हो कौन? और यहां किस लिये आए हो? उन्होंने कहा

---

1 सीरत इब्ने हिशाम, 1/399

www.abulhasanalinadwi.org

अगर तुम मुझ से राज़दारी, हाल छुपाने और मेरी रहनुमाई का वादा करो तो बता सकता हूं, अली मुरतज़ा (रज़ि०) ने वादा कर लिया, अबूज़र ने कहा, मैंने सुना है कि इस शहर में एक शख़्स है जो अपने आपको अल्लाह का नबी बताता है, मैंने अपने भाई को भेजा था, वह यहां से कुछ तसल्ली बख़्श बात ले कर न गया, इस लिये मैं खुद आ गया हूं, अली मुरतज़ा ने कहा तुम खूब आए, और खूब हुआ कि मुझ से मिले, देखो मैं उन्हीं की ख़िदमत में जा रहा हूं, मेरे साथ चलो, मैं पहले अन्दर जाकर देख लूंगा, अगर इस वक़्त मिलना मुनासिब होगा, तो मैं दीवार के साथ लगकर खड़ा हो जाऊंगा गोया जूता ठीक कर रहा हूं।

अलग़रज़ अबूज़र अली मुरतज़ा के साथ ख़िदमते नबवी में पहुचे, और अर्ज़ किया : मुझे बताया जाए कि इस्लाम क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम की बाबत बयान फ़रमाया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात सुन कर वह उसी जगह मुसलमान हो गए, नबी स०अ० ने फ़रमाया : अबूज़र तुम अभी इस बात को छुपाए रखो और अपने वतन को चले जाओ, जब तुम्हें हमारे जुहूर (पूर्ण रूप से प्रकट होने) की ख़बर मिल जाए तब आ जाना, उन्होंने कहा : बखुदा मैं तो इन दुशमनों में ऐलान क़रके जाऊँगा, अबूज़र काबे की तरफ़ आए, कुरैश जमा थे, उन्होंने सबको सुना कर बुलन्द आवाज़ से कल्म-ए-शहादत "अशहदुअल्लाइलाहा इल्लल्लाहु व अशहदुअन्ना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" पढ़ा, यह सुनकर लोगों ने उनको घेर लिया और इतना मारा कि बेदम हो कर ज़मीन पर लेट गए, इतने में हज़रत अब्बास आ गए, उन्होंने झुक कर देखा और कहा कमबख़्तो! यह क़बीले ग़िफ़ार से तअल्लुक़ रखते हैं, और तुम्हारे शाम के ताजिरों का रास्ता इन्हीं के क़बीले से गुज़रता है लोग यह सुन कर हट गए, अगले दिन फिर सबको सुना कर कल्मा पढ़ा, फिर लोगों ने उन्हें मारा और हज़रत अब्बास ने आकर उनकी मदद की।[1]

यसरिब वालों की आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मामूल (नियम) था कि हज के ज़माने में क़बीलों के सरदारों के पास जा कर इस्लाम की तब्लीग़ फरमाया करते थे इस साल (रजब, १० नबवी) में भी आप कई क़बाएल के पास तशरीफ़ ले गए, मिना की एक घाटी "अक़बा" के पास जहां अब मस्जिद अक़बा है, क़बील-ए-ख़ज़रज के कुछ लोग नज़र आए, आप ने इस्लाम की दावत दी और कुरआन मजीद की आयतें सुनाईं, यह लोग मदीने में यहूदियों के पड़ोस में रहते

---

1 बुख़ारी षरीफ़ (बाब इस्लाम अबी ज़र रज़ि०), सही मुस्लिम बाब फ़ज़ाएल अबीज़र, अनुवाद "नबी-ए-रहमत" से, लेखक मौ० स० अबुल हसन अली नदवी रह०

www.abulhasanalinadwi.org

थे और उनसे यह सुनते थे कि क़रीबी ज़माने में कोई नबी आने वाला है, वह आपस में एक दूसरे से कहने लगे कि वल्लाह यह वही नबी मालूम होते हैं जिनकी ख़बर तुमको यहूद देते थे, देखो यहूद इस पहल में बाज़ी न ले जाएं यह कह कर सबने एक साथ इस्लाम कुबूल किया।[1]

पहली बैअ़ते अक़बा

दूसरे साल जब हज का ज़माना आया तो अन्सार के १२ आदमियों ने आपके हाथ पर बैअत की और इस बात की खुवाहिश की कि इस्लाम के अहकाम सिखाने के लिये कोई मुअल्लिम (उस्ताद) उनके साथ कर दिया जाये, आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० को इस ख़िदमत पर मुक़र्रर फ़रमाया, उन लोगों ने आपके मुबारक हाथों पर चोरी, ज़िना, चुग़ली, झूट, और औलाद के क़त्ल से परहेज़ करने और अच्छी बातों में इताअत (आज्ञापालन) करने और तौहीद पर क़ायम रहने की बैअत की।[2]

मदीने में इस्लाम

यह पहली बैअत अक़बा जो नबूवत के ग्यारहवें साल के आख़िर में हुई थी, उसी मौक़े पर हज़रत मुसअब बिन उमैर को हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने मदीना भेज दिया था, हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० यसरिब जाकर दीन की प्रारंभिक बातें और इस्लाम के मसाएल से बाख़बर करने लगे, उनकी मेहनत व जां फिशानी से लोग इस्लाम की तरफ झुकने लगे, वह असअद बिन ज़रारह के मकान पर ठहरे थे, असअद बिन ज़रारह ईमान ला चुके थे, चुनांचे दोनों दावत का काम करने लगे, और जब चालीस की संख्या में मुसलमान हो गए तो हज़रत मुसअब ने नमाज़े जुमआ शुरू कर दी, यह मदीने में पहला जुमा था और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत से पहले था।[3]

असअद बिन ज़रारह के एक ख़ालाज़ाद भाई सअद बिन मआज़ और उनके एक साथी उसैद बिन हुज़ैर क़बीले औस के सरदारों में थे, दूसरी तरफ ख़ज़रज के सरदार सअ़द बिन उबादह और अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल थे, सअद बिन मआज़ को हज़रत मुसअब के कामों की ख़बर मिली तो बहुत नाराज़ हुए और उसैद बिन हुज़ैर से कहा कि मेरे ख़ालाज़ाद भाई से सख़्ती से कहो कि यह किस शख़्स को ठहरा रखा है? जो अजीब बातें करता है, मेरे माबूदों को बुरा कहता है, उस कुरैशी को अपने यहां से रवाना करदें, चुनांचे उसैद बिन हुज़ैर आए

---

1 सीरत इब्ने हिषम, 1/428–429, अससीरतुन नबविया इमाम ज़हबी 1/290,
2 सीरत इब्न हिशाम 1/432
3 सीरत इब्न हिशाम म 1/435

www.abulhasanalinadwi.org

और गुस्से के साथ असअद बिन ज़रारह से बात की, हज़रत मुसअब ने कहा : साहब आप बात सुन लीजिये फिर फैसला कीजिये, कि मैं बुरी बात करता हूं या ठीक बात करता हूं, बुरी बात हो तो हमको निकाल बाहर कीजियेगा, उसैद ने कहा ठीक है सुन लेता हूं हज़रत मुसअब ने कुरआन करीम पढ़ कर सुनाया और कुछ बात की, उसका इतना असर पड़ा कि उन्होंने नहा धो कर कल्मा पढ़ा और मुसलमान हो गए, और कहा कि सअ़द बिन मआज़ (हमारी क़ौम के) बड़े असर वाले आदमी हैं, अगर वह ईमान ले आते हैं तो बहुत असर पड़ेगा, मैं उनको भेजता हूं, चुनांचे उसैद बिन हुज़ैर सअद बिन मअ़ज़ के पास गए कि उनको भी सुनने के लिये भेजें, अगरचे सअ़द बिन मअ़ज़ को मुसअब बिन उमैर के पास भेजना आसान काम न था, लिहाज़ा उसैद ने यह तरकीब की कि सअ़द बिन मअ़ज़ के पास पहुंचे और अपनी बात तो बताई नहीं कि क्या करके आए हैं बल्कि यह कहा कि ख़ानदान बनी हारिसः के लोग जो तुम्हारे ख़ानदान के मुख़ालिफ़ हैं वह तुम्हारे ख़ालाज़ाद भाई असअद बिन ज़रारह को मारने के लिये जा रहे हैं, यह सुनते ही सअद बिन मआज़ को ख़ानदानी रिश्ते का जोश आ गया और कुछ पूछे बग़ैर लपके कि देखें क्या है, और असअद बिन ज़रारह की मदद करें, वहां मुसअब बिन उमैर मिले, सअ़द बिन मआज़ इस बात पर अपने भाई पर बरस पड़े, लेकिन दोनों ने उनको समझा बुझा कर ठन्डा किया और कहा कि बात तो सुन लीजिये फिर जो चाहिये कीजियेगा, उन्हों ने कहा : अच्छा बात बताओ, चुनांचे मुसअब ने कुरआन मजीद की आयतें सुनाई और दीन की तशरीह (व्याख्या) की, जो सअ़द बिन मआज़ के भी दिल में उतर गई और वह मुसलमान हो कर वापस लौटे और फिर अपने ख़ानदान "बनू अब्दुल अशहल" को जमा करके और अपने तअल्लुक़ का हवाला देकर बताया कि मैं मुसलमान हो गया हूं और अब तुम सबको भी होना है, इसका असर यह पड़ा कि बनू अब्दुल अशहल का पूरा ख़ानदान मुसलमान हो गया, इसी तरह कुछ न कुछ होता रहा यहां तक कि एक साल के अन्दर मदीना इस्लामी शहर बन गया।[1]

दूसरी बैअ़ते अक़बा

हज़रत मुसअब की तालीम से यसरिब के घर घर में इस्लाम का चर्चा होने लगा और उसका नतीजा यह हुआ कि अगले साल तिहत्तर (७३) मर्द और दो औरतों पर सम्मिलित एक प्रतिनिधि मंडल मक्का आया, और मुक़ाम अक़बा पर कुछ देर रात में जमा हुए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक हाथों पर इस्लाम की बैअत की, और इसी के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह मुतालिबा भी किया कि अब यसरिब (मदीना) में मुसलमानों की

1 सीरत इब्न हिशाम म 1/435.438

www.abulhasanalinadwi.org

तादाद (संख्या) क़ाबिले इत्मिनान हद तक हो गई है, अब मक्का से हिजरत फ़रमा कर यसरिब आ जाएं, और उसको अपनी दावत व तबलीग़ का मरकज़ बनाएं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास भी उस वक़्त इस्लाम नहीं लाए थे, उस मौक़े पर हाज़िरे ख़िदमत थे, उन्होंने अनसार से यह बात सुन कर उनसे खिताब करके कहा : कि गिरोह ख़ज़रज! अगर तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके साथियों का हमेशा दुशमनों के मुक़ाबले में साथ दे सकते हो और हर मौक़े पर आप सल्ल० की हिफ़ाज़त का वादा करते हो, अगर तुम लोग मरते दम तक उनका साथ दे सकते हो तो ठीक है, वरना अभी से जवाब दे दो, अनसार की तरफ से जवाब मिला, हम लोग तलवारों की गोद में पले हैं, हमें मालूम है कि हम किस चीज़ पर बैअत कर रहे हैं, और यह भी जानते हैं कि आप की बैअत दर हक़ीक़त अरब व अजम और जिन् व इन्सान से जंग है, अब्बास बिन उबादा ने कहा कि अगर हुज़ूर की इजाज़त हो तो हम कल ही मक्का वालों को अपनी तलवार के जौहर दिखादें, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : नहीं, मुझे जंग की इजाज़त नहीं, उसके बाद नबी स०अ० ने अनसार में से बारह (१२) लोगों को चुना यह सबके सब अपने क़बीले के बड़े ज़िम्मेदार लोग थे।[1]

मदीने में इस्लाम को पनाह (शरण) हासिल हुई तो आंहज़रत स०अ० ने सहाबा को इजाज़त दी कि मक्का से हिजरत कर जाएं, क़ुरैश को जैसे ही उसकी भनक लगी तो उन्होंने रोक टोक शुरू करदी, लेकिन चोरी छुपे सहाबा-ए- कराम हिजरत करते रहे, और धीरे धीरे उनकी एक बड़ी तादाद (संख्या) मदीना पहुंच गई, मक्का में सिर्फ़ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, हज़रत अबू बक्र, और हज़रत अली और वह लोग जो मुफ़लिसी (ग़रीबी) की वजह से हिजरत पर क़ुदरत न रखते थे बाक़ी रह गए।

हिजरत करने वालों को हिजरत करते वक़्त क़ुरैशे मक्का की सख़्त मुख़ालिफ़तों और रूकावटों का सामना करना पड़ा, क़ुरैश ने हज़रत सुहैब रूमी रज़िअल्लाह अन्हु का सारा माल व मता छीन लिया।[2]

हज़रत उम्मे सलमा की हिजरत

हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाह अन्हा अपने बारे में रवायत करती हैं कि जब अबू सलमा रज़ि० ने मदीना हिजरत का पक्का इरादा कर लिया तो

---

1 सीरत इब्न हिशाम 1/441.444

2 सीरत इब्न हिशाम 1/477 दलाइलुल नुबूवा, बैहिक़ी 2/522

www.abulhasanalinadwi.org

सफ़र के लिये अपना ऊँट तैयार किया, मुझ को उस पर सवार कराया और मेरे लड़के सलमा बिन अबी सलमा को मेरी गोद में दे दिया, फिर ऊँट की नकेल हाथ में ली और रवाना हुए, जब मेरे शौहर के ख़ानदान बनी मुग़ैरह के कुछ लोगों की नज़र उन पर पड़ी तो वह उनके पास आए और कहने लगे कि तुम्हारी हद तक ठीक है तुम अपने को बचा कर जा रहे हो,इन बीवी को हम तुम्हारे साथ जाने के लिये कैसे छोड़ सकते हैं, यह कह कर उन्होंने ऊँट की नकेल उनके हाथ से छीन ली और मुझे अपने साथ ले गए यह देख कर बनू अब्दुल असद में जो अबू सलमा के हिमायती थे भड़क उठे, उन्होंने कहा कि खुदा की क़सम तुमने इनको हमारे भाई से छीन लिया है, लेकिन हम अपने लड़के को अब इनके पास हरगिज़ नहीं छोड़ेंगे, इसके बाद दोनों में मेरे बच्चे पर कशाकश शुरू हो गई और दोनों उसको अपनी तरफ़ खींचने लगे, यहां तक उसका हाथ उखड़ गया, मेरे सुसराली बनू अब्दुल असद उसको छीन लेने में कामयाब हो गए और उसको अपने साथ ले गए, बनू मुग़ैरह ने मुझे अपनी क़ैद में कर लिया, मेरे शौहर मदीना रवाना हो चुके थे, इस तरह मेरा लड़का मेरे शौहर और मैं, तीनों एक दूसरे से जुदा हो गए।

मैं हर सुबह को बाहर आती और "अब्तह" में बैठ जाती और शाम तक रोती रहती, इस पर पूरा एक साल गुज़र गया, एक दिन बनू मुगैरह ही में से मेरे चचाज़ाद भाइयों में से एक भाई की मुझ पर नज़र पड़ी और मेरी इस हालत को देख कर उसे रहम आया और उसने बनू मुगैरह से कहा कि इस गरीब को क्यों नहीं छोड़ देते, तुम ने इसको शौहर और बेटे दोनों से महरूम (वंचित) कर दिया है? वह कहने लगे अगर तुम्हारा दिल चाहे तो अपने शौहर के पास चली जाओ, उस वक़्त बनू अब्दुल असद ने मेरा लड़का मुझे वापस किया, मैंने अपना ऊँट तैयार किया, बच्चे को गोद में लिया और मदीने में अपने शौहर की तलाश के लिये चल खड़ी हुई, इस हालत में कि अल्लाह का कोई बन्दा मेरे साथ न था, जब मैं "तनईम" (जो मक्के से तीन किलोमीटर के फासले पर है) तक पहुंची तो मेरी मुलाक़ात एक पड़ोसी उस्मान बिन तलहा (रज़ि०) से हो गई, जो बनी अब्दुलदार में से थे, वह देखते ही बोले, ऐ अबू उमय्या की लड़की! तुम कहां जा रही हो? मैंने कहा मदीने में अपने शौहर के पास जाना चाहती हूं। उन्होंने कहा, तुम्हारे साथ कोई है? मैंने जवाब दिया मेरे साथ अल्लाह के सिवा और इस बच्चे के अलावा और कोई नहीं है, कहने लगे : खुदा की क़सम तुम्हे (बग़ैर किसी की मदद के) मन्ज़िल पर पहुंचना आसान नहीं है, उन्होंने ऊँट की नकेल अपने हाथ में लेली और मुझे लेकर आगे रवाना हुए, खुदा की क़सम जिन लोगों से अब तक मेरा वास्ता पड़ा है मैंने किसी को भी उनसे ज़्यादा शरीफ और करीमुन्नफ़्स (दयालू) नहीं पाया, जब कोई मन्ज़िल आती और रूकना पड़ता तो वह ऊँट को बिठा कर अलाहिदा हट जाते, जब मैं उतर आती तो ऊँट के पास आकर सामान उतारते

www.abulhasanalinadwi.org

फिर एक दरख़्त से बांधते फिर किसी दरख़्त के साये में लेट जाते, जब शाम होती और रवानगी का वक़्त आता तो उठते, ऊँट को तैयार करते सामान वग़ैरह उसके ऊपर लादते फिर वहां से कुछ दूर हट जाते और मुझसे कहते कि बैठ जाओ, जब मैं अच्छी तरह बैठ जाती तो आकर उसकी नकेल थाम लेते और इसी तरह दूसरी मन्ज़िल तक पहुंचते, इसी तरह करते हुए उन्होंने मुझे मदीना पहुंचाया, जब उनकी नज़र बनी अमर बिन औफ़ के गांव "कुबा" पर पड़ी तो मुझसे कहने लगे कि तुम्हारे शौहर इसी गांव में हैं (अबू सलमा यहीं मुक़ीम थे) अब तुम अल्लाह का नाम लेकर वहां चली जाओ, यह कह कर उन्होंने मुझे रुख़्सत कर दिया और मक्का के लिये वापस रवाना हो गए।[1]

वह कहती थीं कि इस्लाम में किसी घराने को वह तकलीफ़ें नहीं उठानी पड़ीं जो अबू सलमा रज़ि० के घर वालों ने उठाई हैं, और मैंने किसी इन्सान को उस्मान बिन तल्हा रज़ि० से ज़्यादा शरीफ और हौसलामन्द नहीं पाया।

अबू सल्मा को हिजरत की ख़ातिर अपनी बीवी और बच्चे से महरूम (वंचित) होने से साबिक़ा पड़ा और उनकी बीवी को अपने शौहर के छुटने और बच्चे के छीने जाने से साबिक़ा पड़ा और दोनों ने बर्दाश्त किया, ऐसी ही मुश्किलात (कठिनाइयों) का सामना तक़रीबन हर एक सहाबी को करना पड़ा था।

क़त्ल की साज़िश

जब मक्का में मुसलमान गिनती के रह गए, मशहूर सहाबा में से सिर्फ़ हज़रत अबू बक्र और हज़रत अली रज़िअल्लाह अन्हुमा थे, तो क़ुरैश मक्का ने कहा कि अब मुहम्मद को क़त्ल कर देना ही हल (समाधान) है, क़त्ल की स्कीम पर ग़ौर करने के लिये "दारून्नदवा" में क़ुफ़्फ़ार का एक ख़ुफ़िया इजलास (गुप्त अधिवेशन) हुआ, तरह तरह की स्कीमें बहस में आईं, आख़िर अबू जहल की तदबीर (उपाय) पर सबका इत्तिफ़ाक़ हुवा, तजवीज़ और तदबीर (प्रस्ताव और उपाय) निम्नलिखित थी :

"अरब के हर एक मशहूर क़बीले से एक एक जवां मर्द का इन्तिख़ाब (चयन) किया जाए, यह सब बहादुर रात के अंधेरे में मुहम्मद के घर का घेराव करलें, और जैसे ही वह सुबह की नमाज़ के लिये निकलें, यह सब के सब हल्ला बोल कर अपनी अपनी तलवार से उन पर वार करें, इस तदबीर (उपाय) का फायदा यह होगा कि आपका ख़ून क़ुरैश की सब शाखों पर तक़सीम हो जाएगा, और मुहम्मद का खानदान या उसके साथी उसके ख़ून का बदला लेने पर क़ादिर न होंगे अर्थात सक्षम न होंगे, इस तरीक़े से एक भयानक शर (उपद्रव) सफ़ह-ए-हस्ती (भू-स्तर) से हमेशा के लिये मिट जायेगा"।[2]

---

1 सीरत इब्ने हिशाम 1/467, अस्सीरतुन नबविया, इमाम ज़हबी 1/312
2 सीरत इब्ने हिशाम 1/480–482, तारीख़ तबरी 2/371–372,तब्क़ात इब्ने सअ़द 1/227, निहायतुल अरब, 16/327, उयूनुल असर 1/179–187

www.abulhasanalinadwi.org

मदीने की हिजरत

इधर आप के क़त्ल की साज़िश मुकम्मल हो चुकी थी, और आपके घर का मुहासिरा (घेराव) अभी बाक़ी था, कि अल्लाह तआला की तरफ़ से हिजरत का हुक्म आ गया, चुनांचे मुहासिरे के वक़्त जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ लोगों की अमानतों का मुकम्मल इन्तिज़ाम करके "अल्लाह आपकी हिफाज़त करेगा लोगों से" की सिपर (ढ़ाल) लिये घर से बाहर निकले, और उनकी आंखों में खाक डालते हुए सूरह "यासीन" पढ़ते हुए साफ़ निकल गए, किसी को आपके जाने की भनक तक न लगी, यह वाक़िया (घटना) २७ सफर १३ नबवी बुध के दिन का है। [1]

इससे पहले दिन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिजरत की इजाज़त मिलने पर हज़रत अबू बक्र रज़ि० के पास तशरीफ़ लाए थे और ज़िक्र फ़रमाया था कि अल्लाह तआला ने मुझे यहां से निकलने और हिजरत की इजाज़त अता फ़रमा दी है, हज़रत अबू बक्र ने कहा : रफ़ाक़त व सुहबत का तलबगार हूं, आपने फ़रमाया : हां तुम ही रफ़ीक़ रहोगे, उसके बाद दो सवारियां पेश कीं, और अब्दुल्लाह बिन अरीक़त को बतौर रहबर (गाइड) के मुआवज़े पर तय कर लिया, रात में जब आप अपने घर से हिजरत के लिये निकले और हज़रत अबू बक्र रज़ि० के मकान पर पहुंचे तो हज़रत अबू बक्र की बेटी हज़रत असमा ने रास्ते के लिये सत्तू ज़ादे राह (सफर का खाना) के तौर पर तैयार करके कमर के पट्टे को काट कर सत्तू के थैले का मुंह बांधा, बाहर निकल कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काबे की तरफ देखा और कहा : मक्का तू मुझको तमाम दुनिया से ज़्यादा अज़ीज़ है लेकिन तेरे फ़रज़न्द (बेटे) मुझको रहने नहीं देते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बक्र रज़ि० अंधेरी रात में मक्के से छुपते छुपाते रवाना हुए, रास्ता पथरीला था नुकीले पत्थर हुज़ूर सल्ल० के पाए मुबारक को ज़ख़्मी कर रहे थे और ठोकर लगने से तकलीफ होती थी, मक्का से चार पांच किलो मीटर की दुशवार गुज़ार मसाफ़त तय करने के बाद सूर नामी पहाड़ की बुलन्दी पर वाक़े एक ग़ार में पहुंचे, हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० को बाहर ठहराया और खुद अन्दर जाकर ग़ार साफ़ किया और अपने कपड़े फाड़ फाड़ कर ग़ार के सूराख़ बन्द किये और फिर अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्दर तशरीफ

---

2 सही बुखारी, किताबुल मनाक़िब बाब हिजरतुन नबी व असहाबिही इलल मदीना, मुसनद अहमद, 1/348, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ 5/389, जादुल मआद 3/50

www.abulhasanalinadwi.org

ले आएं यहां तीन दिन मुक़ीम रहे और चौथे रोज़ आगे की तरफ़ रवाना हुए, दौराने क़्याम हज़रत असमा बिन्ते अबी बक्र घर से खाना पहुंचा जातीं, अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र मक्के वालों की बातें सुना जाते, आमिर बिन फ़ुहैरा वहां बकरियां ले आते और दूध पहुंचा कर वापस चले जाते।[1]

सुराक़ा बिन जोशम का वाक़िया

इधर क़ुरैश ने इश्तिहार (विज्ञापन) दिया था कि जो शख़्स मुहम्मद सल्ल० या अबू बक्र रज़ि० को गिरफ़्तार करके लाएगा उसको एक खूं बहा की क़ीमत के बराबर सौ ऊँट इनाम दिया जाएगा, सुराक़ा बिन जोशम ने सुना तो इनआम की लालच में निकला ठीक इस हाल में कि आप मक्का से निकल कर क़रीबी रास्ते में थे, उसने आपको देख लिया और घोड़ा दौड़ा कर करीब आ गया लेकिन घोड़े ने ठोकर खाई और गिर पड़ा, उसने अपने तरकश से फाल के तीर निकाले ताकि फ़ाल ले कि हमला करना चाहिये या नहीं, जवाब में "नहीं" निकला, लेकिन सौ ऊँटों का गरांबहा (बहुमूल्य) मुआवज़ा ऐसा न था कि तीर की बात मान ली जाती, दोबारा घोड़े पर सवार हुआ और आगे बढ़ा, अब की बार (रेतीली ज़मीन में) घोड़े के पावं घुटनों तक ज़मीन में धंस गए, घोड़े से उतरना पड़ा, फिर फाल देखी, अब भी वही जवाब था, लेकिन दोबारा तजुरबे ने उसकी हिम्मत पस्त करदी और यक़ीन हो गया कि यह कुछ और आसार हैं, चुनांचे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आवाज़ दी कि सिर्फ बात करना है और पास आकर क़ुरैश के इश्तिहार (विज्ञापन) का वाक़िया सुनाया (और अपने इरादे से बाज़ आ जाने का ज़िक्र किया) और दरख्वास्त की कि मुझको अम्न की तहरीर (ज़मानत नामा) लिख दी जिये, हज़रत अबू बक्र रज़ि० के गुलाम आमिर बिन फ़ुहैरा ने चमड़े के एक टुकड़े पर शान्ति का फ़रमान लिख दिया।[2]

उम्मे मअ़बद का वाक़िया

रास्ते में क़ुरैश और उनके हलीफ़ (दोस्त) बनू कनाना के इलाक़े से निकल कर जब बनू खज़ाआ के इलाक़े में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहुंचे तो चूंकि बनू ख़ज़ाआ क़ुरैश से दोस्ती नहीं रखते थे इस लिये आप सल्ल० ने उनके इलाक़े में सफ़र की पोशीदगी (छुपना) ख़त्म कर दी, कि अब इस इलाक़े में नुक्सान का ख़तरा कम है, उस इलाक़े में दाखिल होने के बाद जब आप

---

1 सीरत इब्ने हिशाम 1/485–488, दलाइलुल नबूवा बैहकी 1/111–112
2 सही बुख़ारी, मनाक़िबुल अनसार, बाब हिजरतुननबी व असहाबिही इलल मदीना, सीरत इब्ने हिशाम 1/189–490

www.abulhasanalinadwi.org

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ग़िज़ा की ज़रूरत महसूस हुई तो वहीं एक खीमें के पास ठहर कर अरबों के दस्तूर के मुताबिक़ मुसाफिर मेहमान की सूरत में सामने आये, यह खीमा खुज़ाआ क़बीले की खातून उम्मे मअ़बद का खीमा था, उन्होंने आप सल्ल० की खातिर करनी चाही लेकिन बकरी के थनों में दूध मालूम नहीं होता था, आप सल्ल० ने दुआ की और थनों पर हाथ फेरा, अल्लाह तआला ने करम फ़रमाया और दूध आ गया, आप सल्ल० ने और आपके साथियों ने इस्तेमाल किया और ज़ाएद बचा भी, और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने सफ़र में रवाना हो गए। इस वाक़िये का ज़िक्र खुद उम्मे मअ़बद ने मसर्रत (खुशी) के साथ किया है। [1]

कुछ देर बाद उम्मे मअ़बद के शौहर आए, खीमे में दूध का बरतन भरा देख कर हैरान हो गए कि यह कहां से आया, उम्मे मअ़बद ने कहा कि एक बाबरकत शख़्स यहां आए थे और यह दूध उनके मुबारक कदमों के आने का नतीजा है, बोले कि यह तो वही कुरैश के साहब मालूम होते हैं जिनकी मुझे तलाश थी, अच्छा ज़रा उनकी सिफ़त (विशेषता) बयान करो, उम्मे मअ़बद बोलीं :-

"मैंने एक शख़्स को देखा, जिसकी नज़ाफ़त (सफ़ाई सुथराई) नुमायां, जिसका चेहरा ताबां (प्रकाशमान) और जिसकी बनावट में तनासुब था, पवित्र चेहरे वाले, अच्छे स्वभाव वाले, न मुटापे का ऐब, न दुबले पन का नक़्स, न पेट निकला हुआ, न सर के बाल गिरे हुए, चेहरा बारोब, शरीर स्वस्थ, क़द मुनासिब, आंखें सुरमगीं (सुरमा लगी) थीं कुशादा और सियाह थीं, पुतलियां काली थीं, ढेले बहुत सफेद थे, पलकें घनी और लंबी थीं, पुर वक़ार खामोश दिलबस्तगी लिये हुए, बात मीठी और साफ़, न कम बोलने वाले न ज़्यादा बोलने वाले, गुफ़्तगू इस अन्दाज़ की जैसे पुरोए मोती, दो नर्म व नाज़ुक शाखों के दरमियान एक शाख़ ताज़ा जो देखने में खुश मन्ज़र, साथी उनके गिर्द व पेश (आगे पीछे) रहते हैं जो कुछ वह फ़रमाते हैं वह सुनते हैं, जब हुक्म देते हैं, तो तामील के लिये झपटते हैं, मखदूम व मुताअ़ (जिन की सेवा की जाए और जिनका आज्ञापालन किया जाए) न बात करने में आलसी और न बेकार बात करने वाले"।

यह सिफ़त (विशेषता) सुन कर वह बोला कि यह तो ज़रूर साहबे कुरैश हैं और में उनसे ज़रूर जा मिलूंगा।[2]

बहरहाल आप सल्ल० के रहबर (मार्गदर्शक) ने आप और आप के साथियों को साथ लेकर अपना सफर जारी रखा, यहां तक यह कुबा तक जो मदीना शहर से लगभग तीन किलोमीटर दक्षिण ओर है, पहुंच गए।

---

1 तब्क़ात इब्न सअ़द 1/230, अस्सीरतुन नबविया, इमाम ज़हबी 1/329
2 मुसतदरक हाकिम, 3–9 तब्क़ात इब्न सअ़द 1/230, ज़ादुल मआद 3/56

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय - छः

मदीना मुनव्वरा का निवास और सामाजिक व्यवस्था

दुश्मनों की नई साज़िशों (षडयंत्रों) का मुक़ाबिला

मक्का मुकर्रमा में नबूवत का ज़माना शुरू होने पर आप को दावत व तबलीग़े दीन का जो अहम और सब्र तलब काम सुप्रुद किया गया था, मक्के की १३ साला मुद्दत में आपको और आपकी सरकरदगी में आप की दावत पर ईमान वालों को इस की अदायगी की ज़िम्मेदारियों से और इस रास्ते की दुशवारियों से साबिक़ा पड़ा और उसके सिलसिले में इन हज़रात ने पूरी अज़ीमत (दृढ़ता) और बरदाश्त का सुबूत दिया और उसका पूरा हक़ अदा किया।

१३ साल की मुद्दत इन्सान के प्रारंभिक जीवन की ऐसी मुद्दत होती है जिसमें उसकी पूरी तरबियत (ट्रेनिंग) अन्जाम पा जाती है और उसको उसकी अमली ज़िन्दगी (व्यवहारिक जीवन) के लिये बुनियादी तजुरबात भी हासिल हो जाते हैं, जो उसकी अमली ज़िन्दगी में उसकी रहनुमाई करते हैं और किसी तहरीक (आंदोलन) या दावत के लिये काम करने वालों की सलाहियते कार-करदगी (काम करने की योग्यता) को मज़बूत बनाने और उसको परवान चढ़ाने का ज़रिया बनते हैं, १३ साल की मुद्दत एक तरह से इन्सान के पैदा हो कर बालिग़ होने के क़रीब तक पहुंचने की मुद्दत होती है, यही मुद्दत (ज़माना) अल्लाह तआला की तरफ़ से मुक़र्रर किये गए पैग़ामे हक़ (सत्य सन्देश) के शुरू होकर बुलूग़ तक पहुंचने की मुद्दत बनी, इस को सब्र व सबात (दृढ़ता) के साथ पूरा करलेने के बाद अब आगे का मरहला शुरू हुआ।

मक्के की १३ साला मुद्दत (समय) के लिये अल्लाह तआला की तरफ़ से बज़ाहिर यह निज़ाम (व्यवस्था) रहा कि दीन की दावत का फ़रीज़ा अन्जाम देने का पुरमशक़्क़त (परिश्रमपूर्ण) और तर्बियती निज़ाम अमल में आया और दावती काम की तर्बियत (प्रशिक्षण) का ज़रिया बना और यह पूरे इलाक़े के मरकज़ी मुक़ाम (केन्द्रीय स्थान) मक्का में अन्जाम पाया जो पूरे अरबद्वीप का केन्द्रीय नगर था जो कि पूरे भूमण्डल की आबादी के बीचो बीच में केन्द्रीय बिन्दु की हैसियत रखता है, यहां काम गोया इसी तरह शुरू हुआ कि वह आसमानी मदद व

www.abulhasanalinadwi.org

निगरानी में मज़बूती हासिल करले और जब वहां उस अज़ीम (महान) काम की अमली सलाहियत और अन्दरूनी ताक़त व जज़्बे से भरपूर जमाअत एक ज़रूरी तादाद (संख्या) में तैय्यार हो जाए और जब मक्के के मुक़ामी हुदूद में इस काम के लिये हालात की साज़गारी (अनुकूलता) न रहे तो आप दूसरी जगह जहां ज़रूरत के मुताबिक़ काम करने और निज़ाम क़ायम करने की गुनजाइश हो मुन्तक़िल हो जाएं और आइन्दा के लिये उस नई जगह को दावत और उसकी कारकरदगी का मरकज़ (केन्द्र) बनाएं।

चुनांचे यह नई जगह मदीना मुनव्वरा की सूरत में हासिल हो गई, जहां अमल को मज़बूत और चारों ओर फैलाने का मौक़ा मिला, वहां खुद आपके मुन्तक़िल होने से पहले आपके साथियों के वहां पहुंच जाने और आपकी आमद के लिये ज़मीन हमवार कर लेने की ज़रूरत थी, वह ज़रूरत भी अन्जाम पाचुकी थी, और आपके असहाबे किराम व जांनिसाराने इस्लाम मदीना मुनव्वरा की तरफ़ हिजरत करके एक खानदान की तरह इकट्ठा हो गए थे और तक़रीबन सभी वहां मुन्तक़िल हो गए थे उसी के बाद आप को हिजरत की इजाज़त उस वक़्त मिली जब मक्के के काफ़िरों ने यह देख कर कि आपके मानने वालों को मक्का छोड़ कर एक महफ़ूज़ जगह (सुरक्षित स्थान) मुन्तक़िल होने में कामयाबी हासिल हो चुकी है और ज़ाहिर है अब आप भी वहां चले जाएंगे और वहां से अपनी दावते हक़ जारी रखेंगे तो उन्होंने आपकी ज़िन्दगी को ही ख़त्म करने का फ़ैसला कर लिया, चुनांचे अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़ैसला हुआ कि अब आप भी मदीना मुन्तक़िल हो जाएं, चुनांचे आपने खामोशी के साथ रात की तारीकी में दुशमनों के दरमियान से निकलते हुए मक्के को छोड़ा और हिजरत फ़रमा कर वहां तशरीफ ले आए और इस तरह अब एक मज़बूत मरकज़ (केन्द्र) और निज़ाम क़ायम करने का मौक़ा हासिल हो गया, जहां से काम को आगे बढ़ाया जा सकता था, और दावते हक़ को दूर दूर तक पहुंचाया जा सकता था,

यसरब (मदीना मुनव्वरा) के अस्ल अरब बाशिन्दे औस व ख़ज़रज के दो क़बीलों के लोग थे[1] यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद तक अक्सर व बेशतर मुसलमान हो चुके थे, और मुहाजिरीन के साथ बिरादराना हमदर्दी रखते हुए बाक़ाइदा मुसलमानों की मुशतरका (सम्मिलित) बिरादरी की हैसियत एख़तियार कर चुके थे, वह आप के इसतिक़बाल (स्वागत) के लिये तैयार थे[2]

मदीने में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, मदीना पहुंचने पर कुबा की तरफ़ से दाखिल हुए, यह शहर के दक्षिण ओर लगभग तीन मील के फ़ासले पर मदीने से

---

(1) अलमुफस्सल फ़ी तारीखिल अरब क़बलल इस्लाम, डॉ0 जव्वाद अली, 4/129,
(2) सीरत इब्ने हिशाम 1/492

www.abulhasanalinadwi.org

संबन्ध रखने वाली एक बसती है जहां खजूर के बाग़ात हैं, उसी के साथ उसके दक्षिणी क्षेत्रों में पूरब और पच्छिम की ओर मदीना शहर तक दुशवार गुज़ार पहाड़ी नशेब व फ़राज़ (ऊँची-नीची) भी हैं जिसको "हर्रह" कहते हैं, जिन पर चलना दुश्वार होता है, मदीना मुनव्वरा ऐसे पत्थरों के क्षेत्रों से पूरब और दक्षिण से घिरा हुआ है, इस लिये वहां जाने वाले सिर्फ उसके उत्तर की तरफ़ से शहर में दाख़िल होते हैं लेकिन हुज़ूर सल्ल० दक्षिण की ओर से आए शायद एहतियात की वजह से ऐसा किया था और आपका उसी तरफ़ से आने का इन्तिज़ार हो रहा था। आप क़ुबा पहुँचने पर कई रोज़ वहाँ ठहरे और आपने वहां मस्जिद की तामीर (निमार्ण) की जो इस्लाम की पहली मसजिद कहलाई[1] जसके बारे में क़ुरआन में कहा :

"आप तो उसी मस्जिद में नमाज़ के लिये खड़े हों, जिसकी बुनियाद अव्वल रोज़ से खुदापरस्ती पर रखी गई हो, वाक़ई ऐसी मस्जिद का हक़ बहुत ज़ियादा है कि आप उसमें नमाज़ को खड़े हों, उस मस्जिद की यह शान है कि उसको ऐसे आदमी आबाद रखते हों जो तहारत (यानी पाक़ीज़ग़ी) का बहुत ज़ियादा ख़ियाल रखते हैं और अल्लाह उन लोगों से मुहब्बत फ़रमाता है जो पाक साफ़ है," सूरः तोबा आयत नं०-१०८

आप वहां सोमवार के रोज़ पहुँचे थे और तीन रोज़ बअ़द जुमा के दिन मदीने के लिये रवाना हुऐ, रास्ते में जुमा की नमाज़ का वक्त हुआ और आपने रास्ते ही में जुमा की नमाज़ अदा कर ली, मदीना शहर में दाख़िल होने पर आपका वहां ज़ोरदार इस्तिक़बाल (स्वागत) हुआ और हर एक ख़ानदान के ज़िम्मेदार ने अपने यहां उतरने और ठहरने की दरखुवास्त की लेकिन आपने खुद से फ़ैसला करने के बजाए अपनी सवारी को आज़ाद छोड़ दिया, आपको खुदा की तरफ से इसी का हुक्म था और सवारी के लिये खुदा की तरफ़ से इन्तिज़ाम था कि जहां वह रूके वही जगह ग़ैब से मुकर्रर आपको अल्लाह के हुक्म से उसी जगह को एखतियार करना था, वरना तो आपको हर तरफ़ से दअवत दी जा रही थी कि उनके मकान में रुकें।

बहरहाल यह शरफ़ (सम्मान) हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ी० को हासिल हुआ, कि उन्हीं के दरवाज़े पर आपकी ऊटनी बैठी और आपने वहीं ठहरने का फ़ैसला किया[2] और यह भी संयोगवंश था कि हज़रत अबू अय्यूब मदीने के ख़ज़रजी क़बीले के ऐसी शाख़ के फ़र्द थे जिससे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब की वालिदा थीं, इस तरह हुज़ूर सल्ल० की उस घराने से रिश्तेदारी भी थी।

---

(1) अलबिदाया वन निहाया 3/196, सीरत इब्ने हिशाम 1/494
(2) सीरत इब्ने हिशाम 1/496, दलाइलुन नबूवा 2/503

www.abulhasanalinadwi.org

मस्जिद नबवी की तामीर (निर्माण)

फिर आप सल्ल० ने उसी के सामने कीं ज़मीन को ख़रीद कर उस में मस्जिद की तामीर फ़रमाई, यह ज़मीन दो यतीम बच्चों की थी, उन्होंने मस्जिद का नाम सुनकर हदया (भेंट) करना चाहा, लेकिन आप ने बग़ैर क़ीमत के लेना पसन्द नहीं किया और उसकी पूरी क़ीमत अदा फ़रमाई, और मस्जिद की तामीर (निर्माण) के काम में बराबर शरीक भी रहे, यह मस्जिद "मस्जिद नबवी" कहलाई[1] जो मदीने की बड़ी और अस्ल मस्जिद बनी।

अल्लाह तआला ने आपको यह इज़्ज़त अता फ़रमाई कि आप की यह बनाई हुई मस्जिद अल्लाह के नज़दीक ऐसी मुबारक करार पाई कि वहां नमाज़ अदा करने पर दूसरी आम मस्जिदों के मुकाबले में पचास हज़ार नमाज़ों के बराबर सवाब मुकर्रर फ़रमा दिया गया, इसी मस्जिद के दखिन और पूरब में करीब ही आपने अपनीं अजवाजे मुतह्हरात (पाक बीवियों) के लिये हुजरे बनवाये।[2] इस तरह आपकी क़यामगाह (निवास स्थान) मस्जिद से करीब बन गई, फिर आपकी वफ़ात के मौक़े पर इसी मस्जिद से करीब आपकी ज़ौज-ए-मुतहरा हज़रत आइशा के हुजरे में जहां आपकी वफ़ात हुई आपकी आरामगाह भी बनी, इस तरह उस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के मौके से आपको सलाम पेश करने और इज़हार-ए-मुहब्बत व तआलुक़ का एक ज़रिया बन गया, चुनांचे जो भी हज करने जाता है उस मस्जिद में भी हाज़री देता है, उस मस्जिद का वह हिस्सा जो आपकी आरामगाह से क़रीब मस्जिद के मिम्बर तक वाक़े है, जन्नत की क्यारियों में से एक क्यारी क़रार दे दिया गया, जिसमें नमाज़ पढ़ना जन्नत में नमाज़ पढ़ने की तरह है।

मदीने में आपकी तशरीफ आवरी तक वहां की आबादी की बड़ी तादाद (संख्या) आपकी मानने वाली बन चुकी थी, और वहां के अस्ल बाशिन्दों (निवासियों) की तरफ से वादा भी हो गया था, कि वह आपकी हिफ़ाज़त भी करेंगे और आपकी रहनुमाई (मार्ग प्रदर्शन) में आपनी ज़िन्दगी इस्लामी ज़िन्दगी बनायेंगे। इस तरह आपकी दावते हक़ का यह दूसरा मरहला (चरण) शुरू हुआ, जिसका शरफ़ (सम्मान) यसरिब नामी शहर को मिला, यसरिब असलन शहर के एक हिस्से का नाम था, जो अहिस्ता-अहिस्ता पूरे शहर के लिये इस्तेमाल होने लगा, इस लफ़्ज़ (शब्द) में एक बुरा पहलू था, आपने उस लफ़्ज़ के बजाए दूसरे अल्फ़ाज़ से उसका अदा करना पसन्द फ़रमाया और उस वक्त से वह "तैबा,

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1/496, तबक़ात इब्ने सअ़द 1/239, ज़ादुल मआद 3/62,
(2) तबक़ात इब्ने सअ़द 1/240

www.abulhasanalinadwi.org

ताबा और आपकी निस्बत (सम्बन्ध) से "मदीनतुननबी" के नाम से मौसूम (नामित) होने लगा और "मदीनतुननबी" के इख़्तिसार (संक्षिप्त) की बिना पर "अल-मदीना" कहा जाने लगा।[1]

यह इज़्ज़त व शरफ़ (सम्मान) का एक मौका आया था कि शायद "ताएफ" के शहर को हासिल हो जाता अगर वहां के ज़िम्मेदारान इस दअवत की अज़मत (महानता) को समझते और उसकी मदद के लिये अपने को पेश कर देते और आपको अपने यहां बुला लेते, इस दअवते हक़ के रहबर (नायक) ने उन लोगों के सामने तकलीफ़-देह सफ़र करके मदद लेने की बात रखी थी, लेकिन उस शहर की क़िस्मत में यह बुलन्द मक़ाम न था, उन्होंने अपनी ज़िद व अपनी हटधर्मी की वजह से अपने को इस शरफ़ (सम्मान) व इज़्ज़त से महरूम (वंचित) कर लिया, जो हक़ीक़त में ख़ुदा की तरफ़ से ही उसके मुक़द्दर में नहीं थी।

आख़िर में उसी के तीन साल बाद वह शरफ़ व इज़्ज़त "यसरिब" अर्थात मदीने को अता हुई जहां के लोगों ने उसकी पेशकश (आफ़र) पर लब्बैक कहा और उसकी नुसरत (मदद) के लिये जान व दिल से तत्पर हो गए और इस तरह "यसरिब" का शहर अल-मदीनतुल मुनव्वरह (अर्थात वह शहर जो नूर (प्रकाश) से रौशन हुआ) बन गया और अल्लाह तआला के आख़िरी (अन्तिम) नबी का ठिकाना और मुक़ाम बन गया, जिसमें आपको मज़बूज हिमायतियों के बीच रहते हुये इस्लाम की दअ़वत फैलाने का मौक़ा मिला, और दअ़वते इस्लाम का यह मरहला (चरण) हुज़ूर सल्ल० को नबूवत मिलने और उसके तहत दअ़वत हक़ देने में सख़्त से सख़्त दुशवारियों और ज़हमतों (कठिनाईयों) में १३ साल की मुद्दत (समय) गुज़ारने के बाद शुरू हुआ।

इस तब्दीली के ज़रिये आपको आपके सम्मानित साथियों को दीन-ए-हक़ की दअ़वत के शुरू करने वाले मुक़ाम शहर मक्का के लोगों की दुशमनी और कष्ट दायक हालात से बचाव का मौक़ा (अवसर) भी मिला और मुसलमानों को यहां भाई-चारे और मदद का माहौल हासिल हो जाने से दीने हक़ की तबलीग़ व इशाअत (प्रचार) की ज़िम्मदारी की अन्जामदही का फ़रीज़ा (कर्तव्य) ज़्यादा मुनज़्ज़म (संगठित) और ज़्यादा तवज्जूह (ध्यान) से अन्जाम देने का भरपूर मौका मिला अलबत्ता इस मरहले में इन्फ़िरादी (व्यक्तिगत) दुशमनी और तकलीफ़ पहुंचाने की जगह पर इजतिमाई (सामूहिक) और संगठित स्तर की दुशमनी से साबिक़ा पड़ा।

मदीने की प्राकृतिक और भौगोलिक स्थित

मदीना मुनव्वरह अपनी जगह के ऐतबार से ख़ास अहमियत रखता था वह मक्का मुकर्रमा से लगभग साढ़े चार सौ कि०मी० उत्तर में वाक़ै (स्थित) था,

(1) अलमुफ़स्सल फ़ी तारीखिल अरब क़बलल इस्लाम 4/130

www.abulhasanalinadwi.org

उसके इर्द गिर्द पहाड़ियों का सिललिमा था, पच्छिमी दिशा के पहाड़ो की दूसरी ओर थोड़े फ़ासले पर समुद्र था, समुद्र और पहाड़ के बीच बराबर जगह थी, जो अपनी जगह के लिहाज़ से "तिहामा" का हिस्सा थी, दखिन ओर से आने वाले काफिले उसी में गुज़र कर शाम, मिस्र और तुर्की जाते थे यह रास्ता मदीने से क़रीब होने की बिना पर एक तरह से मदीने वालों के अधीन (मातहत) था। मदीना शहर अपने पूर्वी दिशा के लिहाज़ से पहाड़ी सिलसिला यह रास्ता जिसे "हिजाज़" कहते हैं के पच्छिमी किनारे वाक़ै (स्थापित) है और उसकी ज़मीन पैदावारी सलाहियत रखती है, चुनांचे उसमें खेती-बाड़ी होती रही है, खजूर व अंगूर के बाग़ात भी होते हैं, इसकी वजह से यहां के बाशिन्दे (निवासी) आम तौर पर किसान और ज़मीनदार होते थे और यह बात मक्के के विपरीत थी जहां की ज़मीन खुश्क थी वहां के लोग तिजारत पेशा होते थे और उसके लिये उनको कभी माल के साथ यमन जाना पड़ता था, कभी शाम और शाम जाने में मदीने के क़रीब से गुज़रना होता था, चुनांचि अरब द्वीप के आस पास के इलाकों में यहां के लोगों की यह अहमियत समझी जाती थी कि वह अगर नाराज़ हों तो तिजारती रास्तों पर रूकावट का सबब बन सकते हैं, ख़ास तौर पर क़ुरैश के लिये जो कि तिजारती पेशा वाले थे अपने शाम जाने वाले रास्ते के मदीने के करीब से गुज़रने की नज़ाकत (बारीकी) को समझते थें इसके साथ-साथ मदीने के रहने वाले कबीले "औस" व ख़ज़रज अरबों की क़हतानी नस्ल (वंश) से थें, जबकि क़ुरैशी और उनके दोस्त व क़राबत वाले इस्माईली नस्ल के क़बीलों से थे, इस क़बाईली फ़र्क (अन्तर) से भी दोनो के बीच एक हद तक अलग अलग ज़हन और अपने अपने क़बीले की नस्ली असबियत (पक्षपात) भी पाई जाती थी[1]

सामूहिक हालत

मदीने का यह शहर यहां के लोगों के मुसलमान होने और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यहां आमद से पहले दूसरे इलाक़ो के अरब क़बाईल की आदत व दस्तूर के मुताबिक़ आपस में एहसास-ए-इज़्ज़त की ज़्यादती की बिना पर ख़ाना जंगी (गृहयुद्ध) से गुज़र रहा था और यहां के क्षेत्रीय और स्थानीय हालात अपनी खास पेचीदगियां (उलझने) भी रखते थें, यहां अरबों के दो क़बीले औस व ख़ज़रज थे जो वास्तव में एक ही नस्ल (वंश) से थे, आपस में क़बाईली असबियत (गौत्रीय पक्षपात) में एक दूसरे से लड़ते रहे थे, उनके साथ पड़ोस में यहूदी क़बीले भी थे जो अरब न होने की वजह से बाहरी समझे जाते थे, उनकी आबादी भी कम थी, उनमें ख़ास और बड़े ख़ानदान, बनू नज़ीर, बनू क़ुरैज़ा, बनू क़ीन काअ के नाम से मशहूर थे, यह वहां के मालदार लोग थे,

1 अल–मुफ़स्सल फ़ी तारीखिल अरब क़बलल इस्लाम 4/128–142

www.abulhasanalinadwi.org

आम तौर पर यह ज़मीनदार बन गये थे, यह अरबों को अपने बाग़ात और खेतों में मज़दूरी पर रखते और उनके ग़रीबों को सूदी क़र्ज़े देते थे और उनकी आपस की लड़ाईयों में एक पार्टी को दूसरी पार्टी के मुकाबले में ताकत पहुंचाते थे, इससे अरब क़बीलों के आपसी टकराव में शिद्दत (उग्रता) और बढ़ जाती थी।

मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह० तहरीर फरमाते हैं : -

"वहां का जन-जीवन मक्के की अपेक्षा अधिक पेचीदा था और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा वह नाना प्रकार की थीं, क्योंकि वहां अनेक धर्म, जाति और संस्कृति के लोग रहते थे, जिन पर क़ाबू पाना और मदीना वासियों को एक अक़ीदा और एक दीन के रंग में रगंने का कठिन कार्य अल्लाह का कोई ऐसा रसूल ही कर सकता था, जिसे अल्लाह का समर्थन और ताईद प्राप्त हो तथा जिसे अल्लाह ने सूझ बूझ, दूरदृष्टि निर्णय शक्ति और मानवता के बिखरे हुऐ ढेर को एकत्र करने तथा परस्पर विरोधी शक्तियों व विचार धाराओं को सिसकती मानवता के पुनर्स्थान के काम में एक दूसरे का पूरक और मददगार बनाने की अपार क्षमता प्रदान की थी और जो एक मनमोहक व्यक्तित्व का मालिक था, क़ुरआन मजीद में आता है -

"वही है जिसने अपनी मदद और मुसलमानों के ज़रिये आपकी पुश्तपनाही (रक्षा) की और उनके दिल मिला दिये कि अगर आप दुनिया की सारी दौलत भी खर्च कर देते तब भी उनके दिलों को नहीं जोड़ सकते थे, लेकिन अल्लाह ही ने उनमें जोड़ और सहमति पैदा कर दी, वह ग़ालिब (सर्वशक्तिमान) और हिक्मत वाला है।[1]" (सूरः अन्फाल-६२-६३)

विश्वव्यापी भाईचारा -

अब क़ुरैश के मुसलमानों के मदीना आ कर औस व ख़ज़रज के साथ मेल जोल कर लेने से मदीने की आबादी में दो नस्लों के बीच अख्लाक़ी व दीनी रिश्ते ने कम से कम इन दोनों के बीच असबियत (पक्षपात) वाली दूरी बड़ी हद तक खत्म कर दी और इस्लाम के झण्डे के नीचे दोनों एक हो गये, दोनों के मुरशिद व रहनूमा (मार्गदर्शक) एक हो गये और इस तरह उससे इस्लामी जीवन व्यवस्था को ख़ास ताक़त हासिल हो गई, जिसको हुज़ूर सल्ल० की दानिश मन्दाना (बुद्धिन्ता पूर्ण) मुहब्बत व अख़्लाक़ वाली रहबरी हासिल हुई, इस तरह यहां एक ऐसी ताकत बन गई ज़िसकी बाग डोर हुज़ूर सल्ल० के हाथों में थी, मक्का से आने वाले मुसलमान इस्माईली नस्ल से होने की वजह से औस व ख़ज़रज के वास्तविक रिश्तेदार न थे, बल्कि एक दूसरे को एक तरह से ग़ैर (भिन्न) बल्कि

---

1 नबी-ए-रहमत, नया एडीशन 256-257

www.abulhasanalinadwi.org

हरीफ़ (विपक्षी) समझते थे, इस दूरी और अन्जानेपन को खत्म करने के लिये हुजूर सल्ल० ने यह किया कि उनमें बाक़ाइदा (नियमपूर्वक) मुवाख़ात अर्थात भाई-भाई होने का समझौता रिश्तेदारी के तरीक़े पर करा दिया, जिससे दोनों की नस्ली दूरी क़ुरबत व भाई चारे में बदल गई।

मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी लिखते हैं :- "यह मुवाख़ात (भाई चारा) अपनी किस्म की एक अलग इस्लामी व विश्वव्यापी भाई चारे की बुनियाद, एक दावत वाली उम्मत के क़याम (स्थापना) की भूमिका थी, जो एक नई दुनिया की तामीर (निर्माण) के लिये वजूद में आ रही थी और जो सही व निश्चित अक़ाएद और दुनिया को बदबख़्ती व बदनज़्मी (दुर्व्यवस्था) से नजात देने वाले नेक मकासिद (उद्देश्य) और ईमान व वास्तविक भाई चारा और संयुक्त कोशिशों के सम्बन्ध के लिये क़ायम (स्थापित) हो रही थी, इस तरह मुहाजरीन व अन्सार के बीच यह सीमित भाईचारा, मानव जगत की नई जिन्दग़ी का पेशख़ीमा (भूमिका) साबित हुई"। (नबी-ए-रहमत-पेज-२६६) चुनांचे इस्लाम के इस शहर में आने और इस्लामी हिदायात (शिक्षाऐं) क़बूल कर लेने से उनको भाई भाई बनने की तलक़ीन (नसीहत) की गयी और क़बाईली असबीयत (पक्षपात) छोड़ कर इन्सानी हमदर्दी और इन्साफ़ की तलक़ीन की गयी, उनके बावजूद क़बाईली नफरत के भाई चारगी पैदा हुई और उन्होंने आपस में ही नहीं बल्कि मक्के के लोगों को भी अपना भाई बना लिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वहां तशरीफ़ लाने से मुहब्बत व भाईचारगी हमदर्दी व ग़मख़ुवारी की शानदार फ़िज़ा क़ायम हो गई।

मदीने के यहूदियों से समझौता

मदीने में अरबों के साथ जो यहूदी क़बीले आबाद थे वही हक़ीक़त में शाम के इलाक़े के थे, वह अरबों के खजूर वाले इलाकों में से किसी एक इलाके में नबी आने की पेशीनगोई (भविष्यवाणी) अपनी किताब में देख कर यहां आकर बस गये थे, अपनी नस्ली फर्क की बिना पर अपने ज़हन और ख़ुसूसियात (विशेषतओं) से अरबों से भिन्न थे और मज़हबी लिहाज़ से अलाहिदगी (दूरी) रखते थे, इस तरह नस्ली, मज़हबी और वतनी बुनियाद पर यहां अस्ली बाशिन्दों (वासियों) से अलग हैसियत रखते थे, इसी के साथ इल्मी और आर्थिक लिहाज़ से अरबों पर उनको बरतरी (उच्चता) हासिल थी, जिससे वह राजनीतिक और आर्थिक फायदा उठाते थे लेकिन आबादी में संख्या के लिहाज़ से अरबों को उनपर बरतरी (उच्चता) हासिल थी, यहूदी लोग अरबों पर अपनी आर्थिक उच्चता और इल्मी बुनियाद पर अरबों को अपने से कमतर समझते थे और माली मामलात में उन पर अपना ज़ोर दिखाते थे और इल्मी बुनियाद पर धमकाते

हुये कहते थे कि हमारी किताबों में यह पेशीनगोई है कि इन इलाक़ों में एक नबी आने वाला है, उनके आने पर हम उनकी क़ियादत (नेतृत्व) में तुम पर पूरे तौर पर अपना ग़लबा और बरतरी (प्रभुत्व और श्रेष्टा) हासिल कर लेंगे [1]

हांलाकि उनका दीन दीनेमूसवी था और मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के बरगुज़ीदा नबी थे लेकिन उन यहूदियों और दूसरे इलाकों के यहूदियों का भी अपने दीन पर अमल पूरा नहीं था, उन्होंने अपनी आसमानी किताब "तौरैत" में अपनी मर्ज़ी से कमी ज़्यादती भी की थी और इसकी बुनियाद पर बाज़ ग़लत कामों को भी सही क़रार दे कर अपनी पसन्द के मुताबिक़ अमल करते थे।

इस तरह की अल्लाह तआला की मुसलसल (निरन्तर) नाफ़रमानी की बिना पर अल्लाह तआला ने उनको मबग़ूज़ (ग़ज़ब का हक़दार) क़रार दे दिया, लेकिन वह इस ग़लत फहमी में थे कि आने वाला नबी उनही में से होगा, क्योंकि कुछ ज़माने से ऐसा ही हो रहा था, अल्लाह तआला के बरगुज़ीदा नबी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद होने की बिना पर उन पर फ़ज़्ल (इनआ़म) हो रहा था, जिसकी बराबर नाक़द्री ने उनको ग़ज़ब (प्रकोप) का हक़दार बना दिया, लेकिन वह अपनी ना समझी की बिना पर उस आखरी नबी के अपने ही में होने की उम्मीद रखते थे और जगह की अलामतों (निशानों) की बिना पर उनका कुछ ख़ानदानी शाख़ें मदीना और उसके उत्तरी इलाकों में आकर बस गयी थीं और इन्तिज़ार में थे।

लेकिन जब नबी उनके बजाय अरबों में "मबऊस" हुआ तो उनको नागवार हुआ और उन्होंने मानने से इनकार कर दिया लेकिन मदीने के अरबों ने यहूदियों से जो सुना था उसकी बिना पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत की ख़बर उनको यहूदियों की बताई हुई बात से मुताबिकत (समानता) रखने वाली मालूम हुई, बल्कि उनको उसकी बिना पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत के सही होने की एक तरह से दलील भी मालूम हुई, इसी लिये मदीने में आसानी के साथ इस्लाम के क़बूल करने की सूरत बन गई और फिर हुज़ूर सल्ल० मदीना तशरीफ ले आए तो यहूद ने यह देख कर कि आप सल्ल० के साथ मदीने वालों की अकसरियत (बहुसंख्यक) हो गई है, उस अकसरियत से डर कर अपनी नागवारी (अप्रियता) अपने दिल ही में रखी, उधर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूरते हाल को अच्छी तरह समझ लिया था लिहाज़ा मुनासिब समझा कि यहूदियों से शान्ति समझौता कर लिया जाये ताकि

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1/428

www.abulhasanalinadwi.org

मदीने की आबादी में किसी तरह की दुर्व्यवस्था का माहौल न बने, यहूदियों ने, चूंकि अल्पसंख्यक थे यह समझौता आवश्यकता के रूप में कबूल कर लिया, इस समझौते में अरब मुसलमानों और यहूदियों के बीच एक दूसरे के साथ शान्तिपूर्ण व्यवहार और एक दूसरे की मज़हबी व समाजी खुद मुख्तारी (स्वायत्तता) रखी गई थी और बाहरी खतरा सामने आने पर एक दूसरे की मदद करना तय किया गया था, इस मुआहिदे (समझौते) के बाद मदीना शहर में इस्लामी दावत और इस्लामी जीवन व्यवस्था के इख्तियार करने में कोई रूकावट बाकी न रही।[1]

इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था की स्थापना

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने यहां तशरीफ लाकर यहां के निवासियों के बीच एकता व भाईचारा पैदा करके इस्लाम की सामाजिक जीवन व्यवस्था की स्थापना कर दी, जिसमें सब मुसलमान एक अमीर के मातहत (अधीन) शरीअत के मुताबिक ज़िन्दगी गुजारने के उसूल (नियम) के पाबन्द हो गये इस निज़ाम (प्रबन्ध) में एक अहम मसअला यह था कि मक्का से आये हुये मुसलमान और मदीने में रहने वाले मुसलमान अलग अलग वतन और अलग अलग क़बीले के थे और मक्के से आने वालों को अपने वतन के सामान और अपने आर्थिक साधन सब छोड़ कर ख़ाली हाथ उस नई जगह आना पड़ा था, जहां उनको अपनी जीविका साधन का तुरन्त प्रबंध करना आसान न था, लेकिन इन दोनों की ईमानी ज़िन्दगी उनके रसूल सल्ल० की तरबियत (प्रशिक्षण) के असर से इस स्तर की हो गई थी कि आप जो जीवन व्यवस्था प्रस्तावित करते वह मान ली जाती। आपने इस्लामी भाईचारा और आपसी मदद के उसूल (सिद्धान्त) पर उनमें आपसी भाईचारा का हल (समाधान) मुकर्रर फ़रमाया कि मक्के से आए हुये मुसलमानों और मदीने के वासियों के बीच में ऐसा भाईचारा क़ायम हो, कि उसके द्वारा हर मदनी के साथ एक मक्की पूरी तरह शरीक और मिस्ल भाई के हो जाए, इस तरीके से हिजरत करके आने वाले और उनके मदनी शरीक कार (सहयोगी) एक दूसरे से जुड़ गए और गोया कि दोनों अस्ली निवासियों की तरह बल्कि भाई भाई हो गए, जिसका प्रभाव आर्थिक सूरते हाल पर भी पड़ा, इस मुवाख़ात (भाईचारा) का यह एक फ़ायदा हुआ कि मुहाजिरीन व अनसार के बीच रिश्ता जैसा संबंध क़ायम हो गया और उनसें पूरे शहर के लोगों की संयुक्त इस्लामी संस्कृति का निर्माण हुआ, दूसरी तरफ़ यहूदी आबादी इस समझौते द्वारा जो उनसे किया गया था उस सोसाईटी की हलीफ़ (शपथ पक्ष) हुई, और इस तरह उस शहर से इस्लामी जीवन व्यवस्था और उसका अपने उद्देश्य के मुताबिक़ अमल एख़तियार करने का पूरा माहौल बन गया और हुज़ूर सल्ल० को

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1/500–504

www.abulhasanalinadwi.org

इस्लाम का सामूहिक प्रबंध स्थापित करने का अवसर प्राप्त हो गया, जो मक्के में वहां की दुशमनी और सख़्त हालात और कुफ़्फ़ार के ग़लबे (प्रभुत्व) व अदावत (शत्रुता) की वजह से क़ायम नहीं किया जा सका था, वहां सिर्फ इनफ़िरादी (व्यक्तिगत) स्तर ही पर अल्लाह के आदेशों पर अमल हो रहा था और उसके साथ दअवत का भी व्यक्तिगत स्तर पर काम अंजाम दिया जा रहा था और आख़िर में वह भी कठिनाईयों में घिर गया था, जिसकी वजह से मक्का मुनतक़िल (स्थानांतरित) होने पर मजबूर होना पड़ा था और कुरैश की तरफ से पकड़ धकड़ के बाएस (कारण) उनकी पकड़ से बचने के लिये एक चक्करदार रास्ते से मदीने मुनव्वारा सफ़र करना पड़ा था।

अज़ान का आग़ाज़ (शुभारंभ)

इबादत के सिलसिले में नमाज़ पहले से फर्ज़ थी जो मक्के में अलग अलग और एक हद तक छुप कर पढ़ी जाती थी, मदीना आकर यह दुश्वारी ख़त्म हुई उसके लिये मस्जिद में जमाअत से पढ़ने के लिये बुलाने की ज़रूरत थी, उसके लिये हिजरत के पहले साल ही अज़ान देना मुकर्रर कर दिया गया, जमात के लिये बक़ायदा नमाज़ होने पर जब ज़रूरत महसूस हुई कि लोगों को बुलाये जाने का क्या तरिक़ा हो, किसी ने नाक़ूस बजा कर इत्तिला देने की राय दी किसी ने किसी और तरीक़े की निशानदही की, इसी सोच विचार के बीच एक सहाबी आये और अपना ख़्वाब बयान किया कि उन्होने एक शख़्स को फ़लां अल्फ़ाज़ के ऐलान करते देखा और अज़ान के अल्फ़ाज़ सुनाये, यह अल्फ़ाज़ ऐसे थे कि रसूल सल्ल० ने फरमाया कि यह तलकीने इलाही अर्थात अल्लाह का उद्देश्य है जो ख़्वाब के ज़रिये भी होती है लिहाज़ा बिलाल रज़ीअल्लाहुअन्हु को बुलाकर उनको सिखा दिया, इस तरह अज़ान का सिलसिला शुरू हुआ[1]

क़िबले की तब्दीली

मस्जिद नबवी जहां पर बनी है वह जगह बैतुल मुक़द्दस और मस्जिद हराम मक्का के दरमियान है, इसकी वजह से उसमें क़िबले के तअय्युन (निर्धारण) का मसअला था, क्योंकि पिछली आसमानी शरीअत के मुताबिक अब तक क़िबला बैतुल मुक़द्दस की तरफ था, हुज़ूर सल्ल० और मुसलमान जब तक कोई नया हुक्म न आये उसी रूख के पाबन्द थे, अल्बत्ता काबा की पवित्रता की बिना पर उनका जी उसी को चाहता था, शायद इस लिये मस्जिदे हराम में हुज़ूर सल्ल० जब नमाज़ पढ़ते थे तो मस्जिदे हराम के दखिन ओर खड़े हो कर उत्तर

(1) सही बुख़ारी, किताबुल अज़ान, सीरत इब्ने हिशाम 1/508–509

www.abulhasanalinadwi.org

की दिशा अख्तियार करते थे इस तरह दोनों का रूख एक हो जाता था लेकिन यह यहां मदीने में मुमकिन नहीं था और क़िबले के लिये नया हुक्म नहीं आया था लिहाज़ा आप अपने से पहले आने वाले नबियों के इख्तियार किये हुये (अर्थात) बैतुल मुकद्दस का रूख इख्तियार फरमाते रहे उसमें काबे का रूख़ पीठ की ओर पड़ने लगा।

लेकिन आपकी ख़ुवाहिश काबतुल्लाह के रूख़ को इख्तियार करने की थी क्योंकि बैतुल मुकद्दस को मस्जिद व क़िबला बनाने वाले बाप हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ही काबे की तामीर (निमार्ण) की थी और इसको दीन व इबादत का सबसे बड़ा मरकज़ (केन्द्र) करार दिया था और उसकी अहमियत व अज़मत (महत्व व महिमा) के लिये दुआ की थी और उनके पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने भी इस जगह को इबादत की जगह बनाई थी इस तरह यह अल्लाह का सबसे पहला घर कहलाया और दुनिया का सबसे केन्द्रीय इबादत खाना बना जैसा कि खुद अल्लाह तआला ने फरमाया :

"पहला घर जो लोगों के इबादत करने के लिये मुकर्रर किया था वही है जो मक्के मे है बाबरकत और दुनिया के लिये हिदायत का ज़रिया (आले इमरानः ९६)"

इस तरह वह क़िबला बनने का मुसतहिक़ (पात्र) मालूम होता था लेकिन उसको क़िबला बनाने का जब तक खुदा की तरफ़ से आपको हुक्म न मिले आप सिर्फ अपनी ख़ुवाहिश पर अमल नहीं कर सकते थे, सिर्फ ख़ुवाहिश का इज़हार कर सकते थें चुनांचे आपकी ख़ुवाहिश को कुबूलियत मिली और बैतुल्लाह शरीफ़ को क़िबला बनाने का हुक्म १५ शअ़बान सन् २ हिजरी में आ गया।

यह देरी शायद मुसलमानों को अपनी ख़ुवाहिश और राय (मत) को कुछ समय तक दबाने का अभ्यास कराने के लिये थी, शायद इसी लिये हुक्म आने में ताख़ीर (देर) हुई, बहरहाल काबे को दोनों मस्जिदों अर्थात मस्जिद बैतुल मुकद्दस और मस्जिद नबवी से ज़्यादा अफ़ज़ल (सर्वोत्तम) क़रार दिया गया, हुक्म नाज़िल हुआ : "अपने चेहरे का रूख़ मस्जिद हराम की तरफ करो" यह हुक्म आपके मदीना तशरीफ लाने के एक साल चार माह बाद आया [1]इस बीच में आपने यहां से मस्जिद बैतुल मुकद्दस के रूख पर नमाज़ें अदा फरमायी।

यह बात यहूदियों को बुरी लगी क्योंकि वह अस्ल इबादतगाह होने का हक़ सिर्फ अपनी इबादतगाह बैतुल मुकद्दस समझते थे, लेकिन अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ हज़रत मुहम्मद सल्ल० को इस तरह शामिल (सम्मिलित) फरमा दिया कि दोनों की शरीअत एक शरीअत हो गई थी

---

(1) तब्क़ात इब्ने सअ़द 1/241.ज़ादुल मआ़द 3/66

www.abulhasanalinadwi.org

और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से बनीइस्राईल को हासिल शुदा खुसूसियत (प्राप्त की हुई विशेषता) बनीइस्राईल से हट कर मुहम्मद सल्ल० की तरफ मुनतकिल हो गई थी और काबे से तअल्लुक़ (संबंध) का मामला दोनों में यकसां (एक जैसा) था और अब दीनी रहबरी की विरासत हज़रत मुहम्मद सल्ल० की तरफ मुन्तकिल हो गई थी लिहाज़ा बैतुल मुक़द्दस की मरकज़ीयत (केन्द्रीयता) काबे की तरफ मुन्तकिल हो गई।

इस्लामी समाज की तशक़ील (संरचना)

हुज़ूर सल्ल० की तरफ से मदीने मुनव्वरः को अपने क़याम का ठिकाना बना लेने से मस्जिद नबवी को भी ऐहमियत मिली और मदीने शहर को भी इसी लिहाज़ से खुसूसियत (विशेषता) हासिल हो गई और वहां से मुसलमानों के मआमलात व मसाएल और उनकी मज़हबी व समाज़ी ज़िन्दगी का नज़्म व इन्तिज़ाम और हिदायात (आदेश) जारी होने लगीं और इस तरीके से इस्लामी कार्य व्यवस्था जारी होने का प्रबन्ध हो गया, और दोनों सामाजिक व नैतिक मआमलात के आदेश आने लगे, चूंकि इस्लामी शरीअत पिछले नबियों पर मुकम्मल (पूर्ण) नहीं की गयी थी और आप पर मुकम्मल की जाने वाली थी लिहाज़ा उसकी तकमील व जामीअत (पूर्ति व व्यापकता) के लिये ज़िन्दगी के नाना प्रकार और विभिन्न अवसरों के लिहाज़ से क्रमशः आदेश आना शुरू हुये, नमाज़ो का तअय्युन (नियुक्ति) रोज़ों की नियुक्ति, आज़ान की नियुक्ति, जुआ व शराब की हुरमत और ज़िन्दगी के मुखतलिफ (विभिन्न) पहलूओं के बारे में चाहे वह व्यक्तिगत क्षेत्र के हों या सामूहिक क्षेत्र के हों उनकी दुरस्तगी और अच्छाई के लिये सहूलत का लिहाज़ करते हुये हिदायात आने लगीं। इसी के साथ दोस्तों की दोस्ती, हलीफों के साथ समझौते की पाबन्दी और हमलावरों (आक्रमणकारियों) के साथ मुक़ाबले की इजाज़त, इंसानियत की भलाई का लिहाज़, ईमान वालों के आपसी तअल्लूक़ात और जो मसाएल पैदा होते हैं उन सबके अहकाम (आदेश) मौके मौके से क्रमशः दिये जाने लगे, जो क़ुरआन मजीद की आयात के ज़रीये और आप पर मुख्तलिफ तरीके से आने वाली "वही" (ईश्वरवाणी) के ज़रिये आते थे, और इस तरह ज़िन्दगी के सारे अहकाम, हालात और वाक़िआत का जो तकाज़ा होता उसके लिहाज से नाज़िल होते इस तरह उनकी अमली शक्ल लोगों के सामने आती रही और यह अहकाम (आदेश) सिर्फ ज़ाहरी तौर पर नहीं रहे बल्कि उनको अमली शकल (व्यवहारिक रूप) में भी बताया जाने लगा, मुसलमान उन पर अमल करते और उनको अपनी याददाशत (स्मरण शक्ति) में सुरक्षित कर लेते, जिनको बाद में किताबों में महफ़ूज़ (सुरक्षित) किया गया ताकि मुसलमानों की आइन्दा (आने वाली) ज़िन्दगीयों में जब और जहां ऐसी सूरत हो

www.abulhasanalinadwi.org

तो उसमें उनका अमल हो सके और उनको लागू किया जा सके और इस तरीके से इस्लाम भविश्य की ज़रूरतों के लिये मुकम्मल दीन और शरीअत की हैसियत से महफ़ूज़ (सुरक्षित) हो गया।

सुफ़्फ़ा और अस्हाबे सुफ़्फ़ा

क़िबले के बदलने के बाद जब मस्जिद नबवी का रूख बैतुल्लाह की तरफ हो गया तो क़िबला अव्वल की तरफ़ की दिवार और उसके क़रीब जो जगह एक चबूतरे के तौर पर थी वह उन मुसलमानों के ठहरने के लिये छोड़ दी गयी जो हुज़ूर सल्ल० से दीन की बातें मालूम करने और सीखने के लिये आकर ठहरना चाहते थे, चूनांचे वहां लोग ठहरने लगे, जिनके खाने पीने का इन्तिज़ाम हुज़ूर सल्ल० अपने घरवालों की तरह करते थे और हुज़ूर सल्ल० को अपनी सखावत (दानशीलता) और ग़रीबों की मदद करने की वजह से जब तब बड़ी दुश्वारी हो जाती थी और फक्र व फाक़ा की नौबत आ जाती थी, जिसको आप सल्ल० बर्दाश्त करते थे, और यह दीन सीखने वालों की संख्या कभी कभी ७० लोगों तक पहुंच जाती थी लेकिन इस तरह दीन की तालीम याफ़ता (शिक्षित) एक जमाअत तैयार हो गई यह जगह सुफ़्फ़ा के नाम से मशहूर थी [1]और यह इस्लाम का पहला मदरसा बना जो सिर्फ मुसलमानों का नहीं बल्कि अरबों में क़ायम होने वाला पहला मदरसा साबित हुआ जो सुफ़्फ़ा अर्थात चबूतरे के नाम से मौसूम (नामित) हुआ, यहीं से हुज़ूर सल्ल० से दीन के मसाएल और इस्लामी तालीमात (शिक्षा) हासिल करने का सिलसिला शुरू हुआ और फिर पूरी दुनिया में इस्लामी मदारिस क़ायम होते चले गये।

दअवत की राह में सब्र व बर्दाशत

हुज़ूर सल्ल० और आप पर ईमान लाने वाले असहाब को मक्के की जिन्दगी में कुफ़्फ़ार की ईज़ा रसानी से साबिका दरअसल अपने अज़ीज़ों और हम वतनों से ही पेश आया था और वह उनसे उमूमन एक ही खानदान के होने की बिना पर हिम्मत, ग़ैरत और एहसासे इज़्ज़त में कम न थे चाहते तो बदला लेने के ऐसे तरीके इख्तियार करते कि उनके चैन व सुकून को भी बाक़ी न रहने देते और दिन व रात में जब भी मौका मिलता तो बदला ले लिया करते लेकिन उनको हुक्मे इलाही था कि वह खामोशी के साथ सब्र व बर्दाशत और दावती काम तक अपने को महदूद (सीमित) रखें उनको हुक्म था कि अपने हाथों को रोके रखो और नमाज़ क़ायम करो [2] १३ साल तक यह सिलसिला रहा और

---

1 तब्क़ात इब्ने सअ़द 1/255–256

2 सीरते हलबिया 2/343

www.abulhasanalinadwi.org

आख़िर में वतन से भी निकलना पड़ा और दूसरी जगह हासिल हुई जहां एक अच्छी खासी तादाद (संख्या) में आबादी क़ायम हो गई और इजाज़त मिली कि अब मुसलसल (निरन्तर) बर्दाशत करने की ज़रूरत नहीं, अपनी हिफ़ाज़त और दुश्मन के हमले को रोकने के लिये ताकत इस्तेमाल हो सकती है[1] चूनांचे अब इसकी इजाज़त की बिना पर ज़रूरत के मुताबिक तद्बीरें (उपाय) इख्तियार करना शुरू कर दी गईं अलबत्ता इस सिलसिले में बेज़रूरत कार्यवाई से परहेज़ और ज़रूरत पड़ने पर इन्सानी वैल्यूज़ का लिहाज़, औरतों और बच्चों की रिआयत, अच्छा मामला और आमतौर पर भलाई की तलब सुलह जोई इख्तियार करने का हुक्म रहा, चूनांचे दुश्मन की दुश्मनी नाकाम होती रही और दावते इस्लामी में कामयाबी मिलती रही, जिसके नतिज़े में आप सल्ल० की वफ़ात से क़ब्ल ही पूरा जज़ीरतुल अरब (अरब प्रायद्वीप) आप सल्ल० की हिदायात (निर्देश) को मानने वाले और आप सल्ल० के प्रभुत्व को क़ुबूल करने वाला बन गया और मक्के के बड़े बड़े सूरमा जिन्होंने आप सल्ल० को हर तरीके से रोकने बल्कि ख़त्म करने की कोशिश की थी बिलआख़िर आपकी ताबेदारी में आ गये।

दअवते हक़ की तब्लीग़ के लिये ज़रूरी वसाएल (साधन) एख़्तियार करने की ताकीद

मदीना मुनव्वरह में मुसलमानों को जब बाक़ाएदा मुआशरा (समाज) क़ायम करने का मौक़ा हासिल हो गया और उनमें यह सलाहियत (क्षमता) पैदा हो गई कि अब वह अपने दुशमन की ज़ालिमाना कार्यवाइयों को ताक़त के ज़रिये रोक सकते हैं और इसकी इजाज़त मिल गई कि अगर दुशमन मुसल्लह तसादुम (सशस्त्र टकराव) का प्रोग्राम बनाए तो उसके मुक़ाबिले के लिये ज़रूरत की हद तक मुसल्लह तद्बीर (सशस्त्र उपाय) एख़्तियार कर सकते हैं तो उनकी इस्लामी ज़िन्दगी के लिये वह मरहला (स्टेज) आ गया कि वह व्यक्तिगत रूप से नहीं बल्कि सामूहिक रूप से सामाजिक व्यवस्था की स्थापना का प्रबंध करें, क्योंकि इस्लाम धर्म में जिस प्रकार व्यक्तिगत जीवन के लिये आदेश रखे गये हैं उसी प्रकार सामाजिक जीवन के लिये भी आदेश और कार्यक्रम रखा गया है, उसके सिद्धान्त और मौलिक आदेश तो पिछली क़ौमो के नबीयों के ज़माने में भी जारी रहे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सरकरदगी और रहनुमाई (नेतृत्व और मार्गदर्शन) में मुसलमानों की इस सिलसिले के अहकाम (आदेश) ज़रूरत की मुताबिक़ थोड़े थोड़े आप सल्ल० की मुबारक ज़िन्दगी के दौरान अता (प्रदान) किये जाते रहे यहां तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाक ज़िन्दगी के आख़िरी साल में वह तकमील (परिपूर्णता) तक पहुंचा दिये गएं।

---

1 ज़ादुल मआद 3/70

www.abulhasanalinadwi.org

मक्की ज़िन्दगी चुंकि परेशानी और अकेलेपन की थी इस लिये उसमें सिर्फ उसी हद तक ज़िन्दगी के अहकाम आए, लेकिन अब जबकि मुसलमानों को मदीना आकर सामाजिक जीवन प्राप्त हो गया और हुक्त लागू करने की शक्ति हासिल हो गई तो अब उन की ज़रूरत के अहकाम (आदेश) भी अता कर दिये गए, जिनका सरकिल तमाम सामाजिक पहलुओं तक फैला हुआ था, लिहाज़ा हुक्म था कि उसके तहत (अन्तर्गत) अब यह व्यक्तिगत आवश्यकता की हद तक ही नहीं बल्कि पूरा इन्सानी समाज अपनी परवरदिगार की मर्ज़ी के मुताबिक़ जीवन व्यवस्था अपनाने की शुरूआत कर दे जो मक्के के क़याम के ज़माने में विस्तार पूर्वक क़ाबिले अमल नहीं हो सकता था, लेकिन अब मदीना पहुंच कर उस पर अमल मुमकिन हो सका और चुंकि मुसलमानों का मुआमला अमली ज़िन्दग़ी का व्यक्तिगत सुधार से बढ़कर सामाजिक सुधार की ज़रूरत तक पहुंच गया, लिहाज़ा अब मुसलमानों की कोशिशों को उसके मुताबिक करने का हुक्म हुआ और मदीने में मुसलमानों को जो इजतिमाई ताकत (सामूहिक शक्ति) हासिल हो गई थी, उस ताक़त को अपने ख़ैर पसन्द दीनी मक़ासिद (उद्देश्य) के काम में लाने के साथ साथ अपनी सुरक्षा और दीने हक़ की मदद के लिये इस्तेमाल करने की इजाज़त भी दे दी गई और जब दुश्मन बाक़ाएदा कार्यवाई पर आ गया तो उसके मुकाबले के लिये बाक़ाएदा ताक़त के इस्तेमाल की इजाज़त दे दी गई, दुश्मन के ज़ुल्म व सख़्ती का १३ साल सब्र व इस्तिक़ामत (दृढ़ता) के साथ झेल ले जाने पर अल्लाह तआला की तरफ से उनकी मज़लूमियत (उत्पीड़ित्ता) को तस्लीम शुदा हक़ीक़त क़रार दे दिया गया और उनको मज़लूम की हैसियत से मदद का हक़दार करार दे दिया गया अर्थात वह अब मुक़ाबला कर सकते हैं, फरमान आया कि :

"अल्लाह की तरफ से उन लोगों के लिये इजाज़त हो गई जिन से जंग की जा रही है कि वह मज़लूम हैं और अल्लाह तआला उनकी मदद पर पूरी तरह क़ादिर है।" (अलहज : **39**)

इससे उनको मुसल्लह तरीके से मुक़ाबला करने की इजाज़त मिल गई और जब दुश्मन की तरफ से मुसल्लह कार्यवाई ज़ोर व कुव्वत से होने लगी तो मुक़ाबला करने की बाक़ाएदा ताकीद (आग्रह) आ गई :-

"और उनसे जंग करो ताकि इस ज़मीन पर फित्ना व फ़साद न हो और (मुल्क में) ख़ुदा ही का दीन हो जाये।" (बक़रह : **193**)

और इसकी मसलहत (आवश्यकता) बताई गयी कि :

"अगर इंसानों को अल्लाह एक दूसरे में ज़ोर से हटाता न रहता तो ज़मीन फ़साद से भर जाती लेकिन अल्लाह तो जहान के लोगों पर फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है।" (सूरह : बक़रह :**251**)

www.abulhasanalinadwi.org

बात यह थी कि मुसलमानों के मदीने मुनव्वरह पहुंच कर संयुक्त और इकट्ठा हो जाने पर मुसलमानों को मक्के के कुफ़्फ़ार ज़्यादा नागवारी और तशवीश (चिंता) की नज़र से देखने लगे थे और मदीना पहुंच कर उनको कुचल देने की तदबीरें (उपाय) तैयार करने लगे और इस सिलसिले में जो मुसल्लह इक़दाम (सशस्त्र उपाय) काबिले अमल महसूस करते उसको इख्तियार करने की तरकीबें करने लगे थे लिहाज़ा मुसलमानों की तरफ से उनको यह महसूस करा देना ज़रूरी हुआ कि अब उनको मक्के के ज़माने का मुसलमान न समझें, वह अब अपने खिलाफ़ ज़्यादतियों को बर्दाश्त नहीं करेंगे, चुंमाचे हुज़ूर सल्ल० ने शुरू शुरू में मुसलमानों मे छोटे छोटे मुसल्लह दस्ते "सरये" के नाम से ऐसी विभिन्न दिशाओं में भेजने शुरू किये जहां से रेशा दवानी (षडयंत्र) का ख़तरा महसूस किया, यह ज़्यादातर मदीने मुनव्वरह के क़रीब के इलाक़ों पर नज़र रखने और कुरैश की कार्यवाईयों के ख़तरे को महसूस करने पर था और इस तरह दुश्मनों को यह महसूस कराना था कि मुसलमान ग़ाफिल (असावधान) नहीं हैं और दुश्मन की कार्यवाईयों पर नज़र रखे हुये है और वह अब ख़ामोशी से बर्दाशत नहीं करेंगे, लिहाज़ा कोई धोके में न रहे।

मुसलमानों को फ़ौजी टकराव से पहला सामना

इसी को सामने रखते हुये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने की विभिन्न दिशाओं में "सराया" दस्ते भेजे जिनको सिर्फ हालात मालूम करने और इस बात का इज़हार करने की इजाज़त दी गई कि दुश्मन को सिर्फ एहसास हो जाये कि मुसलमान अब कमज़ोर नहीं और वह ताक़त का मुक़ाबला ताकत से करने में कोताही न करेंगे, इसके लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबसे पहले यह तरीक़ा इख्तियार किया कि कुरैश की चलत फिरत मालूम की जाती रहे और उनकी तरफ से किसी कार्यवाई के इमकान (सम्भावना) को नज़र में रखा जाये, मदीने से क़रीब साहिली इलाक़ा (तटवर्ती क्षेत्र) मक्के और शाम के बीच आने जाने वाले काफिलों का रास्ता था, कुरैश को काबे के मुतवल्ली (ट्रस्टी) होने की वजह से हर जगह शन्तिपूर्वक आने जाने की सहूलत हासिल थी, वह सहूलत उनको उस रास्ते पर भी हासिल थी, वह क़बीला उनसे छेड़छाड़ नहीं करता था, इस लिये कुरैश के क़ाफिले बेखतर उत्तर दखिन को व्यापारिक उद्देश्य से आते जाते थे और यह विशिष्टता सिर्फ कुरैश को हासिल थी, वरना अरबों का तरीका यह था कि कोई क़बीला किसी दूसरे कबीले के किसी आदमी को अपने इलाके से बिला इजाज़त गुज़रने नहीं देता था और कोई ज़बरदस्ती करे तो उससे बाकाएदा लड़ाई की नौबत आती थी, इस तरह इलाके के लोग दूसरे इलाके के किसी प्रभावशाली शख्स की पनाह (शरण) हासिल करके ही गुज़रते थे।

www.abulhasanalinadwi.org

मदीना अब मुसलमानों का इलाका हो गया था, यह मुसलमान बहुत से कुरैशी भी थे, जिनकों कुरैश ने इतना परेशान किया था कि उनको अपना माल व मता सब छोड़ कर मक्के से निकलना पड़ा था और वह मदीने में लुटे पिटे पहुंचे थे, उनकी जायदादों और माल व मता पर उनके दुश्मन कुरैशीयों ने कब्ज़ा कर लिया था और उससे अपनी माली हैसियत बढ़ा ली थी और फिर उसी माल को अपनी ताकत में इस्तेमाल करने लगे थे, लिहाज़ा मदीना पहुचं कर मुसलमानों ने अपने पेशे नज़र यह भी रखा कि कुरैश की जमाअतें उन इलाकों से गुज़रें तो उनसे अपना छीना माल हासिल करने की कोशिश की जाये जो कुरैश के काफिरों ने अपने कब्ज़े में ले लिया था और उसके उनके छीने जाने से मुसलमान परदेस में होने के साथ साथ सख्त माली परेशानी मे थे और कुरैश उस माल से भी अपनी तिजारत को मजबूत कर रहे थे। लिहाज़ा मुसलमानों को जब यह इत्तिला मिली कि कुरैश की एक जमाअत मुसलमानों के दुश्मने अव्वल अबूजहल की सरकर्दगी में व्यापार के नाम से सफर करते हुये मुसलमानों के इलाके से गुज़र रही है तो उसको समझने के लिये मुसलमानों का एक गुरूप गया लेकिन वह उस वक्त तक वहां से गुज़र चुके थे इस लिये आमना सामना नहीं हुआ लेकिन जब कुरैश की यह जमाअत तिजारती माल लेकर वापस लौटी तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको चेक करने के लिये **30** नौजवानों को समुन्द्री रास्ते की तरफ रवाना किया और हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब को उसका अमीर बनाया, मुसलमानों का वहां पहुंच कर उस जमाअत से सामना भी हुआ और टकराव की नौबत आने के करीब हो गई थी कि कबील-ए- जुहैना के एक शख्स ने जिसका संबंध दोनों फरीकों से था बात चीत करके टकराव से बचा लिया यह वाकिआ (घटना) हिजरत से छः माह बाद का है[1] दूसरा वाकिआ (घटना) हिजरत के आठवें महीने पेश आया आपको मक्के और मदीने के बीच दुश्मन के **200** जवानों के "राबिग" के मकाम पर जमा होने की ख़बर मिली तो आपने उबैदा बिन हारिस की सरदारी में लगभग **60—70** मुसलमान नौजवानों को मालूमात हासिल करने के लिये भेजा, यहां एक हल्की टक्कर हुई, लेकिन बाकाएदा जंग नहीं [2] इसी तरह हिजरत के नवें महीने आपको इत्तिला मिली कि "खराज़"[3] के मुकाम पर कुरैश की एक जमाअत इकट्ठी हो रही है, उसके लिये आपने हज़रत

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1/596, अल—बिदाया वन—निहाया 3/234, अस्सीरतुन नबविया इमाम ज़हबी 2/46, अल—कामिल फ़ित्तारीख़ 2/110
(2) सीरत इब्ने हिशाम 1/595,
(3) मोजमुल 2/350

www.abulhasanalinadwi.org

सअद बिन अबी वक्कास की सरकरदगी में मुसलमानों के 20 सवारों के एक दस्ते को भेजा। मुसलमानों के वहां पहुंचने से पहले ही कुरैश के लोग वहां से भाग गये, लिहाज़ा वह हज़रात वापस आ गये [1]।

फिर "वद्दान" के मुकाम पर कुरैश के जमा होने की इत्तिला मिली चूनांचि आप सल्ल० ने हज़रत सअद बिन उबादा को मदीने में अपना नाएब बना कर खुद तशरीफ ले गये[2] , वहां भी आपके पहुंचने से पहले वह लोग वहां से भाग गये, फिर १७वें महीने "बुवात" के इलाके में कुरैश की एक जमाअत के पहुंचने की इत्तिला मिली वहां भी आप तशरीफ ले गये, लेकिन दुश्मन पहले ही वापस जा चुका था और आमना सामना होने की नौबत नहीं आई[3] , उसी महीने दुश्मनों में से एक जमाअत ने उमर बिन जाबिर फ़हरी की सरबराही में ज़ाती तौर पर मदीने मुनव्वरह के आसपास के इलाके मे पहुंच गई और लूटमार मचाई और उसका पीछा करने के लिये आप स०अ० को मुसलमानों की एक जमाअत लेकर तशरीफ ले जाना पड़ा और आपने बदर के क़रीब तक उसका पीछा किया लेकिन वह और उसके साथी इतने दूर चले गये थें कि नहीं मिल सकते थे, इस वाक़िए का नाम "गज़व-ए-सफ़वान" पड़ा।

गज़व-ए-बदर, कुफ़्फ़ार और मुसलमानों के बीच पहला युद्ध

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को १६वें महीने यह ख़बर मिली कि कुरैश की एक जमाअत शाम के रास्ते पर जा रही है जो कुफ़्फ़ार के जंगी नेता अबू सुफ़यान के नेतृत्व में है और कुरैश की ताकत को बढ़ाने का सामान करने की नीयत रखती है, आप सल्ल० ने एक जमाअत के साथ उसका पीछा किया और "यंबू" के करीब एक मुकाम तक पहुंच गये लेकिन वह लोग आप सल्ल० के पहुंचने से पहले निकल गये। उसी जमाअत के जब शाम से वापस होने की आप सल्ल० को इत्तिला मिली तो आप सल्ल० उसका पीछा करने के लिये मुसलमानों की एक तादाद (संख्या) ले कर निकले, आपके निकलने की इत्तिला मिलने पर कुरैश की एक जमाअत ने फौरन मक्का इत्तिला भेज दी और वहां से खुसूसी मदद तलब की, मुसलमान उनका पीछा करने में "बदर" के करीब तक पहुंचे, वह जमाअत उनके पहुंचने तक वहां से आगे निकल चुकी थी, मुसलमान वापस मदीना आने का इरादा कर रहे थे कि आपको इत्तिला मिली कि मक्के वालों ने

---

(1) अल-बिदाया वन-निहाया 3/234,
(2) अल-कामिल फित्तारीख 2/113
(3) अर-रौज़ुल अनफ़ 3/27, मोजमुल बुलदान 1/503, अस्सीरतुल नबविया, इमाम ज़हबी 2/47, अलबिदाया वन-निहाया 3/246

www.abulhasanalinadwi.org

मुसलमानों से बाकाएदा जंग के इरादे से जबरदस्त तैयारी के साथ फौज रवाना कर दी, आप सल्ल० ने अपने साथियों से मशवरा (परामर्श) किया आपके साथ सिर्फ ३१३ लोग थे जो हकीकत मे कुरैश की शाम जाने वाली जमाअत के लिये काफी समझते हुये साथ ले लिये गये थे, बाकाएदा लड़ाई की नीयत से नहीं लाये गये थे और अब चुंकि दुश्मन की बाकाएदा फौज की आमद का मसला (समस्या) आ गया था तो मशवरे की ज़रूरत थी कि आया कुरैश की आने वाली फौज का सामना किया जाये, ताकि यह न समझा जाये कि मुसलमानों ने बुज़दिली (कायरता) दिखाई और रणभूमि से भाग गये या उनके पहुंचने से पहले ही मदीना जल्दी लौट जाया जाये ताकि बाकाएदा जंग की ज़रूरत न पड़े, लेकिन मशवरा यहीं हुआ कि अब जब कि दुश्मन बाकाएदा लड़ने के लिये आ रहा है तो यहां से लौट जाना फरार (भागना) समझा जायेगा और ज़िल्लत (अपमान) होगी, लिहाज़ा अब जो हो सो हो, उसको देख लिया जाये यही वाकिआ "बदर" का वाक़िआ कहलाया, जो बाकाएदा भरपूर जंग की सूरत मे पेश आया[1] कुरैश की ताकत पूरी तरह मुसल्लह (सशस्त्र) थी और एक हज़ार के लगभग फौज थी और मुसलमानों की तादाद (संख्या) उनके मुकाबले में एक तिहाई थी लेकिन मुसलमानों को अल्लाह तआला की तरफ से नुसरत व मदद पर भरोसा था, बहरहाल दुश्मन अपनी ज़बरदस्त फौज लेकर पहुंच गया और मुकाबला हुआ और मुसलमान अगरचे उसके मुकाबले में एक तिहाई थे लेकिन हैरतअंगेज़ (आश्चर्यजनक) तरीके से कामयाब हुये और कुरैश को शिकस्त (पराजय) का सामना करना पड़ा, इस मअ़रके ने मुसलमानों की इज्ज़त बहुत बढ़ा दी और मुसलमानों को एक बेसहारा और कमज़ोर क़ौम समझने का ख़याल बदल गया और इससे मुसलमानों की ताकत का अंदाज़ा कुरैश और कुर्ब व जवार के लोगों को हो गया।

बदर की इस जंग के सिलसिले में इस एक वाक़िए का तज़किरा (वर्णन) भी क़ाबिल ज़िक्र है कि बदर के इस मअरके (संग्राम) से बहुत पहले आप सल्ल० को कुरैश के कुछ लोगों की नक्ल व हरकत (चलत फिरत) की इत्तिला मुकामे नख़ला में मिली थी और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वहां अब्दुल्लाह बिन जहश को 12 आदमियो के साथ रवाना किया था, कि सिर्फ मालूमात हासिल करके आ जायें, वहां पहुंचने पर कुरैश के एक काफ़िले से उनका सामना हुआ था और टकराव की नौबत आई थी उसमे कुरैश का एक आदमी अमर बिन हज़रमी मारा गया[2], यह वाकिआ रजब की आखिरी तारीख में पेश आया था

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1/606, सीरत इब्ने इसहाक़ 1/383–387, ज़ादुल मआद 3/342

(2) अर–रौज़ल अनफ़ 3/28–29, अल–बिदाया वन–निहाया 3/248–252, सीरत इब्ने हिशाम 1/601–605

www.abulhasanalinadwi.org

और रजब में जंग करना ममनूअ (वर्जित) समझा जाता था, लिहाज़ा कुरैश ने इस महीने की बेहुरमती (अपमान) क़रार दिया और उससे मुसलमानों के खिलाफ प्रोपगन्डा करने और बदला लेने के लिये उभारने और उत्तेजित करने का मौका मिल गया था, जिसके ज़रिये जंग की मंसूबा बन्दी शुरू कर दी थी और इसी वाकिए के नाम से मुसलमानों से जंग करने के लिये बाकाएदा कार्यवाई पर आमादा किया और जंग के लिये तमाम कुरैशी लोगों को उभारा और उकसाया और इस तरह मज़बूत फौज तैयार करके मदीने का रूख किया और बदर पहुंच कर मुसलमानों से जंग की, लेकिन उनकी यह शर पसंदी (उपद्रव अभिरूची) स्वयं उनके लिये उलटी पड़ी और अल्लाह तआला की मदद से मुसलमानों को ही कामयाबी मिली।

यह एक ऐतिहासिक युद्ध उपरोक्त स्थान "नख़्ला" के वाकिए के दो माह पश्चात और हिजरत के दूसरे साल **17** रमज़ान जुमअः के दिन पेश आया।

जंग बदर का संक्षिप्त वर्णन

जंग का वाकिया इस तरह पेश आया कि मुकाम "बदर" मदीने से दक्खिन में लगभग डेढ़ सौ किलो मीटर के फासले पर पहाड़ों के दरमियान (मध्य) एक मैदान था, उसमें एक कुंवा था और असलन बदर उसी कुऐं का नाम था, उसी के पच्छिमी रूख (दिशा) पर क़रीब ही से मक्के का रास्ता शाम की तरफ जाता था और तमाम काफिले उसी रास्ते से आते जाते थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुरैश के काफिले को रोकने के लिए उसी बदर के क़रीब तक ही पहुंचे थे कि खबर मिली कि दुश्मन का वह काफिला तो आगे निकल गया और उसी के साथ मालूम हुआ कि मक्का के कुफ़्फ़ार फौज बना कर लड़ने के लिये रवाना हो चुके हैं, आप सल्ल० ने अपने सभी मुहाजिरीन व अंसार दोनों से राय मालूम की जवाब में सबकी राय मुकाबला करने की हुई, लिहाज़ा आप सल्ल० ठहर गये, जब कुरैश की फौज आ गई तो मैदान के अच्छे हिस्से मे आकर ठहरी, मुसलमान उनके मुकाबले में एक तिहाई थे और सामाने जंग भी बहुत कम था लेकिन मसअला मुसलमानों के इस्लाम के बाक़ी रहने का था, अगर कुफ़्फ़ार खुदा न ख्वास्ता कामयाब होते हैं तो मुसलमान सफ़ह-ए-हस्ती से मिट जायेगा, क्योंकि मुसलमानों की जो असल ताकत थी वह यही थी।

मुसलमानों ने बदर के एक बुलन्द मुकाम पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये एक ख़ेमा खड़ा कर दिया था जहां से पूरा मअरक-ए-बदर नज़र आता था, उसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रज़ि० तशरीफ रखते थे और हज़रत सअद बिन अबी वक्कास मुसल्लह होकर उसके सामने पहरा दे रहे थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

www.abulhasanalinadwi.org

हिफाजत कर रहे थे, हुजूर सल्ल० ने अपना सर ज़मीन पर डाल दिया था और रोते जाते थे और कहते जाते थे कि "ऐ परवरदिगार अगर यह छोटी जमाअत खत्म हो गई तो तेरी इबादत करने वाला कोई नहीं रह जायेगा" इब्न इस्हाक की रवायत है कि सबसे पहले कुफ़्फ़ार की तरफ से असवद बिन अब्दुल्लाह अल असद ने मुसलमानों के हौज़ पर हमला किया लेकिन मारा गया लेकिन फिर वलीद बिन उतबा, उतबा बिन रबीअः और शैबा बिन रबीअः सफ से निकले और मुकाबला करने के लिये मुसलमानों को ललकारा चुनांचे इधर से हज़रत अली, हज़रत हम्ज़ा, हज़रत उबैदा बिन हारिस आगे बढ़े मुकाबला हुआ और उनके हाथों से वह तीनों काफिर मारे गये अलबत्ता मुजाहिदीन में से हज़रत उबैदा ज़ख्मी हो गए उनका पैर कट गया था जिसके असर से फतह के बाद लौटते वक्त मकाम "सफरा" पर उन्होने वफात पाई।

मज़कूरह बाला (उपरोक्त) काफिरों के मारे जाने के बाद आम हमला हो गया, मुसलमानों की तरफ से पहले पहले हज़रत उमर बिन ख़त्ताब के ग़ुलाम "महजअ़" एक तीर लगने से शहीद हो गये फिर हारिस बिन सुराका अन्सारी, हौज़ से पानी पी रहे थे कि एक तीर लगा और शहीद हो गये, हज़रत उमैर बिन हम्माम ने एक ज़ोर का हमला किया और शहीद हो गये।

जंग बड़े ज़ोर की हो रही थी और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुआ में मशगूल थे, इसतिग़राक़ (लिप्तता) का यह आलम था कि चादर मुबारक कन्धे से गिर गई और आप सल्ल० गिरया व ज़ारी (रो रो कर दुआ़ करना) में मशगूल थे, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक ने चादर कन्धे पर ठीक कर दी, आप सल्ल० ने इसी आलमे कैफ़ (आत्मविस्मृति) में एक मुट्ठी संगरेज़े (कंकरियाँ) ज़मीन से उठाऐ और उस पर दम किया और कुरैश की तरफ फ़ेंका। कुफ़्फ़ार अपनी आंखें मलने लगे, इससे उनके हमले पर असर पड़ा और मुसलमान भारी पड़ने लगे और ग़ालिब आते गये, इसी के बारे में अल्लाह तआला फरमाते हैं : "जब तुमने संगरेज़े फेंके तो तुमने नहीं फेंके बल्कि खुदा ने फेंके अर्थात अल्लाह तआला ने ही उसमें यह असर पैदा किया"। इसी के साथ अल्लाह तआला की मदद फरिश्तों के ज़रिये भी हुई, उन्होने मुसलमानों के भेस में आकर बाकाएदा जंग में शिरकत की और कुफ़्फ़ार को सख्त मार मारी अलग़रज़ थोड़ी देर में लड़ाई का रंग बदल गया और मुसलमानों को नुमायां फतह (खुली जीत) हासिल हुई, कुफ़्फ़ार के बड़े बड़े सरदार मारे गये, बाक़ी में मुसलमानों ने गिरफ्तारियाँ

www.abulhasanalinadwi.org

शुरू कर दी और बहुतों की मुश्कें बांध लीं और मुसलमान फतह (जीत) से सम्मानित हुये।[1]

यह मुसलमानों की कुफ़्फ़ार से पहली जंग थी, मुसलमान कम तादाद (संख्या) में थे और पहले से ऐसी जंग के तजुरबे (अनुभव) के बग़ैर और अपने से कई गुना तजुरबेकार फौज से मुकाबले पर आये थे और ज़बरदस्त फतह (जीत) हालिस की, कुफ़्फ़ार का यह हाल हुआ कि भागना चाहते थे और पनाह न मिलती थी।

दुश्मनों का अंजाम (परिणाम)

जंग के दौरान दो कम उम्र नौ जवानों ने जो अन्सारी थे और अभी लड़कपन में ही थे अपने एक बड़े से पूछा : चचा यह अबू जहल जो हमारे नबी का बड़ा बदबातिन (दुश्टहृदय) दुश्मन है कहां है? ज़रा उसको दिखाईये, उन्होंने कहां : देखो वह खड़ा है यह सुनते ही दोनो तेज़ी से झपटे और उसपर टूट पड़े और वह ज़बरदस्त और गुरूर वाला दुश्मन छोटे बच्चों के हाथ मारा गया, मारे जाने के बाद वह गिरा पड़ा था कि उस शख्स ने उसको देखा अभी जान बाक़ी थी, उसकी गर्दन पर पैर रखा और कहने लगा जानते हो तुम किस पर पैर रख रहे हो? यह बड़े सरदार की गर्दन है और यह गुरूर वाली बात करते करते मर गया।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जानना चाहते थे कि आपके अस्ल दुश्मन का क्या हाल हुआ, जो कुफ्र के साथ आपसे हसद (ईर्ष्या) भी रखता था, फरमाया कि कोई अबूजहल की खबर लाये अबूजहल वह शख्स था जो हुजूर सल्ल० की दुश्मनी में सबसे आगे था और आप सल्ल० को खत्म करने की कोशिश में कोई कसर नहीं छोड़ी थी और इस जंग की क़यादत (नेतृत्व) भी वही कर रहा था, थोड़ी देर मे हुजूर सल्ल० के पास उसका सर आया और खबर दी गई कि वह कत्ल कर दिया गया, आप सल्ल० ने कहा : "अल्लाह सबसे बड़ा है सारी तारीफ (प्रशंसा) उसी के लिये है उसने अपना वादा सच कर दिखाया और अपने बन्दे की मदद की और उसने तन्हा (दुश्मन के) गिरोहों को शिकस्त (पराजय)दी" उसके बाद फरमाया : उसका सर हमें दिखाओ, जब आप सल्ल० ने देखा तो फरमाया : यह इस उम्मत का फिरऔन था।[2]

जंग के खात्में पर देखा गया कि कुफ़्फ़ार 70 की तादाद में मारे गये थे और उनके बड़े बड़े सरदार जंग में काम आये और उनकी लाशें बदर के कुंऐ में

---

(1) अलबिदाया वन–निहाया 3/256–303, अस्सीरतुन नबविया, इमाम ज़हबी 1/50–60, ज़ादुल मआद 3/171–188

(2) ज़ादुल मआद 3/185, सही बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, सही मुस्लिम किताबुल जिहाद, बाब कत्ल अबी जहल।

www.abulhasanalinadwi.org

डाल दी गईं, आप सल्ल० कुफ़ार की नअ़शों के सामने खड़े हुये और फरमाया कि : "कैसे बुरे रिश्तेदार अपने नबी के तुम लोग थे, तुमने हमें झुटलाया और दुसरों ने तसदीक़ की, तुमने हमें ज़लील किया और दूसरों ने मदद दी, तुम लोगों ने हमको हमारे घर और वतन से निकाल दिया दूसरों ने पनाह दी।"[1]

मारे गये कुफ़्फ़ार की तादाद के मुकाबले में मुसलमान शहीदों की तादाद बहुत कम थी, वह सिर्फ १४ की तादाद में शहीद हुये जिनमें छः मुहाजिर और बाक़ी अन्सार थे[2] और बाक़ी कामयाब वापस हुये, बदर की जंग में नुसरते दीन और तलबे रज़ाऐ इलाही के जिस आम मुखलिसाना जज़्बे (निःस्वार्थ भावना) से मुसलमान शरीक हुऐ थे उसकी क़बुलियत में बदर में शरीक होने वाले लोगों के अगले पिछले गुनाहों की भी अल्लाह तआला की तरफ से मआफी दे दी गयी और इस तरह उनका दर्जा बहुत बढ़ा दिया गया।

क़ैदियो के साथ बर्ताव

दुश्मन के जो लोग क़ैद हो कर आये, हुजूर सल्ल० ने अपने असहाब से मशविरा करके यह तय फरमाया कि फिदया (प्राण मूल्य) ले कर उनकों छोड़ दिया जाये इस पर अल्लाह तआला की तरफ से इज़हार फरमाया गया कि यह दुश्मन गर्दन मार देने के क़ाबिल थे उनका छोड़ना ठीक नहीं था, लेकिन अब ऐसा कर लिया गया तो इस पर कोई पकड़ नहीं और अल्लाह तआला की तरफ से अब इसी में ख़ैर होगी।

जंग खत्म होने के बाद हुजूर स०अ० की तरफ से कुफ़्फ़ार के जंगी क़ैदियों के साथ जैसी ज़रूरत हुई वैसा सुलूक किया गया, इस्लाम के साथ उनमें से किसी की दुश्मनी शदीद (उग्र) और आइंदा के लिये खतरनाक मालूम हुई तो उसको कत्ल किया गया और दूसरो को फिदये में माल लेकर छोड़ दिया गया, और वह माल आम इस्लामी ज़रूरतों में सर्फ किया गया, जो मुसलमानों के काम आया, चूनांचे किसी को मुसलमान क़ैदी के बदले में छोड़ा, किसी को यूंही बिला किसी बदले के ही बतौर रहम छोड़ दिया। अक़बा और नज़र बिन हारिस कत्ल कर दिये गये, गिरफ़्तार किये हुये फ़ौजी मदीना लाये गये, उनमें हज़रत अब्बास, अक़ील (हज़रत अली के भाई) अबुल आस (आंहज़रत सल्ल० के दामाद) भी थे, उनको भी फिदया लेकर रिहाई दी गयी। उनमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब रज़ि० के शौहर अबुलआस बिन रबी जो उस वक़्त तक काफिर थे और जंग में लोगों के दबाव से शरीक हो गये थे गिरफ़्तार

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1/639, जादुल मआद 3/187.
(2) ज़ादुल मआद 3/188

www.abulhasanalinadwi.org

हो कर पेश हुऐ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको "फिदया" अर्थात तावान ले कर छोड़ने की इजाज़त दी, उनके पास तावान देने के लिये कुछ नहीं था, उन्होंने अपनी बीवी के कंगन तावान में पेश किये थे, जो आप सल्ल० को निकाह के वक्त उनकी वालिदा हज़रत खदीजा रज़ि० ने दिये थे और वह उनके पास अपनी महबूब माँ की यादगार थे, जब वह कंगन आपके सामने आये तो आपको अपनी महबूब और हमदर्दतरीन बीवी याद आ गयीं और आपकी तबीअत पर असर पड़ा, आप सल्ल० ने मुसलमानों से कहा : अगर तुम लोग चाहों तो इजाज़त दो तो यह कंगन बेटी को वापस कर दिये जायें सबने खुशी से इजाज़त दी, आपके यह दामाद इतने मुतअ़स्सिर (प्रभावित) हुऐ कि दिल मे ईमान उतर गया, लेकिन उन पर मक्के के लोगों की कुछ ज़िम्मेदारियाँ थी इसके लिये मक्का गये और वापस आकर मुसलमान हो गये।[1]

इनके अलावा और कई ऐसे थे जिनके पास देने का कुछ न था, आप सल्ल० ने फरमाया कि इनमे जो पढ़े लिखे हैं वह मुसलमानों को पढ़ना लिखना सिखा दें यह उनकी तरफ से फिदया होगा।[2]

बदर के वाक़िऐ के बाद

गज़्व-ए-बदर के बाद लगभग एक साल की मुद्दत के बीच कई मौके ऐसे आये कि आप सल्ल० ने क़रीब की किसी जगह पर दुश्मनों के जमा होने की खबर सुनी और आप वहां मुजाहिदीन के साथ तशरीफ ले गये या मुसलमानों की जमाअत को भेजा या किसी वाक़िये की रोकथाम का कोई और इंतिज़ाम फरमाया लेकिन आमतौर पर ऐसे मौको पर जंग की नौबत नहीं आई, इसमें ख़ास तौर पर ग़ज़्व-ए-बनी सलीम, ग़ज़्व-ए-सवीक़, ग़ज़्व-ए-बनी ग़तफान और ग़ज़्व-ए-नजरान क़ाबिल ज़िक्र हैं, जिनमें किसी में जंग की नौबत नहीं आई और दुश्मन पहले ही से मैदान से हट गया।

यहूदियों की अहद शिकनी (प्रतिज्ञाभंग)

मुसलमानों के मरकज़ (केन्द्र) मदीने मुनव्वरह में रहने वाले यहूदी कबाएल से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का समझौता था कि वह बाहरी ताकत से टकराव पेश आने की सूरत में मुसलमानों के खिलाफ दुश्मन का साथ नहीं देंगे लेकिन उन्होंने इसकी पाबन्दी नहीं की बल्कि खुफिया तरीके से दुश्मन को मदीने पर हमला करने पर उकसाया, और उनसे अपने शरीक जंग होने या

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1/650–653

(2) ग़ज़्वा बद्र की तफ़सील के लिये मुलाहिज़ा करें: बुखारी शरीफ किताबुल मग़ाज़ी, सही मुस्लिम किताबुल जिहाद वससियर, सीरत इब्ने हिशाम जिल्द 1, तारीख तबरी 2/421–479

www.abulhasanalinadwi.org

दूसरे तरीके से मदद का वादा किया, यह मुआहिदे (समझौते) की खिलाफवर्ज़ी थी, इस सिलसिले में बनू क़ीनक़अ़ खास तौर पर मूलव्विस (लिप्त) साबित हुये चूनांचे आप सल्ल० ने उनके खिलाफ कार्यवाई की, और कअब बिन अशरफ जो बड़ा सरगना था और खुल कर मुसलमानों के खिलाफ साज़िश करता रहा था उसको सज़ा दी गयी और उसको खत्म कर दिया गया।[1]

कुफ़्फ़ार के मुकाबले मे मुसलमानों की बरतरी (उच्चता) साबित होने के बावजूद कुफ़्फ़ार की तरफ से दुश्मनी की तद्बीरें (उपाय) जारी रहीं और साज़िशों और जंगों की प्लानिंग का सिलसिला जारी रहा। इस तरह मुसलमानों को कुछ कुछ अरसे से मुकाबला करना पड़ जाता था, लेकिन यह आमतौर पर छोटे छोटे वाकिआत थे, जिनका मुसलमानों ने मुकाबला किया और जहां जहां से साज़िश और हमले का खतरा मालूम हुआ वहां फौज का दस्ता कभी खुद हुज़ूर सल्ल० ने अपनी क़ियादत (नेतृत्व) और कभी किसी अहम और तजुरबेकार (अनुभवी) शख्स की कियादत में भेज कर दुश्मन के इरादे को नाकाम बनाया, चूनांचे थोड़े थोड़े वक्फे से मुख्तलिफ जगहों पर आप सल्ल० ने दुश्मन को रोकने और नाकाम बनाने के लिये आवश्यकतानुसार फौजी टुकड़ियाँ भेजी उनमें से जो आप सल्ल० की सरबराही में हुई वह "ग़ज़वा" कहलाई और जो आपके बग़ैर किसी सहाबी की सरदारी मे हुई उनको "सरया" का नाम दिया गया, बदर के बाद पांच साल की मुद्दत में फौजी मुहिम्मात (सैन्याक्रमण) के सिलसिले में ज़्यादातर ग़ज़व-ए-उहद के अलावा जंग की या झड़पों की खास ज़रूरत नहीं पड़ी और अगर पड़ी भी तो मुनासिब तद्बीरों (उचित उपाय) और ताकत के इज़हार से काम चल गया।

रोज़े की फरज़ियत

इस्लाम के बुनियादी अहकाम इस्लाम के पांच सुतून (स्तम्भ) करार दिये गये हैं, उनके अक़ीद-ए-तौहीद (अल्लाह को एक जानना और मानना) और नमाज़ का हुकम मक्के के जीवन काल में आ गया था, यह दो रुकन (स्तम्भ) हुऐ तीसरा और चौथा रुकन रोज़ा और ज़कात है, उनका हुकम मदीना पहुंचने के बाद ग़ज़व-ए-बदर के बाद सन् दो हिजरी में आया।[2] चंवा रुकन "हज" है और उस पर अमल सभी अरब करते थे इस्लामी तालीमात के तहत उसकी वज़ाहत व तअ़यीन (स्पष्टीकरण व नियुक्ति) बाद में अंजाम पाई।

रोज़ों का हुक्म रमज़ान के पूरे महीने में रखने का आया जो साल के इस एक महीने में फर्ज करार दिया गया, रमज़ान के खत्म होने पर अगला दिन

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/47–57, जादुल मआद 3/190–192, सही बुखारी किताबुल मग़ाज़ी, बाब कअ़ब बिन अशरफ़, सही मुस्लिम, किताबुल जिहाद बाब कत्ल कअब बिन अशरफ़, अलबिदाया वन–निहाया 4/5–9

(2) अलबिदाया वन–निहाया 3/254

www.abulhasanalinadwi.org

ईद अर्थात अपने रब का शुक्र और मसर्रत (प्रसन्नता) का दिन क़रार दिया गया और उसमें सदक़े की तरग़ीब (प्रेरणा) दी गई, जो सदक़े फ़ित्र कहलाया।

रमज़ान के रोज़े की फरज़ियत से पहले नबी की शरीअत के तहत मोहर्रम के महीने की १० तारीख को रोज़ा रखा जाता था, रमज़ान में रोज़े रखे जाने से अस्ल रोज़े यही रमज़ान के रोज़े करार पाये और उनको इस्लाम के पांच बुनियादी अरकान में से एक रुकन करार दिया गया, इसकी खुसूसियत (विशेषता) अल्लाह की इबादत के साथ ग़रीब और माली तंगी रखने वालों के साथ हमदर्दी और उनकी तकलीफ का इंसानी स्तर पर एहसास और मदद का पहलू रखा गया। रमज़ान के २९ या ३० दिन खाने पीने से परहेज़ ग़रीब आदमी के भूखे रहने की परेशानी को याद दिलाता है, सूरज डूबने के वक्त इफतार के मौके पर ग़रीबों में इफतार की भी फिक्र करने की तरग़ीब दिलाई गयी है।

एक तरफ तो खुशहाल शख्स को भूख की तकलीफ महसूस कराई जाती है और दूसरी तरफ ग़िज़ा की कमी रखने वाले के साथ उसकी ग़िज़ा के मामले में मदद का मौक़ा फराहम किया गया है।

बनू क़ीनक़ाअ़ का मामला

बनू क़ीनक़ाअ एक यहूदी कबीला था, उससे और दूसरे यहूदी कबाएल से शुरू ही में पारस्परिक शान्ति समझौता हो गया था, बनू क़ीनकाअ के एक ज़ेवर के ताजिर (व्यापारी) ने एक मुसलमान औरत के साथ गंदा मज़ाक किया कि उसको खुलेआम बाज़ार में नंगा कर दिया और मज़ाक उड़ाया उसने मुसलमानों की दुहाई दी और मुसलमान जमा हो गये और वह यहूदी मारा गया इस पर दूसरे यहूदी आ गये और उन्होंने जवाबन मुसलमान को कत्ल कर दिया, हंगामे की खबर सुन कर हुज़ूर सल्ल० तशरीफ लाये और बनू क़ीनकाअ की बद अहदी (समझौता भंग) पर उनके किले का घिराव किया यहां तक बनू क़ीनकाअ को झुकना पड़ा और हुज़ूर सल्ल० के फैसले पर तैयार हो गये। आपने उनको मदीना छोड़ने का हुक्म दिया और वह उसके मुताबिक मदीना छोड़ कर ख़ैबर चले गये[1] और इस तरह मुसलमानों को इस कबीले के फितनों से नजात मिली।

उहद (शव्वाल सन् ३ हिजरी)

बदर की जंग के बाद कुरैश के कफ़िरो का गुस्सा और अदावत बहुत बढ़ गया और बदले की भावना पैदा हो गई और यह कहलाया कि बदर की हार का बदला ज़रूर लेंगे चूंनाचे महीनों तैयारी करने के बाद जंग बदर के दूसरे साल ही अपने कुर्ब व जवार के कबाएल को अपना हामी बना कर तीन हज़ार की फौज के साथ रवाना हुऐ और मदीने मुनव्वरा पर हमला आवर हुऐ जब वह

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/47–49

www.abulhasanalinadwi.org

मदीने के क़रीबी इलाक़े में आ गये तो आप सल्ल० को उनके आने ख़बर मिली, आपने अपने सहाबा से मशविरा फरमाया कि मदीने से निकल कर मुकाबला किया जाये या मदीने मे रहते हुये मुकाबला किया जाये खुद आपका का रूझान मदीना में रहते हुये मुक़ाबला करने का था और कई सहाबा का भी यही रूझान था[1] , लेकिन बाज़ दूसरे सहाबा जिनमें जोश ज़्यादा था वह मदीने से निकल कर दुश्मन के पड़ाव पर जा कर जंग करने को बेहतर क़रार दे रहे थे और उन्होंने ज़ोर देते हुऐ यही राय दी।

चूनांचे आप सल्ल० एक हज़ार मूजाहीदिन को लेकर मुकामे उहद की तरफ तशरीफ ले चले जो मदीने के मुज़ाफ़ात में बीच शहर से सिर्फ तीन किलो मीटर के फासले पर है। दुश्मन की फौजों ने वहां जमाव किया था, और मदीने शहर के सामने वही खुली हुई जगह थी और पहाड़ के सामने के मैदान में भी थी उन एक हज़ार आदमियों में वह अफ़राद भी थे जिनकी राय मदीना शहर के अन्दर रह कर मुक़ाबला करने की थी और बाज़ कुछ कमज़ोर तबिअत और मुनाफ़िक़ीन भी थे जो अगरचे हालात के दबाव से शरीक तो हो गये थे लेकिन फिर सूरतेहाल का अंदाज़ा लगाते हुऐ उन्होंने रास्ते ही में ऐतराज़ (आपत्ति) उठा दिया कि जंग शहर के अन्दर रह कर करनी चाहिए थी इसमें हिफाज़त ज़्यादा थी आमने सामने जा कर जंग करने में हलाकत की बात ज़्यादा है, उन्होंने रास्ते ही में यह मामला खड़ा करके दूसरों को भी अपना हमख्याल बनाने की कोशिश की और कहा कि बाहर निकल कर जंग करने का यह फ़ैसला नुक़सानदेह है और बिला वजह अपने को ख़तरे में डालने का है इन बातों से **300** अफ़राद मुतअस्सिर (प्रभावित) हो गये और यह सब कुछ न कुछ उज़्र बयान करके रास्ते से वापस हो गये जिसकी वजह से मुसलमानों की ताक़त कमज़ोर हो गई , चूनांचे **700** आदमीयों को तीन हज़ार आदमियों के मुकाबले में आना हुआ जिससे दुश्वारी का सामना हुआ, पहले वहले में कामयाबी हुई, फिर पहाड़ी पर बिठाये हुऐ मुसलमानों के दस्ते की एक ग़लती की बिना पर क़ुरैश की फौज ने एक नई हिक्मते अमली (कूटनीति) अचानक इख़्तियार की इससे मुसलमान मुजाहीदिन में अचानक कमज़ोरी पैदा हो गई और जीत के बजाए हार की सूरतेहाल बनने लगी[2], लेकिन हुज़ूर सय्यदिना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमान मुजाहीदिन को फिर से ललकारा और वह सब फिर से इकटठा हो गये इससे क़ुरैश फौजियों ने पसपाई इख़्तियार की, मगर यह कहते हुऐ वापस गये कि हम फिर आकर इससे बड़ी ताकत के साथ मुकाबला करेंगे।

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/63

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2/64, अलबिदाया वन–निहाया 4/13, अल कामिल फ़ित्तारीख 2/150

www.abulhasanalinadwi.org

इस मअ़रके में मुसलमानों को बड़े सब्र आज़मा हालात से गुज़रना पड़ा, इसमें दरमियानी शिकस्त के मौके पर यह अफवाह फैला दी गयी थी कि हुज़ूर सल्ल० नहीं रहें और शहीद हो गए जबकि खबर गलत थी [1]अल्बत्ता एक हमले से ऐसा हुआ कि आप सल्ल० के मुंह पर चोट आई और आपके दनदाने मुबारक शहीद हुऐ अचानक हमले से कई सहाबा शहीद हुऐ उनमें हुज़ूर सल्ल० के चचा सय्यदुश शोहदा हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब [2]और मुअल्लिमे सहाबा हज़रत मुसअब बिन उमैर[3] और बाज़ दूसरे बड़े सहाबा थे लेकिन आखिरकार कुफ़्फ़ार ने पसपाई इख्तियार की और मुसलमानों को फ़तह हुई लेकिन ज़्यादा कुरबानी देनी पड़ी।

उहद का वाकिया मुसलमानों के लिये एक बड़ा सबक़ भी साबित हुआ इस सबक़ को कुरआन मजीद में भी मुसलमानों के सामने ज़ाहिर किया गया है कि उनसे जो कमज़ोरियाँ हुई हैं जो उनके ताकतवर ईमान होने की सूरत में नहीं होनी चाहिए थीं, उनकी तरफ मुतवज्जेह हो क्योंकि दरमियानी शिकस्त का असल सबब वही कमजोरियाँ हैं इन कमज़ोरियों में जो असल कमज़ोरी थी वह यह थी कि मैदाने जंग और मदीना शहर के दरमियान एक खुशक नाला था जिसका एक सिरा कुफ़्फ़ार की फ़ौजों के मुक़ाम तक था उस नाले के मैदाने जंग के रूख़ वाले किनारे पर एक टीला था हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस पर तीरअंदाज़ो पर मुशतमिल एक फौजी दस्ता बैठा दिया था कि कुफ़्फ़ार उस नाले से अन्दर अन्दर जाकर मुसलमानों पर पीछे से आकर हमला न कर दें, जंग में अव्वल अव्वल जब कुफ़्फ़ार को शिकस्त (पराजय) हुई और वह भागने लगे तो मुसलमान फौजी दस्ते के अक्सर अफराद यह समझ कर नीचे उतर आये कि अब कुफ़्फ़ार भाग रहे हैं, अब ऊपर बैठे रहने की ज़रूरत नहीं, कुफ़्फ़ार का माले ग़नीमत जो मुसलमान जमा कर रहें हैं उसमें शरीक हो जाने में कोई हर्ज नहीं लेकिन उनका ख्याल ग़लत निकला और कुफ़्फ़ार ने टीले पर मुसलमानों को न देख कर अपनी एक टुक्ड़ी को नाले के ज़रिये फौरन जा कर मुसलमानों के पीछे से हमला करने के लिये भेज दिया जिसके अचानक हमले से मुसलमानों में अफरा तफरी हो गई और मुश्किल से उनको थामा जा सका, इसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शहादत की अफवाह ने भी अफरा तफरी फैलाई, बहरहाल अल्लाह तआला की तरफ से मुसलमानों को उनकी कोताहियों की तरफ तवज्जो दिलाई गई फरमाया :-

"और खुदा ने अपना वादा सच कर दिखाया यानी उस वक्त जबकि तुम काफिरों को उसके हुक्म से कत्ल कर रहे थे यहां तक कि जो तुम चाहते थे

(1) अल–कामिल फित्तारीख 2/155–156
(2) सही बुखारी गुज़ाव–ए–उहुद बाब क़त्ले हमज़ा रज़ि0, सीरते हलबिया 2/72,
(3) जादुल मआद 3/197, सीरत इब्ने हिशाम 2/73

www.abulhasanalinadwi.org

खुदा ने तुमको वह दिखा दिया, लेकिन उसके बाद जब तुमने हिम्मत हार दी और हुक्म (पैग़म्बर) में झगड़ा करने लगे और उसकी नाफरमानी की, कुछ तो तुम में से दुनिया के तलबगार थे (यह इशारा माले गनीमत जमा करने की तरफ तवज्जो करने की तरफ बताया जाता है) कुछ आखिरत के तालिब थे उस वक्त तुम को उनके मुकाबले से फेर कर हटा दिया ताकि तुम्हारी आज़माईश करे और अब उसने तुम्हारा कुसूर मआफ कर दिया है और खुदा मोमिनों पर बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है। "(सूरा आले इमरान : **152**)

बहरहाल टीले पर बिठाए गए तीरअन्दाज़ों की कोताही से मुसलमानों को जो ख़मयाज़ा भुगतना पड़ा, उसने मुसलमानों को आइन्दा के लिये ख़बरदार कर दिया और यह बात भी अपनी जगह पूरे तौर से सामने आ गई कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्मों पर चलना ही कामयाबी की कुंजी है।

कुरैश का उहद के वाक़िए से एक हद तक दिल ठन्डा हुआ, हालांकि इसमें भी उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ा मगर बदर के मुकाबले में वह इसको फतह (जीत) समझ रहे थे चूनांचे सरदारे कुरैश अबु सुफियान जिनकी सरदारी व रहनुमाई में दुश्मन जमा हुऐ थे मकाम उहद से यह सब दुश्मन वापस होने लगे तो बुलन्द आवाज़ में यह नारा लगाने लगे कि "जंग का मामला बराबर सराबर रहा, आज उसकी फतह कल उसकी, और अपने माबूदों की दुहाई भी दे रहे थे हुबल और उज़्ज़ा की जय कह रहे थे, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से जवाब देने को कहा और कहा कि कहो "अल्लाह" हमारा सरपरस्त है (अभिभावक है) तुम्हारा कोई सरपरस्त नहीं और यह भी कहने को कहा कि अल्लाह बहुत बुलन्द व बाला है उसके सिवा कोई नहीं [1]

ग़ज़्व-ए-उहद सनीचर के रोज़ शव्वाल का आधा महीना गुज़र कर हुआ हिजरत का तीसरा साल था इस ग़ज़्वा की ख़ास बात यह थी कि मैदाने जंग में जाते हुऐ जो लोग पलट गये थे उनको देखते हुऐ मुसलमानों के कुछ लोगों में निफाक का होना सामने आ गया और मुनाफ़िक़ीन ढ़की छिपी चीज़ न रहे, कि मदीने के लोगों में कुछ ऐसे अफराद भी हैं जो दिल से इस्लाम नहीं लाए वह मुसलमानों के गलबे और मकबूलियत को देख कर अपने को भी मुसलमान ज़ाहिर करते हैं और यह बात लोगों पर आशकारा (प्रकट) हो गई कि सच्चे मुसलमानों के दरमियान कुछ ऐसे लोग भी हैं जो ज़ाहिरी तौर पर मुसलमान होने का दावा करने वाले हैं दिल से मुसलमान नहीं हैं, लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी मालूम होने पर उनकी पर्दापोषी ही रखी, और उनसे भी अख़्लाक ही का मामला फरमाते रहे, कि हो सकता है कि बिलआखिर उनके भी दिल ठीक हो जायें।

---

(1) ज़ादुल मआद 3/201, सही बुखरी किताबुल मग़ाज़ी, सीरत इब्ने हिशाम भाग–2

www.abulhasanalinadwi.org

हमराउल असद

ग़ज़वे उहद में मुसलमानों का नुकसान और मुसीबत तो ज़रूर पेश आई लेकिन कुफ़्फ़ार को मरऊब (भयभीत) रखने के लिये हमराउल असद तक कुरैश का पीछा करने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ ले गये, लेकिन मुकाबले की नौबत नहीं आई।

उहद के बाद

ग़ज़वे उहद के बाद कई जगहों पर दुश्मनों की तैयारी और हमले की खबर मिलने पर आप सल्ल० ने मुसलमानों की जमाअत रवाना की, या खुद तशरीफ ले गये, या सिर्फ मुसलमानों का जत्था किसी सहाबी की इमारत में भेजा।

सबसे पहले पहली मुहर्रम सन् ४ हिजरी में तलहा और सलमा बिन खुवैलद ने अपने कबीले को जो फैद के पहाड़ी इलाके "कुल्न" में रहता था मदीना पर हमला करने के लिये आमादा किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खबर मिली तो अबूसलमा रज़ि० की सरकरदगी में **150** आदमियों को रवाना किया लेकिन खबर मिलने पर यह दुश्मन भाग गये।

इसके बाद सुफियान बिन खालिद के हमले की तैयारी की इत्तला मिली उसके मुकाबले के लिये आप सल्ल० ने अब्दुला बिन उनैस की सरकरदगी में एक सरिया भेजा, उन्होंने जाके सरकूबी की, उनका दमन किया। [1]

रजीअ़ की घटना

क़बीला अज़लवकारा के कुछ लोग आकर मुसलमान हुऐ और कहा कि हमारे साथ हमको हमारी तालीम व तरबियत (शिक्षा व दीक्षा) के लिये कुछ लोगों का इन्तिज़ाम कर दीजिये जो हमारे यहां रहें और हमको तालीम दें और इस्लाम के अकाएदो एहकाम सिखाएं, आप सल्ल० ने दस लोगों को उनके साथ कर दिया लेकिन यह उन लोगों की साज़िश (षड़यंत्र) थी उन लोगों ने उन मुअल्लिमीन (तालीम देने वालों) को मदीने से निकल कर कुछ फासले पर मकाम रजीअ़ में पकड़ कर कैद कर लिया, और तीन को उनके कैद करने वालों ने बेच दिया, उनमें से हज़रत खुबैब रज़ि० और ज़ैद बिन दसना को मक्के में ले जाकर बेच दिया और उनको बाकाएदा शहीद कर दिया गया [2]इस मौके पर हज़रत खुबैब ने जिस इत्मीनान और यक़ीन के साथ शहादत पाई वह तारीख में आबेज़र (सोने के पानी) से लिखने के क़ाबिल है।

---

(1) ज़ादुल मआ़द 3/243–244,
(2) ज़ादुल मआ़द 3/244–246

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत ख़ुबैब और ज़ैद बिन दसना रज़ीअल्लाहु अनहुमा की शहादत

हज़रत ख़ुबैब और ज़ैद बिन दसना रज़ीअल्लाहु अनहुमा को लोगो ने कुरैश के हाथ जब फरोख्त करने के लिये पेश किया तो ख़ुबैब रज़ि० को हुजैर बिन अबी उहाब ने खरीद लिया ताकि अपने बाप उहाब के बदले में कत्ल कर सके, ज़ैद बिन दसना को सफवान बिन उमय्या ने अपने बाप उमय्या बिन खलफ के बदले के लिये खरीदा ज़ैद रज़ि० को हरम से बाहर कत्ल करने के लिये ले जाया गया तो उस वक्त कुरैश के बहुत से लोग जमा थे, जिनमें अबु सुफयान भी थे, उन्होंने हज़रत ज़ैद से कहा ज़ैद मैं तुमसे कसम दिला कर पूछता हूँ कि क्या तुम यह पसन्द करोगे कि तुम आराम से अपने घर वालों में हो और तुम्हारी जगह मुहम्मद सल्ल० हों? उन्होंने यह जवाब दिया कि मुझे तो यह भी गवारा नहीं कि मैं अपने घर पर आराम से हूँ और मुहम्मद सल्ल० को एक कांटा भी चुभे, अब अबू सुफयान ने इस पर कहा कि मैंने किसी को किसी से इतनी मुहब्बत करते नहीं देखा जितनी मुहब्बत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी करते हैं (इसके बाद उनको शहीद कर दिया गया)। जब यह लोग हज़रत ख़ुबैब रज़ि० को सूली देने के लिये लाऐ तो उन्होंने कहा कि अगर इसमें कोई हरज न हो तो मुझे दो रकअत नमाज़ पढ़ लेने की इजाज़त दे दो उन्होंने कहा कि हाँ पढ़ लो, उन्होंने दो रकअत नमाज़ पूरे इत्मीनान और आदाब के साथ पढ़ी फिर उनकी तरफ मुतवज्जेह हो कर कहा कि अगर मुझे यह ख्याल न होता कि तुम लोग इसको डर पर महमूल (अनुमानित) करोगे तो मैं और नमाज़ पढ़ता, इसके बाद उन्होने यह अशआ़र पढ़े जिसका अर्थ यह है :

"जब मैं इस्लाम के लिये कत्ल किया जा रहा हूँ ते मुझकों इस बात की परवाह नहीं की अल्लाह की राह में किस पहलू पर गिर कर जान दूँगा, यह जो कुछ है खालिस अल्लाह के लिये है, अगर वह चाहेगा तो इस पारा पारा जिस्म पर बरकत नाज़िल करेगा" यह शोकिया अशआ़र पढ़ते हुऐ शहीद हुऐ।[1]

बीरे मऊना

फिर सफर सन् ४ हिजरी में बीरे मऊना का वाक़िया पेश आया इसमें भी नज्द के एक सरदार अबूबरा किलाबी ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कुछ असहाब को नजद भेजने के लिये कहा था कि वह वहां इस्लाम की दावत दें,

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/169–176, सही बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, अलबिदाया वन–निहाया 4/62–69,

www.abulhasanalinadwi.org

आप सल्ल० ने मंजूर फरमाया और एक बड़ी तादाद में सहाबा कराम (जिनकी तादाद **40** से ७० बताई जाती है) को रवाना किया, उन लोगों को बीरे मऊना के मकाम पर धोखा देकर शहीद कर दिया गया, यह बड़ा ही दर्दनाक व अलमनाक (दुख दायी) वाकिया था, जिसको बहुत महसूस किया गया, मगर हुजूर सल्ल० ने कोई फौजी कार्यवाई नहीं की।[1]

हराम बिन मलहान की शहादत

इसी वाकिये में हराम बिन मलहान भी शहीद हुए, उनको जब्बार बिन सलमी ने कत्ल किया, हराम बिन मलहान ने इन्तिकाल के वक्त जो अल्फाज़ कहे वही उनके इस्लाम लाने का सबब बन गये, जब्बार खुद बयान करते हैं कि मुझे जिस चीज़ ने इस्लाम की तरफ खींचा वह यह वाक़िया है कि मैंने उनके एक आदमी के दोनो कंधों के बीच एक नेज़ा (भाला) मारा मैंने देखा वह सीने के पार हो गया उसी वक्त उनके मुहं से अल्फाज़ निकले "फ़ुज़्तो व रब्बिलकाबा" काबे के रब की कसम मैं कामयाब हो गया, मैंने अपने दिल में हैरत से कहा कि कैसी कामयाबी ? क्या मैंने उनको कत्ल नहीं किया, बाद में मैंने उनके अल्फाज़ की तहकीक की तो लोगों ने बताया कि उनका मतलब शहादत था, मैंने कहा खुदा की कसम वह कामयाब रहे। यह जुमला उनके इस्लाम लाने का सबब बना।[2]

ज़ातुररिक़ाअ

सन् **4** हिजरी में ज़ातुररिक़ाअ का ग़ज़वा पेश आया इसमें आप सल्ल० तशरीफ ले गये बनू गत्फान से मुकाबला था दोनों पार्टियाँ एक दूसरे से करीब हुईं लेकिन लड़ाई नहीं हुई इस मुहिम में गुर्बत की वजह से पैर में जूते नहीं थे, चीथड़े बाधने पड़े थे और चीथड़ों को अरबी में "अररिकाअ" कहते हैं, इसकी वजह से इसको ज़ातुररिकाअ कहते हैं। [3]

बनू नज़ीर का मामला

सन् ४ हिजरी का ज़िक्र है कि नबी सल्ल० मदीने के मुजाफात में आबाद कबीले बनी नज़ीर के पास तशरीफ ले गये ये यहूदियों से किये गये मुआहिदे (समझौते) के तहत भी आते थे वहां जा कर आप सल्ल० ने उनसे बनी आमिर के दो मकतूलों की दियत में मदद चाही उन्होंने आप सल्ल० को एक

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/169–176, सही बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, अलबिदाया वन–निहाया 4/62–69,

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2/169–176, सही बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, अलबिदाया वन–निहाया 4/62–69,

(3) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7

www.abulhasanalinadwi.org

दिवार के नीचे बिठा दिया और आप स०अ० को धोखे में रखते हुऐ शहीद कर देने की साजिश की जिसकी तद्बीर यह की कि इब्ने जहाश मलऊन दिवार के ऊपर जा कर एक भारी पत्थर आप सल्ल० के ऊपर गिरा दे और आप सल्ल० की जिन्दगी का खात्मा कर दे, आप सल्ल० के साथ उस मौके पर कई हज़रात सहाबा मौजूद थे, जिनमें अबूबक्र सिद्दीक, हज़रत उमर और हज़रत अली रज़ि० अनहुम भी थे और हज़रत सल्ल० को वहां जा बैठने के बाद अल्लाह तआला की तरफ से इस शरारत की इत्तिला आपको "वही" के ज़रिये हो गई, यह मालूम होते ही आप वहां से फौरन उठ आये और अल्लाह की हिफ़ाज़त में मदीना वापस आ गये और बनू नज़ीर को उनकी बद अहदी और उस जुर्म की यह सज़ा तय फरमाई कि वह मदीने से निकल जायें वरना उनको फिर ताक़त के ज़रिये सज़ा दी जायेगी, वह लोग सूरते हाल की संगीनी महसूस करते हुऐ मामूली रूकावट और सोच विचार के बाद इस पर राज़ी हो गये कि जिस कदर माल व असबाब ऊँटों में ले जा सकें ले जायें और मदीने से बाहर निकल जायें।[1] चूनांचे वह घरों को छोड़ छोड़ कर मदीने से निकल गये, उनमें से कुछ लोग ख़ैबर में जा बसे, कुछ लोग शाम चले गये और मुसलमानों को अपने शहर के अन्दर ही मक्र व फरेब, साज़िश और मुनाफिक़त के कायम एक बहुत बडे अड्डे से नजात मिली और ताकत के इस्तेमाल करने की ज़रूरत भी पेश नहीं आई।[2]

मुखालिफीन (विरोधियों) का मदीने पर आक्रमण और खनदक़ का वाकिआ सन् 5 हिजरी

जब विभिन्न तरीकों और साज़िशो (षड़यंत्रों) के बाद भी मुसलमानों की ताकत और मज़बूती को तोड़ा न जा सका तो मदीने के यहूदी और मुनाफिकीन, कुरैश और उनके हम ख़्याल क़बायल, उन सबने मिल कर एक ज़्यादा ज़ोरदार इस्कीम बनाई कि एक बड़ी और संयुक्त फौज तैयार करके मुसलमान इलाके पर हमला करके मुसलमानों की ताकत तोड़ दी जाये, उसमें मदीने के यहूदी और उनके वह साथी जो वहां रह गये थे जिनमें ख़ास तौर बनू कुरैज़ा आगे आगे थे, उन्होंने कुरैश को यह यकीन दिलाया कि वह पूरी मदद करेंगे और दोनों मिल कर मुसलमानों को मदीने से निकाल देंगे, यह उनकी ताकत को पूरी तरह ख़त्म कर देंगे, इन कोशिशों के नतीजे में उनके दरमियान एक फौजी समझौता क़ायम हो गया, जिसके अहम सहयोगियों में मक्का के कुरैश, इलाके नजूद के कबीले ग़तफान और उनके साथ दरपर्दा तौर पर मदीने के यहूदी और मुनाफिकीन और

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/190–191
(2) अलकामिल फ़ित्तारीख 2/173, अररौज़ुल अनफ़ 2/240, अलबिदाया वन–निहाया 4/74, सीरते हलविया 2/559

www.abulhasanalinadwi.org

दूसरे कबीलों के बाज़ जत्थे शामिल थे, चूनांचे ज़ीक़अदः सन् 5 हिजरी में चार हज़ार आदमियों के साथ मदीने का रूख किया था, गतफान ने छः हज़ार आदमी इसमें शामिल किये, चूंनाचे यह सारी तादाद (संख्या) दस हज़ार जंगजूओं की बाहर से चल कर मदीना तय्याबा पहुंच गयी, उनसे बनू कुरैज़ा का वादा था कि वह अन्दर से जो मदद होगी करेंगे, अबू सुफियान बिन हरब कुफ़्फ़ार के इस लश्कर का सेनापति था।[1]

यहां हूजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सिर्फ तीन हज़ार या इस से कमोबेश लोग थे सूरतेहाल बहुत खतरे की थी, हुजूर सल्ल० ने मशविरा किया तो हज़रत सलमान फारसी रज़ि० ने यह राय दी कि तीन तरफ से पहाड़ी रूकावटें हैं, एक तरफ से मदीने में दाखिल होने का रास्ता है, अगर वहां खनदक खोद दी जाये तो मुसलमान किला बन्द होकर मुकाबला कर सकते हैं[2], इस पर अमल किया गया, मुसलमानों ने खनदक की सख्त निगरानी करके अपनी हिफाज़त का इन्तिज़ाम किया, सख्त सर्दी का ज़माना, खाने पीने की कमी, खनदक खोदने की मशक्कत और उसके किनारे हर वक्त मौजूद रहने को तीन हफ़्ते से ज़्यादा बर्दाश्त करना पड़ा, और दिन व रात खनदक के सामने मुकाबले के लिये तैयार रहना पड़ा, यह उनके लिये सख्त इम्तिहान था, लम्बी मुद्दत और तीन हफ़्तों तक दुश्मन के शहर के अन्दर घुस आने का खतरा, खाने की शदीद कमी, यह ऐसी सूरतेहाल कि बड़े से बड़े हिम्मत वालों की हिम्मत टूट जाये, इसमें असहाब रसूल अल्लाह सल्ल० के ईमान व यक़ीन बिल ग़ैब का इम्तिहान था, कि आप जबकि सच्चे नबी हैं, अल्लाह तआला की ताअईद आपके साथ है तो फिर ऐसी परेशानी और दुश्मन की सर्कशी क्यों और ऐसी तवील मुदद्त तक क्यों जारी है? लेकिन सारे मुसलमान अपने ईमान बिल ग़ैब और अल्लाह पर पूरे यकीन और भरोसे के साथ क़ायम रहे। शायद अल्लाह तआला को मुसलमानों के ईमान की पुख्तगी का इम्तिहान लेना था। इसलिए सख्त ज़ैहनी और जिस्मानी दोनों सतह पर सख्त हालात से गुज़ारा गया और मुसलमान इस इम्तिहान में कामयाब रहे और फिर अल्लाह तआला ने ग़ैब से मदद की। अल्लाह तआला की इस तरह मदद आयी कि सख्त आंधी और तुफान आया और दुश्मनों के ख़ेमे उखड़ गये और अल्लाह ने मुसलमानों को फ़तह व ग़लबा फरमाया और बग़ैर जंग के फतह हासिल हो गई। दुश्मन मायूस और बदहवास हो कर चले गये।[3] कुरआन मजीद में इस आज़माईश (परीक्षा) का तज़किरा इस तरह किया गया है :-

---

(1) ज़ादुल मआद 3/270,

(2) अलबिदाया वन–निहाया 4/95, सीरत इब्ने हिशाम 2/224।

¼3½ सीरत इब्ने हिशाम 2/232

www.abulhasanalinadwi.org

"जब वह तुम्हारे ऊपर और नीचे की तरफ से तुम पर चढ़ आए और जब आंखे फिर गई और दिल (मारे दहशत के) गलों तक पहुचं गए और तुम खुदा की निसबत तरह तरह के गुमान करने लगे वहां मोमिन आज़माए गये और सख़्त तौर पर हिलाए गये" (सूर : अहज़ाब : **10—11**)

"मेमिननो ! खुदा की उस मेहरबानी को याद करो जो (उसने) तुम पर (उस वक्त की) जब फौजें तुम पर (हमला करने को) आईं तो हम ने उनपर हवा भेजी, और ऐसे लश्कर (नाज़िल किये) जिनको तुम देख नहीं सकते थे और जो काम तुम करते हो खुदा उनको देख रहा है।"(सूरा अहज़ाब **-9**)

और जो काफिर थे उनको खुदा ने फेर दिया, वह अपने गुस्से मे भरे हुऐ थे, कुछ भलाई हासिल न कर सके और खुदा मोमिनों को लड़ाई के बारे में काफी हुआ और खुदा ताक़तवर (और) ज़बरदस्त है।(सूरा अहज़ाब-२५)

यह आंधी तूफान के ज़रिये मुसलमानों की मदद शुरू में ही हो सकती थी, लेकिन शायद ईमान वालों के ईमान की आज़माईश लेना थी कि रज़ा ए इलाही के लिये तीन हफ़्ते सख़्त खतरे और मेहनत में रखा गया, इस पूरी मुदद्त (समय) में हुज़ूर सल्ल० जिम्मेदार और क़ायद (नायक) की हैसियत से सूरते हाल पर पूरी नज़र रखे हुये थे और हालात सख़्त से सख़्त होने लगे और सहाबा सख़्त इम्तिहान से गुज़रने लगे तो आप सल्ल० ने हज़रात अन्सार से मशविरा किया कि कहो तो इस आफत को खत्म करने के लिये खजूर के बागात की आमदनी का कुछ हिस्सा सालाना देने की पेशकश की जाये कि यह बला टले, इस पर उन्होंने अर्ज़ किया कि हम जाहिलियत में अपने दुश्मन को देने के लिये तैयार नहीं हुऐ थे, अब क्या इस्लाम में ऐसा करेंगे, आप सल्ल० अपने इख्तियार किये हुए तरीके पर कायम रहें हम आपके साथ हैं[1] इस पूरी मुदद्त में जमाअत सहाबा ने अपने ईमान की पुख्तगी साबित कर दी यहां तक कि यह मुसिबत हटा ली गई।

बनी कुरैज़ा का मामला

मदीने की आबादी में अरबों के कबायल में "औस" व "खजरज" बड़े और शहर पर हावी (प्रभुत्वशाली) कबीले थे, वह इस्लाम के दायरे में दाखिल हो कर हुज़ूर सल्ल० की रहनुमाई में मुत्तहिद (संयुक्त) हो गए थे अरबों के अलावा यहूदियों के तीन बड़े कबीले, बनू कुरैज़ा, बनू नज़ीर, बनू कैनका थे। उनसे शुरू ही में हुज़ूर सल्ल० ने मुआहिदा (समझौता) कर लिया था कि एक दूसरे के मफादात (हितों) को नुकसान न पहुंचाऐगे और बाहर के दुश्मन के हमले की

---

1 सीरत इब्ने हिशाम 2/232

www.abulhasanalinadwi.org

सूरत में एक दूसरे की मदद करेंगे लेकिन उन क़बाएल ने अलग अलग मौकों पर ऐसी बदअहदी इख्तियार की कि मुसलमानों को सख्त नुकसान पहुंचा। चूनांचे हुजूर सल्ल० को ऐसे तमाम मौको पर कार्यवाई करनी पड़ी। बनू नज़ीर ने जब बदअहदी की तो वह शहर से निकाले गये, उनकी बदअहदी को देखते हुऐ आपने बनू कुरैज़ा कबीले से मुअहिदे को नए सिरे से पक्का किया और वादा लिया कि जंग में एक दूसरे की मदद करना ज़रूरी होगा, मदीने पर हमला हुआ तो मुशतरका तौर (संयुक्त) मुकाबला होगा।

लेकिन इस क़बीले के सरदार हय्यू बिन अख्तर ने यहूदियों को वरगला कर (बहका कर) और उन्हें आप सल्ल० के खिलाफ भड़का कर उस अहदनामे की पामाली और कुरैश से इत्तेहाद और दोस्ती पर अमादा कर लिया जब रसूल अल्लाह सल्ल० को इस समझौते को खत्म करने की इत्तिला मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अरब कबीले "औस" के सरदार साद बिन मआज़ और कबीले "खजरज" के सरदार साद बिन उबादा और कुछ अन्सार को इस वाकिये की तहक़ीक़ के लिये रवाना किया। वहां जा कर उन्होंने पता लगाया तो जितना सुना था उससे ज़्यादा खतरनाक बदअहदी की सूरतेहाल पाई, ज़ाएद बात यह कि तहक़ीक़ के मौके पर उस कबीले के लोगो ने आप सल्ल० के लिय नामुनासिब और असभ्य अल्फाज़ इस्तेमाल किये और खराब लहजे में कहने लगे कि कैसा अल्लाह का रसूल? हमारे और मुहम्मद सल्ल० के बीच कोई अहद व मुआहिदा नहीं।[1]

बनू कुरैज़ा की शरारत और बदअहदी जब सामने आई तो महसूस हुआ कि आईन्दा उनसे संगीन खतरा पेश आ सकता है इसलिए उनकी सरकोबी ज़रूरी है। लिहाज़ा रसूल सल्ल० ने जंग से फ़ारिग़ होकर हुक्म दिया कि अभी लोग हथियार न खोलें और बनू कुरैज़ा का रूख करें, मैं भी वहां का इरादा कर रहा हूँ कि उनकी रोकथाम कर दूँ। रसूल अल्लाह सल्ल० ने बनू कुरैज़ा में पहुंच कर उनकी घेरा बन्दी कर दी जिसका सिलसिला २५ दिन व रात जारी रहा यहां तक कि वह इस घेरे से तंग आ गए, अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रोब डाल दिया।

इस दरमियान में बनू कुरैज़ा ने रसूलुल्लाह सल्ल० को यह पैग़ाम भेजा कि आप सल्ल० हमारे पास उमर बिन औफ को भेज दीजिए। (यह लोग औस के हलीफ भी थे), ताकि हम उनसे अपने मामले में मशविरा कर सकें। उनकी दरख्वास्त पर हुजूर सल्ल० ने अबू लुबाबा रज़ि० को वहां भेज दिया उनको देखते ही सब लोग अदब के साथ खेड़े हो गए औरतें और बच्चे दहाड़े मार कर

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/223

www.abulhasanalinadwi.org

रोने लगे, यह देख कर उनका दिल कुछ पसीज गया, उसके बाद यह सब लोग कहने लगे : अबू लुबाबा! क्या मुहम्मद सल्ल० के फैसले पर सर झुका दिया जाये? उन्होनें कहा : हाँ, इसी के साथ अपने गले पर हाथ फेर कर उसकी तरफ इशारा किया, अबू लुबाबा रज़ि० कहते हैं कि अभी मेरे कदम वहां से नहीं हटे थे कि मुझे यह महसूस हुआ कि मैंने अल्लाह और हुजूर सल्ल० की खियानत की है, चूंनाचे वह फौरन उलटे पांव वापस हुऐ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होने के बजाए मस्जिद नबवी के एक सुतून से अपने को बांध दिया और ऐलान कर दिया कि मैं उस वक्त तक इस जगह से न हटूँगा जब तक अल्लाह तआला मेरे क़ुसूर को मआफ न फरमा देगा, उन्होंने अल्लाह तआला से यह अहद किया कि आईन्दा वह बनी कुरैज़ा के इलाके में कदम भी न रखेंगे और इस मकाम की शक्ल भी न देखेंगे। जहां उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की खियानत की थी। जब अल्लाह तआला ने उनकी तौबा कुबूल फरमाई और यह आयत नाज़िल हुई :-

"और कुछ लोग हैं जो अपने गुनाहों का (साफ) इक़रार करते हैं, उन्होंने अच्छे और बुरे अमलों को मिला जुला दिया था क़रीब है ख़ुदा उन पर मेहरबानी से तवज्जुह फरमाए, बेशक खुदा बखशने वाला मेहरबान है।" (सुरा तौबा : **102**)

तो फौरन लोग उनको खोलने के लिए तेज़ी से आगे बढ़े उन्होंने कहा नहीं, खुदा की क़सम जब तक हुजूर सल्ल० अपने मुबारक हाथों से आज़ाद नहीं करेंगे मैं उसी हालत में रहूँगा, जब नमाज़ फ़ज्र के लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाए और उनके करीब से गुज़रे तो उनको खोला, यह खजूर के उस तने से तकरीबन २० रात बंधे रहे हर नमाज के वक्त उनकी बीवी आतीं और नमाज़ के लिये उनको खोल देतीं, फिर वह दुबारा अपने आपको उससे बांध लेते।[1]

हज़रत साद बिन मआज़ का इम्तिहान

बनू कुरैज़ा ने दरख़्वास्त पेश की कि हज़रत साद बिन मआज़ रज़ि० को हमारे मामले मे हकम (निर्णायक) बना दिया जायें, वह जो फैसला करें हमें मंजूर है।[2]

जाहिली दौर में बनू कुरैज़ा के साद बिन मआज़ रज़ि० से तअल्लुकात (सम्बन्ध) रहे थे, उसी की बुनियाद पर वह उनसे अपने हक में उम्मीद रखते थे

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/236
(2) सीरत इब्ने हिशाम 2/239

www.abulhasanalinadwi.org

कि रिआयत से काम लेंगे क्योंकि यहूद की शरीअत में दग़ा बाज़ी की सज़ा में सख्ती थी कि जंगजू को कत्ल कर दिया जाय, इसलिए बनू कुरैज़ा साद बिन मआज़ को हकम तजवीज़ किया कि रिआयत कर देंगे हुजूर सल्ल० ने बनू कुरैज़ा की यह बात मान ली, हज़रत साद बिन मआज़ ने हकम होने के बाद यहूदी शरीअत के मुताबिक ही फैसला दिया और कहा : मैं यह फैसला करता हूँ कि उनके बच्चे और औरतें गुलाम की हैसियत से बाकी रखे जायें, बाकी उनके मर्द खत्म कर दिये जायें, उनका माल तकसीम कर लिया जाये बनू कुरैज़ा का जो जुर्म था उनकी मज़हबी किताब तौरैत में इस तरह के जुर्म की यही सज़ा लिखी थी, रसूल सल्ल० ने फरमाया कि तुमने अल्लाह के हुक्म के मुताबिक फैसला किया है क्योंकि यह फैसला बनी इस्राईल की शरीअत के जंगी क़वानीन के मुताबिक था लिहाज़ा उसी के मुताबिक अमल दरामद किया गया और इसी तरह बनू कुरैज़ा की शरारत से बचाव का इन्तिज़ाम हो गया।[1] हज़रत साद बिन मआज़ इस फैसले के वक्त बीमार थे, और बीमारी सख्त थी जिससे वह बच न सके, और इन्तिकाल कर गये, उनके इन्तिकाल को मुसलमानों का एक बड़ा खसारा समझा गया और हुजूर सल्ल० ने अल्लाह के नज़दीक उनकी मकबुलियत की खबर दी।[2]

बनू मुस्तलिक का मामला

शाबान सन् ६ हिजरी में आप सल्ल० को यह इत्तिला मिली कि बनू मुस्तलिक जो खुज़ाअः की एक शाख थे जंग के लिये जमा हो रहे हैं आप सल्ल० ने मज़ीद तहकीक के लिये हज़रत ज़ैद बिन खुसैब रज़ि० को भेजा, उन्होंने वापस आ कर खबर की तसदीक़ की तो आप स०अ० भी मुकाबले के लिये तशरीफ ले चले, मुकाम मरीसी (बनू मुस्तलक का चश्मा) में खबर पहुंची कि हारिस अबी ज़रार (कबीला बनू मुस्तलिक का सरदार) की पार्टी तितर बितर हो गई और वह खुद किसी तरफ निकल गया, लेकिन मरीसी में जो लोग रहते हैं वह लड़ने पर कमर बस्ता हैं और उन्होंने पूरी तैयारी कर ली, चूनांचे मुकाबला हुआ और मुसलमानों की जीत हुई।[3]

हज़रत जुवैरिया से आपका निकाह

शिकस्त (पराजय) के बाद जब बनू मुस्तलिक बेसहारा हो गए और बेचारगी की हालत में आ गए तो आप सल्ल० ने उन पर एहसान करते हुऐ उनके लीडर हारिस बिन ज़रार की बेटी जुवैरिया जो कि बान्दी की हैसियत से मुसलमानों के कब्ज़े में आ गई थीं, आज़ाद फरमा दिया और फिर मज़ीद यह

(1) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7
(1) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7
(1) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7

www.abulhasanalinadwi.org

एहसान फरमाया कि उनको अपने निकाह में भी ले लिया। आप सल्ल० की इस दिलदारी का यह असर हुआ कि सब मुस्तलिकी मुसलमान हो गए और मुसलमानों ने हुज़ूर सल्ल० का यह रवय्या देख कर उनके इख्तियार में आए हुऐ गुलाम व बान्दी आज़ाद कर दिये। इस तरह यह वाकिया बड़ा बाबरकत साबित हुआ।[1]

मुनाफिकीन की फित्नाअंगेज़ी (उपद्रवकारी) और वाकिया इफ़्क

इस ग़ज़वे में आप सल्ल० के साथ मुनाफ़िक़ीन की एक तादाद थी, जिनका निफ़ाक़ छिपा हुआ था और वह दूसरे मुसलमानों की तरह समझे जाते थे, इतनी तादाद इससे पहले किसी ग़ज़वे में नहीं हुई थी, जब इस्लाम के दुश्मनों को जिनमें पोशीदा तौर पर यह मुनाफ़िक़ीन शामिल थे, यह यकीन हो गया कि मुसलमानों को, अब मैदाने जंग में बड़ी तादाद और साज़ व सामान से शिकस्त नहीं दी जा सकती तो मुनाफिकीन ने दाख़िली महाज़ में रखना अंदाज़ी और फितना परदाज़ी का रास्ता इख्तियार किया, मुसलमानों में तफ़रक़ा पैदा करने के लिए मोहतरम शख़सियतों के मुकाम को गिराने और आपसी ऐतमाद (विश्वास) को कमज़ोर करने का रास्ता इख्तियार किया, हुज़ूर सल्ल० की रिसालत के बुलन्दतरीन मक़ाम पर हरफगिरी (आक्षेप) की, और उस पर मुसलमानों के ऐतमाद व यक़ीन को कमज़ोर करने का मंसूबा बनाया और काशान-ए-नबुअत के खिलाफ ज़बानदराज़ी और इल्ज़ामतराशी की मुहिम चलाने का मौक़ा निकाला।

उम्मुलमोमिनीन हज़रत आईशा रज़ि० रास्ते में एक सुबह सवेरे कज़ाए हाजत के लिए तशरीफ ले गईं और वापसी पर देखा कि क़ाफ़िला रवाना हो चुका है, क़ाफ़िला उनको उनके ऊँट में होने का ख़्याल करके उनके बग़ैर रवाना हो गया, फिर वह एक सहाबी की मदद से क़ाफ़िले में पहुंच गयीं सिर्फ इसी उनके काफिले से जुदा होने को बहाना बना कर उनपर तोहमत लगाई गयी यह एक निहायत खतरनाक और गहरी साज़िश थी और यह ग़ज़वे बनी मुस्तलिक में जिस तरह खुल कर सामने आई किसी और ग़ज़वे में न आई थी।

इस वाक़िये का तज़किरा वाकिया इफ़्क के (यानी झूठी तोहमत लगाने का वाक़िया) के नाम से मिलता है।

यह नाशाईस्ता वाकिया (असभ्य हरकत) इसी ग़ज़वे में पेश आई, मुनाफिकीन ने शक व शुभहः पैदा करके उस पर तरह तरह की रायज़नी की और फिर मदीना पहुंच कर मुसलसल इसका चर्चा किया। इस साज़िशी तोहमत से

---

(1) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7

www.abulhasanalinadwi.org

कुछ सादा दिल मुसलमान भी मुतासिर (प्रभावित) हुऐ। हुज़ूर सल्ल० को इस तकलीफ़देह सूरतेहाल से थोड़ी मुदद्त गुज़रना पड़ा, बिल आखिर अल्लाह तआला की तरफ से "वही" के ज़रिये उनकी बराअत (पवित्रता) के ऐलान के साथ इल्ज़ाम लगाने वालों की शरपसंदी पर सख्त नकीर की गई, कि एक पाक दामन खातून फिर हुज़ूर सल्ल० की भरोसेमन्द बीवी होने पर भी शुबहः किया गया और इसको यक़ीनी बना कर पेश किया गया, कुरआन मजीद की आयतों के ज़रिये उसकी तरदीद (खण्डन) हुई और मज़ीद यह कि बिला तहकीक तोहमत लगाने की सज़ा तोहमत लगाने वालो को दी गई। जैसा कि सही, मुस्लिम वग़ैरह में ज़िक्र किया गया है। इस आसमानी तरदीद से पहले करीब था कि मुनाफिकीन अपनी घिनौनी साज़िश में कामयाब हो जाते, और खानदाने नबवी के बुलन्द मकाम को शक के दायरे में ले आते, लेकिन सात आसमानों के ऊपर से हज़रत आईशा रज़ि० के बराअत का ऐलान आ गया। इस तरह ज़बरदस्त फितने का हमेशा के लिए खात्मा हो गया।

"जिन लोगों ने बोहतान बांधा है तुम्ही में से एक जमाअत है, इस वाकिये को तुम अपने लिए बुरा न समझो बल्कि यह तुम्हारे लिए ख़ैर बन गया है (यानी ऐसे मौक़ो के लिए तुमको एहतियात (सावधानी) करने की सख्त तल्कीन (उपदेश) करके ऐसे मामलो में बेएहतियाती का दरवाज़ा बन्द कर दिया गया है)" उनमें से जिस शख्स ने गुनाह का जितना हिस्सा लिया उतना ही वबाल है, और जिसने उनमें से इस बोहतान (मिथ्या) का बड़ा बोझ उठाया है उसको बड़ा अज़ाब होगा, जब तुमने वह बात सुनी तो मोमिन मर्दों और औरतों ने क्यों अपने दिलों में नेक गुमान नहीं किया और यह क्यों नहीं कहा कि यह खुली हुई बोहतान तराशी है"। (सूरा नूर : 11—12)

उमरा अदा करने के लिए मक्का मुकर्रमा का सफ़र और सुलह हुदैबिया

ग़ज़व-ए-अहज़ाब में जिसे ग़ज़वे ख़ंदक भी कहते हैं मक्के के कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन और मदीने के यहूद व मुनाफिकीन सब मिलकर मुसलमानों के खिलाफ़ सफ़बस्ता (पंक्तिबद्ध) हुऐ थे लेकिन उन्हें अपने मन्सूबे बन्दी में खुली नाकामी हुई और वह मायूस व दिलबरदाश्ता (दुखी) हो कर वापस होने पर मजबूर हो गए थे, इसी तरीके से मुसलमानों की ताकत और मुकाबले की सलाहियत का अंदाज़ा कुरैश को हो गया और उसके बाद कुरैश ने किसी बड़ी मुहिम का मंसूबा नहीं बनाया लेकिन छेड़छाड़ की बातें उनकी तरफ से होती रहीं और ज़हां जहां से खतरात का इल्म होता रहा वहां मुसलमानों की तरफ से उसकी रोकथाम की कोशिश की जाती रही, चूंनाचे उन पर यह बात अच्छी तरह साफ हो गई कि

www.abulhasanalinadwi.org

मुसलमान अब मज़बूत हालत में हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख्वाब में देखा कि आप सल्ल० मक्के में दाखिल हुऐ और बैतुल्लाह का तवाफ किया (१)। एक सच्चा ख्वाब था लेकिन उसमें ज़माना, महीना और साल का तअय्युन (निर्धारण) न था, आप सल्ल० ने सहाबा कराम को मदीने में यह ख्वाब सुनाया, यह खुशख्बरी सुन कर सब लोग बहुत खुश हुए। मक्का और काबा (जिसकी मुहब्बत व अज़मत उनकी फितरत में शामिल, उनके रग व रेशे में पैवस्त थी) मुद्दत हुई वह उससे महरूम थे, उनके दिल में काबे की ज़ियारत और उसके तवाफ का बड़ा इश्तियाक़ (उल्लास) था, और वह बहुत बेचैनी से उस दिन के मुन्तज़िर थे, यह सआदत उनको दुबारा हासिल हो, मुहाजिरीन में मक्के का इश्तियाक़ कुदरती तौर पर बहुत ज़्यादा था, इस लिए कि वह वहीं पैदा हुए और पले बढ़े और उसकी मुहब्बत उनकी घुट्टी में पड़ी थी और अब वह अरसे दराज़ से हसरत दिल में लिए हुऐ थे, चूनांचे जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको यह खबर दी तो वह मुतवक्के (प्रत्याशित) हो गए कि इस ख्वाब की ताबीर (स्वपनफल) इसी साल निकल आऐगी। इस बात ने उनकी आतिशे शौक को और भड़का दिया, हुज़ूर सल्ल० का ख्वाब नबी होने की बिना पर सच्चा ही होता है। चूनांचे आपने काबे की जियारत व तवाफ का इरादा फरमा लिया और सब सहाबा भी आप सल्ल० के साथ रवाना होने के लिए अमादा हो गए शायद ही कोई बचा हो, जिसने इरादा न किया हो, इरादा सिर्फ उमरे का था, किसी टकराव का न था, और उमरा वहां हर एक उमरे की नियत से आने वाले के लिए खुला था, इस लिए किसी को भी रोका नहीं जाता था लेकिन सिर्फ मुसलमानों के लिए उसको मुश्किल बना दिया क्योंकि कुरैशी उनसे दुश्मनी रखते थे, आने न देते लेकिन अब मुसलमानों की ताकत ऐसी थी कि रोका नहीं जा सकता था। बहरहाल चूंकि वहां उमरे का ही इरादा था इस लिए हुज़ूर सल्ल० और मुसलमानों ने उमरे का एहराम शुरू से ही बांध लिया था ताकि लोगों को भी इसका इल्म हो जाये कि आप सल्ल० सिर्फ ज़ियारत बैतुल्लाह की ग़रज़ से तशरीफ ले जा रहे हैं।[1]

वहां पहुंच कर आप सल्ल० ने क़बील-ए-खुज़ाअः के एक मुख़बिर को कुरैश का पता लगाने के लिये नियुक्त किया, जब आप मक़ाम "असफ़ान" के क़रीब पहुंचे तो उस मुख़बिर ने आप सल्ल० को इत्तिला दी कि क़बील-ए-कअ़ब बिन लोई ने आप सल्ल० के मुक़ाबिले और पेश क़दमी रोकने के लिये हबशियों को इकट्ठा कर रखा है और ख़ासी बड़ी फ़ौज मुनज़्ज़म (संगठित) कर ली हैं, उनका इरादा है कि जंग करके आप सल्ल० को बैतुल्लाह तक पहुंचने से बाज़

---

(1) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7

www.abulhasanalinadwi.org

रखें, रसूलुल्लाह सल्ल० ने पेश क़दमी जारी रखी, जब आप सल्ल० उस घाटी पर पहुंचे जहाँ से उनकी तरफ़ उतार शुरू होता है तो आप सल्ल० की ऊँटनी "कसवा" बैठ गई लोगों ने यह देख कर कहना शुरू किया क़सवा अड़ गई, क़सवा अड़ गई, आप सल्ल० ने फ़रमाया क़सवा अड़ी नहीं और यह इसका तरीक़ा नहीं, इसको हाथियों के रोकने (आप का इशारा अबरहा के हाथी की तरफ़ था जिसको अल्लाह ने मक्के में दाखिल होने से बाज़ रखा) वाले ने रोका है, और क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, वह लोग कोई भी मनसूबा पेश करते हैं जिसमें अल्लाह तआला की ताज़ीम (सम्मान) का पहलू मद्दे नज़र रखा जाता है और मुझसे सिलारहमी का सवाल करते हैं, तो मैं उनका सवाल ज़रूर पूरा करूँगा, फिर आप सल्ल० ने ऊँटनी को झिड़का वह ख़ड़ी हो गई लेकिन अपना रुख़ बदल कर हुदैबिया की तरफ रवाना हो गई।[1]

मुसलमानों के मक्के में दाखिले से कुरैश की रोक और सुलह

कुरैश को जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी और उस जगह क़याम की ख़बर मिली तो उनको इससे सख़्त फिक्र व बदगुमानी (दुर्भावना) हुई, आप सल्ल० ने इस मौक़े पर मुनासिब समझा कि अपने असहाबे किराम में से किसी एक को भेज कर उनको इत्मिनान दिला दिया जाये कि मुसलमानों की तरफ से किसी टकराव या जंग का अंदेशा नहीं, चूंनाचे आप सल्ल० ने हज़रत उस्मान रज़ि० को बुला कर कुरैश के पास भेजा और फरमाया कि उनसे जाकर कह दो कि हम जंग करने के लिये नहीं बल्कि उमरे के इरादे से यहां आये हैं, उनको इस्लाम की भी दावत देना और आप सल्ल० ने यह भी हिदायत की कि मक्के मे जो अहले ईमान मर्द और औरतें मजबूरी से मुक़ीम (निवासी) हैं उनके पास जाकर उनको फतह की बशारत दें और उनको यह ख़ुशखबरी सुनाऐं कि अल्लाह तआला बिलआख़िर मक्के में अपने दीन को ग़ालिब करने वाला है यहां तक कि फिर उनको अपने ईमान को पोशीदा रखने की ज़रूरत बाक़ी न रहे। [2]

हज़रत उस्मान रज़ि० रवाना हुऐ मक्का पहुंच कर वह अबू सुफियान और कुरैश के बड़े ज़िम्मेदारों के पास गऐ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह पैग़ाम उनको पहुंचाया। [3]

---

(1) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7
(1) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7
(1) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7

www.abulhasanalinadwi.org

बैअते रिज़वान

हज़रत उस्मान के जाने के बाद रसूलुल्लाह सल्ल० को यह ख़बर मिली कि हज़रत उस्मान रज़ि० शहीद कर दिये गये, आप सल्ल० ने लोगों को हक़ के लिये जान दे देने का अहद करने के लिये बैअत की दावत दी, तमाम लोग जोश और बेखुदी के साथ आप सल्ल० के चारों तरफ जमा हो गये आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस वक्त एक दरख्त के नीचे तशरीफ रखते थे आप सल्ल० ने इस पर बैअत की कि (अब जो सूरतेहाल पैदा हो गई है उसके मुकाबले में) कोई राहे फरार न इख्तियार करेगा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद अपना दस्ते मुबारक थामा और फरमाया यह उस्मान रज़ि० की तरफ से है।[1]यह बैअत, बैअत रिज़वान कहलाई, यह हुदैबिया में एक बबूल के दरख्त के नीचे अंजाम पाई। इसको अल्लाह तआला ने मुसलमानों के इखलास व ईमान की मज़बूती की अलामत (चिन्ह) के तौर पर पसन्द फरमाया और उसका ज़िक्र कुरआन की निम्नानुसार आयतों में फ़रमाया :-

"(ऐ पैग़म्बर) जब मोमिन तुमसे दरख्त के नीचे बैअत कर रहें थें खुदा उनसे खुश हुआ और जो (सच्चाई व खुलूस) उनके दिलों में था उसने मालूम कर लिया तो उन पर तसल्ली नाज़िल फरमाई और उन्हें फतह (विजय) का फायदा इनायत किया जो क़रीब है" (सूरा फतह-**18**)

मुसलमानों का अमन पसंद रवय्या और मुसालिहत पर रज़ामंदी

यह उलझी हुई सूरतेहाल कायम थी कि अचानक बुदैल बिन वरका अल ख़ज़ाई, ख़ज़ाआ के कुछ आदमियों के साथ वहां पहुंचा उसने उनसे मामलात पर बात करना चाही और दरयाफ़्त किया कि आप सल्ल० की आमद का मक़सद (उद्देश्य) क्या है ?

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हम लोग किसी से जंग करने के लिए नहीं आए, हम सिर्फ उमरे की नीयत से यहां आए हैं, कुरैश को जंग ने पहले ही चूर चूर कर रखा है, अगर वह चाहें तो मैं कुछ मुद्दत उनसे तय कर लूँ और वह मेरे और लोगों के दरमियान का रास्ता छोड़ दें और अगर वह चाहें तो उसी गिरोह में शामिल हो जाएँ जिसमें और लोग शामिल हुए, वरना उन्हें कुछ मुद्दत आराम का मौका तो मिल ही जायेगा, लेकिन अगर जंग के अलावा कोई सूरत उनको कुबूल नही तो उस ज़ात की क़सम

---

(1) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7

www.abulhasanalinadwi.org

जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मैं अपने इस मामले (दीन) के सिलसिलें मे जंग करूगां, यहां तक कि मेरा सर तन से जुदा हो जाए या अल्लाह अपने दीन को ग़ालिब फरमा दे।

जब बुदैल ने वापस जा कर कुरैश को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पैग़ाम पहुंचाया[1] तो उरवा बिन मसऊद सक़फी ने कहा कि उन्होंने बहुत समझदारी की तजवीज़ रखी है मेरी राय यह है कि तुम उसको मान लो और मुझे उनसे मिलने दो, सबने कहा हाँ जाओ बात कर लो, उरवा बिन मसऊद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आकर मिले और आप सल्ल० ने उनसे गुफ़्तगू शुरू फरमाई, उरवा कनख़ियों से सहाबा कराम को देखते जाते थे, जिनका हाल यह था कि अगर आप सल्ल० थूकते तो कोई न कोई उसको हाथ पर ले लेता और अपने चेहरे और जिस्म पर लगा लेता, आप सल्ल० कोई हुक्म फरमाते तो हर शख्स तामील के लिये लपकता, वुज़ू फरमाते तो वुज़ू के पानी पर जानिसार इस तरह टूटते कि लड़ाई का खतरा होने लगता, आप सल्ल० कलाम फरमाते तो सब हमातनगोश हो जाते, तअज़ीम व अदब की वजह से कोई आप सल्ल० से नज़रें मिलाने की हिम्मत न करता, उरवा ने जा कर अपने साथियों से कहा ऐ क़ौम ! मैं बादशाहों के दरबार में गया हूँ मैंने क़ैसर व किसरा और नजाशी की शानो शौकत भी देखी है लेकिन खुदा की कसम मैनें नहीं देखा किसी बादशाह के दरबारी व मुसाहिबीन ऐसा अदब और इस दर्जे तअज़ीम (सम्मान) करते हों जैसा कि मुहम्मद सल्ल० के साथी मुहम्मद सल्ल० की करते हैं। उन्होंने जो कुछ यहां देखा उसकी तफसील उनको बताई और कहा कि उन्होंने बहुत अच्छी तजवीज़ रखी है तुम लोग उसको मान लो।[2]

मुआहिदा व सुलहनामा

इस दरमियान में बनी कनाना का एक और शख्स (जिसका नाम मकरज़ बिन हफ़स) भी वहां पहुंचा था दोनों ने अपने चश्मदीद वाक़िआत कुरैश के सामने बयान किये। कुरैश ने सुहैल बिन अमर को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में रवाना किया, आप सल्ल० ने उनको देखते ही बताया कि इनको भेजने से ही मालूम होता है कि वह सुलह के खाहिशमंद है, आप सल्ल० ने यह भी फरमाया कि मुआहिदा (समझौता) की तहरीरी दस्तावेज़ तैयार करो। [3]

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुआहिदे की तहरीर के लिये कातिब, (लिखने वाला जो उस वक्त हज़रत अली करम्मल्लाहू वजहहू थे) तलब

---

(1) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7
(1) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7
(1) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7

www.abulhasanalinadwi.org

फरमाया और इरशाद हुआ लिखो "शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो रहमान (बेहद रहम करने वाले) और रहीम (बहुत मेहरबान) हैं, सुहैल ने कहा कि जहां तक रहमान के लफ़्ज़ का तअल्लुक है बखुदा हम इससे वाकिफ नहीं हैं, पुराने दस्तूर के मुताबिक "बिस्मिकल्लाहुम्मा" लिखो, यानी ऐ अल्लाह ! तेरे नाम से शुरू करता हूँ आप सल्ल० ने फरमाया कि लिख दो, "बिस्मिकल्लाहुम्मा" मुसलमान यह देख कर बोल उठे कि नहीं हमतो "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" ही लिखेंगे रसूलुल्लाह सल्ल० का इरशाद हुआ, नहीं "बिस्मिकल्लाहुम्मा" ही लिख दो। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि लिखो यह वह है जिसका अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुआहिदा किया, यह सुन कर सुहैल ने कहा कि अगर हमारा इस पर ईमान होता कि आप सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं तो हम आप सल्ल० को बैतुल्लाह से रोकते ही क्यों? और आप सल्ल० से जंग ही क्यों करते, और आप सल्ल० से कहा कि अच्छा फिर उसकी जगह मुहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह लिखो।

रसूल सल्ल० ने फरमाया : (हकीकत तो यही है) कि मैं अल्लाह का रसूल सल्ल० हूँ ख़वाह तुम झुठलाओ, मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ही लिख दो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ि० को जो लिख गया था उसके तब्दील कर देने का हुक्म दिया हज़रत अली ने कहा कि खुदा की कसम मुझसे यह काम नहीं हो सकता, यानी रसूलुल्लाह का जो लफ़्ज़ लिख गया है उसको अपने हाथ से मिटाऊ, रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि मुझे उसकी जगह दिखाओं, उन्होंने आप सल्ल० को यह जगह दिखाई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको खुद मिटा दिया।"[1]

सुलह के लिये कुरैश का एकतरफा सख़्त रवय्या

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुआहिदे (समझौते) की यह दफा लिखाई कि अल्लाह के रसूल ने यह मामला इस पर किया है कि तुम लोग हमारे और बैतुल्लाह के दरमियान हाएल न हो, रूकावट न बनो और हम इसका तवाफ कर लें, सुहैल ने कहा कि अगर ऐसा होगा तो हमें यह डर है कि अरबों में यह चर्चा होने लगे कि हमने दब कर समझौता किया है, इस लिए इस पर अमल इस साल नहीं आईन्दा साल किया जाये, उस वक्त आप तवाफ कर सकते हैं, आप सल्ल० ने यह दफ़ा भी मुआहिदे में कुबूल कर ली।

सुहैल ने कहा कि इस मुआहिदे के मुताबिक यह भी होगा कि अगर हमारे यहां से कोई शख्स आप सल्ल० के यहां चला जाये ख्वाह वह आप सल्ल० ही के मज़हब का मानने वाला हो तो आप सल्ल० उसको हमें पलटा देंगे,

(1) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7

www.abulhasanalinadwi.org

मुसलमानों ने कहा कि सुबहानअल्लाह अगर कोई मुसलमान हो कर हमारे पास आता है तो हम उसे मुशरिकों के हवाले कैसे कर सकते हैं?

यह बात हो ही रही थी कि सुहैल के बेटे अबू जंदल बिन सुहैल बेड़ियों मे गिरते पड़ते पहुंचे वह मक्के के नशेब (तल) से आये थे, और किसी न किसी तरह अपने आपको मुसलमानों तक पहुंचा दिया था, सुहैल ने अपने बेटे को इस तरह पहुंच जाने को देखा तो कहा कि ऐ मुहम्मद (सल्ल०) मुआहिदे के तहत यह पहला शख्स है जिसकी वापसी का मुतालबा मै आप सल्ल० से करता हूँ, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया की अभी तो हमने मुआहिदे की तहरीर मुकम्मल भी नहीं कि, उसने जवाब दिया अगर ऐसा है तो फिर मैं किसी बात पर आपसे मामला करने पर तैयार नहीं आप सल्ल० ने फरमाया कि मेरे कहने पर (यानी मेरी ज़ाती फरमाईश पर ही) इन्हें इजाज़त दे दो, उसने कहा मैं आप सल्ल० के कहने पर भी इजाज़त नहीं दे सकता, आप सल्ल० ने फरमाया कि अच्छा जो तुम्हारा जी चाहे करो, उसने कहा मुझे कुछ नहीं करना है, यह सुन कर अबू जंदल बोले, मुसलमानों ! मैं मुसलमान हो कर आया हूँ और फिर मुशरिकों को वापस किया जा रहा हूँ, क्या तुम लोग देखते नहीं कि मेरे साथ क्या हो रहा है ? उन्होंने अल्लाह के रास्ते में सख्त तकलीफ़ें उठायी थीं, सूरतेहाल को देख कर रसूल सल्ल० ने कुरैशी नुमाइन्दे (प्रतिनीधि) के मुतालबे की बिना पर उनको वापस फ़रमा दिया।

इस मुआहिदे में दोनों फ़रीकों में यह भी तय हुआ कि दस साल तक दोनों खुन खराबे से परहेज़ करेंगे ताकि लोग अमन व इत्मिनान के साथ रह सकें और कोई किसी पर हाथ न उठाये और दूसरी बात यह तय हुई कि अगर कुरैश से कोई शख्स अपने वली (स्वामी) व सरपरस्त (अभिभावक) की इजाज़त के बग़ैर मुहम्मद (सल्ल०) के पास आ निकला तो वह उसको वापस कर देंगे और अगर मुहम्मद सल्ल० के साथियों में से कोई शख्स कुरैश के पास आ निकला तो वह उसको वापस न करेंगे और यह भी तय हुआ कि जो भी मुहम्मद (सल्ल०) के मुआहिदे और हिफाज़त में दाखिल होना चाहे वह उनके साथ हो सकता है, इसी तरह जो कुरैश के मुआहिदे और हिफाज़त में आना चाहे उसको इसकी इजाज़त होगी, चूनांचे कबीले बनी बक्र के लोग कुरैश के हलीफ बने (सहप्रतिज्ञा) और कबीले बनू ख़ज़ाआ के लोग मुसलमानों के हलीफ़ बने।[1]

मुसलमानों का इम्तिहान

जब मुसलमानों ने इस तरह की सुलह हो जाने और उसकी बिना पर वापसी की बात सुनी और उन्होंने यह देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

(1) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 4/7

www.abulhasanalinadwi.org

वसल्लम ने किस तरह बर्दाश्त किया तो यह बात उनके लिये इतनी रूहफरसा (तकलीफदह) साबित हुई कि उनकी जान पर बन गई, यहां तक कि हज़रत उमर हुज़ूर सल्ल० के पास गये फिर हज़रत अबुबक्र के पास आये और कहने लगे कि क्या हम हक़ पर और यह काफ़िर बातिल पर नहीं हैं ? हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा : क्यो नहीं? हम हक़ पर हैं और कुफ़्फ़ार बातिल पर हैं, हज़रत उमर रज़ि० ने कहा तो फिर क्यों दीन के मामले में हमको यह हिक़ारत (हीनता) हासिल हो रही है? और क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमसे यह नहीं फ़रमाया था हम लोग बैतुल्लाह जायेंगे और तवाफ करेंगे ? उन्होंने कहा : हाँ फरमाया था लेकिन क्या उन्होंने तुमसे यह कहा था कि तुम इसी साल बैतुल्लाह जाओगे और तवाफ भी करोगे यह अल्लाह के रसूल हैं, उनकी रक़ाब थामे रहो, हज़रत उमर रज़ि० ने फिर हुज़ूर सल्ल० से इसी तरह की बात की, आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको इसी तरह समझाया।

हज़रत उमर रज़ि० बाद में अपनी इस बात पर अफसोस किया करते थे कि उन्होंने इतना भी क्यों कहा, अपने इसी अफ़सोस में उन्होंने कई ख़ैराती काम किये ताकि वह जिसको वह चूक और ग़लती महसूस करते थे उसकी पूर्ति हो जाये शायद उनके ज़हन में कुरआन मजीद की वह आयत थी जिसमें नबी के फैसले पर दिल में भी शुबहा (संकोच) लाने से मना किया गया है :

"और जो तुम फैसला कर दो उससे अपने दिल मे तंग न हों बल्कि उसको खुशी से मान लें" (सूरा : निसा -65)

और तमाम सहाबा किराम, हज़रत उमर सहित, का यही रवय्या था इसमें फर्क नहीं आया था, कि नबी की बात अल्लाह तआला की तरफ से होती है, उसमें किसी शक व शुबहे की गुंजाईश नहीं है और इसी की तलक़ीन (उपदेश) क़यामत तक के लिये मुसलमानों को की गई है।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस सुलहनामे से फ़ारिग़ हुए तो आप सल्ल० ने मुसलमानों से फ़रमाया कि मिना में कुरबानी करने के लिये लाए हुए जानवरों को अब यहीं ज़बह कर दो, मुसलमानो की समझ में नहीं आ रहा था कि यह कैसे हो रहा है और क्या हो रहा है इसलिये वह नहीं समझ पाए कि हुज़ूर सल्ल० के इस फ़रमान का मतलब कुछ और तो नहीं है, इसलिये कि कुरबानी के जानवर मक्का पहुँचने से पहले ज़बह करने का कोई दस्तूर नहीं रहा है, इसीलिये वह कुरबानी करने के लिये आगे नहीं बढ़े, हुज़ूर सल्ल० को यह महसूस करके कि शायद मुसलमान बात नहीं मान रहे हैं बड़ी फ़िक्र और मलाल हुआ कि क्या मुसलमान अपने नबी का हुक्म मानने से कतरा रहे हैं, आप सल्ल० इसी एहसासे मलाल के साथ अपने खीमे में दाखिल हुए, आप सल्ल० के साथ आपकी ज़ोज-ए-मुहतरमा हज़रत उम्मे सलमा आईं थीं, आप ने

उनसे अपने इस एहसास का तज़किरा किया, उन्होने कहा कि या रसूलुल्लाह सल्ल० यह नाफ़रमानी नहीं है, यह ज़ेहन के शदीद असर की वजह से बात न समझ पाने की वजह से होगा, लिहाज़ा आप खुद कुरबानी शुरू करें तो लोगो का ज़हन खुल जायेगा चूनांचे आप रसूलुल्लाह सल्ल० कुरबानी के जानवरों की तरफ मुतवज्जेह हुये और उनको जाकर ज़बह करना शुरू कर दिया और उसके बाद सर मुडाया, मुसलमानों के लिए यह बात एक बड़े सानिहे (घटना) से कम न थी, इस लिए कि मदीने से निकलते वक्त उनके दिल में इसका वसवसा भी नहीं था कि उन्हें मक्के जाने और उमरा करने का मौका न मिल सकेगा और उनको अपनी मर्जी के खिलाफ ऐसी बात पर अमल करना होगा जिसमे उनकी एक तरह से बेइज़्ज़ती होगी जिसके लिए वह इस्लाम से पहले बिला झिझक जान दे देते और जान ले लेते थे, लेकिन जब आप सल्ल० को कुरबानी करते और हलक़ कराते सर मुडाते देखा तो सब उसी वक्त तेज़ी से खड़े हो गए और आप सल्ल० की पैरवी करते हुऐ कुरबानी और हलक़ में मशगूल हो गए कि नबी के अमल के खिलाफ अमल नहीं करना है। [1]

सुलह (समझौता) देखने में अपमानजनक लेकिन नतीजे के लिहाज़ से लाभदायक

इसके बाद आप सल्ल० मदीना तशरीफ लाए और रास्ते ही में अल्लाह तआला ने यह आयतें नाज़िल फरमाई :-

अनुवाद :

"ऐ ! मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमने तुमको फतह (विजय) दी, सरीह व साफ फ़तह (ताकि तुमको इस तरह यह बात हासिल हो जाए कि) खुदा तुम्हारें अगले और पिछले गुनाह बख्श दे और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दे और तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाए और खुदा तुम्हारी ज़बरदस्त मदद करे" (सूरा फतह : 1—3)

हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल० क्या यह फतह है ? आप सल्ल० ने फरमाया, हाँ !

यह मुआहिदा हकीकत में मुसलमानों के लिए बहुत बड़ी फतह का ज़रिया साबित हुआ, जैसा कि बाद के हालात व वाक़िआत ने साबित कर दिखाया।[2]

---

(1) सुलह हुदैबिया की तफ़सील के लिये देखियेः सही बुख़ारी, ज़ादुल मआद 3/286, सीरत इब्ने हिशाम 2/308, अलबिदाया—वन—निहाया 4/164, अल—कामिल फ़ित्तारीख़2/200

(2) सही मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब सुलह हुदैबिया

www.abulhasanalinadwi.org

ज़ाहिरी सूरत में नाकामी हकीकत में कामयाबी

मुआहिदे (समझौते) के बाद आप सल्ल० जब मदीने वापस तशरीफ ले आए, आप सल्ल० के पास कुरैश के एक फर्द अबू बसीर उतबा बिन उसैद मुसलमान होकर पंहुचे उनकी तालाश में कुरैश ने दो शख्स भेजे और वह मुआहिदा आपको याद दिलाया, चूंनाचे आप सल्ल० ने मुआहिदे की बिना पर अबू बसीर को इन दोनों के हवाले किया, यह दोनों उन्हें साथ लेकर वापस लौटे लेकिन रास्ते में अबू बसीर का इन दोनों लोगों में एक से टकराव हो गया और अबू बसीर ने उसको खत्म कर दिया, दूसरा आदमी भाग कर मदीने आया और हुजूर सल्ल० से शिकायत की, अबू बसीर भी आये और कहा कि आप सल्ल० ने मुझे वापस कर दिया था आपने मुआहिदे पर अमल कर दिया था अब तो मैं खुद अपनी ज़ाती बुनियाद पर आया हूँ आप सल्ल० पर ज़िम्मेदारी नहीं, लेकिन आप सल्ल० ने यह बात कुबूल नहीं की कि इससे ग़लत राय क़ायम की जायेगी लिहाज़ा आपने अबू बसीर को ठहरने की इजाज़त नहीं दी, तो अब अबू बसीर बजाए मक्का के समुद्र के साहिल पर आ गए इसी तरह एक दूसरे फर्द अबू जंदल बिन सुहैल भी मुसलमान होकर कुरैश की ज़द से निकले और बजाए मदीना जाने के अबू बसीर से आ मिले और अब यह होने लगा कि कुरैश का जो भी मुसलमान मक्का से जान व ईमान बचा के निकलता तो वह सीधा अबू बसीर से जा मिलता। रफ़ता रफ़ता उनकी पूरी जमाअत (समूह) तैयार हो गई और साहिली इलाके पर जो मक्का और शाम के रास्ते में था जगह बना ली, फिर यह लोग यह करने लगे कि (मक्का और शाम के रास्ते पर अपना मस्तक़र (ठिकाना) बना लेने की वजह से) वहां से कुरैश का जो भी क़फिला शाम जाने वाला उन्हें मिलता यह उसका रास्ता रोक कर उसके माल व असबाब पर कब्ज़ा कर लेते और क़ाफिले वाले मुज़ाहिमत करते (रूकावट डालते) तो उनको कत्ल कर डालते । आख़िरकार कुरैश ने इस सूरतेहाल से आजिज़ हो कर अल्लाह का वास्ता और रिश्तेदारी और क़राबत की दुहाई दे कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दरख्वास्त की कि आप सल्ल० उन लोगों को अपने पास ज़रूर बुलवा भेजें और मुआहिदे में यह तरमीम (संशोधन) की जाती है कि मुसलमान होकर जो भी जाये उसको आप कुबूल कर सकते हैं, मुआहिदे की वह शर्त ख़त्म समझें अब जो भी मुसलमान हो कर आप सल्ल० के पास पहुंचेगा, वह सुरक्षित व महफ़ूज़ रहेगा।[1]

---

(1) सही बुख़ारी, किताबुशशुरूत, बाबुशशुरूत फ़िल जिहाद

www.abulhasanalinadwi.org

सुलह (समझौता) के फाइदे और आश्चर्यजनक परिणाम व प्रभाव

दूसरे पेश आने वाले वाकिआत और घटनाओं ने यह साबित कर दिया कि सुलह हुदैबिया से (जिसमें हुज़ूर सल्ल० ने अपने स्तर से बहुत कुछ उतर कर मुआहिदा फ़रमाया था और कुरैश का मुतालबा मान लिया था और उन्होंने भी उसको अपनी बड़ी जीत और नफ़े का सौदा समझा था और मुसलमानों ने इसको सिर्फ ईमानी कूव्वत और नबी की पूर्ण आज्ञापालन की भावना से इसको बर्दाश्त कर लिया था। हक़ीक़त मे इस्लाम की तरक़्क़ी व कामयाबी का एक नया दरवाज़ा खुल गया और कुरैश से इस मुआहिदे के हो जाने के नतिजे में मुसलमानों का आज़ादी के साथ आने जाने, मिलने जुलने का मौका मिलने लगा और उनको इस तरह दावती काम की भी आसानी हो गई, इसके असर से इस्लाम का अरब द्वीप में इस क़दर तेज़ी के साथ विकास हुआ कि इससे पहले कभी न हुआ था, क्योंकि अब मुसलमानों को बग़ैर किसी खतरे के दावते हक़ का काम करने की आज़ादी हासिल हो गई थी। दूसरी तरफ कुरैश दो साल ही गुज़रे थे कि खुद ही मुआहिदे की पाबन्दी से आजिज़ हो गए और खुले तरीक़े से मुआहिदे की खिलाफ वर्जी के मुजरिम बने, उन्होंने मुसलमानों के हलीफ क़बीले खुज़ाआ से जंग कर डाली जिसकी मुआहिदे में गुंजाईश नही थी, खुज़ाआ ने मुसलमानों के ना जंग मुआहिदे के हवाले से मदद तलब कर ली और मुआहिदे के टूट जाने की इत्तिला दी, इसकी बिना पर मुसलमानों ने फौज लेकर मक्के की तरफ कूच किया, उनकी तादाद (संख्या) इतनी ज़बरदस्त थी कि मक्के वालों की हिम्मत जवाब दे गई, और वह ऐसे भयभीत हुऐ कि मक्का बिला जंग किये मुसलमानों को मिल गया इस तरह पूरे अरब द्वीप के केन्द्र पर मुसलमानों का प्रभुत्व स्थापित हो गया, इससे पहले भी मुआहिदे (समझौते) की दो साला अमन की मुददत में विभिन्न क्षेत्रों के शासकों को भी हुज़ूर सल्ल० ने दावते इस्लाम के पत्र लिखे थे और उनके ज़रिये क़ैसर व किसरा, मकोकस, नजाशी, अरब के सरदारों को इस्लामी दावत दी थी, जिसका इस्लाम 'की कूव्वत व अज़मत (शक्ति व महानता) के क़ायम होने में गहरा असर पड़ा, अल्लाह तआला ने बिल्कुल सही इरशाद फरमाया :

तर्जुमा : "मगर अजब नहीं कि एक चीज़ तुमको बुरी लगे और वह तुम्हारे हक़ मे भली हो और अजब नहीं कि एक चीज़ तुमकों भली लगे और वह तुम्हारे लिए मुज़िर (हानिकारक) हो और (इन बातों को) खुदा ही बेहतर जानता है और तुम नही जानते" (सूरे बक़रा : 216)

www.abulhasanalinadwi.org

इस तरह इस्लाम के परिचय और उसके लोकप्रिय होने में बड़ा इज़ाफा हुआ और इस्लाम में लोग दल के दल दाखिल होने लगे। इन ही असबाब (कारणों) की बिना पर इस समझौते को अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़तह (विजय) क़रार दिया गया। इसी मुआहिदे (समझौते) के अनुसार मुआहिदे के अगले साल ही मुसलमानों को बैतुल्लाह जाने और उमरा करने का मौका मिला और कुफ़्फ़ार ने कोई रूकावट नहीं डाली, बग़ैर किसी टकराव के मुसलमानों के उमरे की खवाहिश पूरी हुई, दूसरी तरफ़ कुफ़्फ़ार के सामने मुसलमानों की अमन पसन्दी का रूख स्पष्ट हुआ कि अमन (शान्ति) की बहाली के लिए वह सिर्फ मामूली अमन पसन्दी ही नहीं बल्कि उसके लिए उन्होंने अपने जज़्बात और हमीयत (भावनाओं और स्वाभिमान) के तकाज़ो तक को दबाया।[1]

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और हज़रत अमर बिन आस का क़बूले इस्लाम

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और हज़रत अमर बिन आस रज़ि० अपनी शुरू ज़िंदगी ही से कुरैश के नामवर लोगों में थे। कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन उनकी मदद व शिरकत से बड़ी कूव्वत महसूस करते थे, सुलह हुदैबिया के वक़्त भी यह कुरैश के ही सहयोगी थे। हज़रत ख़ालिद अपनी फ़ौजी सलाहियत और हज़रत अमर बिन आस राजनीतिक सूझ बूझ में वरिष्ठ थे। सुलह हुदैबिया के बाद यह दोनों इस्लाम की सत्यता और कल्याण से प्रभावित होकर इस्लाम ले आए। उनके इस्लाम ले आने से इस्लाम की जड़ों को मज़बूत करने में इन दोनों का बड़ा हिस्सा रहा और उन्होंने बड़े कारनामें अंजाम दिये। हज़रत ख़ालिद की तलवार ने रोम व शाम में ज़लज़ला पैदा कर दिया यहां तक कि जंगों में उनकी शिरकत फतह (विजय) की ज़मानत समझी जाने लगी। जंगो में उन्होंने जो कारनामे अंजाम दिये वह (आबेज़र) सोने के पानी से लिखे जाने के लायक़ है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने "सैफुल्लाह" यानी अल्लाह की तलवार का उन्हें ख़िताब दिया।

हज़रत अमर बिन आस (जिनके हिस्से में मिस्र की फतह मुकद्दर थी) अक्ल व ज़हानत (प्रखर बुद्धि या सूझ-बूझ) में अरब के चार मुमताज़ (श्रेष्ठ) लोगों में से एक कहे जाते थे, उन्होंने हब्शा में नजाशी शाहे हब्शा से एक मुकालमे (वार्तालाप) के बाद हज़रत जाफर बिन अबी तालिब के हाथ पर इस्लाम कुबूल किया इन दोनों के इस्लाम लाने से इस्लाम और मुसलमानों को बड़ी ताक़त

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/370

www.abulhasanalinadwi.org

मिली और उनकी सलाहियतें (क्षमताएं) दीन के विकास और तरक्की में खूब काम आईं। [1]

शासक वर्ग को दावते इस्लाम

सुलह होने के बाद स्वाभाविक तौर पर आपस में सम्पर्क और सम्बन्ध की वजह से दावत के काम में सहूलत पैदा हुई और इस्लाम को समझने के अवसर उपलब्ध हुए और इस्लाम की बढ़ती हुई ताकत और गलबे के असर से उसकी अहमियत का अंदाज़ा आम होने और लोगों में उसको जानने का ख़्याल बढ़ा और कुरैश से सुलह हो जाने की सूरत में अमन की जो फ़िज़ा कायम (स्थापित) हुई, उससे फायदा उठाते हुऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तबलीग़ हक़ के काम को बढ़ाया और आप सल्ल० को दूर दूर तक पैग़ाम हक़ पहुंचाने में आसानी हासिल हुई और आप सल्ल० ने कमज़ोर तबके से लेकर ताक़तवर तबके तक अरब के सरदारों व सुल्तानों से लेकर अजम के बादशाहों और उनकी क़ौमों को भी दावते हक़ पहुंचायी जहां ख़ुद नहीं जा सके वहां अपने नुमाईंदे (प्रतिनिधि) भेजे जिन्होंने उनके रूतबे और मन्सब का ख़याल करते हुऐ दावते हक़ कुबूल करने और इस्लाम के साए तले आने की दावत दी। आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने कुर्ब व जवार के क्षेत्रीय शासकों को दावते हक़ के खतूत (पत्र) भी लिखे, कि वह हक़ (सच्चाई) कुबूल करें और पैग़ामे खुदावंदी को मानते हुऐ आप सल्ल० की रहबरी (पथप्रदर्शन) में आ जाऐं और सच्चे दीन को प्रचलित करें और वह इस तरह दुनिया की कामयाबी के साथ आखिरत की भी कामयाबी हासिल कर सकें।

चूनांचे (अतः) आप सल्ल० ने सन् 6 हिजरी के आख़िर या सन् 7 हिजरी के शुरू में विभिन्न क्षेत्रों के बादशाहों को जो मकतूब (पत्र) लिखे उन्हें आप सल्ल० के नियुक्त किये हुऐ संदेशवाहक ले कर रवाना हुए, लोगों ने आप सल्ल० से कहा कि बादशाहों को जो खत भेजे जाते हैं उन पर मुहर भी होती हैं लिहाज़ा आप सल्ल० ने अपनी मुहर भी बनवाई, जिसमें अपने नामे मुबारक को कुन्दा (अंकित) कराया, उसमें नामे मुबारक "मुहम्मद" नीचे, उसके ऊपर "रसूल" उसके ऊपर "अल्लाह" कुन्दा कराया और खुतूत (पत्र) रवाना फरमाये। एक ख़त शाहे हबशा को भेजा जो हज़रत अमर बिन उमय्या ज़मरी लेकर गए, एक ख़त शाहे रोम को भेजा, जिनका निवास स्थान शाम था, यह ख़त हज़रत दहया बिन ख़लीफा कलबी लेकर गए, तीसरा शाहे ईरान को भेजा जिसको हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा सहमी लेकर गए, चौथा शाहे असकन्दरया मक़ूकस मिस्र को भेजा, जिसको हज़रत हातिब बिन बलतअ़ लेकर गए, पांचवा ख़त ग़स्सानी बादशाह

(1) तारीख अरब क़बलल इस्लाम 2/277 - 278

www.abulhasanalinadwi.org

हारिस बिन शिमर के पास भेजा, जिसको हज़रत शुजा बिन वहब असदी लेकर गए, छठा ख़त मुबारक शाहे यमामा को भेजा, जिसे हज़रत सलीत बिन उमर बिन अबदे शम्स लेकर गए।[1]

इन बादशाहों और सरदारों में हबशा के बादशाह (नजाशी) और कैसरे रोम (हिरक़्ल) ने तो दावते हक़ पर ध्यान दिया और मुबारक ख़त की इज़्ज़त की और संदेशवाहकों को सम्मान दिया। ईरान के बादशाह किसरा ने अनुचित बरताव किया और ख़त को फ़ाड़ दिया, और सिर्फ इसी पर बस नहीं किया बल्कि अपने गर्वनर, जो यमन में था को यह लिखा कि आदमी भेज कर आप सल्ल० की तादीब करे (धमकी दे) लेकिन इस बदतमीज़ी की सज़ा अल्लाह की तरफ से उसको मिली कि खुद उसके बेटे ने ही इन्किलाब (क्रान्ति) करके उसकी हुकूमत छीन ली।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने विदेशी शासकों के अलावा अरब शासकों को अलग से खुतूत (पत्र) रवाना किये और उनका फायदा भी हुआ, उनमें ओमान के बादशाह के पास हज़रत अमर बिन आस के हाथ नाम-ए-मुबारक भेजा और उसका अच्छा नतीजा निकला और उन्होंने हक़ (सच्चाई) को कुबूल किया। यमन के शासक हारिस अबदे कलाल को हज़रत मआविया मख़ज़ूमी के हाथ ख़त भेजा उन्होंने फौरन तो नही मगर आज्ञा पालन किया, इनके अलावा मआज़ बिन जबल को यमन भेजा ताकि वहां वह हक़ की दावत दें। उनको कामयाबी हासिल हुई। वहां के बाशिन्दों (निवासियों) ने हक़ को कुबूल किया, बाद में हज़रत अली को भेजा उनके ज़रिये भी वहां हिदायत फैली। उनके अलावा भी और कई हुक्मारानों (शासकों) को खुतूत (पत्र) रवाना फरमाए। इन पत्रों द्वारा पूर्ण अरब द्वीप बल्कि उसके करीब इलाके के शासकों को दावत दी। इस तरह से दावते हक़ पूरे इलाके मे पहुंच गयी, जिसका ख़ास फायदा हुआ और वह दावते दीन जिसका प्रारम्भ मक्का मुअज़्ज़मा के सीमित माहौल से हुआ था और मक्के वाले उसके सख्त मुखालिफ (विरोधी) हो गए थे और दुश्मनी पर अमादा थे, उसके चारों ओर क़रीबी इलाको तक पहुंची थी, वह पूरे प्रदेश में पहुंच गयी। प्रारम्भिक सुबूत सब पर प्रमाणित हो गया। आप सल्ल० ने जो खुतूत (पत्र) लिखे, इतिहास में उनमें से कुछ पत्र सुरक्षित हैं, जिन्हें रसूलुल्लाह सल्ल० के जीवन चरित्र लिखने वालो ने अपनी किताबों मे दर्ज किया है, नमूने के तौर पर कुछ मकतूब (पत्र) पेश किये जा रहे है।[2]

शाहे हबशा नजाशी के नाम नाम-ए-मुबारक

तर्जुमा : "शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बहुत रहम करने वाला है और रहीम है, अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल० की ओर से नजाशी बादशाह

---

(1) तफ़सील के लिये देखें: अलकामिल फित्तारीख 2/210

(1) अलबिदाया वन–निहाया 4/262–277

www.abulhasanalinadwi.org

हबशा की ओर इस्लाम कुबूल करो, मैं तुम्हारी तरफ खुदा की हम्द (स्तुति) भेजता हूँ जिसके अतिरिक्त कोई माबूद (इबादत के लायक) नहीं वह बादशाह है, पाक है, सारे ऐब (दोष) से पाक है, अपने रसूलों की तसदीक़ (पुष्टि) करने वाला, अपने बन्दों को क़यामत के मैदान में अमन देने वाला है, उनको बुलन्द दर्जा इनायत (प्रदान) करने वाला है, और ग़वाही देता हूँ कि ईसा बिन मरयम खुदा की रूह और कलमा हैं, खुदा ने उनको पाक दामन कुंवारी मरयम पर डाला, जिससे वह हामिला (गर्भवती) हुईं, तो खुदा ने हज़रत ईसा अ० को अपनी रूह और नफख़ (फूँक) से पैदा किया, जिस तरह आदम को अपने हाथ से पैदा किया, और मैं तुमको और तुम्हारे लश्कर को अल्लाह अज़्ज़वजल्ल (सर्वशक्तिमान) की तरफ बुलाता हूँ, मैंने खुदा का हुक्म पहुंचा दिया और नसीहत कर दी। तुम मेरी नसीहत कुबूल करो और सलाम उस पर जो सीधे रास्ते पर चले"[1]

शाहे मिस्र व असकनदरया मक़ोक़स के नाम नाम-ए-मुबारक

"बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, मुहम्मद की तरफ़ से जो खुदा का बन्दा और उसका रसूल है, मकोकस की तरफ जो क़ौमे किब्त का बड़ा है। सलाम उस पर जो सीधे रास्ते की पैरवी करे, इसके बाद मैं तुमको इस्लाम के कलमे की तरफ़ बुलाता हूँ, इस्लाम कुबूल करो, सलामत रहोगे, इस्लाम कुबूल करो खुदा तुमको दोहरा सवाब देगा और अगर तुमने मुंह फेरा तो सारे अहले किब्त का गुनाह तुम पर होगा और ऐ अहले किताब इस बात की तरफ आओ जो हमारे तुम्हारे दरमियान मुत्तफ़क अलैहि (सर्वमान) है कि खुदा के अलावा और किसी की इबादत न करें, खुदा के साथ किसी को शरीक न करें, हम में से कोई किसी दूसरे को खुदा के सिवा अपना मालिक न बना ले, अगर तुम नहीं मानते तो गवाह रहो कि हम मानते है"।[2]

किसरा के नाम ख़त

"बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से किसरा को जो कौमे फ़ारस का बड़ा है, सलाम हो उस पर जो सीधे रास्ते की पैरवी करे और ईमान लाए खुदा पर और खुदा के रसूल पर, और गवाही दे कि खुदा एक है और उसका कोई शरीक नहीं और मुहम्मद खुदा के बन्दे हैं और रसूल। मैं तुमको भी इस्लाम की तरफ बुलाता हूँ मैं खुदा का भेजा हुआ हूँ सारे इंसान की तरफ ताकि वह उनको ख़ौफ दिलाए और काफिरों पर हुज्जत कायम हो जाए,

---

(2) तारीख तबरी 3/652, ज़ादुल मआद 3/689
(1) ज़ादुल मआद 3/691

www.abulhasanalinadwi.org

इस्लाम कुबूल करो सलामत रहोगे और अगर तुमने इन्कार किया तो सारी क़ौमे मजूस का वबाल तुम पर होगा"[1]

क़ैसरे रोम हिरक़्ल को दावते इस्लाम

"बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम मुहम्मद, रसूलुल्लाह की तरफ़ से हिरक़्ल की जानिब जो रोम का अज़ीम (महान) है, सलाम हो उस पर जो सीधे रास्ते की पैरवी करे, बाद इसके मैं तुमको इस्लाम के कलमे की दावत देता हूँ, मुसलमान हो जाओ सलामत (सकुशल) रहोगे और ख़ुदा तुम्हे दोहरा अज्र देगा लेकिन अगर तुमने मुंह फ़ेरा तो तमाम अरिसीयीन का गुनाह तुम पर होगा और अहले किताब तुम एक ऐसी बात को कुबूल कर लो जो हम में और तुम में समान है, वह यह है कि हम ख़ुदा के सिवा किसी को न पूजें और हममें से कोई किसी को ख़ुदा को छोड़ कर ख़ुदा न बनाए, और तुम नहीं मानते तो गवाह रहो कि हम मानते हैं।[2]

हिरक़्ल की इन्क्वाईरी (जाँच-पड़ताल)

हज़रत इब्ने अब्बास कहते हैं कि उनसे अबू सुफ़ियान ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़त शाम में गया था तो हम वहीं थे, दहिया कल्बी वह ख़त लाए थे, उन्होंने बुसरा के अमीर (गर्वनर) को दिया था और अमीरे बुसरा ने हिरक़्ल को दिया, हिरक़्ल ने पूछा : जो शख़्स नुबूव्वत का दावा करता है क्या उसकी क़ौम का कोई आदमी यहां है? लोगों ने कहा कि 'हाँ', इस लिए वह लोग मुझको और मेरे चंद साथियों को हिरक़्ल के पास ले गए, हिरक़्ल ने पूछा कि उनका सबसे क़रीबी रिश्तेदार कौन है, अबू सुफ़ियान ने कहा कि मैं हूँ, इसलिए अबू सुफ़ियान को हिरक़्ल के सामने बिठाया और उसके साथियों को उसके पीछे, फिर हिरक़्ल ने अनुवादक के माध्यम से कहा कि मुद्दई-ए-नुबूव्वत के बारे में हम कुछ इनसे पूछना चाहते हैं, अगर हमसे यह कोई ग़लत बात कहें तो तुम लोग उसको ज़ाहिर कर देना, अबू सुफ़ियान का बयान है कि अगर हमको हमारा झूठ बोलना ज़ाहिर होने का अंदेशा न होता तो ज़रूर उस रोज़ हम बहुत सी बात लगा कर कहते।

अबू सुफ़ियान और हिरक़्ल का मुकालमा (वार्तालाप)

हिरक़्ल : उनका नसब (वंश) क्या है ?

---

(2) सही बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब किताबुन नबी इला किसरा व क़ैसर, ज़ादुल मआद 3/688

(3) सही बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी, बाबु दुआइन नबी इलल इस्लाम वन नबूव:, ज़ादुल मआद 3/6688

1 सही बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब किताबुन नबी इला किसरा व क़ैसर, ज़ादुल मआद 3/688

www.abulhasanalinadwi.org

अबू सुफियान : वह हम में ऊंचे ख़ानदान के समझे जाते हैं

हिरक़्ल : क्या जो बात वह कहते हैं उनसे पहले भी किसी ने कही है ?

अबू सुफियान : नहीं।

हिरक़्ल : उस खानदान में कोई बादशाह गुज़रा है ?

अबू सुफियान : नहीं।

हिरक़्ल : क्या साहिबे असर (प्रभावशाली) लोगों ने उनका इत्तिबाअ (अनुसरण) किया है या कमज़ोरों ने ?

अबू सुफियान : कमज़ोर लोगों ने

हिरक़्ल : उनके पैरो बढ़ रहे हैं या घटते जाते हैं ?

अबू सुफियान : बढ़ते जाते हैं।

हिरक़्ल : क्या कोई उनके दीन में दाख़िल होने के बाद दीन को नापसंद करके फिर भी जाता है ?

अबू सुफियान : नहीं।

हिरक़्ल : क्या उनके इस दावे से पहले भी तुमने कभी उन पर झुठ का तजुर्बा (अनुभव) किया है ?

अबू सुफियान : नहीं।

हिरक़्ल : क्या वह अहद व क़रार की खिलाफ वर्ज़ी भी करते है ?

अबू सुफियान : अभी तक तो नहीं की, लेकिन अब जो नया मुआहिद-ए-सुलह है उसमे देखें वह अहद पर क़ायम रहते हैं या नहीं?

हिरक़्ल : तुम लोगों ने कभी उनसे जंग की?

अबू सुफियान : हाँ।

हिरक़्ल : जंग का नतीजा क्या रहा?

अबू सुफियान : जंग का पांसा हमारे और उनके दरमियान पलटता रहा है, कभी हम ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) आते हैं, कभी वह।

हिरक़्ल : वह क्या तालीम देते हैं?

अबू सुफियान : वह कहते हैं कि एक ख़ुदा की इबादत करो, किसी और को ख़ुदा का शरीक न बनाओ, नमाज़ पढ़ो, पाक दामनी इख़्तियार करो, सच बोलो, सिलह रहमी करो।

हिरक़्ल ने मुतरजिम (अनुवादक) से कहा कि उनसे कहो कि हमने तुमसे उनके नसब (खानदान) के बाबत पूछा तो तुमने बताया कि वह तुम में शरीफ नसब हैं। पैग़म्बर हमेशा अच्छे ही ख़ानदानों मे पैदा होते हैं, मैंने तुमसे दरयाफ़्त किया क्या उस ख़ानदान में किसी और ने भी नबूअत का दावा किया था, तो तुमने कहा कि नहीं, अगर उनसे पहले किसी ने यह दावा किया होता तो मैं कहता कि वह उसी की नक़ल कर रहे हैं, मैंने तुमसे पूछा कि क्या उनके

www.abulhasanalinadwi.org

ख़ानदान में कोई बादशाह गुज़रा है, तुमने कहा नहीं, अगर कोई बादशाह गुज़रा होता, तो मैं कहता कि अपने ख़ानदान की बादशाहत के तालिब हैं, मैंने दरयाफ़्त किया कि क्या तुम उनको इस दावे से पहले भी कभी झूठा कहते थे तुमने कहा नहीं, मैं जानता हूँ यह नामुमकिन था कि वह लोगों से तो झूठ ना बोलें और अल्लाह पर झूठ बांधे, मैंने तुमसे पूछा की शरीफ और बाअसर लोग उनके पैरो हैं या ग़रीब और कमज़ोर, तो तुमने कहा कि कमज़ोरों ने ही उनकी पैरवी की है, पैग़म्बरों के इब्तिदाई पैरो (प्रारम्भिक अनुसरण करने वाले) हमेशा ग़रीब ही लोग होते हैं, मैंने तुमसे दरयाफ़्त किया कि उनके पैरो बढ़ते जाते हैं या घटते जाते हैं, तुमने कहा कि बढ़ते जाते है, ईमान का यही मामला है कि बढ़ता जाता है यहाँ तक कि कमाल को पहुंच जाए। मैंने तुमसे पूछा कि कोई उनके दीन से नाराज़ होकर मुरतद होकर (विधर्मी) भी हो जाता है, तुमने कहा नहीं, ईमान का हाल यही होता है, जब दिलों को उसकी चाशनी हासिल हो जाती है तो वह निकलता नही है, मैंने तुमसे पूछा कि क्या वह अहद व पैमान की ख़िलाफ़ वर्ज़ी भी करते हैं तुमने कहा नहीं, पैग़म्बर इसी तरह ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करते और मैंने तुमसे दरयाफ़्त किया कि वह क्या सिखाते हैं, तुमने बताया कि तुमको यह सिखाते हैं कि तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो, और तुमको बुतों की पूजा से रोकते हैं, नमाज़, सच्चाई, पाकदामनी की तालीम देते हैं, अगर तुम्हारा कहना सच है तो अनक़रीब इस वक्त जहां मेरे क़दम हैं वहां तक उनका कब्ज़ा हो जायेगा, मुझको यह ज़रूर ख़्याल था कि एक पैग़म्बर आने वाला है लेकिन यह ख़्याल न था कि वह अरब मे पैदा होगा, अगर मैं वहां जा सकता तो ज़रूर उनकी मुलाकात के लिए जाता, और अगर मैं उनके पास होता तो पांव धोता।

हिरक़्ल ने सलतनत के अरकान (सदस्यों) और क़ौम के सरदारों को महल में तलब किया और दरवाज़े बन्द कर दिये, फिर हाज़िरीन, (मौजूद लोगों) की तरफ मुतवज्जेह होकर उसने कहा : ऐ ! अहले रोम क्या तुम नेकी और कामयाबी चाहते हो ? और चाहते हो कि तुम्हारा मुल्क बाक़ी रहे ? अगर ऐसा है तो तुम उस नबी के हाथ पर ईमान ले आओ, हाज़िरीन तेज़ी से दरवाज़ों की तरफ भागे तो उनको बन्द पाया, जब हिरक़्ल ने उनकी नाराज़गी देखी और उनके ईमान लाने से मायूस हो गया तो उसने हुक्म दिया कि इनको वापस लाओ और कहा कि मैंने अभी जो बात कही थी वह इसलिये कही कि अपने दीन पर तुम्हारी मज़बूती का इम्तिहान लूँ मैने यह देख लिया तो सबने उसके सामने पेशानी (माथा) टेक दी और उससे खुश हो गए[1] लेकिन मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल में है कि हिरक़्ल ने

---

(1) सही बुख़ारी, अस्सीरतुन नबविया, इमाम ज़हबी 2/502–505

www.abulhasanalinadwi.org

हुज़ूर सल्ल० को खत लिखा कि मैं मुसलमान हूँ, तो हुज़ूर सल्ल० ने फरमाया कि यह ग़लत कहते हैं, वह तो अपनी नसरानियत पर क़ाएम हैं, इसके अलावा ग़ज़व-ए-मूता में खुद हिरक़्ल ने मुसलमानों का मुकाबिला किया।[1]

ख़ैबर का वाक़िआ :

मुहर्रम सन सात हिजरी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खैबर का रूख़ किया, इसका मक़सद सिर्फ यहूदियों की उस क़ूव्वत पर बन्द लगाना था जो मदीने से निकल निकल कर ख़ैबर में जमा हो गई थी, इसके अलावा हिजाज़ व नज्द के दरमियान उत्तर और अरबद्वीप के बीच रहने वाले एक बड़े ताक़तवर क़बीले ग़तफान की तरफ से भी इतमीनान कर लेना था, जो अरबी कबीलों का एक निहायत जंगजू (लड़ाकू) और ताक़तवर समूह था, उसकी तरफ से इतमीनान किये बग़ैर मक्के के दुश्मनों के ख़तरात पर क़ाबू पाना दुश्वार था, ख़ैबर यहूद का जंगी अड्डा बन रहा था और अब अरब द्वीप में उनका यह आख़िरी क़िला बन गया था, उस में मदीने से निकल कर यहूदी लीडर इस्लाम दुश्मन लोगों को मश्वरों और सहयोग से फाइदा पहुँचाने के लिये बराबर कोशिश में रहते थे, और यहाँ अपने केन्द्र से बराबर साज़िशें करते रहते थे और उनके साथ क़बीले ग़तफान के लोग भी मदीने पर हमले की तैयारी कर रहे थे और यह लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सख़्त कीना (कपट) रखते थे, आप सल्ल० ने ख़ैबर पहुँच कर एक एक क़िले को पराजित किया, आख़िरी क़िला जिसको ज़ेर (पराजित) करना था, आसान न था उसके लिये आप सल्ल० ने हज़रत अली इब्ने अबी तालिब का इन्तख़ाब (चयन) किया और उनकी क़ियादत (नेतृत्व) में मुसलमानों ने उस क़िले को फतह किया, हुज़ूर सल्ल० ने उनको झण्डा देने से पहले यह वसीयत की थी कि उनके सामने पड़ाव डालना फिर उनको इस्लाम की दावत देना और अल्लाह का इस सिलसिले में उन पर जो हक़ है उससे उनको आगाह करना। खुदा की क़सम अगर तुम्हारे ज़रिये अल्लाह तआला एक आदमी को भी हिदायत दे दे, तो यह तुम्हारे लिए सुर्ख ऊँटो से भी ज़्यादा बेहतर है।

आख़िरकार एक के बाद दूसरा क़िले पर क़िला फ़तह होता गया और कई कई दिन टकराव और घेराव में गुज़रे यहां तक कि इस सूरते हाल से आजिज़ हो कर यहूदियों ने आप सल्ल० के साथ सुलह की पेशकश की, आप सल्ल० ने यहूदियों को ख़ैबर में क़ियाम (निवास) की इजाज़त दे दी, इस शर्त पर कि वहां की पैदावार ग़ल्ला और फलों का आधा हिस्सा मुसलमानों का होगा और रसूलुल्लाह सल्ल० जब तक चाहेंगे यह मुआहिदा बरक़रार रखेंगे।

रसूलुल्लाह सल्ल० पैदावार की तक़सीम (बटवारे) के लिए उनके पास अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० को भेजा करते थे, वह वहां की पैदावार की मिक़दार

---

(2) असहहुस्सियर 389–391, नबी–ए–रहमत 402–405

www.abulhasanalinadwi.org

(मात्रा) का अंदाजा करके उसको दो हिस्सों में बांट देते, फिर उनसे कहते कि इसमें से जो हिस्सा चाहें ले लें वह लोग यह देख कर कहते कि इसी अदा (इन्साफ) पर आसमान व ज़मीन थमे हुए हैं।

इसी मौक़े के दौरान आप सल्ल० को ज़हर दिया गया। हुआ यह कि सलाम बिन मिश्कम यहूदी की बीवी ज़ैनब बिन्त हारिस ने आप स०अ० को ज़हर मिला कर एक भुनी हुई बकरी का तोहफ़ा भेजा उसमें ज़हर मिला हुआ था, आपने चखते ही मालूम कर लिया और फिर नहीं खाया मगर उसका कुछ असर आप पर ऐसा पड़ा की कुछ मुद्दत बाद उसका असर ज़ाहिर हुआ।

जब रसूलुल्लाह सल्ल० ख़ैबर की फ़तह से फ़ारिग़ हुऐ तो आप सल्ल० ने फ़िदक की तरफ तवज्जह फरमाई, वहां भी यहूदियों ने रसूलुल्लाह सल्ल० से आधे आधे पर मुसालिहत करनी चाही, आपने उनकी पेशकश क़बूल कर ली, इससे जो हासिल होता था आप सल्ल० उसको अपने और मुसलमानों के मफ़ाद (हित) में जहां मुनासिब समझते तक़सीम फ़रमा देते। इस लिए कि बिला मुक़ाबला और टकराव के सिर्फ रसूलुल्लाह सल्ल० से बात कर लेने पर जो माले ग़निमत हासिल होता उसके लिए इस्लाम का हुक्म यह था कि उस पर रसूलुल्लाह सल्ल० का ही मालिकाना इख़्तियार होगा।

इसके बाद आप सल्ल० वादिये क़ुरा तशरीफ़ ले गये यह ख़ैबर और तैमा के दरमियान एक नई आबादी थी, लड़ना नहीं था आप सल्ल० ने उनको इस्लाम की दावत दी और इरशाद फ़रमाया कि अगर वह इस्लाम क़बूल कर लेंगे तो उनका माल व जान महफ़ूज़ रहेगा और उनका हिसाब अल्लाह तआला के ज़िम्मे होगा, मगर यहूद पहले से लड़ने के लिए तैयार थे उन्होंने फ़ौरन तीर अंदाज़ी शुरू कर दी और जंग शुरू हो गई लेकिन थोड़े मुकाबले के बाद यहूद ने सिपर डाल दी और ख़ैबर की शर्तो के मुताबिक सुलह हो गई।

जब तैमा के यहूदियों को मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने ख़ैबर वालों, फिदक वालों और वादिऐ क़ुरा वालों से यह मामला फरमाया है तो उन्होंने आप सल्ल० से मुसालिहत कर ली और उनका माल व जायदाद उनही के क़ब्ज़े में रहा और रसूलुल्लाह सल्ल० मदीने वापस तशरीफ ले आए।[1]

हज़रत सफ़िया से निकाह

ख़ैबर फतह करने के बाद हारे हुऐ यहूदियों की दिलदारी भी हुज़ूर सल्ल० ने की, जिस तरह बनू क़ैनक़अ की थी, यहूदी लीडर की साहबज़ादी हज़रत सफ़िया को बांदी से आज़ाद फरमाया और फिर अपनी ज़ोजियत (विवाह) में ले लिया, जिसका बहुत अच्छा असर पड़ा।[2]

---

(1) ज़ादुल मआद 3/355

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2/336, ज़ादुल मआद 3/339

www.abulhasanalinadwi.org

उमरे की क़ज़ा

सुलह हुदैबिया में कुरैश से मुआहिदा हुआ था कि अगले साल रसूलुल्लाह सल्ल० मक्के में आकर उमरा अदा करेंगे। अतः दूसरे साल सन् ७ हिजरी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसलमान "उमरतुल्क़ज़ा" की नियत से तशरीफ ले चले कुरैश ने कोई मुज़ाहिमत (रूकावट) नहीं की, आपको मक्के जाने दिया और अपने घरों में ताले डाल कर जबल क़ैकआन पर चले गये, आप सल्ल० ने तीन रोज़ वहां क़याम फ़रमाया और उमरे से फ़राग़त की।[1]

इसी मौक़े पर हुजूर सल्ल० ने कुरैश की बनू आलाल शाख़ की ख़ातून मैमूना बिन्त हारिस से निकाह किया और वलीमा किया।

ग़ज़वे मूता सन् 8 हिजरी

मुहम्मद सल्ल० ने हारिस बिन उमैर अज़दी को अपने दावती मकतूब (ख़त) के साथ बुसरा के हाकिम शरहबील बिन अमर ग़स्सानी के पास भेजा था जो रूमी सल्तनत के ताबे (अधीन) था, शरहबील ने हुक्म दिया कि उनको बांध दिया जाये, उसके बाद उनको सामने बुला कर शहीद कर दिया, जब रसूलुल्लाह सल्ल० को यह ख़बर पहुंची तो आप सल्ल० ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा की क़ियादत (नेतृत्व) में तीन हज़ार मुजाहिदों पर मुशतमिल (सम्मिलित) एक फौज जमादिल ऊला सन् ८ हिजरी को बुसरा की तरफ रवाना किया और आपने हिदायत की कि अगर ज़ैद बिन हारिसा राहे हक़ में जिहाद करते हुऐ शहीद हो जायें तो जअफरे तय्यार, और अगर वह भी शहीद हो जाये तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा सिपेहसालार (सेनापति) होंगे और यह भी इरशाद फरमाया की पहले उनको इस्लाम की दावत दी जाये अगर वह इस्लाम कि दावत क़बूल कर लें तो जंग की ज़रूरत नहीं। यह पहला इस्लामी लश्कर था जो रूमी हुकूमत में दाखिल हुआ।

जब इस्लामी लश्कर मक़ामे "मआन" पर पहुंचा तो मुसलमानों को इत्तिला मिली कि हिरक़्ल "बलका" के क़रीब एक लाख रूमी लश्कर के साथ ख़ेमाज़न है, हज़रत ज़ैद ने यह हालात सुन कर कहा इस सूरते हाल से दरबारे रिसालत को इत्तिला दी जाये और हुक्म का इंतज़ार किया जाये लेकिन अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने कहा कि हमारा असल मक़सद फतह नही, बल्कि दौलते शहादत है, जो हर वक्त हासिल हो सकती है, चूनांचे यह सुन कर मुसलमानों का यह छोटा गिरोह आगे बढ़ा और मक़ामे मूता में मोर्चा संभाल लिया और जंग शुरू हो

---

(3) सही बुख़ारी बाब उमरतिल क़ज़ा, सीरत इब्ने हिशाम 2/370, अलकामिल फ़ित्तारीख़ 2/227

www.abulhasanalinadwi.org

गई हज़रत ज़ैद बरछियाँ खाकर शहीद हुऐ उसके बाद हज़रत जाफर ने अलम (झण्डा) हाथ में लिया लेकिन काफी देर निहायत बेजिगरी और जवांमर्दी से दुश्मन का मुकाबला करने के बाद तलवारों के जख्मों से चूर हो कर गिर पड़े और शहीद हो गए हज़रत जाफर की शहादत के बाद अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने परचम हाथ में लिया, और वह दादे शुजाअत देकर बहादुरी के साथ लड़ते हुऐ शहीद हुए, अब हज़रत ख़ालिद मुसलमानों के मशविरे से लश्कर के सरदार बने, हज़रत ख़ालिद अपनी जंगी सूझबूझ की बुनियाद पर इस्लामी लश्कर को शिकस्त से बचाकर सलामती के साथ मदीना वापस ले आए।[1]

कुरैश की तरफ से सुलह की समझौते की ख़िलाफवर्ज़ी और हुजूर सल्ल० का मज़लूमों की मदद करने का फैसला

सुलह हुदैबिया के नतीजे में मुसलमानों और उनके असल हरीफ (वास्तविक विपक्षी) कुरैश और कुरैश का साथ देने वाले दुश्मनाने इस्लाम के दरमियान अमन की फिज़ा कायम हो गई थी, इससे एक दूसरे से मिलने जुलने और देखने से रब्त (सम्पर्क) पैदा हो गया था, इस्लाम के मुखालिफो को इस्लाम और मुसलमानों को क़रीब से देखने और अच्छा महसूस करने पर इस्लाम को क़बूल करने का भरपूर मौका मिला, लेकिन कुरैश इस समझौते की शर्तों पर ज़्यादा अमल न कर सके, दो साल ही गुज़रे थे कि कुरैश ने मुआहिदे (समझौते) की खुलकर ख़िलाफवर्ज़ी की और वह इस तरह हुआ कि उनके साथ शरीक होने वाला क़बीला बनूबक्र मुसलमानों के साथ शरीक होने वाले क़बिले बनू खुज़ाआ पर बिला वजह हमलावर हुआ और कुरैश ने खुल कर उसका साथ दिया और इस का ख़याल नहीं किया कि मुआहिद-ए- सुलह की यह खुली खिलाफवर्ज़ी है। उनको इसके लिए हथियार दिये और उनके साथ शरीक होकर खुज़ाआ वालों से जंग की जिनसे मुसलमानों का मुआहिदा था और इससे ज़्यादा ग़लत काम यह किया कि जंग की यह कार्यवाई हरम के अन्दर जा कर की जहां जंग करना सबके नज़दीक नाजायज़ काम था। खुज़ाआ वालों को इस हमले से बड़ा नुक्सान हुआ, उनके साथ ज़ुल्म हुआ, वह मुसलमानों के हलीफ (पक्षधर) थे, उन पर हमले की सूरत में मुसलमानों की तरफ से मदद मिलने का हक़ हासिल था।

चूंनाचे उनके नुमाईन्दे (प्रतिनीधि) उमर बिन सालिम मदीना पहुंचे, उस वक्त हुजूर सल्ल० मस्जिद में तशरीफ रखते थे और आप सल्ल० के कुछ असहाब भी मौजूद थे, अमर बिन सालिम ने अपने क़बीला की मुसीबत का

---

(1) सही बुख़ारी बाब ग़ज़वतुल मूता, ज़ादुल मआद 3/381–385, सीरत इब्ने हिशाम 2/373–383, अलबिदाया वन–निहाया 4/241–259, अलकामिल फ़ितारीख 2/234–238

www.abulhasanalinadwi.org

तज़किरा बहुत प्रभावशाली अंदाज में किया और यह कहा कि कुरैश ने आपसे और आपके हलीफ (पक्षधर) कबीले से जंग न करने का जो मुआहिदा किया था, उसको तोड़ दिया और हरम के अन्दर हम पर हमलावर हो गए और हमें हरम के अन्दर और इबादत की हालत में मारा, आपकी दुहाई है।[1] अमर बिन सालिम के पहुंचने के बाद बनू खुज़ाआ के नुमाईन्दे बुदैल बिन वरक़ा अल खुज़ाई भी कई लोगों के साथ पहुंचे उन्होंने और तफसील से वाकिया बयान किया कि किस किस तरह उनके लोग मारे गए और इस ज़ालिमाना हरकत में कुरैश ने भरपूर मदद की और जंग में शिरकत की, हुज़ूर सल्ल० ने वाक़िये (घटना) को हमदर्दी से सुना और मदद के उनके हक़ को महसूस किया, और हलीफ़ होने के ताल्लुक से मदद देने का इशारा किया और वाकिया मालूम होने पर अपना यह अंदाज़ा भी ज़ाहिर किया कि उनके मदीना आकर मदद चाहने का इल्म कुरैश को होने पर उनके लीडर अबू सुफियान उन लोगों के आने के नतीजे को महसूस करते हुए मुआहिदे को बहाल करने के लिए आना चाहेंगे और कुरैश उनको वाकिये का रद्देअमल (प्रतिक्रिया) रोकने की कोशिश में भेजेंगे।[2]

कुरैश के लीडर अबू सुफियान की मुसालिहत (समझौते) की कोशिश

चूंनाचे ऐसा ही हुआ कि अबू सुफियान बिन हरब बिन रबीआ पहुंचे, उनकी एक ही बेटी हज़रत उम्मे हबीबा आं हज़रत सल्ल० की अहलिया भी थीं, इस तरह वह उम्मुलमोमिनीन थीं और हुज़ूर सल्ल० के घर ही में रहती थीं, अबू सुफियान पहले उनके पास पहुंचे और हुज़ूर सल्ल० के बिस्तर पर बैठने लगे, इस पर उनकी साहिबज़ादी उम्मुलमोमिनीन ने फौरन बिस्तर पलट दिया, इस पर वह ताज्जुब से बोले कि बेटी ! यह नहीं समझ में आया कि तुमने इस बिस्तर को मेरे लिए मुनासिब नहीं समझा, उन्होंने जवाब दिया कि यह अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बिस्तर है और आप शिर्क करने वाले हैं, लिहाज़ा शिर्क में गन्दगी है, उन्होंने कहा बखुदा तुम में मुझसे रूख्सत होने के बाद खराबी आ गयी है। अबू सुफियान वहां से निकल कर हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंचे और सुलह बहाल करने के सिलसिले में बात की, हुज़ूर सल्ल० ने कोई जवाब नहीं दिया वह फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास गए कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सबसे ज़्यादा क़ुरबत रखने वाले फर्द हैं, उनसे बात की, कि मुआहिदे को पिछली हालत पर बाक़ी रखने की सिफारिश कर दें कि उसको ख़त्म न किया जाये, उन्होंने कहा कि मैं कुछ नहीं कर सकता, फिर वह

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/396–397
(2)) ज़ादुल मआद 3/396

www.abulhasanalinadwi.org

मायूस होकर हज़रत उमर रज़ि० के पास आये, उनको भी हुज़ूर से कुरबत का मकाम हासिल था, लेकिन उन्होंने जवाब में (सख़्त लहजा इख्तियार करते हुऐ कहा) कि भला मैं तुम लोगों की सिफारिश करूंगा बखुदा मैं तो ऐसा हूँ कि मुझको कोई साथी न मिले सिवाए चींटियों के तो मैं चींटियों को लेकर तुमसे मुकाबला करूँ ।[1]

फिर अबू सुफियान हज़रत अली रज़ि० के पास आए, वहीं उनकी अहलिया साहिबा हुज़ूर सय्यदुल मुरसलीन सल्ल० की साहिबज़ादी हज़रत फातिमा भी बैठी हुई थीं और उनके साहिबज़ादे हसन रज़ि० भी थे जो सामने खेल रहे थे उन्होंने कहा कि भाई अली! खानदानी तौर पर तुमसे हमारी क़राबत भी है और मैं एक ज़रूरत से आया हूँ देखो! नाकाम वापस न जाऊँ मेरे लिये सिफारिश कर दो मुहम्मद सल्ल० से। उन्होंने कहा कि हुज़ूर सल्ल० ने जो भी पक्का इरादा कर लिया होगा, उसमें हम उनसे बात नहीं कर सकते, इस पर अबू सुफियान ने हज़रत फातिमा रज़ि० से कहा कि तुम अपने इस छोटे से बच्चे से कह सकती हो कि वह हम लोगों के दरमियान तालुक़ात बहाल करा दें। इस तरह वह हमेशा के लिए अरबों का सरदार क़रार पा जायेगा। उन्होंने कहा : मेरे बेटे की यह हैसियत नहीं है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० से ऐसे किसी मामले में कोई सिफारिश करे, इस पर अबू सुफियान ने हज़रत अली रज़ि० से कहा कि ऐ भाई अली ! मामलात को मैं देख रहा हूँ कि मेरे लिए दुशवार बन गए हैं, तुम मुझको हमदर्दी का मशविरा दो, उन्होंने कहा बखुदा मेरे ज़हन में कोई ऐसी सूरत नहीं जिससे तुम्हारा काम चल सके, लेकिन तुम कुरैश व कनाना के सरदार हो अपनी बात का लोगों में ऐलान कर दो और अपने वतन लौट जाओ, इस पर उन्होंने कहा कि क्या इससे काम चल जायेगा, उन्होंने कहा कि मुझे उम्मीद तो नहीं है लेकिन तुम्हारे लिए इसके अलावा और क्या बात कह सकता हूँ। [2]

अबू सुफियान का ऐलान

अबू सुफियान मस्जिद में आए और ऐलान किया कि ऐ लोगो ! हुदैबिया में होने वाले मुआहिदे से जो ताल्लुक़ात (सम्बन्ध) क़ायम हुऐ थे मैं उनको बहाल किये देता हूँ और अपने ऊँट पर बैठ कर मक्का वापस चले गए। जब कुरैश के पास पहुंचे तो उन्होंने पूछा क्या करके आए हो ? उन्होंने कहा मैं मुहम्मद सल्ल० के पास गया था उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया, फिर मैं अबूबक्र के पास गया उनसे भी मुझे कोई भलाई न मिली, फिर मैं उमर के पास गया तो उनको बड़ा दुश्मन पाया, फिर अली के पास गया, दूसरे लोगों के मुकाबले में उनमें नरमी

---

(1) ज़ादुल मआद 3/397
(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/396–397

www.abulhasanalinadwi.org

पाई, उन्होंने मुझे यह मशविरा दिया, चूंनाचे मैंने उस पर अमल किया। लोगो ने कहा कि मुहम्मद सल्ल० ने इसको क़ाबिले अमल क़रार दिया ? उन्होंने कहा नहीं, लोगों ने कहा तुम्हारी खराबी हो, बख़ुदा तुम्हारे साथ खेल किया।[1]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिकमतेअमली

इधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सफ़र की तैयारी का हुक्म फरमा दिया, लेकिन यह भी फरमाया की पोशिदा रखा जाये, क़ुरैश को हमारी इस तैयारी की ख़बर न पहुंचे ताकि हम बिला इत्तिला वहां पहुंच सकें, चूंनाचें मुसलमानों ने इसको पूरे तौर पर पोशीदा रखा, अलबत्ता एक मुसलमान हातिब बिन बलतआ़ ने क़ुरैश को एक ख़त के ज़रिये खतरे से आगाह करने की कोशिश की और एक मुसाफिर औरत के ज़रिये ख़त भेजा, हुज़ूर सल्ल० को "वही" के ज़रिये मालूम हो गया। आप सल्ल० हज़रत अली, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत मिक़दाद और हज़रत अबू मुरसिद ग़नवी रज़ि० को उस औरत का पीछा करने के लिए भेजा, कि ख़त उससे ले लिया जाए, चूंनाचे हज़रत अली रज़ि० अपने साथियों के साथ फ़ौरन रवाना हो गए और कुछ फासले पर उस औरत तक पहुंच गए और ख़त तलब किया उसने ला इल्मी (अज्ञानता) का इज़हार किया, हज़रत अली ने कहा कि अल्लाह के रसूल की बात ग़लत नहीं हो सकती ख़त हवाले करो वरना तुम्हारे जिस्म की तलाशी ली जायेगी, चूंनाचे उसने अपने सर के बालों के जूड़े से ख़त निकाल कर दिया, ख़त हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में पेश हुआ ख़त भेजने वाले सहाबी हातिब बिन बलतआ़ को तलब किया गया और उनसे जवाब तलब किया गया कि इस्लाम दुश्मनी क्यों ? उन्होंने अपनी सफाई दी कि मैंने बद नीयती से नहीं किया, इसमें एक ज़ाती ज़रूरत थी, लोगों ने अर्ज़ किया कि यह इस्लाम दुश्मनी का काम है, इनको क़त्ल कर दिया जाये, हुज़ूर सल्ल० ने फरमाया यह बद्र के जिहाद में शरीक थे और बद्र में शरीक शख़्स की बात दूसरों से अलग है। इसलिए इनको छोड़ दिया और इस तरह से यह पोशीदगी क़ायम रही। ऐसे संगीन जुर्म पर छोड़ देने में एक तरफ तो अपनी रिआयत और अच्छा इख़्लाक़ था, ज़रा भी गुन्जाईश हो तो आप रिआयत फरमाते थे, दूसरी तरफ एक अच्छी हिक्मतेअमली (कूटनीति) थी, ख़ताकार के मुसलमान होने और उज़्र बयान करने पर रिआयत कर देने से वह शख़्स का दिल जीत लेते थे, जिससे दुश्मनों को इस्लाम की रवादारी का अच्छा पैग़ाम जाता था।

---

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2/397, अलकामिल फ़ित्तारीख 2/241

www.abulhasanalinadwi.org

मक्कामुकर्रमा रवानगी

बहरहाल पोशीदा तरीके से मुसलमानों ने तैयारी की और तैयारी हो जाने पर हुज़ूर सल्ल० को लेकर मक्कामुकर्रमा के लिए रवाना हुए और अल्लाह तआला ने यह मदद फरमाई कि कुरैश को आपकी रवानगी की इत्तिला नहीं मिली लेकिन वह डर रहे थे, और अबू सुफियान मालूमात हासिल करने की फिक्र में रहते थे, उनके साथ हकीम बिन हिजाम, बुदैल बिन वरक़ा भी मालूमात के चक्कर में रह रहे थे।[1] इस वाकिये से पहले ही हुज़ूर सल्ल० के चचा हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब जो अब तक मक्का में थे और ज़ाहिर में कुरैश के साथ थे, लेकिन हुज़ूर सल्ल० से मुहब्बत का तआलुक रखते थे, गोया अन्दर से मुसलमान थे, मक्का से सफर करके आप सल्ल० के पास पहुंचे और बाकाएदा मुसलमान हो गए।[2] हुज़ूर सल्ल० मक़ामे जोहफा तक जो राबिग़ के पास है पहुंच गऐ थे हज़रत अब्बास उनसे मिले और उनके साथ हो गए, कुरैश को उस वक्त तक इसकी ख़बर न थी, फिर मुसलमानों का लश्कर जब मक्का से 10—15 किलो मीटर के फासले पर इशा के वक्त मक़ाम मर्रुज़्ज़हरान पहुंचा तो हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दिया कि लश्कर में हर तरफ रोशनी करने के लिए आग जलायी जाये।[3] मक़सद यह था कि अब वह दुश्मन के क़रीब पहुंच चुके हैं, दुश्मन मुसलमानों की कसरत (अधिकता) और ताकत को महसूस करके मुकाबिले से ख़ुद ही बाज़ आ जाये चूंनाचे लश्कर में हर तरफ आग जलायी गई, इस तरह तकरीबन १० हज़ार जगहों पर आग नज़र आने लगी, इसी के साथ हज़रत अब्बास रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के खच्चर पर बैठ कर निकले कि कोई चरवाहा या कोई आदमी मिल जाये तो उसको भेज कर अब कुरैश को बाखबर कर दिया जाये कि मुसलमानों का लश्करे अज़ीम आ रहा है और सूरतेहाल को समझ लें और आकर हुज़ूर सल्ल० की इताअत कुबूल कर लें। इससे पहले कि हुज़ूर सल्ल० अपनी ताकत के साथ मक्के में दाखिल हों इस तरह वह तबाही से बच जायेंगे।[4]

कुरैश के सेनापति अबू सुफियान का इस्लाम लाना

हज़रत अब्बास रज़ि० कहते हैं कि मैं इसी फिक्र में जा रहा था कि मुझे अबू सुफियान और बुदैल की आवाज़ सुनने को मिली उन्होंने दूर से आग देख ली थी और आपस मे कह रहे थे कि इतनी ज़्यादा आग फैली हुई मैंने आज तक नही देखी थी, और इतना बड़ा लश्कर नहीं देखा था, बुदैल कहने

---

(1) (1) सीरत इब्ने हिशाम 2/400
(2) ज़ादुल मआद 3/400
(3) ज़ादुल मआद 3/400
(1) ज़ादुल मआद 3/401

www.abulhasanalinadwi.org

लगे, यह कबील-ए-खुज़ाआ मालूम होता है जिससे हमारी लड़ाई हुई है, अबू सुफियान ने कहा कि खुज़ाआ का क़बीला इतना बड़ा नहीं है कि उसकी आग इतनी फैली हुई हो सकती हो, इस पर मैंने अबू सुफियान को पुकारा उन्होंने मेरी आवाज़ पहचान ली और कहा कि तुम अबुल फज़ल हो यानी अब्बास, मैंने कहा "हाँ" उन्होंने कहा अल्लाह तुम्हें सलामत रखे तुम यहां कैसे ? मैंने कहा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० अपने लोगों के साथ आ गए हैं, और कुरैश को बखुदा अब बहुत बड़ी मुसीबत का सामना है इस पर अबू सुफियान ने कहा कि अब क्या तदबीर की जाये, मैंने कहा बखुदा तुम अगर किसी को मिल गये तो तुम्हारी गर्दन ही उड़ा दी जायेगी तुम यह करो कि इस ख़च्चर पर मेरे पीछे बैठ जाओ मैं हुजूर सल्ल० के पास तुमको पहुंचा दूँ, तुम अपने बचाव का इन्तिज़ाम उनसे करा लो, चुंनाचे वह मेरे पीछे बैठ गए और मैं उनको ले आया, लेकिन मुसलमानों की फौज की जगहों से जहां जहां से गुज़रता था वह कहते थे कि यह कौन जा रहा है ? और जब हम को देखते थे कि अल्लाह के रसूल के चचा हैं और उन्हीं के खच्चर पर हैं तो फिर कुछ नहीं बोलते थे, यहां तक कि मैं उमर की जगह से गुज़रा उन्होने कहा यह कौन है और लपक कर मेरी तरफ़ आए और जब अबू सुफियान को देखा तो कहा : यह अल्लाह का दुश्मन, अल्लाह का शुक्र यह मिल गया, अब मुझे इसको मारने का मौका मिल रहा है, मुआहिदे की पाबन्दी अब तो बाकी रही नहीं और तेज़ी से हुजूर सल्ल० की तरफ दौड़े कि वहां जा कर अबू सुफियान को मारने की इजाज़त लें, लेकिन मैंने खच्चर को तेज़ भगाया और हुजूर सल्ल० के पास पहुंच गया, उसी वक्त हज़रज उमर पहुंच गए और कहने लगे ऐ अल्लाह के रसूल ! यह अबू सुफियान हैं और अल्लाह ने मौका दे दिया है उनका खात्मा कर देने का, मुआहिदे की रूकावट भी अब नहीं, मुझे मौक़ा दीजिए मैं इनकी गर्दन उड़ाऊँ। मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल मैंने इसको अपनी हिफाज़त में ले लिया है, लेकिन हज़रत उमर ने बार बार अपनी बात कही तो मैंने उमर को सब्र करने के लिए कहा। हज़रत उमर ने कहा कि ऐ अब्बास! मैं तुमसे यह कह सकता हूँ कि तुम्हारा जो ताल्लुक रसूलुल्लाह सल्ल० से है, उसकी बिना पर, तुम्हारा इस्लाम लाना मेरे बाप खत्ताब के इस्लाम लाने से ज़्यादा मुझको अज़ीज़ रहा है काश कि मेरा बाप भी मुसलमान हुआ होता और यह इस लिए कह रहा हूँ कि तुम्हारा इस्लाम लाना रसूलुल्लाह सल्ल० को मेरे बाप खत्ताब के इस्लाम लाने से ज़्यादा अज़ीज़ रहा होगा, बहरहाल हुजूर सल्ल० ने इस मसले में जल्द फैसला करने में ताख़ीर (विलम्ब) मुनासिब समझते हुए यह फरमाया कि अब्बास इनको तुम ले जाओ और सुबह इनको ले आना तो देखेंगे चूंनाचे मैंने ऐसा ही किया और सुबह होने पर उनको रसूलुल्लाह सल्ल० के पास ले गया। आप सल्ल० ने फरमाया : अबू सुफियान क्या अभी वक्त नहीं आया

www.abulhasanalinadwi.org

कि तुम इस बात को मानो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है। अबू सुफियान ने कहा कि मेरे माँ-बाप आप पर फिदा हों आप बड़े नर्मदिल हैं, और बड़े शराफत वाले हैं और ख़ानदानी तअल्लुक़ का भी ख़याल रखने वाले हैं बख़ुदा मैं यह तो समझ गया हूँ कि अगर अल्लाह के अलावा कोई और ख़ुदा होता तो इस वक्त मेरे काम आया होता।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया : अरे अबू सुफियान क्या अभी वक्त नहीं आया कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। अबू सुफियान ने कहा : मेरे माँ-बाप आप पर फिदा हो जितने ज़्यादा आप नर्मदिल और शरीफाना अखलाक़ के हैं, और खानदानी ताल्लुक़ का भी बड़ा लिहाज़ करने वाले हैं। आपकी यह बात ऐसी है कि मेरे दिल में अब तक इसके सिलसिले में कुछ कमी है, इस पर हज़रत अब्बास फौरन बोले, अरे तुम्हारी खराबी हो इस्लाम कुबूल कर लो, कब्ल इसके कि कोई तुम्हारी गर्दन उड़ा दे। इस पर उन्होंने कलम-ए-शहादत पढ़ लिया और पढ़ कर मुसलमान हो गए और हज़रत अब्बास रज़ि० ने आप सल्ल० से अर्ज़ किया कि यह अबू सुफियान जो कि कुरैश के सरदार और सेनापति ऐसे आदमी हैं जो फख्र व इज़्ज़त के खवाहिशमंद रहते हैं, आप इनके लिए कुछ ऐसा भी कर दीजिये कि इनके दिल में अच्छा हो, हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया यह ऐलान है कि जो अबू सुफियान के घर में अपने बचाव के लिए दाखिल हो जायेगा उसको अमान है इसी तरह जो अपनी हिफाज़त के लिए खुद अपने घर का दरवाज़ा बन्द कर लेगा वह भी अमन में है और जो अपने बचाव के लिए मस्जिद में दाखिल हो जायेगा, उसको भी अमान है जब अबू सुफियान जाने लगे तो हुजूर सल्ल० ने हज़रत अब्बास रज़ि० से कहा कि इनको रास्ते के तंग हिस्से पर पहाड़ के ऊपर ज़रा खड़ा रखो, अल्लाह की फौजें जब गुज़रेंगी यह उनको देख लें, मकसद यह था कि मुसलमान की अज़मत व बरतरी (उच्चता व महानता) अच्छी तरह उनको मालूम हो जाये, हज़रत अब्बास कहते है कि मैं निकला और अबू सुफियान को वहां पर रोका मुसलमानों की फौजें अपने अपने क़बीलों के ऐतबार से अपने झण्डे लिए गुज़र रही थीं।[1]

मआफी का आम ऐलान

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मआफी और अमन दिये जाने का दायरा उस रोज़ वसीअ़ (विस्तृत) फरमा दिया कि मक्के वालों में से सिर्फ वहीं शख्स हलाक हो सकता था जो खुद ही मआफी और सलामती का खुवाहिशमंद न हो और ज़िन्दगी को बचाना न चाहता हो। हुजूर सल्ल० ने अहले लश्कर को हिदायत फरमा दी कि मक्के में दाखिल होते वक्त सिर्फ और सिर्फ उसी शख्स

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/402–404, ज़ादुल मआद 3/401–403

www.abulhasanalinadwi.org

पर हाथ उठायें जो उनकी राह में रकावट बने और टकराए और आप सल्ल० ने इसका भी हुक्म फरमाया कि मक्के वालों की अमलाक व माल के बारे में एहतियात बरती जाये उसमें ज़्यादती न की जाये।[1]

मंज़र यह था कि मुसलमानों के फातिहाना दस्ते समुन्द्र की मौजो की तरह बढ़ते हुए नज़र आ रहे थे, उनमे से मुखतलिफ क़बीले अपने अपने गिरोहों के साथ गुज़र रहे थें, जब कोई कबीला गुज़रता तो अबू सुफियान अब्बास रज़ि० से उसका नाम मालूम करते तो कहते मुझे उस कबीले से क्या मतलब।[2]यहां तक कि आप सल्ल० बज़ाते खुद अपने साथियों के बड़े मजमें मे तशरीफ लाए, जो असलहा की ज़ियादती से सब्ज़ नज़र आ रहा था, यह मुहाजिरीन और अंसार का आंहनपोश (लोहाच्छादित) दस्ता था, जो हुजूर सल्ल० को अपने घेरे में लिये चल रहा था अबू सुफियान ने यह मंज़र देख कर कहा खुदा की शान अब्बास यह कौन लोग हैं, उन्होंने जवाब दिया कि हुजूर सल्ल० हैं जो मुहाजिर और अन्सार के जुलूस में तशरीफ लिये जा रहे हैं उन्होने यह सुन कर कहा कि यह बड़ी ताकत और शानो शौकत इससे पहले हासिल नहीं रही। खुदा की कसम ! ऐ अबु फज़ल ! तुम्हारे भतीजे का इक़तिदार आज की सुबह कितना अज़ीम है, उन्होंने कहा : अबू सुफियान ये नबूवत का मोजिज़ा है।[3]

मक्के में दाखिल हो कर अबू सुफियान ने बुलन्द आवाज़ से ऐलान किया कि ऐ कुरैश के लोगो ! यह मुहम्मद सल्ल० इतनी ताकत के साथ तुम्हारे पास आये हैं जिसका तुमको भी तजुर्बा न हुआ होगा और उस ऐलान का हवाला दिया कि अब जो अबू सुफियान के घर मे आ जायेगा उसको अमान हासिल हो जायेगी। लोग यह सुन कर कहने लगे अल्लाह तुमको समझे तुम्हारे घर की हक़ीक़त ही क्या, कि हम सब को उस घर मे पनाह मिल सके? फिर उन्होंने उस ऐलान का भी हवाला दिया जो अपने घर का दरवाज़ा बन्द कर लेगा उसको अमान मिलेगी, जो मस्जिद (मस्जिदे हाराम) में चला जायेगा उसको भी अमान मिलेगी चूंनाचे लोग फैल गए और अपने अपने घरों और मस्जिदे हराम में पनाहगीर हो गए।[4]

दाखिले का नियाज़मन्दाना अंदाज़

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्के में इस शान से दाखिल हुए कि सर मुबारक बन्दगी व तवाज़ो (नम्रता) के ग़लबे से बिल्कुल झुक गया। क़रीब

---

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2/404
(3) सीरत इब्ने हिशाम 2/405
(4) सीरत इब्ने हिशाम 2/405
(1) मुस्तदरक हामि 3/50

www.abulhasanalinadwi.org

था कि आप सल्ल० की थोड़ी ऊँट के कजावे से लग जाये, आप सल्ल० दाख़िल होते वक्त सूरे फातिहा पढ़ रहे थे।[1]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुसलमानों की इस अज़ीम जमीअत के साथ मक्के में दाखिल हो रहे थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने पिछले बीस साल की वह तारीख़ थी, जिसमें आपके मक्की हमवतनों ने आप सल्ल० और आप के मानने वालों के लिए वतन की सरज़मी को तंग बना रखा था और हर तरह की तकलीफ़ों मे मुबतला कर रखा था, आप और आप के असहाब को ख़त्म कर देने की हर तद्बीर (उपाय) इख़्तियार कर चुके थे, जिसके नतीजे में आप सल्ल० को और आप से पहले आपके साथियों को अपना वतन छोड़ने पर मजबूर होना पड़ गया था, और वतन में आना और वहां अल्लाह के पवित्र घर की ज़ियारत और उसमें इबादत करना भी नामुमकिन बना दिया था, और वह इबादत जिसकी अरब के हर इलाक़े के बाशिन्दों के लिये मक्का आकर करने की आम इजाज़त थी और आप सल्ल० के साथियों के लिये ममनूअ (वर्जित) बना रखी गई थी, आज आप सल्ल० इस शहर में फातिहाना (विजेता के रूप में) दाख़िल हो रहे हैं और आप सल्ल० के और आपके साथियों के यह सब जानी दुशमन अब बेबसी के साथ आप सल्ल० के फ़ातिहाना दाख़िले को बरदाश्त करने पर मजबूर हो रहे हैं।

मक्का जो जज़ीरतुल अरब (अरब प्रायद्वीप) का मरकज़ी और पुर अज़मत (महिमापूर्ण) और रूहानी और सियासी लिहाज़ से क़ल्ब व जिगर की हैसियत रखता था और वह जिसके इक्तिदार (सत्ता) में आ जाए तो उसको इस बात पर किस क़दर बड़ाई का एहसास होगा और वह किस क़दर गर्व करेगा और बड़ाई की शान से दाख़िल होगा, लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल० ने इसके बरख़िलाफ रवय्या इख़्तियार किया, इन्साफ, बराबरी, तवाज़ो, नर्मी, बन्दा होने का एहसास कोई अन्दाज़ ऐसा न था जिसको आप ने इख़्तियार न फ़रमाया हो, अपने किसी अज़ीज़ क़रीब का अज़ीज़ साथी को नहीं बल्कि हज़रत उसामा को जो आप सल्ल० के आज़ाद करदा ग़ुलाम हज़रत ज़ैद रज़ि० के साहबज़ादे थे, आप सल्ल० ने अपनी सवारी के पीछे जगह दी, बनी हाशिम और अशराफ़े क़ुरैश में से जिसकी बड़ी तादाद वहां मौजूद थी यह इज़्ज़त किसी को नहीं अता फ़रमाया।

इसी तरह उसी फ़तह मक्का के रोज़ एक शख़्स ने आप सल्ल० से अपने किसी मसअले में बात की तो आपकी अज़मत (महानता) के एहसास से

---

(2) ज़ादुल मआद, भाग–3, पृ0 405

www.abulhasanalinadwi.org

उस पर कपकपी तारी हो रही थी, आप सल्ल० ने फ़रमाया डरो नहीं, इत्मीनान रखो, मैं कोई बादशाह नहीं हूँ मैं तो कुरैश की एक ऐसी औरत का लड़का हूँ जिसको सूखे गोश्त के टुकड़ो पर गुज़ारा करना पड़ता था।[1]

मआफ़ी और रहम का दिन है खूंरेज़ी का नहीं

जब सअद बिन उबादा रज़ि० जो अन्सार दस्ते के अमीर थे, उस जगह से जहां अबू सुफियान इस्लामी लश्कर को देखने के लिए खड़े किये गये थे, गुज़रे और उनकी नज़र काफिरों पर पड़ी जिन्होंने इस्लाम दुश्मनी में कोई कसर नहीं छोड़ी थी और उन्होंने ख़ुदा के नेक बन्दों को ज़ुल्म का सितम का ऐसा निशाना बनाया था, जिसके नतीजे में वह अपने माल व मता और वतन छोड़ कर मदीने में पनाह लेने पर मजबूर हुए थे और अब उनके मरकज़ी शहर मक्का में उन्हीं मज़लूम मुसलमानों का दाख़िला फातिहाना शान से हो रहा है, इस पर उन्होंने कहा : "आज ताकत के इज़हार और खूंरेज़ी का दिन है, आज काबा में यह सब जायज़ होगा,, आज अल्लाह तआला ने कुरैश को ज़लील किया है, जब रसूलुल्लाह सल्ल० अपने दस्ते में अबू सुफियान के पास से गुज़रे तो उन्होंने आप सल्ल० से इसकी शिकायत की और कहा कि या रसूलुल्लाह सल्ल० आपने सुना सअद ने अभी क्या कहा? आप सल्ल० ने फ़रमाया क्या कहा है? उन्होंने वह सब दोहरा दिया, सअद के जुमले को आप सल्ल० ने अपने मुशफिकाना (स्नेहपूर्ण) जुमले से बदलते हुऐ फरमाया : नहीं ! आज रहम और मआफी का दिन है। आज अल्लाह तआला कुरैश को इज़्ज़त अता फरमायेगा और काबा की अज़मत बढ़ायेगा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद रज़ि० को बुलवा भेजा और मक्के वालों को अच्छा असर देने के लिए उनके गिरोह का परचम (झण्डा) उनसे लेकर उनके साहबज़ादे क़ैस रज़ि० की तरफ मुनतकिल कर दिया, आप सल्ल० ने बज़ाहिर इस मसलेहत से किया कि हज़रत सअद के जुमले से कुरैशियों में कबाइली असबियत (पक्षपात) का एहसास न उभरे, क्योंकि यह जुमला मदीने के एक कबीले के एक अमीर के मुंह से निकला था और अरबों में किसी बेइज़्ज़ती के जुमले से जल्द असबियत और गुस्सा पैदा हो जाता था और कशमकश शुरू हो जाती थी, और अभी यह कुरैशी इस्लामी रूह के पूरी तरह हामिल (भारवाहक) नही बन सके थे, कि यह खतरा समझा जाता, लेकिन आपने परचम उनसे लेकर उनके साहबज़ादे को दिया इस तरह गोया उन्हीं के पास रहा और उनको इस बात का एहसास भी नहीं हुआ होगा कि उनका परचम उनसे लिया गया है।

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/412

www.abulhasanalinadwi.org

इस तरह एक हर्फ की तब्दीली और एक हाथ को दूसरे हाथ से तब्दील कर देने से (जिनमे से एक बाप का हाथ था दूसरा बेटे का) आप सल्ल० ने सअद बिन उबादा (जिनके ईमानी और मुजाहिदाना कारनामे सबके सामने थे) की मामूली दिलशकनी के बग़ैर अबू सुफियान की जो कुरैश के कबीले के जो कि पूरे अरब में मोहरतम (सम्मानीय) समझा जाता था, नुमाईन्दे और सरदार थे, (जिनकी तालीफ क़लब की ज़रूरत थी) दिलजोई का सामान हकीमाना बल्कि मुजिज़ाना तरीके पर अंजाम दे दिया, जिससे बेहतर तरीके पर तसव्वर में आना मुश्किल है। इस तरह कुरैश के ताहाल सरदार के बुरे तअस्सुर से कुरैश के लोगो को बुरा तअस्सुर कायम करने से बचा लिया और दूसरी तरफ आप सल्ल० ने सअद बिन उबादा रज़ि० को नाखुश करने से परहेज़ किया, जिन्होंने इस्लाम के लिए बड़ी खिदमात अंजाम दी थीं, इसलिए उनसे परचम लेकर बेटे को देने से गोया परचम उनही के पास रहा और उनको यह एहसास भी दिला दिया गया कि आप सल्ल० दुश्मनों के साथ भी रहमदिली और रवादारी का रवय्या पसंद करते हैं।

इधर मुसलमानों का फ़ातिहाना दाख़िला हो रहा था और दूसरी तरफ कुरैश के कुछ टेढ़े और बाग़ी किस्म के लोग मक्का के "खनदमा" महल्ले मे जमा हो रहे थे ताकि अपना ज़ोर दिखाने की कोशिश कर सकें उनमें इस मकसद से हमास बिन क़ैस जब हथियार संभालने गए तो उनकी बीवी ने कहा कि मुहम्मद (सल्ल०) के मुकाबले में आज कोई ठहर न सकेगा, मुझे तो यह उम्मीद है कि हम उनमें से कुछ लोगों को पकड़ कर तुम्हारा नौकर बना कर ले आयेगें, चूंनाचें उन लोगों का सामना मुसलमानों के मुकाबले में आने पर मुकाम खनदमा में हज़रत खालिद रज़ि० के फौजियो से हुआ मुकाबले पर आने के नतीजे मे उनमें कुछ लोग तो मारे गये और कुछ लोग शिकस्त खा कर भागे, हमास अपनी बीवी के पास पहुंचे और घबरा कर कहने लगे कि जल्दी से दरवाज़ा बन्द करो, उन्होंने कहा कि जो तुम कह रहे थे ऐसा कर लायेंगे क्या हुआ ?

हमास ने कहा : सब साथी भाग गए मुसलमानों की तलवारें ऐसी चलीं कि गर्दने कट गयी।[1]

हक़ के ग़लबे (प्रभुत्व) का ऐलान

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का झण्डा मोहल्ला हजून में लगाया गया और मुहाजिर व अंसार आपके सामने आपके इर्द गिर्द जमा हो गए यहां तक कि आप मस्जिद में दाखिल हुए। आपने हजरे असवद को बोसा दिया फिर बैतुल्लाह शरीफ का तवाफ किया। आप सल्ल० के हाथ में कमान थी, और

(1) ज़ादुल मआद, भाग–3, पृ0 405

www.abulhasanalinadwi.org

काबा के अन्दर और काबे के इर्द गिर्द ३६० बुत लगे हुऐ थे, आप सल्ल० कमान से उनको मारते जाते थे और कहते जाते थे :

"हक़ आया और बातिल पसपा हुआ और बातिल तो पसपा होने वाली चीज़ है" (सूरा बनी इस्राईल : 18)

और "हक़ आ गया और बातिल अब कुछ करने के क़ाबिल नहीं रहा" (सूरा सबा : ४९)

आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहते जाते थे और बुत गिरते जाते थे। आप सल्ल० ने सवारी पर बैठ कर काबा का तवाफ फरमाया आप सल्ल० ऐहराम में नही थे क्योकि उमरे की नीयत से दाखिल नहीं हुए थे, जब आप सल्ल० तवाफ कर चुके तो काबा के क़लीद बरदार (कुंजी रखने वाले) हज़रत उस्मान बिन तलहा को बुलाया और उनसे काबे की चाबी हासिल की और काबे का दरवाज़ा खुलवाया आप सल्ल० उसमें दाखिल हुए वहां भी अन्दर तस्वीरें बनी हुई थी आप सल्ल० ने देखा की हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की तस्वीरें बनी हुई हैं और वह तीरों से फआल निकाल रहे हैं, हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया : अल्लाह तआला इन लोगों को समझे, खुदा की कसम इन नबियों ने तीरों से कभी फाल नहीं ली। आप सल्ल० ने हुक्म दिया और यह तस्वीरें तीरों से निकाली गयीं, आप सल्ल० ने दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर दिया और वहां अन्दर नमाज़ पढ़ी और अन्दर ही कई जगाहों पर गऐं और तकबीर और वहदानियत के अल्फाज़ कहे, फिर दरवाज़ा खोला, सामने कुरैश के लोग मस्जिद मे भरे हुऐ थे, सफें लगाए हुऐ थे और इंतिज़ार में थे कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके साथ क्या मामला करेंगे। आप सल्ल० ने दरवाज़े के दोनों हिस्सों पर हाथ रख के फरमाया कि कोई माबूद नहीं सिवाए खुदा के वह तनहा है कोई उसका शरीक नही उसने अपने वादे को सच कर दिखाया और अपने बन्दे की मदद की और अपनी फौज को ग़ालिब किया और दुश्मन की जमाअतों को तन्हा उसने शिकस्त दी और फरमाया :-

सुन लो ! हर ग़लत बात और ग़लत माल और नाजाएज़ खुन मेरे पैरो के नीचे, यानी खत्म किया जाता है, सिवाए बैतुल्लाह की कलीद बरदारी और हाजियों को पानी पिलाने की ज़िम्मेदारी कि वह जिसके पास थी उनके पास रहेंगी, बाकी ज़िम्मेदारियों को आपने उनके साबिका लोगों से हटा दिया और मुसलमानों के हाकिम की ज़िम्मेदारी में दे दिया। आपने कत्ल और बदला लेने के सिलसिले में कुछ कवानीन का ऐलान किया और कुरैश को मुखातिब करके कहा कि ऐ कुरैशियो !

तुम में जो जाहिली गुरूर था बेशक अल्लाह ने उसको खत्म कर दिया और तुम लोग अपने बाप दादा की बड़ाई पर फ़ख्र (गर्व) करते थे अल्लाह ने

www.abulhasanalinadwi.org

उस (ऊंच नीच) को खत्म कर दिया, सुन लो ! सब लोग आदम के बेटे हैं और आदम मिट्दी से बनाये गए हैं फिर यह आयत पढ़ी : "बेशक हमने तुमको कौमों और क़बीलों की शक्ल में रखा है ताकि एक दूसरे की तुम पहचान कर सको, तुममें इज्ज़त वाला वही होगा जो अल्लाह तआला के यहाँ ज़्यादा नेक साबित होगा" (सूरा हुजरात : १३)

फिर फ़रमाया : ऐ कुरैश के लोगो ! तुम्हारा क्या खयाल है हम आज तुम्हारे साथ क्या मामला करेंगे ? कुरैशे मक्का ने कहा : हम उम्मीद अच्छी ही रखते हैं जो एक शरीफ भाई दूसरे शरीफ भाई के साथ करता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पर यह नहीं फ़रमाया कि आज से पहले शरीफ भाई शरीफ भाई के साथ क्या कर रहा था बल्कि इस के बजाए यह फ़रमाया : मैं तुमसे आज वही कहता हूँ जो हज़रत यूसुफ ने अपने भाईयों से कहा था आप सल्ल० का इशारा उस बात की तरफ था कि हज़रत यूसुफ को उनके भाईयों ने कुंए में फेंक दिया था और समझते थे कि वह खत्म हो जायेंगे फिर अल्लाह ने उनको इज़्ज़त दी, बादशाहत दी और यह लोगा अपनी माली परेशानी की वजह से उनके पास मदद के लिए आए। वह उस वक्त तक उनको एक ग़ैर शख्स समझते थे उनको जब वही भाई मालूम हुए जिनको वह अपने नज़दीक मौत के मुंह मे डाल चुके थे तो शर्मिन्दा हुए और मआफी मांगी तो उन्होंने यह कहा कि जाओ तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं, तुम आज़ाद हो, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अपने उन ज़ालिम अज़ीज़ों पर ग़ालिब आ जाने पर कहा : जाओ तुम लोगों को कोई इल्ज़ाम नहीं देते तुम सब आज़ाद हो। फिर हुज़ूर सल्ल० मस्जिद में बैठ गए और काबे के कलीदबरदार (कुंजी रखने वाले) हज़रत उस्मान बिन तलहा को बुलाया और कहा कि आज "एहसान और वफ़ा" का दिन है, इस में इस बात का इशारा था कि हिजरत से पहले आप सल्ल० ने हज़रत उस्मान बिन तलहा से काबा खोलने की दरख्वास्त की थी उन्होंने आपके दीने इस्लाम के नापसन्दीदगी के तौर पर इनकार कर दिया था, इस पर आप सल्ल० ने फरमाया था कि एक दिन वह आयेगा, जब कुंजी हमारे हाथ में होगी हम जिसको चाहें देंगे। इसको उस्मान बिन तलहा ने बेमतलब समझते हुऐ कहा था कि क्या ऐसा भी दिन आयेगा और क्या उस वक्त सब कुरैशी मर चुके होंगे ?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुंजी उनको वापस की, जबकि हज़रत अली और दूसरे हज़रात चाह रहे थे कि अब कलीदबरदारी की ज़िम्मेदारी उनको दे दी जाये, आप सल्ल० ने उनसे कहा कि आज एहसान व वफा का दिन है और हज़रत उस्मान बिन तलहा से कहा कि कुंजी तुम्हारे पास ही रहेगी। (यानी नसलन बाद नसल) (पैत्रिक) और तुमसे कोई छीनेगा तो वह ज़ालिम होगा।

www.abulhasanalinadwi.org

उस्मान बिन तलहा कहते हैं कि जब मैं कुंजी लेकर खुशी खुशी चलने लगा तो आप सल्ल० ने फिर मूझे आवाज़ दी और फरमाया : क्यों उस्मान ! जो बात मैंने कही थी वह पूरी हुई या नहीं ? अब मुझे वह बात याद आ गई जो हुजूर सल्ल० ने हिजरत से पहले फरमाई थी कि एक रोज़ तुम यह कुंजी मेरे हाथ में देखोगे, मैंने कहा कि बेशक आपका इरशाद पूरा हुआ, और उस वक़्त मैं कलिमा पढ़कर मुसलमान हो गया। हुजूर सल्ल० ने उनको यह कुंजी यह कह कर दी थी कि मैं यह अमानत आपके सुपुर्द करता हूँ क्योंकि मुझे अल्लाह तआला की तरफ से इसी का हुक्म हुआ है, इसी मौके पर इस आयत तर्जुमा : "अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानत रखने वालों की अमानत उन्हें बराबर वापस करो"। (सूरह निसा-58) का नुजूल हुआ था, चुनांचि आज चौदह सौ साल बाद तक काबे की कलीद बरदारी उन ही के पास है। [1]

आप सल्ल० ने हज़रत बिलाल हबशी रज़ि० अल्लाहु अन्हु से कहा कि काबे की छत पर खड़े होकर अज़ान दें, उस वक़्त कुरैश के बड़े बड़े लोग वहाँ थे, उनमें से एक ने उनकी तरफ इशारा करते हुए कहा कि जिन के गुलाम हज़रत बिलाल रह चुके थे यानी उसैद अगर यह मनज़र देखते कि गुलाम को सब से सम्मानित मुक़ाम की सम्मानित और ऊँची जगह खड़ा किया गया तो अपनी कितनी बेइज़्ज़ती महसूस करते, [2] फर हुजूर सल्ल० अपनी रिश्ते की बहन उम्मे हानी के घर तशरीफ ले गए वहां गुस्ल फरमाया और आठ रकअतें शुकराने की पढ़ीं[3] और जब मक्का की फतह की यह कार्यवाई मुकम्मल हो गई हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबको अमान देने का ऐलान कर दिया और कुछ आदमी जो काबिले सज़ा थे उनको अलग किया कि उनको कत्ल किया जा सकता है लेकिन उनमें से अक्सर ने जाकर मआफी मांग ली और उनको भी परवान-ए-मआफी मिल गया। आप सल्ल० की आदते शरीफा भी यही थी कि अगर जानी दुश्मन आप सल्ल० से माज़रत करके मआफी मांग ले तो मआफ ही कर देते थें, फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चन्द ग्रुप भेजे कि मक्के के इर्द गिर्द जगह जगह बुतों के जो अड्डे बना लिये गये थे उनको खत्म कर दिया जाये और आपकी तरफ से मक्के मे यह ऐलान किया गया कि जो भी अल्लाह और उसके रसूल पर और यौमे आखिरत पर ईमान रखता है वह बुत न रखे और अगर बुत हों तो उन बुतों को तोड़ दे।

इस तरह पूरे अरब द्वीप के कुफ़्फ़ार का मरकज़ी महाज़े जंग खत्म हो गया और २०-२१ साल से जो अदावत व जुल्म व ज़्यादती मुसलमानों को मक्के

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/4127
(2) सीरत इब्ने हिशाम 2/413
(3) ज़ादुल मआद 3/410

www.abulhasanalinadwi.org

वालों से झेलनी पड़ रही थी उसका खात्मा हो गया लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी के साथ बदले वाली कार्यवाई न की, सभी को मआफ कर दिया।

इस्लाम की तरफ उमूमी झुकाव

मक्के की फतह के बाद अरबों का इस्लाम की तरफ उमूमी झुकाव हुआ, बड़े बड़े वफ़ूद और जमाअतें आप सल्ल० के पास हाज़िर होतीं और हलकऐ बगोष इस्लाम हो जातीं, इसी मौके के लिए अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में इरशाद फरमाया है :-

"जब अल्लाह की मदद आ पहुंची और फतह हासिल हो गई और तुमने देख लिया कि लोग ग़ोल के ग़ोल अल्लाह के दीन मे दाखिल हो रहे हैं" (सूरा नसर : १-२)

फतह मक्का का मौक़ा अजीब मौक़ा था कि तकरीबन 20 साल बाद मुसलसल दुश्मनी और ज़ुल्म व ज़्यादती करने वालों पर काबू मिला है और बदला लेने से कोई चीज़ रोकने वाली नहीं थी फिर भी महज़ शराफते नफ़्स की बिना पर बद्तरीन दुश्मनों को भी मआफ कर दिया गया और बदला लेने की पोज़िशन में होते हुऐ भी किसी से बदला नहीं लिया बल्कि उस रोज़ मआफी का दायरा और ज़्यादा फैला दिया गया। रूऐ ज़मीन पर आपके बदतरीन दुश्मन अबू जहल के लड़के अकरमा, महबूब चचा हज़रत हमज़ा के कातिल ज़ुबैर बिन मुतइम के वहशी ग़ुलाम हब्बार बिन असवद और अब्दुल्लाह बिन सआद बिन अबी सरह जैसे बदतरीन दुश्मनों को अपने दामने अफवो दरगुज़र में पनाह दी।[1]

आपका रवय्या इस कदर रवादाराना और करीमाना था कि बाज़ ऐसे अफ़राद को भी मआफ कर दिया जिन्होंने अपनी प्रभावशील शायरी के ज़रिये आप सल्ल० के खिलाफ बहुत ही अपमानजनक और हानिकारक प्रोपेगेन्डे को अपना वतीरा बना रखा था, जिससे आप सल्ल० को नुकसान पहुंचा जिस पर आप सल्ल० ने उनको नाक़ाबिले मआफी करार देने का ऐलान कर दिया था, लेकिन वह अचानक आपके सामने मआफी तलब करते हुऐ आ गये तो आपने उन्हें मआफ कर दिया। आपकी यह उदारतापूर्ण नीति आपकी निहायत रहमदिली और आलाज़रफी (उच्च नैतिकता) की अलामत बना।

ग़ज़वे हुनैन, औतास और ताएफ

क़बील-ए-हवाज़िन जो मक्का और ताएफ के दरमियान रहता था और क़बील-ए-सक़ीफ़ जो ताएफ में रहता था और यह दोनों क़बीले उस इलाक़े के बा

---

(1) ज़ादुल मआद 3/411

www.abulhasanalinadwi.org

इज़्ज़त और मज़बूत कबीले थे और अपनी ताकत व कूव्वत में कुरैश ही के सतह के समझे जाते थे और उनके कुरैश से क़रीबी संबंध थे। मक्का जैसा मरकजी और अहम शहर जो उनके पड़ोस का शहर था मुसलमानों के कबजे में आ जाने से अपने अपने सिलसिले में फिक्रमंद हो गये और मुसलमानों से मुक़ाबला करने के लिए फौजी तैयारी करने लगे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब इसकी इत्तिला मिली तो आपने मुनासिब समझा की उनके इरादों को अनदेखा न करें और जबकि मुसलमानों की फौजी जमीअत फौजी तैयारी की हालत में है उनका सामना कर लिया जाये। आप सल्ल० मक्के से निकल कर कबीले हवाज़िन के इलाके वादिऐ हुनैन में तशरीफ ले गए यह मक्का से **30—35** मील के फासले पर उत्तरी जानिब वाक़य है। कबीले हवाज़िन ने एक तरकीब यह की कि अपनी फौज के साथ अपनी बीवियों और उनके माल व मता और जानवरों को भी मैदाने जंग में साथ लाए। ताकि उनके दिल मैदाने जंग से ही वाबस्ता रहें। अपने अपने घरों की तरफ उनकी तवज्जेह न रहे।

अरब मे बाज़ कबीलों को एक बड़े और सरसब्ज़ दरख़्त से जिसका नाम "ज़ाते अनवात" था, खास अकीदत थी, वह उसमे हथियार लटकाते थे, कुर्बानियाँ करते थे, और एक दिन उसके नीचे क़याम करते थे, उस लश्कर में आप सल्ल० के साथ कुछ ऐसे लोग भी थे जो अभी अभी ताज़ा ताज़ा जाहिली ज़िन्दगी छोड़ इस्लाम में दाखिल हुए थे, चूंनाचे जब दौरान सफर में यह दरख़्त उनहें नज़र आया तो जाहिलियत की उन क़दीम रस्मों और बातों को याद करके और ज़िआरतगाहों को देखकर उनके मुंह में पानी भर आया और बेसाख़्ता (निःसंकोच) कहने लगे : या रसूलुल्लाह सल्ल० जैसा उन लोगों का ज़ातेअनवात था वैसा ही एक हमारे लिये भी मरकज़े अक़ीदत तजवीज़ फ़रमा दीजिये रसूलुल्लाह सल्ल० ने यह सुनकर फ़रमाया "अल्लाहुअकबर" उसकी क़सम जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है, तुम ने मुझसे ऐसी फ़रमाइश की है जैसे मूसा की क़ौम (यहूद) ने मूसा अलैहिस्सलाम से की थी और कहा था :

"आप हमारे लिए भी एक माबूद बना दीजिए जैसा उनके बहुत से माबूद हैं, उन्होंने जवाब दिया कि तुम बड़ी जिहालत की बातें करने वाली क़ौम हो" (सूरा आराफ़ : **138**)

फिर आप सल्ल० ने फ़रमाया : बेशक तुम अपनी पिछली क़ौमों की एक एक बात और तरीके की पैरवी करोगे[1]

बहरहाल दोनों फ़ौजों की आमने सामने सफ़बन्दी हुई और जंग हुई, उस जंग में कबीले हवाज़िन के साथ कबीले सक़ीफ और कबाएल नस्र व जशम और

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/442

www.abulhasanalinadwi.org

सअद बिन बकर भी शरीक थे, मालिक बिन औफ चार हज़ार अफराद पर आधारित फ़ौज ले कर वादिऐ हुनैन पहुंचे थे, इस्लामी लश्कर की मजमूई तादाद बारह हज़ार थी जिसमें नवमुस्लिम भी शामिल थे और वह लोग जिनसे मुआहिदा था वह भी शरीक थे, फ़ौज की तादाद जो काफ़ी मालूम होती थी, उसकी वजह से मुसलामानों को इत्मिनान सा हो गया था कि हमारी तादाद ऐसी है कि शिकस्त का खतरा नहीं लेकिन मुसलमानों का यही इत्मीनान उनके लिए हानिकारक साबित हुआ, क्योंकि यह बात अल्लाह तआला को पसन्द नहीं आई कि ईमान वालों की यह चुनी हुई जमाअत अपने किसी भी मसअले में अपने को कुछ समझे। उसको तो सिखाया गया था, कि हर बात अल्लाह तआला के इख़्तियार में है, चाहे मामला अपने इख़्तियार ही का मालूम होता हो, उनका भरोसा हर हाल में अपने ख़ुदा पर होना चाहिए। सामान व इन्तिज़ाम को असल नहीं समझना चाहिए।

लिहाज़ा अल्लाह तआला ने थोड़ी देर के लिए अपनी मदद हटा ली, उधर कुफ़्फ़ार ने पहाड़ो के पीछे बड़े तीर अंदाज़ बिठा दिये थे वह मुसलमानों पर अचानक तीर बरसाने लगे, मुसलमानों को पहले से इसका अंदाज़ा न था, इस अचानक हमले से घबरा गये, चूंनाचे इस दौरान उनका कठिन मरहलों से गुज़रना पड़ा, दुश्मनों का यह हमला बहुत सख्त साबित हुआ, अभी जंग की शुरूआत ही थी कि मुसलमानों के क़दम उखड़ गये, लेकिन जब मुसलमानों को जिस क़दर तालीम व तम्बीह अल्लाह तआला को मंजूर थी वह हो गई और तादाद की ज़्यादती पर खुश होने की वजह से अल्लाह ने उनको शिकस्त की कड़वाहट का मज़ा भी चखा दिया कि वह परवरदिगार की मदद को असली ज़रिया महसूस न करने से किस क़दर ज़हमत मे पड़े, और यह इस लिए कि उनका ईमान मज़बूत हो और जब फतह हुआ करे तो उनके अन्दर इतराहट और हज़ीमत (पराजय) हो तो किसी किस्म की मायूसी पैदा न हो और वह अव्वलन ख़ुदा ही को मददगार समझें। लिहाज़ा यह सबक़ मिल जाने के फौरन बाद अल्लाह तआला ने उनको गलबे की पोज़ीशन में पहुंचा दिया और अखिरकार मुसलमानों को ही फतह नसीब हुई। यह मारिका ग़ज़व-ए-हुनैन कहलाता है। इस का तज़किरा क़ुर्आन मजीद में इस तरह आया है :

"ख़ुदा ने बहुत मौक़ों पर तुम को मदद दी है और जंग हुनैन के दिन जब कि तुमको अपनी जमाअत की तादाद पर यक़ीन हो गया था वह तुम्हारे काम न आई और ज़मीन बावजूद अपने फैलाव के तुम पर तंग हो गई और फ़िर तुम पीठ फ़ेर कर भागने लगे और फ़िर ख़ुदा ने अपने पैग़बर और मोमिनों पर तसकीन नाज़िल फ़रमाई और तुम्हारी मदद को लश्कर जो तुम्हें नज़र नही

www.abulhasanalinadwi.org

आये थे, आसमान से उतारे और काफ़िरों को अज़ाब दिया और कुफ्र करने वालों की यही सज़ा है" (सूरा तौबा : 25–26)

इस जंग में कामयाबी के बाद आप सल्ल० ने ताएफ के क़िले के मुहासिरे का फ़ैसला किया जहां कबील-ए- हवाज़िन का सरदार मालिक बिन औफ जिसने "हुनैन" में दुश्मन की फ़ौजो की लीडरी की थी शिकस्त खा कर अपने साथियों के साथ पनाह गुज़ीं हो गया था ताकि दुश्मन के किसी अगले हमले से बचने के लिए उसकी सरकोबी की जाये, इसी तरह "औतास" की तरफ भी जहां हवाज़िन का दूसरा गिरोह छुपा था, अबू आमिर अशअरी की रहनुमाई में मुसलमान मुजाहिदीन का एक दस्ता रवाना फरमाया। उस दस्ते ने हवाज़िन की उस फौजी टुकड़ी से जिहाद किया और शिकस्त दी। अलबत्ता ताएफ का मुहासिरा तवील होता चला गया। देर लगने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ ज़रूरी इक़दामात करने के बाद मुहासिरा उठा लेना मुनासिब समझा और वापस तशरीफ ले आए। कई माह बाद कबील-ए-सक़ीफ़ के लोगों ने खुद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर इस्लाम की इताअत कुबूल कर ली और इस तरह इस पूरे इलाके में जो कोई खतरा हो सकता था, वह खत्म हो गया।[1]

अंसार से एक मोजिज़ाना खिताब

ग़ज़व-ए-हुनैन में कबीले हवाज़िन के लोगों ने अपनी मज़बूती और जंग का मुकाबला करने के लिए अपने सारे माल व मता और एहलो अयाल के साथ शिरकत की थी ताकि उनके फौजियों को अपने घर पर एहलो अयाल याद न आएँ और यकसू हो कर मैदाने जंग में ही मुतवज्जेह रहें और माल व मता की मौजुदगी से उनको वहीं जमे रहने की ताक़त हासिल हो, यह फायदा तो उनको हासिल नहीं हुआ अलबत्ता उनको जब शिकस्त हुई तो उनका वह माल व मता भी उनके हाथ से जाता रहा जो बहुत ज़्यादा था जो आमतौर पर मवेशियों की शक्ल मे था, वह सब मुसलमानों को माले ग़नीमत के तौर पर हासिल हो गया। जिसकी बहुत बड़ी तादाद थी, इस जंग के अलावा किसी जंग में इतना नहीं हासिल हुआ था, माले गनीमत आमतौर पर जंग में शरीक होने वाले मुसलमानों में और हुज़ूर सल्ल० के इख्तियारी मदों मे तक़सीम किया जाता था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने इख्तियार से कुरैश के उन लोगों में जो अब इस्लामी सत्ता में आ चुके थे और मुसलमानों में दाख़िल हो चुके थे, अगरचे उनमें से बड़ी तादाद ने ऊपरी दिल से इस्लाम को इख्तियार किया था, इस्लाम से

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/437–499. तफ़सीर तबरी जिल्द–10. ज़ादुल मआद 3/465–485

www.abulhasanalinadwi.org

ताल्लुक़ बढ़ाने और इस्लाम की ताबेदारी में पुख़्तगी पैदा करने के लिए हुज़ूर सल्ल० ने उनकी दिलदारी मुनासिब समझी और उनको भरपूर तरीके से मालेग़नीमत में हासिल शुदा मवेशी इनायत फरमाए और पुख़्ता ईमान वाले मुसलमान जो शरीके जंग रहे थे उनको आमतौर पर न देने के बराबर माल इनायत फ़रमाया। इस पर अन्सार कराम की जो असल अहले मदीना थे, बाज़ को यह खयाल हुआ कि मक्का के हालात न मुआफिक होने की वजह से आप सल्ल० मदीना आए थे। अब हालात वहां सही हो जाने पर शायद आप सल्ल० मदीना से मक्का मुन्तक़िल हो जाएँ। शायद इसी लिए आप सल्ल० ने वहां के लोगों की बड़ी दिलदारी की, हालांकि अल्लाह के रसूल सल्ल० का हर अमल "वही-ए- इलाही" के मुताबिक़ होता था, उनके मुतालिक शख़्सी और ज़ाती फायदे को तरजीह देने का ख्याल सही भी नहीं था और मुनासिब भी न था। आप सल्ल० को जब इत्तिला मिली आप सल्ल० ने अन्सार को जमा कराया और उनके आप पर शुबहा करने पर कोई नागवारी ज़ाहिर न फरमाई बल्कि बड़ी दिलदारी और मुहब्बत के ढंग में अपनी बात की वज़ाहत फ़रमाई।

यह वाकिया हज़रत अबू सईद खुदरी के बयान किये हुऐ अल्फाज़ में दरजज़ेल है :

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मालेग़नीमत में जो बकसरत हासिल हुआ था बड़े अतिये कुरैश के लोगों को अता फरमाए बाज़ दूसरे अरब के क़बाएल के लोगों को भी अता फरमाया और हज़रात अन्सार का उसमें कोई हिस्सा नहीं रखा तो बाज़ हज़रात अन्सार के दिलों में इस सिलसिले मे कुछ शिकायत आयी, यहां तक कि उनमे आपस में तज़किरा भी हुआ और बात कही गयी। कुछ ने यह कहा कि यह समझ में आ रहा है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० अपने पिछले हम वतनों में चले गए तो हज़रत सअद बिन उबादा (सरदार ख़ज़रज) जो हज़रात अन्सार के सरबराहों में एक सरबराह थे हुज़ूर सल्ल० की खिदमत मे हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ऐ ! अल्लाह के रसूल सल्ल० अन्सार के उन लोगों ने आप सल्ल० के सिलसिले मे अपने दिलों में इस बात से शिकायत महसूस की है कि जो आप सल्ल० ने जंग से हासिलशुदा माल की तकसीम में इख़्तियार की है वह यह कि आपने मालेग़नीमत ज़्यादा से ज़्यादा अपनी क़ौम मे तक़सीम किया और बहुत अतिये दिये और दूसरे कबीलों को भी दिये, अलबत्ता अन्सार का हिस्सा नहीं रखा और अन्सार के उस कबीले को कुछ नहीं मिला। आप सल्ल० ने फ़रमाया इस सिलसिले में खुद तुम्हारा ख्याल क्या है ? उन्होने कहा : ऐ ! अल्लाह के रसूल मैं भी अपनी क़ौम का फ़र्द हूँ, फ़रमाया कि तुम अपनी क़ौम को इस इहाते मे जमा करो, रावी कहते है कि मुहाजिरीन के कुछ लोग आए तो उनको उन्होंने आने दिया फिर मुहाजिरीन में से दूसरे लोग

www.abulhasanalinadwi.org

आए उनको लौटा दिया बहरहाल सब जमा हो गए तो हज़रत सअद आए और अर्ज़ किया कि अन्सार के यह अफरादे कबीला आप सल्ल० के लिए जमा हो गए तो उनके पास रसूलुल्लाह सल्ल० तशरीफ लाए।"

हुजूर सल्ल० ने इस मौके पर हज़रात अन्सार को जो खिताब फरमाया उससे यह बात अयाँ (प्रकट) हो जाती है कि आप सल्ल० अपने असहाब का इस्लाम से ताल्लुक मज़बूत करने के लिए किस मुहब्बत और हिकमत से मामला फ़रमाते थे कि किसी मसअले में उनके दिलों में किसी तरह की शिकायत महसूस होती तो मुहब्बत और दिलदारी के तकाज़ो का लिहाज़ करते हुए ऐसा उस्लूबे कलाम इख्तियार फरमाते जो दिलों को मुतासिर और पूरी तरह हमनवा बना देता। चूंनाचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहले अल्लाह तआला की हम्द बयान की और उसके लायक़ जो "सना" है वह बयान की, फिर फरमाया :-

"ऐ हज़रात अन्सार ! यह क्या बातें हैं जो आप लोगों की निस्बत से मुझ तक पहुंची हैं और वह क्या एहसास है जो आप लोगों ने अपने दिलों मे महसूस किया है? क्या ऐसा नहीं है कि मैं आप लोगों के पास आया और हालत यह थी कि आप सब लोग रास्ते से भटके हुए थे अल्लाह तआला ने मेरे ज़रिये आप को रास्ता दिखलाया और आप लोग माली ताकत के मामले में दूसरों के मोहताज थे अल्लाह तआला ने मेरे ज़रिये आप लोगों की यह मोहताजी खत्म की और आप एक दूसरे के दुश्मन बने हुए थे अल्लाह ने आप के दिलों में आपस की उलफत पैदा की, यह सुन कर हज़रात अन्सार ने कहा कि वाकई अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० का बड़ा एहसान है और वह बरतर हैं फिर आप सल्ल० ने फरमाया कि ए अन्सार भाईयो क्या तुम मुझसे उसके जवाब में कुछ नहीं कहते, उन्होंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल हम आप सल्ल० को क्या जवाब दे सकते हैं एहसान व करम अल्लाह और रसूल ही का है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया बख़ुदा तुम अगर चाहो तो तुम यह कह सकते हो और तुम यह कहोगे तो सच कहोगे और मैं तुम्हारी तस्दीक़ भी करूंगा कि आप हमारे पास इस हालत में आए थे कि आपको झुठलाया जा चुका था, उस वक्त हमने आपकी तस्दीक़, की लोगों ने आपको छोड़ दिया था उस वक्त हमने आपकी मदद की, और आप सल्ल० अपनी जगह से निकाले हुए थे हमने आपको जगह दी और आप दूसरों के सहारे के मोहताज थे, हमने आपके साथ हमदर्दी की, फिर आपने फरमाया : ऐ अन्सार भाईयो ! क्या तुम्हारे दिलों में मेरे मुताल्लिक शिकायत पैदा हुई और यह शिकायत दुनिया की कुछ थोड़ी सी मज़ेदार चीज़ के सिलसिले में हुई कि जिसको देकर मैंने कुछ लोगों को मानूस करने की कोशिश की है कि वह इस्लाम ले आए और मैंने तुम को तुम्हारे इस्लाम के सहारे के सुर्पूद कर दिया। ऐ अन्सार भाईयो क्या तुम इस पर राज़ी और खुश नहीं कि दीगर लोग यहां से

www.abulhasanalinadwi.org

बकरियाँ और ऊंट ले ले कर लौटें और तुम अल्लाह के रसूल को लेकर अपने घरों की तरफ लौटो।"

क़सम है उस ज़ात की जिसके कब्ज़े में मुहम्मद (सल्ल०) की जान है, तुम जो लेकर लौटोगे यक़ीनन उससे बेहतर है जिसको लेकर यह लोग लौटेंगे। मैं तो अगर हिजरत करने का अमल ज़रूरी न होता तो अन्सार ही के अन्दर का शख्स होता और मेरा तरज़े अमल यह है कि लोग किसी एक घाटी या वादी मे चलें और अन्सार किसी दूसरी घाटी और वादी में चलें तो मैं अन्सार ही वाली घाटी और वादी में चलूँगा। अन्सार तो शिआर हैं (यानी उस लिबास की तरह है जो हर वक्त जिस्म से लगा रहता है) और दीगर लोग ऊपरी कपड़ों की तरह हैं (यानी ऐसे कपड़े जिनकी ज़रूरत हर वक्त नहीं पड़ती)।--------फिर आपने इस दुआ पर ख़िताब पूरा किया कि ऐ अल्लाह अन्सार पर रहम फरमा, और अन्सार की औलाद की औलाद पर रहम फरमा, रावी कहते हैं कि यह सुनना था कि लोग रोने लगे और इतना रोए कि दाढ़ियां उनके आंसुओं से तर हो गईं और उन्होंने कहा कि हम बिल्कुल राज़ी और खुश हैं कि हमारे हिस्से में अल्लाह के रसूल आएं, इस तरह हम ज़ियादा फ़ाइदे में होंगे" [1]

ग़ज़व-ए-हुनैन में माले ग़नीमत की बहुतात हुई थी, और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्के वालों को मानूस करने के लिए जो 22 साल से हुजूर सल्ल० और उनके असहाब से मुख़ालिफ़त और दुश्मनी में गुज़ार रहे थे और मजबूर होकर इताअत क़बूल कर ली थी, उनकी इस इताअत को ज़ाहिरी के बजाए दिल से कराने की एक तदबीर के तौर पर आप सल्ल० ने उनको बहुत एहसानमन्द करने की तदबीर की, और हज़रात अन्सार को वह माल न देकर उनके जज़्ब-ए-ईमान को काफी समझा, और वह वाक़ई ऐसे ही जज़्ब-ए-ईमानी के थे कि अल्लाह की रज़ा और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत के मुक़ाबिले में उसकी कोई हक़ीक़त नहीं समझते थे लेकिन उनको चूँकि यह शुबहा हुआ था कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने क़बीले और वतन के लोगों से मानूस व मुतीअ हो जाने से अपने वतन वापस होने का इरादा कर सकते हैं, यह उनके लिये सदमे की बात थी, और उस सदमे की वजह आप सल्ल० का अपने क़बीले और हम वतनों के साथ बहुत सुलूक करना उनको एक अलामत महसूस हुआ था, लिहाज़ा उनमें आपस में थोड़ा चर्चा हुआ और फिर उनही में से एक शख़्स ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दिल की बात ज़ाहिर कर दी ताकि बात साफ़ हो जाए और उनका यह शुबहा सही नहीं हुआ और वह

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम2/499

www.abulhasanalinadwi.org

सही था भी नहीं, क्योंकि अल्लाह का रसूल ईमान और रज़ाए इलाही की ही बुनियाद पर अमल करता है, और उसकी रहनुमाई "वही" से होती रहती है, अपनी ज़ाती मसलहत और ख़ुवाहिश से नहीं करता, लेकिन यह बहुत अच्छा हुआ कि बात कही गई और आप सल्ल० ने उस उलझन को साफ़ कर दिया, और ऐसे अल्फ़ाज़ में साफ़ किया जो पत्थर जैसे दिलों को भी पिघला दे चुनांचि हज़रात अन्सार यह सुनकर तड़प उठे और ख़ुशी के आंसुओं से इसका इज़हार किया।

उमर-ए-जअ़राना

इन बड़े और अहम कामों से फ़ारिग़ होने के बाद आप सल्ल० ने उमरा किया जो मक्के में अपने दाख़िले के वक़्त न कर सके थे, अब इसका मौक़ा था, इसलिये आपने अख़तियार फ़रमाया, यह उमर-ए-जअ़राना के नाम से ज़िक्र किया जाता है, उमरे से फ़राग़त के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाए, यह माह ज़ी क़अदा सन आठ हिजरी का वाक़िआ है।

तबूक की मुहिम सन् 9 हिजरी

रजब सन् ८ हिजरी को आप सल्ल० को यह ख़बर मिली की रूमी फौजें अरब की उत्तरी सरहदों पर हमले की तैयारी कर रही हैं और अरबों में से उनके हम मज़हब ईसाई क़बाएल लख़म, जुज़ाम, आमिला, गस्सान वग़ैरह उनके साथ हैं, रूमी बादशाह हिरक़्ल ने जंग की ज़रूरतों का लिहाज़ करते हुए अपने सिपाहियों की एक साल की ख़ुराक का इन्तिज़ाम भी कर लिया है और फौज को साल भर की तनख़्वाहें भी दे दी है और उनका हराविल दस्ता "बलक़ा" तक आ गया है [1] ोया वह उस नाकामी का बदला लेना चाहते थे जो "मूता" के मक़ाम पर क़ैसरे रूम और उसकी फ़ौज को हुई थी।

गरज़ आप सल्ल० तीस हज़ार फौज के साथ मदीना से तबूक के लिए रवाना हुए, मौसम सख़्त गर्म था और मदीने के खजूरों के बागात के फल लाने का भी ज़माना था, मदीने के बाशिन्दो का आम तौर पर रोज़ी रोटी का सहारा इसी पर था और उनमें गुर्बत भी आम थी लिहाज़ा उनके लिए सख़्त मरहला था कि इस सबको छोड़ कर चले जाएं लेकिन ईमान की ताकत ग़ालिब थी, लिहाज़ा वह सब तैयार हो गए। लश्करे इस्लाम के पास माल की कमी थी, लिहाज़ा जंग की जरूरतों के लिए चंदा किया गया, जिससे जो बन पाया दिया। हज़रत उमर के पास जो कुछ था उसका आधा ले आए और उसका आधा घर वालों की ज़रूरत के लिए छोड़ आए, हज़रत अबुबक्र से हुज़ूर सल्ल० ने दरयाफ़्त किया कि घर में क्या छोड़कर

---

(1) ज़ादुल मआद 3/527

www.abulhasanalinadwi.org

आए हो, उन्होंने कहा : "सिर्फ अल्लाह व रसूल का नाम"। बहरहाल इन सख्त हालात में मुसलमान रूमियों के मुकाबले के लिए निकले। लश्करे इस्लाम में सवारियों की बड़ी क़िल्लत थी। 18 शख्सों के लिए एक ऊँट मुकर्रर था, रसद के न होने से अक्सर जगाहों पर दरख्तों के पत्ते खाने पड़े, जिससे होंठ सूज गए, पानी बाज़ जगह मिला ही नही। ऊँटों को जो सवारियों के लिए पहले ही से कम थे, ज़बह करके उनकी अतड़ियों का पानी पिया करते थे। राह में वह इबरतनाक (उपदेशपूर्ण) मक़ामात थे, जिनका ज़िक्र क़ुर्आन मजीद में आया है यानी क़ौमे समूद के मकानात जो पहाड़ों में तराश कर बनाए गए थे, चूंकि उस मकाम पर अज़ाबे इलाही नाज़िल हो चुका था, आप सल्ल० ने हुक्म दिया कि कोई शख्स यहां कयाम न करे, न पानी पिये और न किसी काम में लाए। अलगरज़ सब्र व मुसतक़िल मिज़ाजी से सारी तकलीफ़ों को बर्दाश्त करते हुए तबूक तक पहुंच गए।

तबूक पहुंच कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बीस दिन तक क़याम किया "ऐला" के हाकिम यूहन्ना बिन रूबा ने जो सरहदी इलाकों के हुक्काम में से था, हाज़िरे ख़िदमत हो कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुलह कर ली और जिज़या देना मनज़ूर किया[1] जरबा और अज़रह के ईसाई भी हाज़िर हुए और जिज़्ये पर रज़ामन्दी ज़ाहिर की, रूमियों पर मुसलमानों की इस पेशक़दमी का यह असर हुआ कि उन्होंने इसका जवाब किसी जवाबी हमले और पेशक़दमी फ़ौजी नक़लवहरकत और सरगर्मी से नहीं दिया, बल्कि उन्होंने अरब पर हमला आवर होने का इरादा ही तर्क कर दिया और एक तरह की पसपाई और ख़ामोशी इख़्तियार कर ली और मुसलमानों की ताक़त का जितना अन्दाज़ा उन्हें उस वक्त हुआ उससे पहले कभी न हुआ था, अलबत्ता दोमतुल जुन्दल के हाकिम अक़ीदर बिन अब्दुल मलिक अल किनदी नसरानी की तरफ से जो रूमी फ़ौजों का पुश्तपनाह था, हमले की ज़रूर इत्तिला मिली, आप सल्ल० ने उसकी सरकोबी के लिए हज़रत खालिद बिन वलीद को पाँच सौ सवारों के साथ रवाना फरमाया। हज़रत खालिद ने उसको गिरतार करके आप सल्ल० की खिदमत में पेश किया आप सल्ल० ने उसका खून मआफ कर दिया और जिज़्ये पर उससे मुसालिहत कर ली और उसको आज़ाद कर दिया[2] और आप पूरे एक माह मदीने से बाहर रह कर मदीना तशरीफ लाए।

सच्चाई और कुसूर के मान लेने की बरकत

तबूक का यह वाक़िया जो बकाएदा किसी जंग के बग़ैर अंजाम पाया, कई तरह के हालात व खुसूसियात पर मुशितमिल (सम्मिलित) रहा। एक तो यह

---

(2) ज़ादुल मआद 3/537

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/525–527

www.abulhasanalinadwi.org

कि बड़ी सख्त गरमी के मौसम में पेश आया जिसमें शहर के बाग़ात के अन्दर के खुशगवार मौसम और घरों के आराम से निकल कर खुश्क और गर्म रेगिस्तानों से गुज़रना था और मदीने मुनव्वरह के बाग़ात के फलने का वक्त भी यही था। एक तरफ उनकी देख भाल और सब छोड़ कर लम्बे फासले की मुहिम पर जाना बड़े ईमान की बात थी, वह लोग जो अपने को ज़ाहिर में मुसलमान पेश करते थे और अपने कुफ्र को छुपाते थे, उनका निफाक अल्लाह तआला ने खास तौर पर उस वक्त खुले तौर पर ज़ाहिर फरमा दिया, कि उन्होंने तरह तरह के बहानों के साथ जाने से अपने को बचा लिया, चूंनाचें कुर्आन मजीद में इस मौके के सिलसिले में जब आयतें नाज़िल हुईं तो उनकी खुली हुई मज़म्मत की गई। उनके साथ साथ चन्द अफराद ऐसे भी थे जो मुनाफिक तो न थे, लेकिन बाज़ रूकावटों की वजह से बिला किसी बुरे इरादे के जाने से रह गए थे, उनका इम्तिहान दूसरे तरीके से हुआ। यानी शहर के अन्दर उनके बाई काट का हुक्म दिया गया और वह लोग पूरे ४० रोज़ अपने साथियों, अज़ीज़ों वगैरह से रब्त व ताल्लुक और औरतों से महरूम (वंचित) रहे और इस दरमियान में उनको बताया भी नहीं गया की यह बाईकाट कब तक के लिए है। चूंनाचे वह ज़हनी परेशानी में भी रहे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने सहाबा को उनके ईमान व यक़ीन को मज़बूत करने के लिए उनको इस तरह के इम्तिहानात से गुज़ारते थे, उनसे गुज़र जाने वाला उस खालिस सोने की तरह निखर जाता जो कि भट्टी में से गुज़र कर खालिस बनता है। इस तरह का वाक़िया हज़रत कअब बिन मालिक की ही ज़बान से सुनिए :-

"हज़रत अब्दुल्लाह बिन कअब बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि (जब कअब बिन मालिक नाबीना हो गए तो यही बेटे उनके साथ चलते थे) कि मैंने कअब बिन मालिक से सुना है कि वह ग़ज़व-ए-तबूक में रसूलुल्लाह सल्ल० से पीछे रह जाने का किस्सा यूँ बयान करते थे कि मैं किसी ग़ज़वे में कभी भी ग़ैर हाज़िर नहीं रहा सिवाए ग़ज़व-ए-तबूक और ग़ज़व-ए-बदर के। आप सल्ल० ने ग़ज़व-ए-बदर में शिरकत न करने के सिलसिले में किसी पर नाराज़गी नहीं फरमाई थी, बात यह थी कि आप सल्ल० और मुसलमान कुरैश के शाम से आने वाले काफिले (की रूकावट करने) के इरादे से निकले थे (वह काफिला तो आपके पहुंचने से पहले आगे निकल गया लेकिन इस बहाने) अल्लाह तआला ने उनको और उनके असल दुश्मनों को बग़ैर किसी वक्त मुकर्रह के जमा कर दिया। (इस लिए उसमें कई मुसलमान शिरकत न कर सके क्योंकि उस मौके पर बाकाएदा जंग का मंसूबा न था) अलबत्ता मैं रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ अक़बा वाक़य मिना में हज के वक़्त शरीक हुआ था जबकि हमने इस्लाम पर अहद किया था

www.abulhasanalinadwi.org

और मैं अकबा की उस शिरकत पर बदर की शिरकत को तरजीह नहीं देता अगरचे बदर लोगों में ज़्यादा मशहूर है।"

मेरा किस्सा यह है कि मैं जब ग़ज़व-ए-तबूक में रसूलुल्लाह सल्ल० से पीछे रहा उस वक्त मुझमें कूव्वत भी थी और फुर्सत भी। खुदा की क़सम मेरे पास इकटठा दो ऊँट कभी भी नहीं हुए थे, लेकिन उस ग़ज़वे में मेरे पास एक छोड़ दो-दो सवारियाँ थी और रसूलुल्लाह सल्ल० जब किसी ग़ज़वे का इरादा करते थे तो किसी और सिम्त के मुतअल्लिक दरयाफ़्त फरमाते थे, लोग समझते थे कि आपको उसी की तरफ जाना है, अचानक आप सल्ल० दूसरी तरफ का रूख़ फरमा लेते लेकिन (उस मौके पर अपनी इख्तियार की हुई सिम्त) को ज़ाहिर कर दिया (कि तबूक जाना है) क्योंकि रसूलुल्लाह सल्ल० ने उस ग़ज़वे की तैयारी सख्त गर्मी में की, दूर का सफर था, मौसम सख्त और खुश्क, दुश्मनों की बड़ी तादाद का मुकाबला, इस लिए उस मुहिम का इज़हार कर दिया था, और उनको उस सिम्त की ख़बर दे दी थी ताकि पूरे तौर पर तैयारी कर लें, उस वक्त मुसलमानों की तादाद बहुत हो चुकी थी और उनकी कोई लिस्ट न थी, अगर आदमी छुपना चाहता तो छुप जाता और किसी को गुमान भी न होता, जब तक की उसके बारे मे अल्लाह की तरफ से "वही" न नाज़िल होती।

आप सल्ल० ने यह ग़ज़वा उस वक्त किया जब खजूर पक गए थे और साया बड़ा अच्छा मालूम होता था, और मुझे उसमें बड़ा मज़ा आता था। रसूलुल्लाह सल्ल० ने और मुसलमानों ने सामाने सफर शुरू कर दिया मैं हर रोज़ सुबह इसी इरादे से आता कि मैं भी आप सल्ल० के साथ जाने की तैयारी कर लूँ लेकिन यूँही पलट जाता और कोई फैसला न कर पाता था, मैं अपने दिल में कहता था कि जल्दी क्या है, जब भी इरादा करूंगा चला जाऊंगा क्योंकि मुझमें इसकी इस्तिताअत है लेकिन बराबर मेरा यही हाल रहा, यहां तक की सफर की हमा हमीं और सरगर्मी पूरी हो गई और रसूलुल्लाह सल्ल० और मुसलमान आखिरकार रवाना हो गए और उस वक्त तक मैं कोई यक़ीनी फ़ैसला नहीं कर सका। सुबह को आता और कुछ इन्तिज़ाम किये बग़ैर पलट जाता। रोज़ाना यही कैफ़ियत रहती। यहां तक कि हुजूर सल्ल० और मुजाहीदीन बहुत आगे तक गए और मेरे लिए जिहाद में शिरकत कर सकने का वक्त निकल गया। फिर भी मैंने इरादा किया कि अब भी चला जाऊं और आप सल्ल० को पा लूँ। काश मैं यही करता लेकिन यह भी न किया। रसूलुल्लाह सल्ल० के जाने के बाद जब मैं घर से बाहर निकलता था तो मुझे रंज होता था कि इस मामले मे मेरे शरीक हाल वही लोग थे जो मुनाफ़िक़ थे या माजूर और मुझे रसूलुल्लाह सल्ल० ने सफ़र के बीच याद नहीं फरमाया। तबूक पहुंच कर आप सल्ल० ने लोगों से दरयाफ़्त फ़रमाया कि कअब बिन मालिक को क्या हुआ। बनी सलमा के एक आदमी ने

www.abulhasanalinadwi.org

कहा या रसूलुल्लाह सल्ल० उनको अपनी खुशनुमा चादर और झुक झुक कर उसके किनारे के देखने ने इतनी फ़ुरसत ही कहां दी कि वह हमारे साथ आते। मआज़ बिन जबल ने कहा कि : बुरी बात तुमने कही, अल्लाह की कसम या रसूलुल्लाह सल्ल० ! उनमें सिवाए भलाई के हम कुछ नहीं पाते फिर आप सल्ल० खामोश हो गए और आप सल्ल० इसी हाल मे थे कि एक सफेद पोश आदमी गर्द उड़ाता हुआ आ रहा था, आप सल्ल० ने फ़रमाया अबू ख़सीमा! तो वह अबू ख़सीमा ही थे। यह वही थे जिन्होंने एक साअ़ खजूरों का सदक़ा किया तो उनपर मुनाफिकीन ने तंज़ (व्यंग्य) किया था।

हज़रत कअब कहते हैं कि जब मुझे खबर पहुंची कि रसूलुल्लाह सल्ल० तबूक से पलटने वाले हैं तो मुझे फ़िक्र शुरू हो गई और मैं अपने दिल ही दिल में तरकीबें सोचने लगा और मैं असलन यह सोचता था कि मैं कल आप सल्ल० की नाराज़गी से कैसे बचूंगा। मैं अपने घर वालों में हर राए वाले से इस बारे में मदद चाहता, जब यह खबर मिली कि रसूलुल्लाह सल्ल० तशरीफ ले आए तो मेरा सब सोचा हुआ ज़हन से निकल गया और मैंने समझ लिया कि मैं झुठी बात बता कर नजात न पाऊंगा। लिहाज़ा मैंने सच बोलने की ठान ली।

रसूलुल्लाह सल्ल० सुबह सुबह तशरीफ लाए और आप सल्ल० की आदते शरीफा ये थी कि जब किसी सफर से पलटते थे तो पहले मस्जिद में आते थे उसमें दो रकअतें पढ़ कर फिर लोगों के पास बैठते थे। जब आप सल्ल० फारिग़ हुऐ तो पीछे रह जाने वाले आ आकर आप सल्ल० से उ़ज़्र करने लगे और क़समें खाने लगे वह कुछ ऊपर 80 आदमी थे। आप सल्ल० ने उनके ज़ाहिरी दावे कुबूल किये, उनसे बैअत ली उनके लिए बखशिश की दुआ की और उनके दिली भेदों को अल्लाह के सुपूर्द किया। फिर मैं आया। जब मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को सलाम किया तो आप सल्ल० गुस्से के अंदाज़ में मुस्कुराए और फ़रमाया आओ। मैं आया। आप सल्ल० के सामने बैठ गया। आपने फरमाया किस सबब से तुम शरीक नहीं हो सके, क्या तुम्हारे पास सवारी न थी? मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल०! अल्लाह की कसम अगर मैं किसी दुनिया वाले के पास बैठा होता तो मैं उसकी नाराज़गी से उ़ज़्र करके निकल जाता, इसलिए कि मुझमें उम्दा तरीके से बात करने का सलीक़ा है लेकिन मैं समझता हूँ कि अगर आज मैं आप सल्ल० से झूठ बात कह दूँगा तो आप सल्ल० राज़ी हो जायेंगे मगर क़रीब है कि अल्लाह तआला आप सल्ल० को मुझसे नाराज़ कर दें और अगर मैं आप सल्ल० से सच्ची बात कह दूँ तो आप सल्ल० नाराज़ तो ज़रूर होंगे लेकिन मैं इसमें अल्लाह अ़ज़्ज़ा व जल्ला के इनआम की उम्मीद रखता हूँ। सच्ची बात यह है कि मेरे लिए कोई उ़ज़्र नहीं था। वल्लाह मैं कभी इतना फारिगुलबाल नहीं था, जितना कि उस मौक़े पर था। रसूलुल्लाह सल्ल० ने

www.abulhasanalinadwi.org

फ़रमाया कि इन्होंने सच्ची बात कह दी। जाओ यहां तक कि अल्लाह तआला तुम्हारे हक़ में फैसला करे।

मैं उठा और मेरे साथ ही बनी सलमा के कुछ लोग भी उठ कर आए और कहने लगे कि हमको मालूम नहीं कि इससे पहले तुमने कोई गुनाह किया हो, तुम (इस मौके पर कैसे) आजिज़ हो गए और कोई उज़्र न कर सके। जैसे दूसरे उज़्रख्वाहों ने उज़्र पेश किये। अगर तुम भी कोई उज़्र पेश कर देते तो रसूलुल्लाह सल्ल० का तुम्हारे लिए बखशिश चाहना तुम्हारे गुनाह की मआफी के लिए काफी हो जाता, इसी तरह वह बराबर मलामत करते रहे, यहां तक कि मैंने इरादा किया कि रसूलुल्लाह सल्ल० की तरफ पलट जाऊं, फिर मैंने उनसे कहा : क्या मेरी तरह कोई और भी है। बोले हाँ दो आदमी हैं, उन्होंने भी वही कहा जो तुमने कहा और उनसे भी वही कहा गया जो तुमसे कहा गया। मैंने कहा वह कौन हैं ? एक तो मिरार बिन रबीआ़ हैं और दूसरे हिलाल बिन उमय्या हैं और जब मैंने उन दोनों का ज़िक्र सुना तो घर चला आया क्योंकि उन्होंने ऐसे दो नेक आदमियों का ज़िक्र किया जो बदर में शरीक थे, वह दोनो मेरे लिए अच्छा नमूना थे।

अब रसूलुल्लाह सल्ल० ने हुक्म फरमाया कि हम तीनों से कोई बात न करे तो लोग किनाराकश हो गए और ऐसा रूख बदला गोया कभी जान पहचान थी ही नहीं। यहां तक कि मेरा दिल तंग हो गया और ज़मीन वह ज़मीन ही मालूम नहीं होती थी जिसको मैं पहचानता था, इस हालत में हम पर ५० रातें गुज़र गईं, मेरे दोनों साथी अपने घरों में थक कर बैठ गए और रोते रहे लेकिन मैं जवान आदमी था, निकलता था, नमाज़ में शरीक होता था, बाज़ारों में फिरता था, लेकिन हमसे कोई बात न करता था। मैं मस्जिद में आता था, नमाज़ के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अपनी मजलिस मे तशरीफ रखते, मैं सलाम करता और उनको देख कर दिल में कहता कि आप सल्ल० के होंठो को जवाब देने में हरकत हुई फिर मैं आप सल्ल० के करीब नमाज़ पढ़ता और छुपी नज़र से आप सल्ल० को देखता, जब नमाज़ की तरफ मुतवज्जेह होता तो आप सल्ल० मुझको देखते और जब मैं आप सल्ल० की तरफ मुतवज्जेह होता तो आप सल्ल० मुझसे बेरूखी करते।

मुसलमानों की बेरूखी को मुद्दत हो गई थी, एक दिन मैं अबू कतादा की तरफ गया वह मेरे चचाज़ाद भाई होते थे और मुझे बहुत महबूब थे। मैं उनके बाग़ की दिवार फांद कर अन्दर पहुंचा और उनको सलाम किया, वल्लाह उन्होंने मेरे सलाम का जवाब तक न दिया। मैंने कहा : ऐ अबू कतादा ! मैं तुमसे अल्लाह का वास्ता दे कर पूछता हूँ क्या तुम नहीं जानते हो कि मुझे अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह सल्ल० से मुहब्बत है, वह खामोश रहे, मैंने दुबारा कसम दी मगर वह खामोश रहे फिर मैंने उनको क़सम दी, उन्होंने कहा

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह और रसूल सल्ल० ज़्यादा जानते हैं उस वक्त मेरी दोनों आंखों से आंसू बहने लगे और मैं चला आया।

मैं मदीने के बाज़ार में फिर रहा था कि एक नबती शाम के नबतियों में से तिजारत का ग़ल्ला लेकर आया, कहता था कि कोई शख्स मुझे कअब बिन मालिक का पता दे सकता है ? लोग मेरी तरफ इशारा करने लगे वह मेरे पास आया, और गस्सान के बादशाह का ख़त दिया। मैंने उसको पढ़ा उसमें लिखा था "मुझे ख़बर मिली है कि तुम्हारे आक़ा तुमसे नाराज़ हैं, तुम ज़िल्लत व नाक़दरी की जगह रहने पर मजबूर नहीं हो तुम हमारे पास आओ हम तुम्हारी ग़मखुवारी करेंगे।" जब मैं उसको पढ़ चुका तो मेरे रंज की कोई हद न रही। मैंने कहा कि यह और बड़ी मुसीबत है और मैंने उस ख़त को तंनूर में झोंक दिया।

इसी हालत पर **40** रातें गुज़री। "वही" अरसे से नहीं आयी थी। नागाह (अचानक) रसूलुल्लाह सल्ल० का एक कासिद मेरे पास आया और कहा : रसूलुल्लाह सल्ल० तुमको हुक्म देते हैं कि अपनी बीवी से अलग हो जाओ और उनके क़रीब न जाओ, इसी तरह मेरे दोनों साथियों को हुक्म पहुंचा। मैंने अपनी बीवी से कहा कि तुम अपने मैके चली जाओ जब तक कि अल्लाह तआला इस मामले का फैसला न करे। हिलाल बिन उमय्या की बीवी रसूलुल्लाह सल्ल० के पास आई और कहा : या रसूलुल्लाह सल्ल० इब्ने उमय्या बूढ़े हैं और कोई खादिम नहीं। क्या आप सल्ल० नापसन्द करते हैं मैं उनकी खिदमत करूँ, आप सल्ल० ने फरमाया : नहीं, लेकिन वह तुमसे क़रीब न हो, उन्होंने कहा ख़ुदा की क़सम उनमें कोई हिस व हरकत नहीं : जब से यह किस्सा हुआ है वह बराबर रोते ही रहते हैं।

मुझसे मेरे घर वालों ने कहा तुम भी सल्ल० से अपनी बीवी के बारे मे इजाज़त तलब करो, जैसे हिलाल बिन उमय्या की बीवी ने अपने शौहर की ख़िदमत की इजाज़त ली है मैंने कहा मैं इजाजत़ न माँगूँगा, मैं नही जानता कि आप सल्ल० क्या जवाब देंगे। इस लिए कि मैं जवान आदमी हूँ।

इसी हालत पर हमने मज़ीद दस रातें गुज़ारी, वह पूरी पचास रातें हो गई मैंने पचासवीं रात की सुबह को अपने घर की छत पर नमाज़ पढ़ी, मैं इसी हालत में बैठा था, जिसका नक्शा अल्लाह ने खींचा है, मुझ पर मेरा दिल तंग हो गया था और ज़मीन फैलाव के बावजूद मुझ पर तंग हो गई थी, कि मैंने कोहे सिला से एक पुकार सुनी, कोई बुलन्द आवाज़ से कह रहा था "ऐ कअब बिन मालिक तुमको बशारत हो" यह सुनते ही मैं सजदे मे गिर पड़ा और मैंने समझ लिया कि मसर्रत की घड़ी आ गयी। सुबह की नमाज़ पढ़ कर रसूलुल्लाह सल्ल० ने अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने हमारी तौबा की क़ुबूलियत का ऐलान किया। लोग हमको बशारत देने लगे और कुछ मेरे दोनों साथियों की तरफ बशारत देने के

www.abulhasanalinadwi.org

लिए चले गये एक घुड़सवार दौड़ता हुआ आया और कबील-ए-असलम का एक आदमी पैदल आया और पहाड़ पर चढ़ा उसकी आवाज़ घोड़े से भी ज़्यादा तेज़ थी, जब वह मेरे पास आया और मुझको बशारत सुनाने लगा तो "खुशी" में मैंने अपने दोनों कपड़े पहना दिये, वल्लाह मैं उस वक्त उन्हीं दो कपड़ो का मालिक था, फिर मैंने दो कपड़े वक्ती तौर पर लिये और उनको पहन कर रसूलुल्लाह सल्ल० के पास जाने के इरादे से चला, लोग मुझसे जूक़ दर जूक़ मिलते थे और तौबा की मुबारकबाद देते थे और कहते थे तौबा की क़ूबुलियत मुबारक हो। यहां तक की मैं मस्जिद में आया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठे थे और लोग आप सल्ल० के गिर्द जमा थे, तलहा बिन उबैदउल्लाह मुझको देख कर खड़े हो गये और बढ़ कर मुझसे मुसाफ़ा किया और मुबारक बाद दी, वल्लाह मुहाजिरीनों में उनके सिवा कोई नहीं ख़ड़ा हुआ मैं तलहा का यह ऐहसान नहीं भूल सकता जब मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को सलाम किया तो आप सल्ल० ने फरमाया (और आप सल्ल० का चेहरा मुबारक खुशी से दमक रहा था) "ज़िन्दगी का मुबारकतरीन दिन मुबारक हो"। मैंने कहा यह आपकी तरफ से है या अल्लाह तआला की तरफ से है, फरमाया : नहीं बल्कि यह अल्लाह अज़्ज़ व जल की तरफ से है।

जब आप सल्ल० खुश होते थे तो आप सल्ल० का चेहरे मुबारक ऐसा चमकता था, गोया चांद का एक टुकड़ा है, हम इस कैफियत को पहचानते थे। मैं जब आप सल्ल० के पास बैठा तो मैंने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल० मैं इस खुशी में अपना माल सदके के तौर अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के लिये छोड़ता हूँ, आप सल्ल० ने फरमाया कि कुछ माल अपने लिये रोक लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने कहा ख़ैबर का हिस्सा मैंने अपने लिए छोड़ा है और मैंने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल० अल्लाह तआला ने मुझको सच्चाई के सबब नजात दी है। अब मेरी तौबा का नतीजा यह होना चाहिए कि जब तक ज़िंदा रहूँ सच ही बोलूँ और अल्लाह की कसम जब से मैंने रसूलुल्ललाह सल्ल० से सच सच कह दिया आज के दिन तक झूठ बोलने का कभी इरादा नहीं किया और मेरे इल्म में सच बोलने में किसी पर अल्लाह तआला ने ऐसा फ़ज़्ल नहीं किया जैसा मुझ पर फ़रमाया है और मैं उम्मीद करता हूँ जब तक मैं ज़िन्दा रहूँगा अल्लाह तआला मेरी हिफाज़त करेगा।

सूरः तौबा का नुजूल

जो आयत हम लोगो के मुतअल्लिक नाज़िल हुई थीं वह यह थीं :

"अल्लाह मेहरबान हुआ नबी सल्ल० पर और मुहाजिरीन और अन्सार पर जो साथ रहे नबी के, नबी के मुश्किल की घड़ी में बाद इसके कि क़रीब था

www.abulhasanalinadwi.org

कि दिल फिर जाऐं बाज़ों के उनमें से फिर मेहरबान हुआ उनपर बेशक वह उन पर मेहरबान है। रहम करने वाला है जिनको पीछे रखा था, यहां तक की तंग हो गई उन पर ज़मीन बावजूद कुशादा होने के और तंग हो गई उन पर उनकी जानें और समझ गये कि कहीं पनाह नहीं अल्लाह से मगर उसी की तरफ, फिर मेहरबान हुआ उन पर कि वह फिर आये। बेशक अल्लाह ही है मेहरबान, रहमवाला, ऐ ईमानवालो डरते रहो अल्लाह से और रहो साथ सच्चों के" (सूरा तौबा आयात -117—119)

वल्लाह इस्लाम के बाद सबसे बड़ा इनआम अल्लाह तआला ने मुझ पर यह किया की रसूलुल्लाह सल्ल० के रूबरू मुझसे सच्ची बात कहला दी मैं झूठ बोलता तो मेरा भी वही हश्र होता जो झूठ बोलने वालों का हुआ। अल्लाह ने झूठों के हक़ मे बहुत ही सख्त वईद (चेतावनी) फरमाई है :-

"अनकरीब वह लोग तुमसे अल्लाह की क़समें खाऐंगे जब उनकी तरफ पलटोगे ताकि उनको दरगुज़र करो, पस तुम उनसे ऐराज़ (बेपरवाई) करो बेशक वह नापाक हैं, उनका ठिकाना दोज़ख है उसका बदला तो उन्होंने कमाया, क़समें खाऐंगे तुम्हारे सामने ताकि तुम राज़ी हो, अगर तुम राज़ी भी हुऐ तो अल्लाह फ़ासिक़ (नाफरमान) लोगों से राज़ी नहीं होता" (सूरा तौबा आयत ९५-९६)

हज़रत कअ़ब रज़ि० कहते हैं कि पीछे कर दिये जाने का मतलब यह है कि हमारा मामला कुछ दिनों के लिए उठा रखा गया था, उन लोगों की निसबत जिनके ज़ाहिरी हाल पर रसूलुल्लाह सल्ल० ने इकतिफ़ा किया यानी काफी समझा, जब उन्होंने क़सम खाई तो उनसे बैअत ली और उनके लिए बखशिश चाही और हमारे काम को पीछे कर दिया यहां तक कि अल्लाह तआला उसमें फैसला करे।[1]

हज़रत कअब के वाक़िये में हुज़ूर सल्ल० ने जो मामला इख्तियार फ़रमाया वह उस मामले से बिल्कुल अलग था, जो आप सल्ल० ने मुनाफ़िक़ीन के साथ किया, आप सल्ल० जानते थे कि वह लोग दिल से आपके साथ नहीं हैं लिहाज़ा उनके साथ तमबीह (चेतावनी) और सज़ा का मामला करना बेफायदा है। उनको तो अपने आमाल की सज़ा आखिरत मे मिलेगी, दुनिया मे सज़ा देने से उनकी इसलाह नहीं होगी, लेकिन हज़रत कअब बिन मालिक और उनके दूसरे साथियों के ईमान पर आप पर एतमाद (विश्वास) था, उनकी कोताही किसी हद तक लापरवाही और ग़फलत का अंदाज़ रखती थी, लिहाज़ा उनकी इस कमज़ोरी की इसलाह के लिए सख्त रवय्या इख्तियार करना मुनासिब था, लिहाज़ा ५० दिन तक उनको ज़ेहनी तकलीफ से गुज़ारा और यह वही-ए-इलाही के मुताबिक किया। आपके इस अमल से यह बात भी अयाँ हो जाती है।

---

(1) सही बुखारी, सही मुस्लिम, सीरत इब्ने हिशाम 2/531—537, ज़ादुल मआद 3/ 552—557

www.abulhasanalinadwi.org

ग़ज़्व-ए-तबूक के असरात

ग़ज़्व-ए-तबूक का बड़ा फायदा यह हुआ कि रूमी सलतनत जिसका इक़बाल बामे उरूज पर था और अरबों पर उनका बड़ा रोब और खौफ़ था मुसलमानों के ईमान व यकीन और अज़्म (संकल्प) जुरअत और हौसला व शुजाअत के सामने शिकस्तादिल और मोहतात (सावधान) हो गई, हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हस्नी नदवी रहमतुल्लाह अलैहि लिखते हैं :

"अरब द्वीप के उन क़बाएल तथा विजेता और शासक कबाएल (जो रूमी बादशाहों से सम्बन्धित और उसके मातहत थे) के दिलों पर रोब वा दाब क़ायम हो गया और उसके ज़रिये उनको यह मौक़ा मिला कि दीने इस्लाम के मसअले पर गम्भीरता से ग़ौर करें और यह महसूस करें कि वह कोई पानी का बुलबुला नहीं है जो थोड़ी देर के लिए पानी की सतह पर उभरता है और फिर देखते ही देखते ग़ायब हो जाता है।"

सारांश यह कि यह ग़ज़्वः सीरते नबवी और दावते इस्लामी की तारीख में खास अहमियत का हामिल (वाहक) रहा है और इससे उन उद्देष्यों की पूर्ति हुई जो मुसलमानों और अरबों के हक़ में बहुत दूररस है और जिनका तारीख इस्लाम के तसलसुल (निरन्तरता) और आगे पेश आने वाले वाक़िआत पर गहरा असर पड़ा।[1]

हुज़ूर सल्ल० को मदीना पहुंच कर मुसलमानों की हिफाज़त के लिए जो तदबीरें और दुश्मनों से जो मुकाबले करने पड़े जिनकी शुरूआत सन् 2 हिजरी में मारक-ए-बदर से हुई और वह सिलसिला सन् नौ हिजरी में तबूक के वाक़िये पर खत्म हुआ। इस तरह आप सल्ल० ने नबूअत की पूरी 23 साला मुद्दत में सिर्फ 8 साल की मुद्दत दुश्मनों से जंग करने के मआमलात में गुज़ारी। शुरू के 14 साल की मुद्दत सिर्फ सबर और बर्दाश्त में गुज़ारी और सिर्फ पैगामें हक़ पहुँचाने और उस हक़ की पेशकश करने पर इक्तिफ़ा की। फिर जब बाकाएदा मुकाबले की ज़रूरत सामने आयी तो उसकी ज़िम्मेदारी अंजाम दी तो सिर्फ 8 साल की मुद्दत रही और कामयाबी मिली और मुकम्मल सरबुलंदी पर ख़त्म हुई।

ग़ज़्वात का सिलसिला इस पर खत्म हुआ और मुसलमानों को इस्लामी उसूलों के मुताबिक सामाजिक ज़िन्दगी का निज़ामे अमल क़ायम करने में दुश्मनों की शरारतों से जो रूकावट होती थी ख़त्म हुई।

---

(2) (2) नबी–ए–रहम, पृ0 490

www.abulhasanalinadwi.org

मस्जिद ज़िरार

मुनाफिकीन हमेशा इस फिक्र में रहते थे कि मुसलमानों में किसी तरह फूट डाल दो, एक मुद्दत से वह इस ख़्याल में थे कि मस्जिद कुबा के तोड़ पर वहीं एक और मस्जिद इस हीले से बनाएँ कि जो लोग कमज़ोरी या किसी और वजह से मस्जिदे नबवी न पहुंच सकें यहां आकर नमाज़ अदा कर लिया करें। अबू आमिर जो अन्सार में से ईसाई हो गया था, उसने मुनाफिकीन से कहा कि तुम सामान करो मैं कैसरे रोम के पास जाकर वहां से फौजें लाता हूँ कि इस मुल्क को इस्लाम से पाक कर दूँ। हुजूर सल्ल० जब तबूक तशरीफ ले जाने लगे तो मुनाफ़िकीन ने हुजूर सल्ल० की खिदमत में आकर अर्ज़ किया कि हमने बीमारों और माजूरो के लिए एक मस्जिद तैयार की है। आप चल कर उसमें एक दफा नमाज़ पढ़ा दें तो मकबूल हो जाए। हुजूर सल्ल० ने फरमाया : इस वक्त मैं मुहिम पर जा रहा हूँ, जब तबूक से वापस फिरे तो मालिक बिन माअन बिन अदी को हुक्म दिया कि जाकर मस्जिद में आग लगा दें, उसी मस्जिद के बारे मे यह आयते उतरी हैं :-

"और वह लोग जिन्होंने एक मस्जिद ज़िरार और फूट डालने और कुफ्र की ग़रज़ से तैयार की और इस ग़रज़ से कि जो लोग पहले से खुदा और रसूल से लड़ते हैं उनको एक कमीनगाह (घात स्थल) हाथ आए और वह कसम खाते हैं कि हमने सिर्फ भलाई के लिहाज़ से ऐसा किया और खुदा गवाही देता है कि यह झूठ कहते हैं, मुहम्मद तू कभी उस मस्जिद में जा कर न खड़ा हो वह मस्जिद जिसकी बुनियाद पहले ही दिन से परहेज़गारी पर रखी गयी है वह इस बात की ज़्यादा मुसतहिक़ है कि तू उसमें नमाज़ पढ़े वहां ऐसे लोग हैं जिनको सफाई महबूब है और खुदा सफाई पसन्द करने वालों को चाहता है।" (सूरा तौबा : 108)

ज़कात की फरज़ियत

उसी साल सन् नौ हिजरी मे ज़कात का हुक्म नाज़िल हुआ। ज़कात का मतलब यह था कि खुशहाल शख्स जब उसकी खुशहाली एक खास हद तक पहुंच जाये तो वह अपने माल में से एक हिस्सा निकाल कर ग़रीबों की मदद करे और उसको दूसरे फराएज़ की तरह एक फर्ज़ क़रार दिया गया और इस्लाम के पांच अरकान में से चौथा रूकन करार पाया। पहला रूकन अक़ीद-ए-तौहीद, दूसरा रूकन नमाज़, तीसरा रूकन रमज़ान के रोज़े और चौथा रूकन ज़कात और पाचवाँ रूकन हज की इसतिताअत (सकत) हो तो उम्र में एक मरतबा हज करना।

ज़कात की फरज़ियत के लिए खुशहाली की एक हद मुकर्रर की गयी, उस हद तक खुशहाली न होने पर ज़कात फर्ज़ नहीं होती और इस क़दर

www.abulhasanalinadwi.org

खुशहाली हो तो ग़रीबों के लिए अपने उस बढ़े हुए माल से ढाई फीसदी के करीब रक़म निकालना और ग़रीबों में बाँटना ज़रूरी और फर्ज़ हो जाता है। इस तरह इस्लाम ग़रीबों के साथ हमदर्दी और ख़ैरखुवाही करने की खुसूसियत रखने वाला मज़हब करार पाता है। इसमें दूसरे इंसानों को अपना भाई समझते हुए हमदर्दी करने की खुसूसियत के अलावा ये खुसूसियत भी है कि अपने परवरदिगार की अता की हुई नेमतों पर उसका शुक्र किया जाये और उसको उसकी इबादत क़रार दिया गया है।

इस्लाह व दावत के काम में सख़्त हालात का खात्मा

हुज़ूर सल्ल० की मुबारक ज़िंदगी का यह ६२वां साल था, आप सल्ल० ने उम्र की 40 साला मुदद्त में जो नबूअत मिलने से पहले की थी ऐसी सुथरी और बेदाग़ और आला सिफात की ज़िंदगी गुज़ारी कि आपके अज़ीज़ और अहले वतन पूरी तरह तअरीफ़ करने वाले और पसन्द करने वाले थे। फिर नबूअत मिली तो आप सल्ल० ने दूसरों की इस्लाह का काम शुरू किया। इसमे लोगों की मुख़ालिफ़त से साबिक़ा पड़ा और बड़ी तकलीफें उठानी पड़ीं। इसमें आप सल्ल० के २३ साल गुज़रे उनमें 14 साल सब्र व बर्दाशत के साथ दीन की तबलीग़ और दावत में गुज़रे और इस बीच जो तकलीफें दी गयीं उनको बर्दाशत किया और जवाब नहीं दिया और सब्र करते रहे और जब क़त्ल कर दिये जाने की साज़िश हुई तो वतन छोड़ कर दूसरे शहर में चले गये। और जब वहां दुश्मन के हमले का ख़तरा हुआ तो हमले का जवाब देने की इजाज़त मिली और दुश्मन की तरफ से कार्रवाई मज़ीद ख़तरनाक हुई तो खुलकर जंग करने की इजाज़त मिली और मदीना मुनतकिल होने के बाद 10 साला मुद्दत में से आख़िरी 8 साल में से सिर्फ 7 साल की मुद्दत ऐसी गुज़री कि मुसल्लह तरीके से मुकाबला करने पर मजबूर होना पड़ा। इसमें भी दो साल मुआहिदे अमन और सुलह के गुज़रे। इस ऐतबार से सिर्फ 6 साल दुश्मनों से मुकाबले में गुज़रे और उन मुकाबलों में मुसलमानों को अमूमन कामयाबी मिलती रही और आपकी दावते हक़ का काम बढ़ता और कामयाब होता रहा। यहां तक की आपको पूरी तरह ग़लबा हासिल हो गया और मुखालिफ़ों की ताक़त टूट गयी। जंगो के 6 बरसों में आप का जो रवय्या रहा वह आपकी अमन पसन्दी और रहम दिली की आला मिसाल है। इस पूरी मुदद्त में इन्सानी जान के नुक़सान के लिहाज़ से जो नक्शा सामने आता है वह अमन के मग़रबी दावेदारों यानी यूरोप वालों के लिए यक़ीनन एक अजीब व ग़रीब इन्किशाफ (प्रकटन) बन सकता है।

वह यह कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहनुमाई में दुश्मनों से मुक़ाबला करने की 82 कोशिशों में (जिसमें 28 में आपने खुद

www.abulhasanalinadwi.org

क़ियादत की) सिर्फ **458** मुसलमान और **459** मुख़ालिफीन काम आए, इन तमाम मुकाबलों में सिर्फ **11** मुसलमान क़ैद हुऐ, अलबत्ता मुखालिफीन के **6546** अफराद क़ैदी बनाए गए जो फिदये से या फिदये के बग़ैर आज़ाद कर दिये गए और जो बिला किसी शर्त छोड़े गए उनकी तादाद **6347** है। और उनके साथ कोई इन्तिक़ामी बदले की कार्रवाई नहीं की गई। ज़ख़्मियों की तादाद भी फरीक़ैन को मिला कर **300** के क़रीब हुई[1] सख़्त मिजाज़ दुश्मन क़ैदियों के साथ भी आप सल्ल० की तरफ़ से बहुत नरम मामला किया गया और यह इस्लाम की विशेषता है कि उसमें जंग की कार्रवाई सिर्फ अपनी हुकूमत कायम करने के लिए नहीं बल्कि हक़ व सदाक़त की ज़िन्दगी क़ायम करने के लिए होती है। इसमें दुश्मन अगर खुद हक़ को लागू करना कबूल कर ले तो मुसलमान उससे टकराते नहीं, उसको उसका मौक़ा दे कर अलग हो जाते है और उससे सिर्फ एक फिदया लेते हैं, दूसरी सूरत में दुश्मन अगर हक़ को कुबूल न करे और इसलाह व हक़ को लागू करने से रोके तो उसके लिए मुसलमानों को जब्र और ज़रूरत पड़े तो जंग की हिकमते अमली इख़्तियार करना होती है। कुरआन मजीद में आता है :-

"यह वह लोग हैं अगर हम ज़मीन में उनके पांव जमा दें (यानी हुकूमत अता करें) तो यह (अपने रब की इबादत यानी) नमाज़ क़ायम करेंगे और (गरिबों की माली मदद में) ज़कात देंगे और अच्छे कामों का हुक्म करेंगे। तमाम कामों का अंजाम अल्लाह के इख़्तियार में है।" (सूरा : हज-**41**)

और जंग की इजाज़त और हुक्म देने के सिलसिले में इस तरह फरमाया गया है कि "उनसे लड़ो यहां तक कि फितना यानी दीने हक़ पर अमल करने में जो रूकावट डाली जा रही है वह दूर हो जाए और दीन का वह तरीक़ा जो अल्लाह तआला का है क़ायम हो जाए, अगर यह रूकावट डालने से रूक जाएं (तो तुम भी रूक जाओ) हमले के लिए आगे बढ़ना तो सिर्फ ज़ालिमों ही के खिलाफ किया जायेगा।" (सूरा : बकरा - **193**)

आखिरी नबी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने जामे कमालाते शरीअत और जामे सिफात इंसानी ज़िन्दगी को पेशे नज़र रखते हुए पैग़ामे इलाही पहुंचाया और रहनूमाई की और जब आपको ताकत के इस्तेमाल पर मजबूर कर दिया गया तो उसपर भी अमल किया जिसकी ज़रूरत और अहमियत अल्लाह तआला ने अपने कलाम में इस तरह बयान की :-

"और अगर खुदा लोगों को, एक फरीक को उसके मुकाबले पर दूसरे फरीक से दूर न करता तो दूसरे लोगों के इबादतखाने और मुसलमानों की मस्जिदें जिनमें खुदा का बहुत सा ज़िक्र किया जाता है वीरान हो चुकी होती" (सूरा : हज - **40**)

---

(1) मेगज़ीन "सफ़ा टाइम्स" नई देहली जिल्द नं0 2 शुमारा नं0 5, अप्रैल–जून 2006, पृ0 10

www.abulhasanalinadwi.org

और आपने अपने बाद वालों पर भी इसी की ज़िम्मेदारी डाली है कि वह इंसानों को ख़ैर के कामों और ख़ैरख़ुवाहाना ज़िंदगी की तरफ लाने का काम बराबर जारी रखें और इसको वही काम बताया जिसके लिए अम्बिया मबऊस किये जाते रहे हैं और दीन का वह नक्शा पेश किया जो क़यामत तक आने वाले इंसानों के लिए सिर्फ नजात का ज़रिया ही नहीं बल्कि उनकी सहूलत के लिहाज़ से अमल के लाएक़ भी है और इसकी हिदायत आपको आखिरी और जामे व माने (व्यापक व वाहक) नबी के ज़रिये दीं।

मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों की जंगो के दरमियान मुआज़ना (तुलना)

मुसलमानों की जंगो को मुसलमानों का ज़ालिमाना अमल कहने वालों के सामने यह हक़ीक़त वाज़ेह (स्पष्ट) करने की है कि तमाम जंगों में जो इंसानी रवादारी और अच्छे अख़लाक का मामला रहा उसका दूसरे मज़हबों और समाजों के दरमियान होने वाली जंगो में पेश आने वाले हालात से मुकाबला किया जाए तो हैरतनाक नमूना सामने आता है, इस्लाम के अलावा कोई भी मज़हब, कोई भी कौम, कोई भी समाज व सोसाइटी और अमन के लिए काम करने वाली कोई संस्था आज तक इस तरह का अमन पसंदी और हक़तलबी का इन्किलाब अमल में नहीं ला सकी और यह इन्किलाब भी ऐसा इंसानी इन्किलाब था कि उसके नतीजे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे निज़ाम (प्रबंध) की बुनियाद रख दी जिसकी बरकतें सदियाँ गुज़र जाने के बाद भी इंसानी सीनों मे महसूस की जा सकती हैं।

जंग बदर के 72 क़ैदियों में से 70 को हुज़ूर सल्ल० ने जुर्माना लेकर आज़ाद कर दिया, उन क़ैदियों को मेहमानों की तरह रखा गया। बहुत से क़ैदियों का ऐतराफ (स्वीकृति) मौजूद है कि मुसलमान अपने बच्चों से बढ़कर उनके आराम व राहत का इन्तिज़ाम करते थे।

जंग बदर के बाद ग़ज़व-ए-मुसतलिक में 100 से ज़ाएद मर्द औरत क़ैद हुए वह सब बिला किसी मुआवज़े के आज़ाद कर दिये गए। हुदैबिया के मैदान में ८० हमलावर गिरफ़्तार हुए उनको आप सल्ल० ने बिला किसी शर्त व बिला किसी जुर्माने के आज़ाद कर दिया।

जंग हुनैन में 6 हज़ार मर्द और औरत बिला किसी शर्त व बिला किसी मुआवज़े के आप सल्ल० ने आज़ाद फरमा दिये। कुछ क़ैदियों की आज़ादी का मुआवज़ा हुज़ूर सल्ल० ने अपनी तरफ से क़ैद करने वालों को अदा किया था और फिर ज़्यादातर क़ैदियों को खलअत व ईनाम दे कर रूख़्सत किया।

www.abulhasanalinadwi.org

हुज़ूर सल्ल० का काएदा था कि औरत, लड़के और बूढ़ों को कत्ल करने से मना फरमाते थे, जब सरिया (सैन्यदल) भेजते तो उन लोगों को चेतावनी देते कि खुदा का इन्कार करने वालों का कत्ल करना हो तो मुसला न करो, यानी उनके शरीर के अंगो को न बिगाड़ो, कुफ़्फ़ार से जब कुछ मुआहिदा करो तो बदअहदी न करो। औरत, बच्चे और बूढ़ों को क़त्ल न करो, जिस बस्ती और कबीले से अज़ान की आवाज़ सुनी जाए या इस्लाम की कोई अलामत (पहचान) मालूम हो वहां हमला करने की इजाज़त न थी और जो शख्स कलमा पढ़ लेता अगरचे उसने तलवार के खौफ से ही पढ़ा हो तो उसको क़त्ल करने से मना फ़रमाते थे। सहाबा कहते थे कि या रसूलुल्लाह सल्ल० उसने मौत के डर से कलिमा पढ़ा था, आप सल्ल० फ़रमाते थे क्या तुमने उसका दिल चीर कर देख लिया था? हज़रत उसामा बिन ज़ैद और मुहलिम बिन जसामा पर हुज़ूर सल्ल० इसी बिना पर नाराज़ हुए और आप सल्ल० ने उसामा बिन ज़ैद से वादा लिया कि मेरे सामने या मेरे बाद कभी किसी ऐसे दुश्मन शख्स को कत्ल न करना जो कलिमा पढ़ ले। हज़रत ख़ालिद रज़ि० से इस बारे में बदऐहतियाती हो गई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे सख्त नाराज़ हुए।[1]

सीरत इब्न कसीर में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने ग़ज़व-ए-हुनैन में अपने असहाब और साथियों को हुक्म दिया कि किसी बच्चे, औरत, मर्द या गुलाम जो काम काज के लिए हों हाथ न उठाया जाए। आप सल्ल० ने एक औरत के क़त्ल पर जो हुनैन में मारी गयी, अफसोस का इज़हार किया।[2]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस आलातरीन तालीम व तरबियत ही का असर था कि खुलफाऐ राशिदीन के ज़माने में अगरचे ईराक, शाम, मिस्र व अरब ईरान व खुरासान के सैकड़ों शहर फतह किये गए, मगर किसी भी जगह हमलावरों, जंगआज़माओं या रिआया के साथ इस तरह की सख्ती और ज़्यादती का बरताव नहीं मिलता जो उस ज़माने की जंगो में राएज था। हारे हुए दुश्मन से तावाने जंग लेने का भी कहीं इंदराज नहीं मिलता।

ज़रा एक तरफ इस्लाम की उन जंगों के हालात सामने रखते हुए इस्लाम और मुसलमानों पर आतंकवादी का इल्ज़ाम लगाने वाली क़ौमों की तारीख मुलाहिज़ा करें तो ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ मालूम होगा।

फ्रांस में अवामी इन्क़िलाब आया और जब अलग अलग इंसानो का मारना वहां मुमकिन न रहा तो ग्लोटीं ईजाद करनी पड़ी जो एक साथ बीसों इंसानों के सरों को नारियलों की तरह उड़ा देती थी। इस अवामी इन्क़िलाब में

---

(1) असहहुस्सियर 345–346
(2) सीरत इब्ने कसीर 3/638

www.abulhasanalinadwi.org

इतिहासकारों के अंदाज़े के मुताबिक 26 लाख इंसानों को ग्लोटों की भेंट चढ़ा दिया। इसी तरह रूम में साम्यवादी इन्किलाब में एक करोड़ से ज़ाएद इंसानों को कत्ल व ग़ारतगरी और बर्फानी कैदखानो के हवाले कर दिया।

1914 ई० के महान भयंकर युद्ध में यूरोपी देशों ने जर्मनी से अपने इलाकों की आज़ादी के लिए कत्ल व ग़ारतगरी का बाज़ार गर्म किया। उसमें रूस के १७ लाख, फ्रांस के 13 लाख 70 हज़ार, इटली के 4 लाख 20 हज़ार, आस्ट्रेलिया के 8 लाख, बरतानिया के 7 लाख 20 हज़ार, बल्गारिया के १ लाख, रूमानिया के एक लाख, आस्टरया के एक लाख, तुर्की के 2 लाख 5 हज़ार, बैल्जियम के 1 लाख दो हज़ार सर्वोमानटीनेगरे के 1 लाख और अमरीका के 50 हज़ार इंसान कत्ल हुए। सामूहिक संख्या 73 लाख 38 हज़ार बनती है। यह जंग चार साल चली। वास्तव में 73 लाख से अधिक लोग मारे गये। दूसरी तरफ इस्लाम की 8 साला जंगों का नक्शा देखिये तो नज़र आयेगा कि उनमें से एक हज़ार से कुछ ज़यादा लोग उसमें काम आए, जिनमें मुसलमान और उनके दुश्मन के अफराद शामिल हैं। फिर भी नबी-ए-इस्लाम और इस्लाम पर ज़ुल्म का इल्ज़ाम लगाते हैं जिन्होंने लाखों इंसानो को सिर्फ ग़ैर इलाके पर कब्ज़ा या अपने इलाके से दुश्मन को हटाने के लिए मौत की भेंट चढ़ा दिया। पिछली सदी की पहली जंग में जो 1914 ई० में हूई और उसी सदी की दूसरी जंग में जो 1938 ई० से 1942 ई० तक रही ताकत के नशे में मस्त विश्वशक्तियों ने इलाके पर कब्ज़ा जमाने के लिए अरबों और खरबों पौण्ड और डालर का माली नुकसान किया और इसमें बहुत से देशों के इंसान जो सफहे हस्ती से मिट गए उन सबकी सामूहिक संख्या एक करोड़ छ लाख बनती है। माली तौर पर सिर्फ अमरीका का ३५० अरब डालर खर्च हुआ, जबकि एक करोड़ से ज़ाएद शहरी घरों से बेघर हो गए, लाखों इंसान माजूर हो गऐ और लाखों बच्चे ऐटमी जरासीम के असरात (प्रभाव) की वजह से माजूर ही पैदा हो रहे हैं। फिर मज़ीद यह कि आमने सामने की जंग तो बहादुरी की जंग समझी जाती है मगर अमरीका ने इस महान युद्ध द्वितीय में बग़ैर मुकाबले के हिरोशिमा और नागासाकी की शान्तिपूर्ण आबादी पर ऐटम बम गिरा के दो लाख 75 हज़ार इंसानों को क्षण भर में हवा में बिखेर दिया। 12 हज़ार वज़नी बम शहरी आबादियों पर बरसाए गए, जिनकी वजह से तापमान पाचं लाख डिग्री फारनहाईट से ज़्यादा हो गया। ऐसे में इंसानियत का क्या हाल हुआ होगा। इसके बाद भी मार धाड़ का सिलसिला जारी रखा।

और यह सब किसी इंसानी भलाई या किसी बुलंद मकसद से नहीं बल्कि सिर्फ इलाके पर ग़ैर का कब्ज़ा हटाने और अपना कब्ज़ा जमाने के लिए किया गया। दूसरी जंग की इन सब हौलनाकियों के बाद जो इलाकाई क़ब्ज़े के लिए जंगे हुई,

www.abulhasanalinadwi.org

उनमें **1955** ई० में कोरियन वॉर में जो अमरीका के कोरिया पर कब्ज़ा करने के सिलसिले में हुई १५ लाख इंसान कत्ल हुए। **1990** ई० की गल्फ़ वॉर में जो सुपर पॉवर की सरपरस्तगी में लड़ी गई, एक लाख इंसानी जाने खत्म हुई। विश्व सुपर पॉवर रूस की लादी हुई अफगान वॉर में जो **25** दिसम्बर **1979** ई० से **1999** तक हुई दस लाख से ज़ाएद इंसान मारे गए और करोड़ो डालर का नुकसान हुआ। जबकि लाखों लोगों को अभी तक अपने घर की छत नसीब नहीं हुई।[1]

मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी रहमतुल्लाह अलैहि ने अख्बार "सिदक जदीद" (१६ जून **1931** ई०) में बरतानिया और जर्मन फ़ौजों के तर्ज़अमल (कार्यप्रणाली) के जो खुरेज़ी और सफ़्फ़ाकी की जो अजीब व ग़रीब मिसालें पेश करती हैं खुद उनके जरनल के हवाले से कुछ टुकड़े लिए हैं जो देखने के लिए पेशे खिदमत हैं :-

"बरतानियाँ के फ़ौजी अफ़सरों की निगाह में अपने सिपाहियों की ऐहमियत सिर्फ "तोप की ग़िज़ा" की है (लेख जनरल एलिट डी, एस०ओ० आस्ट्रेलिया)

यह अलफ़ाज़ बरतानिया के किसी दुश्मन के नहीं, एक दोस्त के किसी हरीफ़ के नहीं, एक हलीफ के ज़बान से अभी कुछ ही अर्सा हुआ अदा हुए हैं।

बरतानिया ही के एक लायक बेटे ने फौज के एक नामवर अफसर, बरतानिया के एक दिलावर मिलेट्री कमान्डर ने कच्चा चिट्ठा अपने कलम से छाप कर पब्लिश कर दिया !

किताब "जगबीती" नहीं "आपबीती" है सुनी हुई बातें नहीं हैं देखी हुई बातों का मजमुआ (संकलन) है। किताब का लिखने वाला वह नहीं, जिसने दूर बैठे सुनी सुनाई कहानी और किस्सों को जमा कर दिया, वह है जो खुद उमूमी जंग में शुरू से आखिर तक पहले छोटे अफसर और आखिर में बड़े अफसर की हैसियत से शरीक रहा। पलटनें भरती कीं, खंदकों मे लड़ा, मारके सर किये, किले फतह किये, तमग़े पाये, खिताबात से सरफराज़ हुआ, कप्तान था मेजर हुआ और आखिर में ब्रिगेडियर जनरल के ओहदे पर पहुंचा नाम एफ० पी० ग्रोमेर है, और सी०बी०सी०, एम०जी०डी०एस०ओ० के जंगी खिताबात से मुमताज़ किताब का नाम "। ठतें छंजपवद दव उंदशे संदक है जो बजाए खुद जंगी मुहावरा है। लंदन के पब्लिशर जोमेथन कप ने पहली बार अप्रैल **1930** ई० में पब्लिश किया, महीनों और हफ़्तों में नहीं, दिनों में पहला एडीशन ख़त्म था दूसरा एडीशन और फिर तीसरा एडीशन भी ख़त्म थे। उस वक़्त से लेकर अब तक खुदा मालूम कितने एडीशन और निकल चुके हैं, इस आईने को हाथ में लीजिये और उसमें जंगे फिरंग का नक़शा हू ब हू मुलाहिज़ा करते चलिये, लिखते हैं :

---

(1) सफ़ा टाइम्स जिल्द नं0 2, शुमारा नं0 5, अप्रैल–जून 2006, पृ0 10–11

www.abulhasanalinadwi.org

"जंग का मक़सद एसकोएथ और ग्रे की ज़बान पर "बुराई का दूर करना" था, टाइप्स और डेलीमेल के सफ़हात में "इस्लाह" (सुधार) और सिर्फ सुधार था, लेकिन खुद सिपाहियों के नाम उनके अफ़सर जो तक़रीरें करते थे, उनका नमूना यह है :-

"अपनी इन्सानियत व शराफत को भुला दो, दिलों को पत्थर बना लो, मौत व ज़िंदगी की तरफ़ से गूंगे बहरे बन जाओ, यह जंग है जंग" (पेज नं०-४०)

"मेरा काम यह है कि एक हज़ार इंसानों से ज़ाएद की ज़ेहनियत, तरबियत, सीरत जल्द से जल्द मुदद्त में बदल कर रख दूँ। दस्त ब दस्त लड़ाई के लिए खून का ज़ौक़ मुझे पैदा करना है और प्रोपैगन्डे के ज़हर से दिलों को माऊफ कर देना है, जर्मनों की सफ्फाकियाँ (हालांकि मैं दिल ही दिल में बहुत सी रवाएतों को झूठ समझ रहा हूँ) उनका ज़हरीली गैस इस्तेमाल करना, फ्रेंच औरतों की इज़्ज़त लूटना, नर्स केवल का सरकारी कत्ल, यह सारी चीज़ें उस हैवानियत के नशोनुमा (विकास और उन्नति) में हो रही हैं, जो कामयाबी हासिल करने के लिए ज़रूरी है। बात बात पर और बिला वजह जोश में आने की आदत पैदा करनी है, इसके बग़ैर सही नताएज नहीं निकल सकते। नरम दिलों और नेक मिज़ाजो सब पर यह ज़हर उतारना है और इसके लिए फ़ौजी गाने, फ़ौजी बाजे सब काम में लाए जा रहे हैं, लतीफ (कोमल) और मज़हबी रागों की मुमानियत है बजुज़ गिरजों के, वहां भी जंगी सुरों की इजाज़त है, गिरजे तो खूंआशामी (रक्तपात) का ज़ौक़ पैदा करने में सबसे बढ़े हुए हैं और हमने उनसे पूरा काम भी लिया।" (पेज नं०-42—43)

बरतानवी सिपाही से पूरी तरह काम लेने के लिए नफ़रत का ज़हर उसकी रग रग में पूरी तरह उतार दिया जाए। हलाक होने वालों की तादाद उसके सामने दर्द वे ताल्लुक के लहजे मे नहीं बेतवज्जोही व बेदर्दी के साथ बयान की जाती है। मुझे उम्मीद है कि वह ज़माना आने वाला है और अनक़रीब ही, जब सिपाहियों के दिल में मौत और सख्त से सख्त तड़पा देने वाले जख्मों और गैसज़दा आज़ाए जिस्म की कोई अहमियत ही न रह जायेगी बल्कि आपस में हंस हसं कर उन चीज़ों का ज़िक्र करते रहेंगे और खुश व मुतमईन इसपर रहेंगे कि जितना अपना नुकसान हुआ है उससे कहीं ज़्यादा दूसरों के जिस्म चीर फाड़ चुके हैं, दूसरों के हाथ पैर तोड़ चुके हैं। सितम्बर 15 ई० तक यह हालत हो गई थी जो कुछ भी हम कर रहे हैं सब बजा और दुरूस्त है और जर्मनी जो कुछ कर रहा है, सब नफरत अंगेज़ है, जंग में इसके सिवा मफर नहीं, और दोनों फरीक़ इसी पर अमल कर रहे हैं।" (पेज नं०-43—44)

"जिस तरह रेल के डिब्बे को ठन्डा और गर्म दोनों रखा जाता है उसी तरह इस वक्त तक मैं भी अपने जज़बात और अपने एहसासात को पूरे तौर पर

www.abulhasanalinadwi.org

काबू और कब्ज़े मे ले आया यूँ। खुरेज़ी के वक्त खूब गरमा गरम हूँ। जंगी उपाय के समय बिल्कुल सर्द, और सैर तफरीह के वक्त नीम गर्म, इस वक्त तक मैं रंग बदलने मे कामिल व माहिर हो चुका हूँ और तमामतर एक पैदावार जंग बन कर रह गया हूँ।" (पेज नं०-92)

"लश्करी ग़रीब इतनी ज़ेहानत कहां से ला सकते हैं, वह जो कुछ सुनते हैं उसे मान भी लेते हैं। उनसे जो कुछ कहा गया है, उसका वह यक़ीन भी कर चुके हैं, उनकी ज़बान और दिल एक है वह पुसी तरह उसके क़ायल और मोतक़िद हैं, कि उनका काम मरना और मारना, कटना और काटना है वह अपने लिए भी यही समझते हैं और अपने हरीफ के लिए भी।" (पेज नं० -23)

"मुर्दों की तरफ कोई रूख़ भी नहीं करता, जंग में आखिर लाशें किस काम आ सकती है ? अगर किस्मत साथ दे गई तो ख़ैर, बाद को इतमीनान होने पर कहीं दफना दिये जायेंग, जख़्मी घिसल घिसल कर अपने को सिपाही रेखा तक लाने की कोशिश में हैं, कितने ऐसे हैं जो इसी हाल मे फिर गोली खाते हैं, लेकिन ज़्यादातर तो वही हैं जो दिनभर बेबस व बेकस काटे पड़े हुए हुलकूमों के साथ चिलचिलाती धूप में इंतिहाई लक़लीफ की हालत में पड़े लोटते रहेंगे मेरा असली फर्ज़ मन्सबी जंग को संभालना न की ज़ख़्मियों की देख भाल करना।" (पेज नं०-106)

सफेद चमड़े के मोहज़्ज़बों का बेनकाब चेहरा आपने देखा ! नाकाब हटने से पहले आप तसव्वर भी कर सकते थे कि उसके अंदर जो चेहरा है वह इतना करीह, इतना बदमंज़र इतना हैबतनाक होगा ? ज़ाहिर के उजाले से बातिन की तारीकयों का आप ख्याल भी कर सकते हैं ? "जिहाद" के एक दो नहीं दस, बीस, सौ, पचास जितने वाक़िआत चाहिए गिन कर एक तरफ रखिऐ और दूसरे पल्ले में सिर्फ एक जंगे उमूमी और फिर अक़ीदे को नहीं, इल्म को, नकल को नही, अक़्ल को हुक्म लगाने दीजिए, कि शराफत, तहज़ीब, इनसानियत किसकी दौड़ दौड़ कर बलाऐं लेती हैं। शक़ावत, क़सावत, दरिन्दगी, क़त्ल व ग़ारत, कुश्त व खून, संगदिली और बेदर्दी के मनज़रों से तबीअत उकता चली हो तो परदा उलट कर देखिये, रज़्म में बज़्म के सामान और गरजती हुई तोपों के साए में मय व शाहिद के जलवों की भी कमी नहीं ! ख़याल होता होगा कि गोलियों की बौछार, संगीनों की झंकार, तोपों की गरज, कराहते हुए ज़ख़्मियों की आह व फरियाद, सड़े हुए जिस्मों की उफूनत, और तड़पती हुई लाशों की भयानक फ़िज़ा के दरमियान ऐश व इशरत की फुरसत, और रंग रेलियां मनाने की फ़राग़त किसे ? लेकिन एकबाले फिरंग हर नामुमकिन को मुमकिन कर दिखाता है वह एक ही वक़्त में तारीख़ का चंगेज़ भी हो सकता है और अफसाने का राजा इन्द्र भी!"[1]

---

(1) प्राप्त "सच" 19 जून 1931 ई0

www.abulhasanalinadwi.org

भारती इतिहासकार प्रोफेसर अमरेश मिश्रा अपनी ताज़ा तहक़ीक़ी किताब "War of Civilization प्दकपं जेम त्वंक ज्व क्मसीप A.D. 1857" में तारीख़ी शाहादत व दस्तावेज़ात और सरकारी आकड़ों की बुनियाद पर लिखा है कि "अंग्रेज़ों ने 1857 ई० में दस मीलियन (एक करोड़) हिन्दुस्तातियों को मौत के घाट उतार दिया और यह सबके सब बेगुनाह थे, उनका जुर्म सिर्फ यह था कि उन्होंने मुल्क की आज़ादी की खातिर बरतानवी साम्राज्य के जुल्म व तशद्दुद के खिलाफ तहरीक शुरू की थी लेकिन सफ्फाक अंग्रेज़ो ने अपने इक़तिदार (सत्ता) की हिफाज़त की बक़ा की ख़ातिर बेगुनाह हिन्दुस्तानियों (हिन्दु व मुसलमानों) को बेरहमी से कत्ल कर दिया और यह खुनी सिलसिला 1857 से 1867 तक जारी रहा।"

हुज़ूर सल्ल० और मुसलमानों ने अपनी दावती और दीनी मुहिम में जो 23 साल रही, आखिरी ८ साल की मुद्दत में जो मुकाबले किये उसमे सिर्फ एक हज़ार आदमी काम आए और इस्लाम पर इल्ज़ाम लगाने वाले जमहूरियत और आज़ादी का दावा करने के बावजूद अपनी जंगो में लाखों से ज़्यादा इंसानों को मार देते हैं और उसके नतीजे में क़ौमों और मुल्कों में सख्त इंतिशार व बेचैनी की फिज़ा बना देते हैं और मुसलमानों ने अपने रसूल सल्ल० की सरकरदगी में सिर्फ ८ साल के मुकाबले में पूरे अरब द्वीप को अमन का गहवारा बना दिया।

इस सबके बाद वेसटर्न मीडिया इस्लामी दुनिया के किसी हिस्से में दो चार आदमी के ना मालूम हाथों से मारे जाने पर ऐसा वावैला मचाता है कि यूरोप में लाखों इंसानों के मारे जाने से ज़्यादा जुल्म बरपा हुआ और कोई भी दहशतगर्दी का वाक़िया दुनिया में कहीं होता है तो तहक़ीक़ से पहले ही फौरन कहा जाता है कि मुसलमान ने किया होगा और मुसलमान कौन है? मुसलमान वह है जो अपने नबी सल्ल० का मानने वाला और उनके हुक्मों पर अपनी जान क़ुर्बान करने वाला, और नबी की शख्सियत वह शख्सीयत है जिसने खुद रहम व हमदर्दी अपने दुश्मनों तक से इन्तिहाई ग़ैर मामूली तरीके से रवा रखी और अपने मानने वालों को इसको इख्तियार करने की तल्क़ीन की और मुसलमानों ने सारी कमज़ोरियों के बावजूद बहुत कुछ इसी पर अमल किया। मुसलमानों की बाद की जंगो की स्टडी कीजिए, यही बात नज़र आयेगी जिसका ऐतराफ ग़ैर मुस्लिम इतिहासकारों ने भी किया है और मुसलमानों पर इल्ज़ाम लगाने वाले इस वेस्टर्न मीडिया ने इस बात को दबाया और छिपाया कि उनके वेस्टर्न कन्ट्री में अब भी सिर्फ सियासी गरज़ के लिए लाखों का खून आसानी के साथ करा दिया जाता है। सच कहा है अरबी शायर ने :

अनुवाद :- "अगर उनका एक आदमी भी किसी नामालूम जगह जंगल में मार दिया जाता है तो कहते हैं कि यह बहुत बड़ा जुर्म हुआ जो किसी तरह लायक मआफी नहीं। और दूसरों की पूरी पूरी क़ौम को उसके पुरअमन होने के

www.abulhasanalinadwi.org

बावजूद खत्म कर दें तो उसपर ऐतराज करने पर सिर्फ इतना कहेंगे कि हां ये मसला ग़ौर करने के क़ाबिल हो सकता है"।

वुफ़ूद (शिष्टमण्डल) की आमद और इस्लाम का कुबूले आम सन् 09 हिजरी

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसलमानों को २ हिजरी से ६ हिजरी तक दुश्मनों की कार्यवाईयों का मुकाबला करते हुए पूरे अरब कबाएल के सामने आपकी ताबेदारी के अलावा दूसरा हल बाक़ी नहीं छोड़ा यहां तक कि सन् ६ हिजरी मे मक़ामे तबूक़ में रूमी एम्पायर के मुकाबले से दस्तबरदार हो जाने पर मुसलमानों के लिए जंग के खतरात खत्म हो गए और आपकी दावत और हिदायत आम करने के अमल को रोकने की आपके मुखालिफों की तरफ से जो मुसल्लह कार्यवाईयाँ हो रही थीं, ख़त्म हो गईं तो पूरे अरब द्वीप में आपकी रहबराना हैसियत और मुसलेह (सुधारक) का मक़ाम खुल कर सामने आ गया, तो जो अरब क़बाएल इस्लाम को समझने और मानने में रूकावट महसूस कर रहे थे उनके वुफ़ूद (शिष्टमंडल) इस्लाम को समझने के लिए आना शुरू हुए।

चूनांचे इब्ने इस्हाक़ की रिवायत के मुताबिक बनू तमीम का वफ़्द बनू आमिर का वफ़्द, बनी सअद बिन बक्र का वफ़्द, बनी अब्दुल क़ैस का वफ़्द, बनी हनीफा का वफ़्द, बनी तय का वफ़्द, बनी ज़बीद का वफ़्द, कंदा का वफ़्द, बंनू हिमयर का वफ़्द, बनू हारिस बिन कअब का वफ़्द, हमदान का वफ़्द, अदी बिन हातिम का वफ़्द, फ़रवा बिन अमर अल जुज़ामी का वफ़्द और अज़्द का वफ़्द अलग अलग औक़ात में मदीना आए और आपसे मुलाकात की। उनमें से अधिकांश ने आपकी बात को कुबूल किया और उसमें दाख़िल हो गये। या मुसालिहत (समझौता) इख्तियार कर ली। [1]

बनी हनीफा के वफ़्द में मुसैलिमा कज़्ज़ाब भी था, यह इस्लाम लाया और बाद मे मुरतद (बेदीन) हो गया और खुद नबूवत का दावेदार बन बैठा, उसी ने फ़ितन- ए-इरतिदाद बरपा किया और उसी में मारा गया।

इन वुफ़ूद के इलाकों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इन वुफ़ूद के आने और बात मानने से जज़ीरतुल अरब के तक़रीबन हर हिस्से से अरबों की ताबेदारी मुकम्मल हो गई और इस तरीके से आपकी दावत सारे जज़ीरतुल अरब में सिर्फ यही नहीं कि पूरे अरब में पहुंच गई बल्कि कुबूल भी कर लिया गया। इन वुफ़ूद के आने पर उनके नुमाईंदों (प्रतिनीधि) की हुज़ूर सल्ल० से जो वार्तालाप हुई उसकी तफ़सील सीरत की किताबो में भी मिलती है। इस वार्तालाप के नतीजे में

(1) सीरत इब्ने इस्हाक़ 3/309–310

www.abulhasanalinadwi.org

वुफूद के नुनाइंदो को आमतौर पर जो इतमीनान हासिल होता था और वह इस्लाम को कुबूल कर लेते थे, यह ताबेदारी का वादा करके वापस चले जाते थे, और इस तरीके से जज़ीरतुल अरब जो अब तक क़बाईली और हुकूमती सतह पर बहुत से इलाकों में बटा हुआ था, और उनमें मुक़ामी और इलाकाई सतह पर आज़ादाना मुशरिकाना निज़ाम था और वह उमूमन ख़ानदानी असबियत (पक्षपात) पर आधारित था इस्लाम के तहत आने पर एक संयुक्त पैग़ाम और निज़ाम के तहत आ गया और एक मरकज़ पर जमा हो गया।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन इलाकों और खित्तों में जहां आपकी दावतेदीन नहीं पहुंच सकी थी, वहां तक पहुंचायी जो आहिस्ता आहिस्ता मान ली गई और इस तरीके से सन् ९ हिजरी में आपका दावती पैग़ाम तकमील को पहुचं गया और मक्का मुकर्रमा जो पहले से जज़ीरतुल अरब के तमाम बाशिन्दों का दीनी मरकज़ चला आ रहा था और कुरैश मेज़बान की हैसियत से उनका निज़ाम संभाले हुए थे वो भी इस्लामी निज़ाम के तहत आ गया।[2]

चूंनाचे हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की क़यादत में सन् ९ हिजरी के ख़त्म पर हज के निज़ाम की रहनूमाई के लिए इन्तिज़ाम फरमाया और हज़रत अबूबकर रज़ि० ने आपके नुमाइन्दें (प्रतिनीधि) की हैसियत से इस्लामी तरीके पर हज कराया और इसी के साथ साथ आपने हज़रत अली रज़ि० के ज़रिये यह ऐलान भी करा दिया कि अब शिर्क का निज़ाम (प्रबन्ध) ख़त्म हो चुका और अब मक्का में शिर्क के साथ रहने की इजाज़त नहीं अब तौहीद के साथ ही रहना होगा और मक्का और तमाम सम्बन्धित अरब इलाके इस तरह शिर्क और उसकी अलामतों (चिन्हों) से आज़ाद करा लिये गए और वहां सिर्फ तौहीद का ही निज़ाम तय हो गया।[3]

---

(2) मजमअ़ बिहारूल अनवार 5/272
(2) ज़ादुल मआद 3/593–594
(1) देखिये तफ़सील, सीरत इब्ने हिशाम 2/560–600

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय - सात

हज्जतुलविदअ

अरबों के केन्द्रीय शहर मक्का, मुसलमानों के इन्तिज़ाम में आ जाने और पड़ोस के कबाएल हवाज़िन और सकीफ़ की कोशिश के भी नाकाम हो जाने और सारे अरब को इस्लाम को ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) मान लेने के बाद मुसलमानों को किसी तरह का खतरा बाकी न रहा और रूकावटें ख़त्म हो जाने पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मानने वालों की बड़ी तादाद को मक्का में जो सारे अरब को दीनी केन्द्र की हैसियत से माना जाता था, हज के मौक़े पर इकटठा करना मुनासिब समझा कि फरीज़-ए-हज भी अदा करें और एक जगह जमा होने पर खिताब-ए-आम (सामान्य सम्बोधन) भी हो जाए।

चूंनाचें आप सल्ल० के इस हज के मौके पर एक लाख 14 हज़ार की तादाद में आपके मानने वाले जमा हुए और हज किया। आपका यह हज दावते इस्लामी की तकमील (पूर्ति) और निज़ामे इस्लामी के बाकाएदा क़याम (स्थापना) का ऐलाने आम था और यह आपकी मदनी ज़िंदगी का पहला और आखिरी हज था, इसी में उम्मते मुस्लिमा के अमल के लिए उमूमी हिदायत (आदेश) दी गयी, और दीन की तकमील (पूर्ति) जो आप सल्ल० से पहले नहीं हुई थी अब उनका भी ऐलान कर दिया गया और आप सल्ल० ने हज का जो खुतबा दिया उसमें आईन्दा हिदायत और ज़ाबतये अख़्लाक (आचार संहिता) का खुला ऐलान और इंसानी खूबियों से भरपूर ज़िंदगी का जामे और मुफस्सल तसव्वर के उसूल (सिद्धान्त) हाज़िर फरमा दिये। इसी मौक़े पर क़ुरआन मजीद की वह आयत जिसमें दीन के मुकम्मल होने की इत्तिला दी गयी नाज़िल हुई।

"आज हमने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन जिसको पिछले नबियों के ज़रिये इंसानो तक पहुंचाने का सिलसिला चला आ रहा था मुकम्मल कर दिया और अपनी यह नेमत तुम पर पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम के ही बहैसियत दीन को पसन्द किया।" (सूरा : माएदा - 3)

इस क़ुरआनी ऐलान में तीन बुनियादी बाते बतायी गयीं एक तो यह कि इंसानी ज़िंदगी का इस ज़मीन पर आग़ाज़ (प्रारम्भ) होने के वक्त से इंसानों के सुधार और चरित्र निर्माण के जो आदेश नबियों द्वारा बराबर आते रहे अब वह

मुकम्मल (पूर्ण) हो गये और दीन के अहकाम इस सतह तक पहुंचा दिये गए जिसमें किसी बदलाव और कमी व बेशी व इज़ाफ़ा वग़ैरह की ज़रूरत पेश न आयेगी, इसके लिए यह बात फरमायी कि "मैं ने दीन तुम्हारा मुकम्मल कर दिया" दीन की वह खूबियां जो इन्सानी ज़िन्दगी के लिए ज़रूरी और मौजूं और जितनी होना चाहिये वह पूरी कर दी गईं, दूसरी बात यह फरमायी कि मैंने दीन व एखलाक़ की अपनी नेअ़मत तुम सब पर पूरी कर दी अर्थात इन्सानियत और फर्द इन्सानी के सलाह व फलाह का जो दर्ज-ए-कमाल व नमून-ए-आला है वह तुम्हारे लिये मुहय्या कर दिया गया और तुम को इस मुक़ाम-ए-बुलन्द तक पहुंचा दिया गया फिर इसी तअल्लुक़ रखने वाली बात के तौर पर यह वाज़ेह कर दिया गया कि मक़ामे बुलन्द के लिए जिस तरीक़-ए-कार व सिफ़ाते हसना की ज़रूरत है वह तरीक़-ए-कार व सिफाते हसना दीन इस्लाम की सूरत में अता की गई हैं, और अल्लाह रब्बुल आलमीन की रज़ामन्दी का इन्हिसार अब इसी पर है, अल्लाह तआला इसी के मुताबिक़ इन्सानी अमल को मन्जूर करेगा, जिस को फरमाया गया कि दीन इस्लाम ही मेरे लिए पसन्दीदा और क़ाबिले क़ुबूल है, इस तरीके से आप (सल्ल०) की रिसालत को दीन के पैग़ाम को इस ज़मीन पर इन्सानी आबादी के क़ायम रहने तक के लिए तै कर दिया गया, और हुज़ूर (सल्ल०) ने इस मौक़े से इन्सान के आला इन्सानी अक़दार और अदल व मुसावात और इन्सानी जान की सलामती और इन्साफ की अहम ज़रूरी हिदायात इनायत फरमायीं और हाज़िरीन को मुखातब करते हुए फ़रमाया कि जो यहां मौजूद हैं वह उन को याद रहे, दिल व दिमाग़ में महफ़ूज़ कर लें और जो मौजूद नहीं हैं, मौजूद लोग उन्हें यह हिदायात पहुंचाएं, क्योंकि बाज़ औक़ात बराहे रास्त सुनने वाले से ज़्यादा बिलवास्ता सुनने वाला बात को ज़्यादा अहमियत के साथ एख़्तियार करता है।

आप का आख़िरी हज और हज की फर्ज़ियत

हिजरत के बाद हुज़ूर सल्ल० ने सिर्फ यही एक हज किया और यही आपका पहला और आखिरी हज यानी अपनी रिसालत के काम की तकमील पर उम्मत से आपकी रूख़्सती की मुलाकात थी। इससे पहले हज की फर्ज़ियत भी नहीं हुई थी यह फर्ज़ियत आपकी वफ़ात से एक साल पहले सन् 9 या 10 हिजरी में हुई। यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिदायात और दीनी इरशादात के लिहाज़ से बहुत अहमियत रखता है। इस्लाम को ग़ालिब करने की कोशिशों की कामयाबी और इस्लामी पैग़ाम की तकमील के ऐलान और उम्मते इस्लामिया के क़यामत तक हिदायात देने का यह बेहतरीन मौक़ा था, जिसमें मुसलमानों का बहुत बड़ा इजतिमा था चूंनाचे जब यह मौक़ा आया जो अल्लाह

www.abulhasanalinadwi.org

तआला के आख़िरी रसूल और उम्मते इस्लामिया के अबदी (अनन्त) रेहबर हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्ल० की मुबारक ज़िंदगी का आख़िरी साल था, इसमें आपने अपने मानने वालों के क़यामत तक अमल करने की खुली ताकीद की और इसी के साथ तबलीग़े हक़ की ज़िम्मेदारी भी सुपुर्द की। आपके इस हज में इबादते हज के लिए सही नमूना भी दिखाया गया है। अल्लामा इब्ने क़य्यिम की किताब "ज़ादुल मआद" से इस हज की तफ़सील का इक़तिबास (उद्धरण) निम्नलिखित है :-

"आप सल्ल० ने हज का इरादा फ़रमाया और लोगों को मालूम हुआ तो लोगों ने तैयारियाँ शुरू कर दीं ताकि आपके साथ की इज़्ज़त हासिल करें। मदीने के क़रीबी इलाके के लोगों को जब यह खबर पहुंची तो वह भी गिरोह दर गिरोह इसी मकसद से आना शुरू हो गए, रास्ते में भी लोगों की जमाअतें जो हद्दे शुमार की बाहर थीं शरीके क़ाफ़िला होती गयीं, आगे पीछे दाएं बाएं हद्दे नज़र तक ख़िलकत नज़र आ रही थी"

मदीने से आप सल्ल० 24 ज़ीकाअदा को ज़ोहर की चार रकअत नमाज़ पढ़ कर रवाना हुए, रवानगी से पहले एक खुतबा दिया जिसमें एहराम और उसके वाजिबात व सुनन की तालीम दी, फिर अन्दर तशरीफ ले गए, तेल लगाया, कंघी की, लूंगी बांधी, चादर ओढ़ी और मक़ाम ज़ुल हलीफा (जो उस रूख से हज में जाने वालों के लिए एहराम बांधने की जगह है) पहुंच कर असर की दो रकअत नमाज़ पढ़ी, फिर रात भर यहीं क़याम फरमाया। यहां आप सल्ल० ने पूरी पांच नमाज़े पढ़ीं। अस्र, मग़रिब, इशा और दूसरे दिन फज्र और ज़ुहर तमाम अज़वाज मुतह्हरात हमराह और सफर की साथी थीं। एक एक करके आप सबके यहां तशरीफ ले गए, जब ऐहराम बांधने का इरादा किया तो दूसरा ग़ुस्ल किया। हज़रत आयशा रज़ि० ने आप सल्ल० के बदन मुबारक पर और सर मुबारक पर खुशबू लगाई फिर आपने चादर और लूंगी से ऐहराम बांधा। फिर ज़ुहर की दो रकअत पढ़ने के बाद मुसल्ले पर बैठे ही हज व उमरे के लिए बुलन्द आवाज़ से तकबीर कही।

नबी करीम सल्ल० ने उस वक्त हज्जे क़िरान का ऐहराम बांधा था। (हज तीन किस्म का होता है, एक तो सिर्फ हज की नियत की जाए वह हज्जे इफराद कहलाता है, दूसरी क़िस्म उमरा और हज दोनों करने की नियत की जाए और पहले उमरा करके फारिग़ हो जाया जाए और फिर 8 ज़िलहिज्जा को हज का ऐहराम बांधकर हज किया जाए, यह हज तमत्तुअ़ कहलाता है, फिर तीसरी किस्म दोनों उमरा और हज को एक ही ऐहराम से बिला अलाहिदा किए हुए किया जाए, यह क़िरान है"।

www.abulhasanalinadwi.org

फिर आपने इन अल्फाज़ से तलबिया कहा : (तलबिया कहने से हज या उमरा जो हो उसका अमल शुरू हो जाता है और यह ऐहराम बांधे रहने तक होता है)

ऐ ! अल्लाह हाज़िर हूँ, हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नही मैं हाज़िर हूँ, हर तरह की तारीफ और नेअमतें तेरे ही लिए है, हुकूमत भी तेरी ही है तेरा कोई साझी नहीं।

यह तलबिया आप सल्ल० ने बुलन्द आवाज़ से कहा यहां तक कि तमाम सहाबा ने उसे सुन लिया। आपने फरमाने बारी तआला के मुताबिक उन्हें यह हुक्म दिया कि वह भी बुलन्द आवाज़ से तलबिया कहें।

फिर आप लब्बैक का तराना पढ़ते हुए आगे बढ़े और सहाबा कराम भी थोड़ी कमी व ज़्यादती के साथ दोहराते रहे लेकिन आपने किसी पर नकीर न फरमाई।

फिर आप जब वादिये असफान के पास से गुज़रे तो हज़रत अबूबकर रज़ि० से दरयाफ़्त फरमाया कि यह कौन सी वादी है ? तो उन्होने अर्ज़ किया वादिये असफान है तो आपने फरमाया इस वादी से हज़रत हूद (नबी) और हज़रत सालेह नबी सुर्ख ऊंटो पर बैठ कर गुज़रे हैं ताकि हज बैतुल्लाह से मुर्शरफ हों। फिर आप मुकामे सरिफ पर पहुंचे (यह मक्का से छः किलो मीटर मक्का के रास्ते पर वाक़े है)।

फिर आप मकामें ज़ीतूवा पर पहुंचे। वहां चार ज़िलहिज्जा इतवार की रात गुज़ारी और फर्ज़ की नमाज़ अदा करके गुसल फरमाया और मक्का के लिए रवाना हो गए। मक्का में हुजून से करीब बुलन्द खाई में दिन के वक्त दाखिल हुए। इससे पहले आप उमरे के मौके पर नीचे के इलाके से दाखिल हुऐ थे। फिर आप आगे बढ़े और चाश्त के वक्त मस्जिद में दाखिल हुए।

इमाम तबरी ने ज़िक्र किया है कि आप बाबे अब्द मुनाफ से जिसे बाब बनी शैबा कहा जाता है दाखिल हुऐ थे। इमाम अहमद फरमाते हैं कि आप जब दारे अली से दाखिल हुऐ तो बैतुल्लाह को सामने करके दुआ फरमाई। इमाम तबरी ने यह भी जिक्र किया है कि जब आप बैतुल्लाह को देखते थे तो आप सल्ल० यह दुआ पढ़ते थे :

"ऐ अल्लाह इस घर को और ज़्यादा इज़्ज़त व अज़मत और बुज़ुर्गी और रोब अता फरमा" एक रिवायत में यह भी आया है कि जब आप बैतुल्लाह को देख कर हाथ उठाते, अल्लाहु अकबर कहते तो यह दुआ पढ़ते थे :

"ऐ अल्लाह तू सलाम है और तुझी से सलामती है हमें सलामती दे, ऐ अल्लाह इस घर को और ज़्यादा इज़्ज़त, करामत और रोब दे और जो इसका हज या उमरा करे उसे भी इज़्ज़त करामत, अज़मत और नेकी अता कर।"

www.abulhasanalinadwi.org

जब आप मस्जिद हराम में दाखिल हुए तो बैतुल्लाह के पास तशरीफ लाए और तहीयतुल मस्जिद नहीं पढ़ी क्योंकि यहां तवाफ ही तहीयतुल मस्जिद है। हजरे असवद के सामने हुऐ तो उसे चूमा और किसी को तकलीफ नहीं दी फिर दायीं जानिब चले कोई खास दुआ नहीं फरमाई। अलबत्ता दोनों रूकन के दरमियान आपसे यह दुआ पढ़ना साबित है :-

अनुवाद

"ऐ हमारे रब हमें दुनिया मे भी भलाई दे और आखिरत मे भी भलाई दे और हमें दोज़ख के अज़ाब से बचा" (अलबकरा-२०१)

नबी करीम सल्ल० ने तवाफ़ के तीन चक्करों में रमल किया यानी छोटे कदम रखते हुए चले और इज़्तिबा किया यानी दाहिना मूंढा खोल कर बाए मूंढे पर चादर डाल दी इसी तरह दाहिना कंधा खुला हुआ था और बायाँ ढका हुआ और आप जब हजरे असवद के सामने होते तो उसकी तरफ इशारा करते और उसे ख़मदार छड़ी से छू कर उसे बोसा देते थे।

जब आप तवाफ से फारिग हुए तो मकामे इब्राहीम के पीछे आए और यह आयत पढ़ी : मकामे इब्राहीम को मुसल्ला बना लीजिए। (अलबकरा-125)

फिर दो रकअत नमाज़ पढ़ी नमाज़ से फारिग होने के बाद हजरे असवद के पास तशरीफ लाए और उसका बोसा लिया। फिर सामने के दरवाज़े से सफा की तरफ निकल आए और करीब हो कर यह आयते करीमा तिलावत फरमाई :

अनुवाद :-

"सफा और मरवा अल्लाह की निशानियाँ हैं।" (अलबकरा-158)

फिर फरमाया : मैं भी शुरू करता हूँ जिससे अल्लाह ने शुरू किया फिर कोहे सफा पर चढ़ कर बैतुल्लाह की तरफ रूख़ किया और यह दुआ पढ़ी :

अनुवाद :

"अल्लाह वाहिद के सिवा कोई खुदा नहीं उसकी अमलदारी है उसी के लिए तारीफ है और वही हर चीज़ पर कादिर है। अल्लाह वाहिद के सिवा कोई खुदा नहीं उसने अपना वादा पूरा किया अपने बन्दे को फतहयाब किया और तमाम जमाअतों को तन्हा शिकस्त दी" इसी तरह तीन मरतबा यह दुआऐं फरमायीं और फिर "सई" करते हुए मरवह की तरफ चले नशेब मे पहुंच कर दौड़ने लगे, जब वादी से निकल आए तो आदत के मुताबिक चलने लगे, जब मरवह पहुंचे तो उस पर चढ़ कर बैतुल्लाह का रूख़ करके अल्लाह तआला की तकबीर व तौहीद बयान की और जो सफ़ा पर दुआएं की थीं यहां पर भी कीं। जब सफ़ा व मरवह की सई से फारिग हो गऐ तो उन तमाम लोगों को जिनके साथ कुर्बानी के जानवर न थे हिदायत दी कि अब ऐहराम उतार दें और पूरी

www.abulhasanalinadwi.org

तरह से हलाल हो जाएं, क्योंकि उमरे के अरकान पूरे हो गए और ८वीं ज़िलहिज्जा तक इसी तरह रहें और चूंकि आप सल्ल० के साथ कुर्बानी का जानवर था इसी लिए अपनी निसबत फरमाया अगर पहले से यह मालूम होता तो कुर्बानी का जानवर हरगिज़ न लाता और सिर्फ उमरे का ऐहराम बांधता। उसी जगह आप सल्ल० ने बाल मुंडवाने वालों के लिए तीन मर्तबा और छोटे करने वालों के लिए एक मर्तबा दुआए मग़फिरत फरमाई।

आप सल्ल० मक्का मुकर्रमा में चार दिन क़याम के दरमियान नमाज़े कस्र अदा फरमाते रहे और जुमेरात के दिन चाश्त के वक्त मुसलमानों के साथ मिना तशरीफ ले गए। जिन्होंने ऐहराम खोल दिया था वह अपने घरों से हज का ऐहराम बांध कर निकले। उस वक्त वह मस्जिदे हराम नहीं गए। जब आप मिना पहुचे तो वहां जुहर और अस्र की नमाज़ अदा की और वहां रात गुज़ारी, जब सुबह हुई तो अरफात को रवाना हुए और ज़ब का रास्ता इख्तियार फरमाया। सहाबा कराम में से कुछ तलबिया कह रहे थे और कुछ तकबीर। आप दोनों को सुन रहे थे मगर कुछ न कहते थे।

अरफात के पूर्वी हिस्से में मुकामे नमरा के पास आ गए थे, खेमा खड़ा कर दिया गया, उसमें आपने क़याम फरमाया। सूरज ढ़लने के बाद कसवा ऊंटनी पर सवार हो कर वादी-ए-अरना के निचले हिस्से तक गए।

उसी मकाम से सवारी ही पर बैठे एक अज़ीमुश्शान खुत्बा दिया उसमें आपने इस्लामी उसूल व क़वाएद (सिद्धान्त व नियम) की वज़ाहत की और जाहिली रस्म व रिवाज का खण्डन किया, जान व माल, इज़्ज़त व आबरू की हुरमत का ऐलान फ़रमाया, जिसे दूसरे मज़हब वालों ने भी तसलीम किया था।

जब आपने खुत्बा खत्म किया तो हज़रत बिलाल को अज़ान देने का हुक्म दिया चूंनाचे अज़ान और इक़ामत हुई फिर आपने सिर्री (अहिस्ता) क़िरत से जुहर की दो रकअ़त अदा की।

जब आप नमाज़ से फारिग हो गए तो मैदाने अरफात ही में पहाड़ के दामन में चट्टानों के पास किबला रूख सवारी ही पर इस तरह खड़े हुऐ कि मशात पहाड़ आपके सामने था और सूरज डूबने तक आंसूओं के साथ अपने रब के हुज़ूर में दुआ मांगते रहे और लोगों को हुक्म दिया कि वादी-ए-अरना से हट जाएं और फरमाया अरफात पूरे का पूरा वुकूफ की जगह है। लोगों को हुक्म दिया कि वह अपने अपने मशाएर में ठहरे रहें और वहीं वुकूफ करें। क्योंकि यह हज़रत इब्राहीम अ० की मीरास" है।

दुआओं में आप अपना हाथ सीने तक उठा लेते थे जिस तरह कोई मिसकीन (निर्धन) खाना मांग रहा हो, उस मौके पर इरशाद फरमाया कि "बेहतरीन दुआ अरफात की दुआ है।"

www.abulhasanalinadwi.org

अरफात में आपकी दुआओं मे से यह दुआएं नक़्ल की गयी हैं :-

अनुवाद :

"अल्लाह तू ही मेरी बात सुनता है मेरे ठिकाने को देखता है, मेरे खुले व छिपे को जानता है तुझसे मेरा कोई मामला पोशीदा नहीं, मदद का मोहताज और पनाह चाहने वाला, डरने वाला और गुनाहों का इकरार करने वाला हूँ, तुझसे फकीर की तरह मांगता हूँ और ज़लील व गुनाहगार की तरह आजिज़ी (नम्रता) करता हूँ, डरने वाले की तरह तुझे पुकारता हूँ जिसकी गर्दन तेरे सामने झुकी है आंखे बह रही हैं, जिस्म झुका हुआ है और नाक खाकआलूदा मिट्टी से भरी हुई है मुझे दुआ के बाद महरूम ना फरमा और मेरे साथ शफ़क़त व रहमत, मेहरबानी व दया का मामला फ़रमा। ऐ वह बेहतर और बुलन्द ज़ात जिससे ही अपनी हाजत मांगी जाती है और जो बेहतरीन देने वाला है।" और आपकी दुआओं में यह भी साबित है ।

अनुवाद :-

"अल्लाह तू ही तअरीफ के लायक है और हम जो कह सकते हैं उससे भी बेहतर है ऐ अल्लाह मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, और मेरा जीना मरना सब तेरे ही लिये है और तेरी ही तरफ लौटना है सारी चीज़ों का मालिक तू ही है ऐ अल्लाह कब्र के आज़ाब से और दिल के वसवसों और परेशान करने वाले मामलात से भी तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ अल्लाह उस बुराई से जो आंधी लेकर आए उससे तेरी पनाह चाहता हूँ।"

इमाम अहमद ने हज़रत अमर बिन शुऐब की हदीस से नक़्ल किया है कि अरफ़ा के दिन नबी करीम सल्ल० की ज़्यादातर यह दुआ थी :-

अनुवाद :-

"ऐ खुदा-ए-वाहिद जिसके सिवा कोई माबूद नहीं उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है और उसी की हम्द है उसी के हाथ में भलाई और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।"

इस मौके पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह आयत करीमा नाज़िल हुई :-

अनुवाद :-

"आज हमने आपका दीन मुकम्मल कर दिया और आप पर अपनी नेमत पूरी कर दी और दीने इस्लाम आपके लिए पसंद कर लिया।" (अलमाएदा-3)

जब सूरज डूब गया और ज़र्दी भी ख़त्म हो गई और सूरज डूबने में कोई शुबहा नहीं रहा तो आप अरफ़ात से चल पड़े और हज़रत उसामा बिन ज़ैद को अपने पीछे बिठा लिया और सुकून व खामोशी से चलते रहे। ऊंटनी की

www.abulhasanalinadwi.org

नकेल अपनी तरफ खीचं ली। यहां तक की आपकी थूढ़ी कजावे से छूने लगी, इस मौके पर आप फ़रमा रहे थे "ऐ लोगो सुकून व इत्मिनान से चलो क्योंकि तेज चलना नेकी नहीं है।" आप सल्ल० "माज़मीन" के रास्ते से वापस हुऐ और ज़ब के रास्ते से अरफात तशरीफ लाए थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारे रास्ते में बराबर तलबिया (अल्लाहुम्मा लब्बैक) कहते रहते थे। रास्ते में एक जगह आपने पेशाब करके वुज़ू फरमाया। हज़रत उसामा ने अर्ज़ किया नमाज़ पढ़ना है तो आपने फरमाया "जाए नमाज़ आगे है फिर आप मुज़्दलफा पहुंचे और नमाज़ के लिए वुज़ू किया और मुअज़्ज़िन को अज़ान देने का हुक्म फरमाया और इक़ामत कहलवायी और फिर मग़रिब की नमाज़ अदा की नमाज़ के बाद लोगों ने सामान उतारा और सवारियों को बिठाया फिर दुबारा इक़ामत कही गयी और इशा की नमाज़ अदा फरमाई। इशा के लिए अज़ान नहीं कही फिर आप सो गए यहां तक की सुबह हो गई।"

तुलू-ए-फ़ज्र के बाद अव्वल वक़्तों में नमाज़ फ़ज्र अदा फ़रमाई और उसके लिये अज़ान व इक़ामत कही गई, फिर सवार हो कर मशअरे हराम के पास आए, दुआ व तज़र्रुअ़ (रोना, गिड़गिड़ाना) तकबीर व तहलील व ज़िक्र इलाही में मशगूल हो गए, यहां तक कि काफी रौशनी हो गई आप मुज़दलफा की उसी जगह खड़े हो कर यह फरमाया कि पूरा मुज़दलफा "वुक़ूफ" ठहरने की जगह है। फिर आप मुज़दलफा से हज़रत फज़ल बिन अब्बास को पीछे सवारी पर बिठा कर चले और रास्ते पर तलबिया कहते रहे और उसामा बिन ज़ैद कुरैश की जमाअत के साथ साथ पैदल जा रहे थे। यहीं रास्ते में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास को हुक्म दिया कि "रमीउल जमार" के लिए सात कनकरियाँ चुन लें। चूंनाचे आप उन्हें अपने हाथ में उछालने लगे और फ़रमाने लगे ऐसे ही कनकरियों से रमी करो और दीन में ज़्यादती करने से बचो। और पिछली क़ौमें दीन में गुलू (ज़्यादती) करने की वजह से हलाक हुईं। जब आप वादिए मुहस्सर में पहुंचे तो ऊंटनी की रफ़्तार तेज़ कर दी। आपका तरीक़ा यही था कि जब उन मक़ामात पर पहुंचते जहां क़ौमों पर अज़ाब नाज़िल हुआ है तो आप तेज़ी से निकल जाते। उस जगह असहाबे फ़ील पर अज़ाब नाज़िल हुआ था, जिसका वाकिया अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में ज़िक्र किया है। इसी वजह से उस जगह का नाम वादी-ए-मुहस्सर रखा गया यानी रोक देना और इस जगह हाथी मक्के में दाख़िल होने से रूक गये थे।

इसी तरह मक़ामे हिज्र से गुज़रते हुए भी आपने किया था। मुहस्सर, मिना और मुज़दलफा के दरमियान हद्दे फासिल (सीमा रेखा) है और दोनों में से किसी में नहीं है। इस तरह "अरना" अरफात और मशअरे हराम के दरमियान

www.abulhasanalinadwi.org

सीमारेखा है, इस तरह दो "मशअर" के दरमियान के हद्दे फासिल एक सीमारेखा है, जो न इसमे दाख़िल है और न उसमें।

चूंनाचे मिना हरम में दाख़िल है और मशअर भी है और मुहस्सर हरम में दाख़िल तो है लेकिन मशअर नहीं और मुज़दलफा हरम भी है और मशअर भी है। "अरना" हिल में हैं और मशअर नहीं है, और अरफात हिल में दाख़िल है और मशअर भी है।

आप जब मिना पहुंचे तो दरमियानी रास्ते से जमरा अकबा के पास आए और जमरा के सामने वादी में इस तरह खड़े हुए कि मक्का आपके बांएं और मिना आपके दाएं हाथ था। फिर सूरज निकलने के बाद सवारी पर से एक के बाद एक सात कनकरियाँ फ़ेंकी हर कनकरी पर तकबीर कहते थे और लब्बैक कहना बन्द कर दिया था। फिर आप मिना वापस आए और बहुत अच्छी और असर करने वाली ज़बान में खुतबा दिया, जिसमे लोगों को कुर्बानी के दिन की हुरमत व अज़मत और फ़ज़ीलत बयान फरमाई। और मक्का की तमाम शहरों पर फज़ीलत से आगाह किया और हुक्म फरमाया कि अल्लाह की किताब के मुताबिक जो हुकूमत करने वाले हों उनकी इताअत करें। फिर इरशाद फरमाया कि मुझ (आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मनासिके हज सीख लें मुमकिन है कि यह आखिरी हज हो। फिर लोगों को हज के मसाएल की तालीम दी और मुहाजिरीन और अन्सार को अपने मरतबों पर रखा और यह हुक्म दिया कि आपके बाद कुफ्र की तरफ न लौटें और एक दूसरे को कत्ल न करें। आपने तबलीग़े अहकाम का हुक्म दिया और बताया कि "बहुत से सुनने वाले भूल जाते हैं और उनमें सीखने वालों को याद रहता है।" खुतबे में आपने फरमाया कि "मुजरिम खुद अपने ऊपर जुल्म करता है।"

मुहाजिरीन को आपने क़िबले के दाएँ तरफ और अन्सार को बाएँ तरफ उतारा दूसरे लोग उनके गिर्द थे। अल्लाह तआला ने उन लोगों के अन्दर इतनी सुनने की ताकत पैदा कर दी थी, मिना वालों ने भी अपने अपने घरों में आपका खुतबा सुना।

आपने खुतबे मे मज़ीद फरमाया कि "अपने रब की इबादत करो और पाचों नमाज़ें पढ़ो और रमज़ान के महीने के रोज़े रखो, जब हुक्म दिया जाए तो इताअत करो और अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओ।"

फिर आपने लोगों को अलविदा किया तो लोग कहने लगे कि यह "हज्जतुलवदा" है, फिर आप मिना में कुर्बानी के मुकाम पर तशरीफ ले गए। चूनाचे वहाँ **63** ऊंट ज़बह किये। ज़िन्दगी के साल के मुताबिक ६३ ऊंट ज़बह करने के बाद **100** में से बाकी ऊंटो को ज़बह करने के लिए आपने हज़रत अली को हुक्म दिया और उनके झूल, खाल और गोश्त को मिस्कीनों (ग़रीबो) में

www.abulhasanalinadwi.org

तक़सीम कर दिया। कस्साब को मज़दूरी में कुर्बानी की कोई चीज़ देने से मना फ़रमा दिया और बताया की हम उसे अपने पास से उजरत (मज़दूरी) देंगे। और फरमाया जो चाहे कुर्बानियों में से गोश्त काट कर ले जाए।

आपने मिना के मज़बह (कुर्बानगाह) में जानवर ज़बह किया और यह फरमाया कि पूरा मिना का इलाका कुर्बानी की जगह है।

नबी करीम सल्ल० से मिना में अर्ज़ किया गया कि आपके लिए पहले से कोई ख़ेमा वगैरह लगा दिया जाए ताकि गर्मी से हिफाज़त हो जाए तो आपने इजाज़त न दी और फरमाया कि मिना में जो पहले जहां पहुंच गया वह उस जगह का हक़दार हो गया।

फिर आप सल्ल० ने हज्जाम से फरमाया कि शुरू करो जब वह फारिग हुआ तो आपने अपने पास वालों पर वह बाल तक़सीम फरमा दिये। फिर मिना वापस आ कर वहीं रात गुज़ारी। जब सुबह हुई तो सूरज ढलने तक इन्तिज़ार किया और जब सूरज ढल गया तो जमरात की तरफ पैदल तशरीफ ले गए और जमरा ऊला से शुरू किया जो मस्जिद ख़ैफ से करीब है, तीसरे जमरे तक हर एक पर सात सात कनकरियाँ फेंकी। हर कनकरी पर तकबीर कहते और जब सात पूरी हो जाती तो हाथ उठा कर दुआ करते थे। दुआ इतनी लम्बी करते जितनी सूरह बकरा पढ़ी जा सके। लेकिन तीसरे जमरे पर दुआ नहीं फ़रमाई और कनकरियाँ फेंकने के बाद ही वापस आ गए।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज के दौरान छः जगहों पर दुआ के लिए ठहरे। कोहे सफा पर, कोहे मरवा पर, मैदाने अरफात में, मुज़दलफा में, पहले जमरे के क़रीब, दूसरे जमरे के करीब।

आपने मिना मे दो खुतबे दिए। एक कुर्बानी के दिन जिसका ज़िक्र हो चुका है, दूसरा अय्यामे तशरीक़ के दरमियानी दिन में।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो दिन में कनकरी मार कर जाने में जल्दी नहीं की बल्कि तीसरे दिन भी रूक कर पूरे तीन दिन कनकरी मारी और मंगल के दिन ज़ुहर के बाद वादीए मुहस्सब की तरफ़ रवाना हुए। वहां ज़ुहर, अस्र, मग़रिब और इशा की नमाज़ें अदा फरमाई और सो गए। फिर उठ कर मक्का मुकर्रमा तशरीफ ले गए और सहरी के वक्त तवाफे वदा फ़रमाया।[1]

आदेश और वसीअतें

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो हिदायात (आदेश) इस हज के दौरान अपने खुतबों में दीं उनमें एक बड़ी हिदायत और वसीअत यह कि

---

(1) ज़ादुल मआद 2/103–294

www.abulhasanalinadwi.org

इंसानी बिरादरी में मसावात (बराबरी) रहे आपने इंसानी बिरादरी में एक को दूसरे से मसावी (बराबर) क़रार देने का ऐलान फ़रमाया और यह फ़रमाया कि किसी एक की बरतरी (बड़ाई) दूसरे के मुकाबले में उसी कदर होगी जितना की वह अपने परवरदिगार यानी अल्लाह तआला के हुक्मों का ज़्यादा पास व लिहाज़ रखने वाला हो। उसके अहकामात (आदेशों) में एहतियात (सावधानी) से ज़िंदगी बसर करने वाला हो। इरशाद फ़रमाया :-

तर्जुमा :-

"ऐ लोगो ! तुम जानते हो कि यह कौन सा दिन है? और तुम किस शहर मे हो ? लोगों ने जवाब दिया : यह दिन बड़ा बा हुरमत (सम्मान वाला है) और यह महीना बड़ा क़ाबिले एहतराम और यह शहर बड़े एहतराम वाला है, तो सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम में किसी एक की जान व माल, इज़्ज़त किसी दूसरे के लिए इसी तरह क़यामत तक क़ाबिले हुरमत व एहतराम वाली हैं, जिस तरह आज का यह दिन, यह महीना, यह शहर। फिर फरमाया सुनो मुझसे वह बातें सुनो जिनसे तुम सही ज़िंदगी गुज़ार सकोगे। ख़बरदार ज़ुल्म न करना, ख़बरदार ज़ुल्म न करना, खबरदार ज़ुल्म न करना, किसी मुसलमान शख्स के माल में से कुछ लेना जायज़ नहीं हाँ अगर वह राज़ी हो (तो कोई हरज नहीं), हर एक की जान, हर एक का माल, जो जाहिलियत के ज़माने में जायज़ समझा जा रहा था अब क़यामत तक उसको जायज़ समझा जाना ख़त्म किया जा रहा है। सबसे पहला खून जो खत्म किया जाता है वह रबीआ बिन हारिस अब्दुल मुत्तलिब का खून था, उसने बनी लैस में परवरिश पाई थी, और हुज़ैल ने उसको क़त्ल किया था, जाहिलियत के तमाम सूद भी खत्म कर दिये गए। यह अल्लाह तआला का फैसला है और सबसे पहला सूद जो ख़त्म किया जाता है वह अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का सूद है। हाँ सूदी मामलात में तुम्हारी जो असल पूंजी हो वह महफ़ूज़ है। इस सिलसिले में न तुम किसी पर ज़ुल्म करो, न तुम्हारे ऊपर ज़ुल्म किया जाए और देखो ! मेरे बाद मेरे हुक्मों के खिलाफ न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने लगो और देखो! अब शैतान भी मायूस हो चुका है कि नमाज़ पढ़ने वाले उसकी इबादत करने लगें लेकिन वह तुम्हारे दरमियान रूकावट डालता रहेगा और देखो! औरतों के मामले में खुदा से डरो क्योंकि वह तुम्हारे मातहत हैं वह अपने मामले में इख्तियार नहीं रखतीं लिहाज़ा उनका तुम पर हक़ है और तुम्हारा उन पर यह हक़ है कि वह तुम्हारे अलावा तुम्हारे बिस्तर पर किसी को आने न दें और न ऐसे शख्स को तुम्हारे घर आने दें जिसे तुम न पसंद करते हो और अगर तुम उनकी नाफरमानी (गलत) रवय्ये से खतरा महसूस करो तो उन्हें नसीहत करो और उनकी ख्वाबगाहों को अलग कर दो और हल्के तरीक़े से मारो और देखो! उन्हें खाने कपड़े का हक़ पूरी तरह हासिल है,

www.abulhasanalinadwi.org

तुमने उन्हें खुदा की अमानत के तौर पर अपनी रिफ़ाक़त (साथ) में लिया और उनसे जिनसी ताअलुक (यौन संबंधी) को अल्लाह के नाम से अपने लिए जाएज़ किया है और देखो किसी के पास किसी की अमानत हो तो वह अमानत वाले को वापस करे और देखो मैं अपने बाद तुम्हारे लिए एक ऐसी चीज़ छोड़े जाता हूँ अगर तुमने उसको मज़बूत पकड़े रखा तो तुम गुमराह न होगे वह चीज़ क्या है? वह है किताबुल्लाह यानी कुरआनी दस्तुरूल अमल (कार्यप्रणाली) और देखो तुमसे खुदा के यहां मेरी निसबत पूछा जाएगा बताओ तुम क्या जवाब दोगे ? सहाबा ने अर्ज़ किया कि हम कहेंगे कि आपने खुदा का पैग़ाम पहुंचा दिया, अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया। इस जवाब पर आपने शहादत की उंगली आसमान की तरफ उठायी और तीन मरतबा फरमाया "ऐ खुदा तू गवाह रहना" इतना फरमाने के बाद आप सल्ल० ने अपने दोनो हाथ फैलाए और फ़रमाया कि क्या मैंने पैग़ाम पहुंचा दिया। फिर फरमाया जो हाज़िर हैं वह ग़ैर हाज़िर लोगों तक यह बात पहुंचा दे क्योंकि बहुत से ग़ैर हाज़िर सुनने वालों से ज़्यादा खुशबख्त होते हैं।"

यह वह ऐलान था जो इंसानी तारीख़ मे सबसे पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से किया गया और जो इस्लाम के उसूलों (सिद्धान्तों) में से एक अहम उसूल क़रार पाया। चूंनाचे इसी की बिना पर आपस के इजतिमा (सम्मेलन) के मौक़े पर चाहे इबादत का हो या आम (साधारण) ज़िंदगी का, काला, गोरा और गुलाम, मालिक, हाकिम, महकूम (शासक शासित) एक साथ कांधा से कांधा मिला कर खड़े होते हैं। बराबरी और मानव सम्मान का यह पहला ऐलान था, उससे मिलता जुलता ऐलान भी उसके 13 सौ साल बाद दुनिया की मौजूदा युनाईटेड नेशन्स यानी संयुक्त राष्ट्रसंध ने इख्तियार किया। इस्लामी ऐलान से पहले रंग व नस्ल की बुनियाद पर जो ज़ुल्म ग़ैर मुसलमान क़ौमों में जारी था, उसको रोकने की कोशिश की गयी जिस पर इस्लामी सोसाइटी 14 सौ साल से खासी हद तक अमल कर रही है।

दूसरा अहमतरीन ऐलान आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूद को नाजाएज़ करार देने का फरमाया कि दौलत मंद लोगों ने बिला मेहनत हासिल होने वाली मनफअत (लाभ) का ज़रिया बना रखा है और उसके ज़रिये ग़रिबों की ग़रीबी की मजबूरी से फायदा उठाने की खातिर दुनिया में बड़े ज़ुल्म व ज़्यादती का ज़रिया बना रखा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसका सिलसिला खत्म फरमाया और उसकी पहल अपने मुहब्बत करने वाले चचा हज़रत अब्बास के सूदी मुनाफे (लाभ) को बिलकुल बन्द करने से की।

तीसरा ऐलान यह किया की इंसानों के रंग व नस्ल के फ़र्क़ की बिना पर जो ज़ुल्म और तफ़रीक़ (भेदभाव) चल रहा था, उसको खत्म किया और इस सिलसिले में खुद अपने खानदाने कुरैश को अरबों में क़बाएली स्तर पर जो

www.abulhasanalinadwi.org

बरतरी (उच्चता) हासिल थी, उसकी भी परवाह नहीं की और मुसलमानों को हुक्म दिया कि वह आपस में भाईयों की तरह ज़िंदगी गुज़ारें और आपस में हमदर्दी और मदद का तुआल्लुक रखें। कोई किसी की जान को पामाल और बेआबरू न करे। उसको उसी तरह ममनू (वर्जित) फ़रमाया जिस तरह हज के मौके पर कई चीज़ो से मना किया गया था। उसकी हैसियत भी इबादत जैसी है, जिसमें कोताही करने से खुदा की तरफ से सज़ा मिलती है। इसी तरीके से इस्लाम के दाइमी दस्तूर (सर्वकालिक विधान) में इंसानी मसावात बराबरी और अकीदे व दीन में आपस में एक दूसरे के साथ शरीक होने के साथ साथ एक दूसरे के बुनियादी हुकूक (अधिकारों) में भी एक दूसरे के हक़ को तस्लीम करने और अदा करने का ज़िम्मेदार बनाया और उसके लिए काबा के इर्द गिर्द जमा होकर रंग व नस्ल ज़बान के फर्क को नज़र अंदाज़ (उपेक्षा) करते हुए आपसी मसावात (बराबरी) व वहदत (एकत्व) का इज़हार करके उसी तरीके को ज़िंदा व पाए दार किया जिसकी आवाज़ उनके बड़े दादा हज़रत इब्राहीम अ० ने अपने रब के हुक्म से लगाई थी (वअज़्ज़िन फिन्नासे बिलहज्जे यातूकारिजालन) और यह ऐलान फ़रमाया कि अरब हो या ग़ैर अरब, गोरा रंग हो या लाल रंग या काला रंग सब बराबर हैं, अगर किसी को बड़ाई हासिल है तो उसकी नेक खूबियों की बिना पर ही होगी।

मिना व अरफ़ात में पूरी इन्सानियत के नाम पैग़ाम

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया के पालनहार और अल्लाह रब्बुलआलमीन की तरफ़ से पूरी इन्सानियत को सुधार और सफलता के रास्ते पर लाने के लिए नबी बनाए गए, जिन्नात और इन्सान का जो भी फ़र्द जिस जगह और जहां कहीं क़ियामत तक होगा वह आप सल्ल० की नबूवत की रहनुमाई का मुहताज है, उसके लिये कामयाबी और इज़्ज़त का रास्ता व सामान इसी में है कि वह आप सल्ल० की नबवी तालीम (शिक्षा) पर अमल पैरा हो कर ज़िंदगी बसर करे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी वफ़ात से तीन माह पहले अरफ़ात के मैदान में और मिना के क़याम (निवास) में पूरी इन्सानियम को जीने का तरीक़ा सिखलाया, ऐसा तरीक़ा जिसमें कोई इन्सान दूसरे इन्सान के लिये कांटा न बने, खून खराबे से दूर रहा जाए, बालादस्ती (उच्चता) इस्लामी शिक्षा की रहे, अरफ़ात के खुतबे के बारे में मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी लिखते हैं :-

"उसमे आप सल्ल० ने इस्लामी बातों को वाज़ेह (स्पष्ट) किया। शिर्क की बुनियादें ढाह दीं उसमें उन तमाम चीज़ों की आप सल्ल० ने तहरीम (परिवर्ज) फरमाई जिनके हराम होने पर तमाम मज़हब और कौमें सहमत हैं, और वह हैं

नाहक़ खून करना, माल हड़प करना और आबरूरेज़ी। जाहिलियत की तमात बातों और राएज बातों को अपने क़दमों के नीचे पामाल कर दिया। जाहिलियत को सूद कुल का कुल आप सल्ल० ने ख़त्म फरमा दिया और उसको बिल्कुल बातिल (मिथ्या) क़रार दिया औरतों के साथ हुस्नसुलूक, अच्छा व्यवहार करने की नसीहत की और उनके जो हुक़ूक़ हैं, अथवा उनके ज़िम्मे जो हुक़ूक़ हैं उसकी तफ़सील बयान की और यह बताया कि नियमानुसार खुराक और लिबास, नान, नफ़्क़ा उनका हक़ है, उम्मत को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह की किताब के साथ मज़बूती से जुड़े रहने की वसीयत की और इरशाद फरमाया जब तक वह उसके साथ अपने को अच्छी तरह वाबस्ता रखेंगे गुमराह न होंगे।"

मिना के खुतबे में आप सल्ल० ने यौमुन्नहर (८ ज़िलहिज्जा) की हुरमत (सम्मान) से आगाह किया और अल्लाह तआला के नज़दीक उस दिन की जो फज़ीलत है उसको बयान किया। दूसरे तमाम शहरों पर मक्का की जो अफज़लियत और बरतरी का ज़िक्र किया और जो किताबुल्लाह की रोशनी में उनकी क़ियादत करे उसकी इताअत व फरमाबरदारी उनपर वाजिब क़रार दी।

आप सल्ल० ने यह भी नसीहत फरमाई कि मेरे बाद काफ़िरों की तरह न हो जाना जो एक दूसरे की गर्दन मारते रहते हैं। आप सल्ल० ने यह भी हुक्म दिया कि यह सब बातें दूसरों तक पहुंचा दी जाएँ। आप सल्ल० ने यह भी इरशाद फरमाया : अपने रब की इबादत करो, पाँच वक्त की नमाज़ पढ़ो, एक महीना (रमज़ान) के रोज़े रखो और अपने अच्छे हाकिमों की इताअत (आज्ञा पालन) करो अपने रब की जन्नत में दाखिल हो जाओगे। उस वक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों के सामने अलविदाईया कलिमात भी कहे और इसी वजह से इस हज का नाम हज्जतुल विदा पढ़ा।[1]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन इन्सानियत नवाज़ बातों के साथ साथ यह भी सिखाया कि सब इंसान एक खुदा के बन्दे हैं और खुदा इन सबका रब और पालनहार है। उसको राज़ी करके ही ज़िन्दगी का चैन सुकून मिल सकता है। इसीलिए उसके बंदो के लिए यह ज़रूरी है कि अपनी ज़रूरत और तकलीफ में उसी को पुकारें और सिर्फ उसी से इल्तिजा (विनय) करें। हुज़ूर सल्ल० ने खुद दुआ करके दुआ का तरीक़ा भी दिखाया।

मौलाना सय्यद सुलेमान नदवी रहमतुल्लाह अलैहि काबा की मरकज़ियत (केन्द्रत्व) और वहां अमल में आने वाली विश्वव्यापी मानव एकता और उसके असीमित सलामती और अमन के पैग़ाम पर रोशनी डालते हुए लिखते है :

---

(1) नबी–ए–रहमत, पृ0 527–528

www.abulhasanalinadwi.org

"ख़ाना-ए-काबा इस दुनिया में अर्शइलाही का साया और उसकी रहमतों और बरकतों का नुक़तए क़दम है, यह वह आईना है जिसमें उसकी रहमत व गफ़्फ़ारी की सिफ़तें (विशेषताएं) अपना अक्स डाल कर तमाम क़ुर्रए अर्ज़ (भूखण्ड) को अपनी किरनों से मुनव्वर करती हैं यह वह मम्बा है, (स्रोत) है जहां से हक़ परस्ती का चश्मा उबला, उसी ने तमाम दुनिया को सेराब किया। यह रूहानी इल्म व मारफ़त का मतला है जिसकी किरनों ने ज़मीन के कण-कण को रोशनी बख़्शी और यह वह जुगराफ़ी बंधन है जिसमें मिल्लत के वह तमाम अफ़राद बंधे हुए हैं जो मुख़्तलिफ़ मुल्को और इलाक़ो में बसते हैं, मुख़्तलिफ ज़बाने बोलते हैं, मुख़्तलिफ लिबास पहनते हैं, अलग अलग ढंग में ज़िंदगी बसर करते हैं मगर वह सबके सब बावजूद फ़ितरी इख़्तिलाफ़ और अन्तर के एक ही ख़ान-ए-काबा के गिर्द चक्कर लगाते हैं और एक ही क़िबले को अपना केन्द्र समझते हैं। और एक ही मक़ाम को उम्मुलक़ुरा (शहरों की माँ) मान कर वतनियत, क़ौमियत, तमद्दुन व मआशरत (संस्कृति, सामाजिकता) रंग व रूप और दूसरे तमाम फ़िरक़ों को मिटा कर एक की वतन एक ही क़ौमियत (आलेइब्राहीम) एक ही तमद्दुन व माशरत (मिल्लते इब्राहीमी) और एक ही ज़बान (अरबी) में मिल जाते हैं और यह वह बिरादरी है जिसमें दुनिया की तमाम क़ौमें और मुख़्तलिफ़ मुल्कों के बसने वाले जो वतनियत और क़ौमियत के लफ़्ज़ों में गिरफ़्तार हैं, एक लम्हा और एक आन में दाख़िल होते हैं, जिससे इंसानों की बनाई हुई तमाम जंज़ीरें और क़ैदें और बेड़ियाँ कट जाती हैं और थोड़े दिन के लिए हज के ज़माने में तमाम क़ौमें एक मुल्क में एक लिबास एहराम में एक मक़ाम पर कंधे से कंधा मिलाकर एक क़ौम बल्कि एक खानदान की बिरादरी बन कर खड़ी होती हैं और एक ही बोली में खुदा से बातें करती हैं, यही वहदत (एकता) का रंग है जो उन तमाम भौतिक भेदभाव को मिटा देता है जो इंसानों में लड़ाई झगड़ा, फितना व फ़साद के कारण हैं। इसलिए यह हरम रब्बानी न सिर्फ मअना (अर्थ) में अमन का घर है कि यहां हर क़िस्म की ख़ूंरेज़ी और ज़ुल्म का सितम नारवा (अनुचित) बल्कि इस लिहाज़ से भी अमन का घर है कि तमाम दुनिया की क़ौमों की एक बिरादरी क़ायम करके उनके तमाम ज़ाहिरी भेदभाव को जो दुनिया की बदअमली का सबब हैं, मिटा देता है।"

लोग आज यह ख़ुवाब देखते हैं कि क़ौमियत व वतनियत की तंगनाईयों (घिरौंधों) से निकल कर वह इंसानी बिरादरी के विशाल घेरे में दाख़िल हों। मगर मिल्लते इब्राहीमी की प्रारंम्भिक दावत और मिल्लते मुहम्मदी की तज़दीदी पुकार ने सैकड़ो हज़ारो बरस पहले इस ख़ुवाब को देखा और दुनिया के सामने उसकी ताबीर (स्वप्नफल) पेश की। लोग आज तमाम दुनिया के लिए एक वाहिद ज़बान (इसप्रिन्टो) की ईजाद व कोशिश में लगे हैं मगर खान-ए-काबा की मरकज़ियत

www.abulhasanalinadwi.org

(केन्द्रत्व) के फैसले ने आले इब्राहीम के लिए लम्बे समय से इस मुश्किल को हल कर दिया है।[1]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने इस हज में जो दुआऐं की वह बहुत प्रभावकारी और दिल की गहराईयों से निकलीं। वह एक तरफ अदब व बलाग़त का शाहकार हैं, दूसरी तरफ़ उनसे उनके और अल्लाह तआला के दरमियान तअल्लुक़ की कैफ़ियत पूरी तरह दूसरों पर ज़ाहिर हो जाती है। वह बावजूद अपने परवरदिगार के मुनतखब व महबूब बंदे और उसके बहुत ऊंचे दरजे के पैग़म्बर होने के, अपने को किस क़दर ह़क़ीर और नातवाँ, बेकस और मोहताज समझते हैं और मुश्किल कुशा व हाजत रवा सिर्फ अल्लाह तआला को ही जान कर उस पर कैसा यक़ीन व अडिग विश्वास रखते हैं।

खास तौर पर वुक़ूफ अरफ़ा में आं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो दुआऐं फ़रमाईं वह बड़ी असर अंगेज़ हैं। वह जुमा का दिन था। अव्वल वक़्त नमाज़ अदा की और उससे अस्र की नमाज़ भी मिलाई। इस तरह आप सल्ल० अरफ़ात में जुहर और असर की नमाज़ें मिला कर पढ़ना सुन्नत फरमाया। फिर हुज़ूर सल्ल० कई घंटे दुआ में मसरूफ रहे। यह सिलसिला सूरज डूबने यानी मग़रिब तक जारी रहा। आप सल्ल० दुआ व मुनाजात गिड़गिड़ाना और आजिज़ी, और बेबसी, दरमांदगी व बेचारगी के इज़हार में मुनहमिक (लीन) रहे। हाथ उठाये अपने रब्बुलआलामीन से इस तरह मांग रहे थे जैसे भिखारी मांगता है, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

---

(1) सीरतुन्नबी 5/281–283, सय्यद सुलैमान नदवी

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय-आठ

बीमारी और वफ़ात

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हज का सफ़र आख़िरी सफ़र था वह भी आपकी वफ़ात से दो ढ़ाई माह पहले अंजाम पाया था। उसके बाद आपने और कोई सफ़र कहीं और का नहीं किया। इस सफरे हज से वापसी ही से ऐसी बातें ज़ाहिर होने लगी थीं कि जिनसे इशारा मिलने लगा था कि आप सल्ल० को दुनिया में ज़्यादा दिन नहीं रहना है। आयते करीमा (अलयौम अकमतलु लकुम दीनकुम) अब तुम्हारे लिए मैंने तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया है और सूरे शरीफ़ा (इज़ाजाआ नसरूल लाहे वलफतहु) जब अल्लाह की मदद आ जाये और फतह कामिल (पूर्णविजय) हो जाए का भी नुजूल हो चुका था, जिससे सहाबा महसूस कर रहे थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात का ज़माना क़रीबतर है। ख़ुद हुज़ूर सल्ल० का तरज़े अमल भी इस बात की तरफ़ इशारा दे रहा था कि जैसे कि एक मौक़े पर आप सल्ल० मिमबर पर तशरीफ़ लाए और फरमाने लगे : अब तुम लोगों से मुलाक़ात हौज़े कौसर पर होगी। आप सल्ल० का यह बलीग़ जुमला (सारगर्भित वाक्य) एक तरफ़ तो सहाबा को जन्नत व रिज़वान की बशारत दे रहा था, दूसरी तरफ़ आने वाले चंद दिनों को सोहबते नबवी (नबवी संगत) से फायदा उठाने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा कारआमद (उपयोगी) बनाने का खुला इशारा दे रहा था।

हज से दो माह बाद माहे सफर के आख़िर में बज़ाहिर सोमवार के दिन तबीयत नासाज़ हुई, मौत की बीमारी का आरम्भ दर्देसर से हुआ।[1] सर मुबारक पर पट्टी बांधनी पड़ी और यह असरात थे उस वक्त के जब ख़ैबर में एक यहूदी ने खाने में ज़हर मिलाकर आपकी मुबारक ज़िंदगी ख़त्म करने की साज़िश की थी, जिसका पता आपको पहले लुक़मे में चल गया था। उस पर आपने खाने से हाथ रोक लिया था लेकिन एक लुक़मे ने भी इतना असर कर दिया था जो पूरे तौर अब असर अंदाज़ हुआ और आपको सर की तकलीफ पैदा हो गई।

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/642, सही बुख़ारी, किताबुलमग़ाज़ी, बाब मरज़िन्नबी व वफ़ातुहु।

www.abulhasanalinadwi.org

मगर इस तकलीफ में भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इंसानियत को सही रास्ते पर लाने और इस्लामी तालीमात की तरक़्क़ी के लिये फ़िक्रमंद रहे।

आप सल्ल० ने उन्हीं दिनों जब आपको यह इत्तिला मिली कि रूमी हुकूमत की तरफ से हमले का खतरा है हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० की निगरानी मे एक लश्कर तैयार किया। हज़रत उसामा के वालिद आप सल्ल० के गुलाम रह चुके थे। आपने उनको आज़ाद करके अपने बेटे की तरह साथ रखा था। उसामा जो गोया गुलाम की हैसियत रखे जाने वाले के बेटे थे, उनको उन लोगों पर जो प्रचलित नियमों से उनके मालिकों का दर्जा रखते थे अमीर बना कर आपने हर इंसान को दूसरे इंसान के बराबर क़रार देने का वह आला नमूना पेश किया जिसकी नज़ीर पेश करने से दुनिया असमर्थ रही थी और बाद में भी दुनिया की ग़ैर इस्लामी इंसानी सोसाइटी आज से पहले की सदी तक इंसान को इंसान से रंग और नस्ल आज़ाद और गुलाम का फर्क ऊंच नीच का सिलसिला सख्त तरीके से रायज रहा और सिर्फ अभी थोड़ी मुद्दत पहले यू०एन०ओ० ने इंसान के मसावियाना हुकूक (समान मानव अधिकार) की तजवीज़ पास की और जमहूरी निज़ाम के लिए इसको बुनियादी हैसियत दी। इसके बावजूद खुद यूरोप के इंसानी मसावात के नारे और जमहूरियत और उसके मुहज़्ज़ब (सभ्य) कहलाने वालों के मातहत हुकूमतों में कई जगह यह नस्ली क़ौमी ऊंच नीच का तरीक़ा प्रचलित है और पश्चिमी नस्लें पूर्वी नस्लों को बराबर अपने से कमज़ोर और कमतर समझती हैं। लेकिन इस्लामल जिसने इंसानियत की भलाई और फ़ायदा का पैग़ाम दिया उसके सपूतों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस इंसानी मसावात के नमूने को बाद तक सामने रखा। चूंनाचें तारीख़ इस्लाम में कई बार गुलामों को बादशाहत के दर्जे तक पहुंचने का मौक़ा मिला। मध्यपूर्व देशों में एक समय तक गुलामों की हुकूमत रही और हिन्दुस्तान की इस्लामी तारीख़ में भी ऐसा हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने तन्हा अल्लाह तआला की इबादत की नसीहत के साथ साथ इंसानी मसावात, इंसाफ, कमज़ोरों के साथ हमदर्दी और सबके साथ ख़ैरखुवाही की भी पूरी ताकीद की। बीमारी के ज़माने में कुछ सहाबा आपकी ख़ैरियत मालूम करने आये। आप सल्ल० ने उनका स्वागत किया और यह नसीहत फरमाई कि अल्लाह की बंदियों और उसके बंदो में तकब्बुर (अभीमान) और बरतरी को इख्तियार न करना।[1]

आपको यह फिक्र भी दामनगीर रही कि मालो मता का ज़खीरा न होने पाए, जो आए अल्लाह के रास्ते में दिया जाता रहे। आपने परवरदिगार की नेमतों की शुक्रगुज़ारी और इबादत की ख़ासतौर पर नसीहत फरमाई। आपको नमाज़ की

---

(1) सीरतुन्नबविया–इब्ने कसीर 4/505

www.abulhasanalinadwi.org

बड़ी फिक्र रहती थी। आपको इसके लिए जमाअत के ऐहतिमाम (सुव्यवस्था) का बड़ा ख्याल रहा। चूंनाचे जब सख्त बीमारी की वजह से खुद मस्जिद तशरीफ नहीं ले जा रहे थे तो हज़रत अबूबकर को ताकीद फरमाई कि वह लोगों की इमामत करें। गोया यह इशारा था बाद की इमामत व खिलाफत का जिसे सहाबा ने समझा और आपकी इमामत व खिलाफत पर सहाबा का इजमा (सम्मति) हुआ।

हज़रत अबूबकर रज़ि० के सिलसिले मे आं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह बात भी फ़रमाई कि बिलाशुबह कोई शख्स ऐसा नहीं जिसने अपने जान व माल से मुझ पर इतना एहसान किया जितना अबूबकर रज़ि० ने किया है।[1]

मुहाजिरीन को अन्सार के सिलसिले में यह वसीयत फरमाई कि उनके साथ अच्छा बरताव रखें।[2]

वफ़ात के करीब आप सल्ल० ने उन लोगों के लिए बड़ा सख्त लहजा इख्तियार किया जो अपने नबियों की क़बरों को उनकी वफात के बाद सज्दागाह बना लेते हैं चुंकि यहूद और नसारा के लोग ऐसा कर चुके थे इस लिये आप सल्ल० ने फ़रमाया : अल्लाह तआला यहूद व नसारा से क़िताल करे उन्होंने अपने नबियों की क़बरो को सजदा गाह बना लिया।[3]

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आख़िरी वसीयत नमाज़ और मातहतों के साथ अच्छे सुलूक की थी। फरमाते "अस्सलातू वमा मलकत ऐमानुकुम" (देखो नमाज़ का एहतिमाम रखना और अपने मातहतों का)। रवायात (कथन) से मालूम होता है कि आख़िरी अमल आप सल्ल० का मिसवाक करना था, और आख़िरी अल्फाज़ जो फरमाए उनमें "ला ईलाहा इल्लल्लाह इन्ना लिल मौते ल सकरात" (कि अल्लाह के अलावा कोई और लायक़े इबादत व तारीफ नहीं बेशक मौत के साथ सकरात) (मृत्युयातना) होते हैं। फिर "फ़िर रफ़ीकिल आला, फ़िर रफ़ीकिल आला" (बेशक सबसे आला और ऊंचे रफीक के पास) फ़रमाया ! रूहे मुबारक का रूख आलमे बाला की तरफ़ हो गया।[4]

"इन्नालिल्लाहि व इन्नाइलैहि राजिऊन"

हज़रत आयशा रज़ि० फरमाती हैं "जिस वक्त जुदाई की घड़ी करीब आई तो उस वक्त आप सल्ल० का सर मेरी रान पर था एक घड़ी के लिए आप सल्ल० पर बेहोशी तारी हुई फिर आप सल्ल० को होश आ गया और आप सल्ल० ने घर की छत की तरफ नज़र उठायी और फ़रमाया "बेशक सबसे आला

---

(1) सही बुख़ारी किताबुस्सलात
(2) सही बुख़ारी
(3) मुअत्ता इमाम मालिक
(3) देखिये सही बुख़ारी बुख़ारी बाब मरज़िन्नबी व वफ़ातिहि

www.abulhasanalinadwi.org

और ऊंचे रफीक के पास" यह वह आख़िरी अल्फाज़ थे जो दुनिया से जाते वक्त आप सल्ल० की ज़बाने मुबारक से निकले।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब इस दुनिया से पर्दा फरमाया तो उस वक्त पूरा अरब द्वीप आप सल्ल० के मातहत था। दुनिया के बादशाहों और उमरा पर आप सल्ल० का जलाल व रोब था। आप सल्ल० के सहाबा कराम आप सल्ल० पर अपनी औलाद व माल व मता सब निछावर करने पर तैयार रहते थे। इस सबके बावजूद आप सल्ल० दुनिया से इस हाल में तशरीफ़ ले गए कि आप सल्ल० ने एक दीनार या दिरहम एक गुलाम या लोंडी या कोई चीज़ भी पीछे नहीं छोड़ी। सिर्फ आप सल्ल० का एक सफेद खच्चर था। आपके हथियार थे एक कतअ़ ज़मीन जिसको आप सल्ल० ने सदक़ा कर दिया था।[1]

आपकी वफ़ात इस हालत मे हुई कि आपकी ज़िरह एक यहूदी के पास तीन साअ जौ पर रेहन रखी हुई थी और आप सल्ल० के पास कोई चीज़ न थी कि आप उसे दे कर ज़िरह को छुड़ा सकते यहां तक की आप सल्ल० दुनिया से तशरीफ ले गए।[2]

आप सल्ल० ने अपने मरज़े वफ़ात में **40** ग़ुलामों को आज़ाद फ़रमाया। आप सल्ल० के पास ७ या ६ दीनार थे। हज़रत आयेशा को हुक्म हुआ कि उनको भी सदक़ा कर दें।

उम्मुलमोमिनीन हज़रत आयेशा रज़ि० रवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात इस हालत में हुई कि मेरे घर में कोई ऐसी चीज़ न थी जिसको कोई जानदार खा सकता। अलबत्ता ज़रा सा जौ मेरी अलमारी पर रखा हुआ था, मैंने उसी में से कुछ खाया वह बहुत दिन चला। यहां तक कि मैंने उसकी नाप तौल की बस उसी के बाद खत्म हो गया।[3]

वफात का सहाब-ए-कराम पर असर

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात की खबर सहाब-ए-कराम पर बिजली बन कर गिरी। इसकी वजह उनका वह आशिकाना ताल्लुक था जिसकी नज़ीर इंसानी तारीख में नहीं मिलती। वह आप सल्ल० के साए शफक़त में इस तरह रहने के आदी हो गऐ थें जिस तरह बच्चे माँ बाप की आगोश-ए-मुहब्बत में रहते हैं। बल्कि उससे भी ज़्यादा इस लिहाज़ से उन पर आपकी वफ़ात का जितना भी असर पड़ता कम था। अल्लाह तआला का इरशाद है :

---

(1) सही बुख़ारी, बाबु मरजिन्नबी व वफ़ातिहि, बैहक़ी 56
(2) अस्सीरतुल हलबिया 3/381
(3)) बुख़ारी, किताबुररिक़ाक़ बाब फ़ज़लिलफ़क़्र, व मुस्लिम किताबुज़्ज़ोहद

www.abulhasanalinadwi.org

"(लोगो) तुम्हारे पास तुमही में से एक पैग़म्बर आए हैं तुम्हारी तकलीफ उनको भारी मालूम होती है और तुम्हारी भलाई के बहुत खावाहिशमंद हैं और ईमानवालों पर निहायत शफ़कत (दया) करने वाले और मेहरबान हैं।" (सूरा : तौबा 128)

अकीदतमंदो को यह यक़ीन नहीं आता था कि हुज़ूर सल्ल० जो कि रब्बुलआलमीन के सबसे श्रेष्ठ नबी हैं इस दुनिया से यूँही चले जायेंगे। उनमे आगे आगे हज़रत उमर रज़ि० थे, चूंनाचे उन्होंने तलवार खींच ली, कि जो यह कहेगा कि अल्लाह के रसूल की वफ़ात हो चुकी है मैं उसका सर उड़ा दूंगा वह मस्जिदे नबवी में आए और लोगों के सामने खुतबा दिया और कहा कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम" की वफात उस वक्त तक न होगी जब तक अल्लाह तआला मुनाफिकों को खत्म न कर देगा।[1]

लेकिन हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़ि० तशरीफ लाए और मस्जिदे नबवी के दरवाज़े पर एक लम्हे के लिए रूके उस वक्त हज़रत उमर रज़ि० लोगों से खिताब कर रहे थे फिर वह किसी ओर ध्यान दिये बिना सीधे हज़रत आइशा रज़ि० के घर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के करीब पहुंचे आप पर एक चादर उढ़ायी हुई थी उन्होंने चेहरे मुबारक से चादर सरकाई और झुक कर रूए मुबारक का बोसा लिया और कहा कि मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान! मौत का जो ज़ायका है अल्लाह तआला ने आप सल्ल० के लिए मुकद्दर किया था, आप सल्ल० ने उसे चख लिया। अब इसके बाद आप सल्ल० को दुबारा मौत के मरहले से गुज़रना न होगा। फिर आप बाहर आए और देखा कि लोग परेशानी के आलम में हक़ीक़ते वाक़या (घटना की वास्तविकता) को समझ नहीं पा रहे हैं और उनका ध्यान "वही-ए-इलाही" की उस आयत की तरफ नहीं जा रहा है जिसमे आप सल्ल० को भी वफात के मरहले से गुज़रने को बयान कर दिया गया है। चूंनाचे आप मिम्बर पर आए और कुरआन शरीफ की वह आयतें पढ़ कर सुनाईं तो लोगों की आंखे खुलीं और इस निश्चित घटना का यकीन आया।[2]

हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़ि० ने अल्लाह की हम्द व सना के बाद कहा : -

"लोगो ! अगर कोई मुहम्मद सल्ल० की इबादत करता था तो उस को मालूम हो जाये कि बिला शुबह उन की वफ़ात हो गयी और अगर अल्लाह तआला की इबादत करता था तो इतमीनान रखे कि अल्लाह तआला जिंदा है और उसके लिए मौत नहीं" फिर आपने यह आयत तिलावत की :

---

(1) अलबिदाया वन निहाया 5/242
(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/655

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद :-

"और मुहम्मद तो सिर्फ खुदा के पैग़म्बर हैं उनसे पहले बहुत से पैग़म्बर गुज़रे हैं भला अगर उनकी वफात हो जाए या शहीद कर दिये जाएं तो तुम उलटे पांव फिर जाओ (यानी मुरतद हो जाओ) और जो उलटे पांव फिर जायेगा खुदा का कुछ नुकसान नहीं कर सकेगा, और शुक्रगुज़ारों को बड़ा सवाब देगा।" (सूरा आले इमरान-**144**)

जो लोग इस मौके पर हाज़िर थे और यह मंज़र देख रहे थे, उनका बयान है कि "खुदा की कसम जब हज़रत अबूबकर रज़ि० ने जब यह आयत तिलावत की तो ऐसा महसूस हुआ कि यह आयत अभी नाज़िल हुई है और हज़रत अबूबकर ने उनके मुंह की बात कह दी।" हज़रत उमर रज़ि० बयान करते है कि मैंने "जब अबूबकर रज़ि० को यह आयत तिलावत करते सुना तो हैरतज़दा होकर खुद बखुद ज़मीन पर गिर गया मेरे पैरों की ताकत खत्म हो चुकी थी।

उस वक्त गोया मुझे यह इल्म हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इन्तिक़ाल हो गया है।

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी लिखते हैं कि "आप सल्ल० की वफात सोमवार के दिन १२ रबीउलअव्वल सन् ११ हिजरी को दोपहर के बाद हुई। उस मसय आपकी आयु चांद की तारीख के हिसाब से ६३ साल थी। यह मुसलमानों के लिए सबसे ज़्यादा तारीक (अंधकारपूर्ण) और घबराहट का दिन था, सबसे बड़ा सदमा और आज़माईश और पूरी इंसानियत के लिए सबसे बड़ी घटना थी, जबकि आपका जन्म दिवस इंसानियत का सबसे मुबारक, रोशन और ताबनाक (प्रकाशमय) दिन था। हज़रत अनस व अबू सईद खुदरी रज़ि० बयान करते हैं कि जिस दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ लाए थे तो मदीने की हर चीज़ आप सल्ल० की आमद से रोशन व मुनव्वर हो गई थी। आप सल्ल० को बचपन में खिलाने वाली खातून उम्मे ऐमन भी रो रही थीं। लोगों ने वजह पूछी तो उन्होंने जवाब दिया कि बेशक मुझे मालूम था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस दुनिया से तशरीफ ले जायेंगे लेकिन मैं इस बात पर रो रही हूँ कि अब "वही" का सिलसिला भी हमसे हमेशा के लिए खत्म हो गया।[1] (नबी-ए-रहमत, पृ० **554—555**)

जिस मकाम पर आपकी वफात हुई उम्मुलमोमिनीन हज़रत आयशा के हुजरे में उसी मक़ाम पर अगले रोज़ मंगल को तदफीन अमल में आई। यह खुद हुज़ूर सल्ल० के उस इशारे के बिना पर हुआ कि नबियों की वफात जिस जगह

---

(1) नबी—ए—रहमत, पृ0 554—555

www.abulhasanalinadwi.org

पर होगी वहीं तद्फीन होती है। गुस्ल और कफ़न दफन का काम अहले बैत ने अंजाम दिया। कब्र एक अंसारी सहाबी हज़रत अबूतल्हा ने खोदी, जनाज़ा उसी जगह रखा रहा। एक एक जमाअत आती रही और नमाज़ अदा करती गई।

आप सल्ल० की वफात का सदमा इतना सख्त था, जिसकी तस्वीर नहीं खींची जा सकती। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक जुमला (वाक्य) उस कैफियत को बिला किसी कमीबेशी के बयान कर देता है। फरमाया ! ऐ लोगो तुममें से (या अहले ईमान में से) किसी को भी कोई मुसीबत पेश आए तो वह उस मुसीबत के लिए जो उसको दूसरे के इन्तिकाल से पेश आ रही है, उस मुसीबत से तसल्ली हासिल करे जो मेरी वफ़ात से पेश आएगी। इसलिए कि मेरी उम्मत में किसी शख़्स को मेरी वफ़ात के सदमे से बढ़कर कोई मुसीबत पेश न आयेगी।[1]

और साहबज़ादी-ए-रसूल जिगरगोश-ए-नबी सय्यदा फातिमा रज़ीअल्लाहु अनहा ने हज़रत अनस रज़ि० से जबकि वह आपकी तदफीन में शिर्कत करके लौटे फरमाया : अनस! तुम्हारे दिल इस बात पर कैसे राज़ी हुए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ाक के अन्दर रखो और मिट्टी डालो।[2]

आप सल्ल० की खिलाफत का मसअला (समस्या)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात को खुदा की तरफ से हकीकत समझ लेने पर आपको आपकी क़बर मुबारक में पहुंचाने से पहले हज़रात अन्सार अपने एक साएबान में जमा होकर आगे की समस्या पर ग़ौर करने लगे। हज़रात मुहाजिरीन को इल्म हुआ तो वह भी वहां आ गये और मशविरा होने लगा। हज़रात अंसार ने कहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे यहां मुन्तिकिल हो गए थे लिहाज़ा हमारा कोई अहम आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाएब बने। मुहाजिरीन ने कहा कि अरबों में कुरैश को जो अहमियत हासिल है कि उनमें से किसी के अमीर बनने पर अरबों में से कोई इख़्तिलाफ़ नहीं करेगा। लिहाज़ा उनमे ही से किसी आदमी का इन्तिखाब हो। यह बात ख़ास तौर हज़रत अबूबकर रज़ि० ने कही और हज़रत उमर रज़ि० का नाम पेश किया। हज़रत उमर ने कहा : आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सबसे ज़्यादा क़रीब रहे हैं और आप सल्ल० ने बीमारी में आप ही से नमाज़ें पढ़वायीं। इसलिए आपके अलावा दूसरा कोई मुनासिब नहीं और फौरन उनका हाथ अपने हाथ में लेकर बैअत कर ली। इसको देख कर मौजूद लोगों ने भी हज़रत अबूबकर रज़ि० के हाथ पर बैअत करना शुरू कर

(1) देखिये "सुनन इब्ने माजा"
(1) बुख़ारी बाबु मरजिन्नबी व वफ़ातिहि

www.abulhasanalinadwi.org

दिया और मशवरे की यह बैठक आसानी के साथ मुनासिब नतीजे तक पहुंच गयी और हज़रत अबूबकर रज़ि० खलीफ-ए- रसूलुल्लाह सल्ल० और अमीरूल मोमिनीन क़रार पाये। फिर जो मुसलमान उस बैठक में पहुंच नहीं सके थे, उन्होंने भी आ आ कर उनके हाथ पर बैअ़त करके उनकी इताअत (आज्ञा पालन) का ऐलान कर दिया। इस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़मीनी आरामगाह तक पहुंचने से पहले मुसलमानों का अमीर (नायक) हासिल होने में कोई वकफा (विराम) नहीं हुआ और हज़रत अबूबकर रज़ि० की सरपरस्ती और रहनुमाई में इस्लाम का काफिला खुदा के रसूल के बताए हुऐ रास्ते पर चलता रहा।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने माली वरसा के मुतालिक पहले से बता दिया था कि उनके अहल व आयाल के बजाए तमाम मुसलमानों का होगा। लिहाज़ा वह बैतुलमाल के सुपुर्द हुआ। आप सल्ल० की औलाद में सिर्फ हज़रत फातिमा रज़ि० ज़िंदा थीं। बाक़ी औलाद और बेटियों ने आप सल्ल० की ज़िंदगी के दौरान ही इन्तिक़ाल किया था। इस तरह अल्लाह तआला ने मुसलमानों के लिए यह "उसवा" (आर्दश) भी ज़ाहिर कर दिया कि औलाद के इन्तिक़ाल से सद्मा (दुख) पेश आने पर एक मुसलमान का क्या नमूना है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाक बीवियाँ

आप सल्ल० की पाक बीवियों मे से दो का आपकी मुबारक ज़िंदगी में ही इन्तिक़ाल हो गया था। वह भी मुसलमानों के लिए बीवी के इन्तिक़ाल की सूरत पेश आने पर नमूना बना। आपकी सबसे पहली ज़ौज-ए-मुतह्हरा उम्मुलमोमिनीन हज़रत ख़दीजह रज़ि० जो आपकी ज़िंदगी के शुरू के २५ साल तक आपकी तन्हा अहलिया थीं और बहुत उन्स और आपसी मुहब्बत का लअल्लुक़ रखती थीं। 25 साल आप सल्ल० के साथ रह कर मक्की ज़िंदगी के क़याम में ही आप सल्ल० से जुदा हो गई थीं। फिर आप सल्ल० की मदनी ज़िंदगी में हज़रत ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमा उम्मुलमसाकीन रज़ि० आप सल्ल० के जुदा हुईं। बाकी अज़वाज मुतह्हरात आप सल्ल० से बेवह हुईं और उन्होंने बेवह होने पर मुसलमान खातून का जो उसवा (आर्दश) होना चाहिए उसका नमूना पेश किया और शायद इसी लिए उनको किसी दूसरे से निकाह करनी की इजाज़त नहीं दी गयी थी कि आपसे हासिल किये हुए तौर तरीके और अख़लाक में दूसरे से हासिल किये हुए अख़लाक की मिलावट न हो जाए। क़ुरआन मजीद में यह हुक्म

---

(1) अलबिदाया वन–निहाया 5/245–247

www.abulhasanalinadwi.org

आया कि मुसलमानों के लिए यह सही नहीं है कि वह आप सल्ल० के बाद आप सल्ल० की ज़ौजह मुतह्हरह से निकाह करें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सल्ल० के बाद ज़िंदा रहने वाली पाक बीवियों के नाम निम्नलिखित हैं :-

हज़रत आइशा, हज़रत हफ़सा, हज़रत सौदा, हज़रत उम्मेसलमा, हज़रत ज़ैनब, हज़रत जुवैरिया, हज़रत उम्मेहबीबा, हज़रत मैमूना, हज़रत सफ़ीया रज़ीअल्लाहुअन्हुन।

कई बीवियों की हिकमत व मसलहत

इस्लाम से पहले और इस्लाम के अलावा दूसरे निज़ामे ज़िंदगी (जीवन व्यवस्था) में अपनी अपनी मर्ज़ी के मुताबिक कई बीवियाँ रखने का रिवाज रहा है। इस्लाम ने आकर उनकी संख्या पर पाबन्दी लगाई और एक से ज़्यादा बीवी करने की ज़रूरत पड़ने पर इसकी इजाज़त दी है लेकिन इसको बराबरी और इंसाफ की शर्त के साथ बांधते हुए चार तक सीमित कर दिया है।

हुज़ूर सल्ल० ने 25 साल की उम्र होने पर जो नबूवत मिलने से 15 साल पहले थी, निकाह किया और वह भी अपने से 15 साल की बड़ी उम्र की एक बेवह ख़ातून से किया और उसी पर 25 साल तक क़ायम रहे और जब आपकी उन बीवी का इन्तिक़ाल हो गया और ज़रूरत पड़ी तो उनही की तरह एक दूसरी बेवह खातून से निकाह किया। इस तरह नबूवत के १३ साल बाद जबकि आपकी उम्र 53 साल से ज़्यादा हो गई थी और नबूवत के सामाजिक व इन्तिज़ामी मामलात के तकाज़ों की वजह से मुख़तलिफ़ जगहों और तरह तरह के लोगों से आपको सम्बन्ध स्थापित करना पड़ रहे थे, जो इस्लाम के प्रचार और इस्लाम के इन्तिज़ामी मामलात और उसके तहत सामाजिक ताल्लुक़ात के सिलसिले में ज़रूरी थे, तो ऐसी ज़रूरतों की वजह से आपको कई शादियाँ करने की ज़रूरत पड़ी और अल्लाह तआला की तरफ़ से इसकी इजाज़त दी गई। चुनांचे उम्र के 54वें साल गुज़रने के बाद से आप सल्ल० इस सूरत को इख़्तियार किया और आपकी उम्र का मरहला भी अब ऐसा था कि इसमें नई शादी किसी शौक व लुत्फ के लिए नहीं की जाती, सिर्फ ज़रूरत के लिए ही की जाती है। जैसे जैसे ज़रूरत महसूस करते गए ज़ायद बीवियाँ इख़्तियार कीं। और आपका यह तरीक़ा आपकी अपनी उम्र के आखिरी ९ साला मुद्दत के अन्दर रहा और तादाद एक वक्त में 8 से ज़्यादा नहीं हुई और हर नई शादी अपने लिए पूरी पाबंदी और सामाजिक ज़रूरत रखती थी। इस तरह आपने यह खुद खवाहिश से नहीं किया बल्कि नियमपूर्वक अल्लाह तआला की तरफ़ से आपके लिए इसकी गुंजाईश दी गयी ताकि नबूवत के कामों और उम्मत के लिए नाना प्रकार का नामूना पेश करने की सूरत सामने आए और उसके साथ अल्लाह तआला ने पाबन्दी भी ऐसी

www.abulhasanalinadwi.org

लगा दी जिससे उनकी ज़िंदगी मेहनत व कुर्बानी और अल्लाह तआला की रज़ा (प्रसन्नता) और दीन के अधीन हो :

"ऐ पैग़म्बर अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम दुनिया की ज़िंदगी और उसकी ज़ीनत (शोभा) व आराइश की तलबगार हो तो आओ मैं तुम्हें कुछ माल दूँ और अच्छी तरह से रूखसत कर दूँ और अगर तुम खुदा और उसके पैग़म्बर और आखिरत के घर (यानी बहिश्त) की तलबगार हो तो तुममें नेकोकारी करने वाली हैं उनके लिए खुदा ने बड़ा सवाब तैयार कर रखा है। ऐ पैग़म्बर की बीवियो! तुममें से जो सरीह, नाशाइस्ता, असभ्य, (अल्फ़ाज़ कह कर रसूलुल्लाह को तकलीफ देने की) हरकत करेंगी उसको दूनी सज़ा दी जायेगी और यह बात खुदा को आसान है और जो तुममें से खुदा और उसके रसूल की फरमाबरदार रहेंगी और अमल नेक करेंगी उसको हम दूना सवाब देंगे और उसके लिए हमने इज्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है। ऐ पैग़म्बर की बीवियो! तुम और औरतों की तरह नहीं। अगर तुम परहेज़गार (सदाचारी) रहना चाहती हो तो किसी अपरिचित आदमी से नर्म नर्म बातें न करो ताकि वह शख्स जिसके दिल में किसी तरह का मर्ज़ है कोई उम्मीद न पैदा करे और दस्तूर के मुताबिक बात किया करो और अपने घरों मे ठहरी रहो ओर जिस तरह (पहले) जाहिलियत के दिनों में बनाव सिंगार का दिखावा करती थीं उस तरह सिंगार न दिखाओ ओर नमाज़ पढ़ती रहो और ज़कात देती रहो। खुदा और उसके रसूल की फरमाबरदारी करती रहो। ऐ पैग़म्बर के अहले बैत! खुदा चाहता है कि तुमसे नापाकी (का मैल कुचैल) दूर कर दे और तुमहें बिल्कुल पाक साफ कर दे। और तुम्हारे घरों मे जो खुदा की आयतें पढ़ी जाती हैं और हिकमत (की बातें सुनाई जाती हैं) उनको याद रखो। बेशक खुदा बारीकबीं (सूक्ष्मदर्शी) और बाखबर है।" (अहज़ाब : **28—34**)

ज़्यादा बीवियों का रिवाज यूं भी उस ज़माने के अरबों में आम था, उसमें खुवाहिश व पसंद के अलावा और खानदानी ज़रूरत के साथ साथ कुछ दूसरी ज़रूरतें भी हुआ करती थीं, उनमें से एक बात औलाद की संख्या बढ़ाना था ताकि क़बीले की संख्यात्मक शक्ति में उन्नति हो। क्योंकि कबीलों के बीच में आपसी लड़ाइयों का सिलसिला चलता रहता था और दूसरे खानदानों में अपने रिश्ते बनाने के ज़रिये अपने खानदानी सहायकों की संख्या बढ़ाने के लिये भी होता था। इस मक़सद के लिए वह मुखतलिफ ऊंचे खानदानों से रिश्ते करते थे ताकि दूसरे खानदानों में रिश्ता कायम होने पर उनको ज़रूरत पड़ने पर सर्मथन और सहायता हासिल हो जाए। किसी खानदान के फर्द का दूसरे खानदान के फर्द से वैवाहिक संबंध हो जाना उस खानदान से सहयोग और समर्थन का ज़रिया बनता था। और यह काम मनमाने तरीक़े से किया जाता था। इस्लाम के आने के बाद उसको ऐसा कन्ट्रोल किया गया कि उसमें मनमानी और बेजा तरीक़ा

www.abulhasanalinadwi.org

इख़्तियार न किया जा सके। आपको नबवी ज़िम्मेदारियों के अंजाम देने और दुश्मनों की दुश्मनी पर रोक लगाने की हिकमत ने भी आपके लिए कई निकाह की ज़रूरत पैदा की।

इस्लाम से पहले अरबों की रास्ता से भटकी और जाहिलियत की ज़िंदगी में इज़दिवाजी तअ़ल्लुक (वैवाहिक सम्बन्ध) तकरीबन चार मुखतलिफ़ तरीक़ों से क़ायम किया जाता था। उनमें से कई तरीके ज़्यादा आज़ादरवी के बल्कि लज्जारहित थे। इस्लाम ने आकर उसमें से सिर्फ एक तरीका जो शरीफ़ाना और मुनासिब और लज्जायुक्त था बाकी रखा और अनिवार्य कर दिया। बाकी तरीकों को ममनूअ़ (वर्जित) करार दिया[1] और उसके साथ ज़रूरत पड़ने पर सिर्फ चार बीवियों तक की गुन्जाईश रखी और अपने आखिरी नबी के लिए दावती, इन्तिज़ामी मसलेहत की खातिर उसके इज़ाफे की गुन्जाईश कर दी लेकिन उसको भी ११ तक सीमित कर दिया।

आप सल्ल० की इज़दिवाजी ज़िंदगी का जायज़ा लेने पर यह विशेषता पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाती है कि आप सल्ल० की पूरी इज़दिवाजी ज़िंदगी (वैवाहिक जीवन) बहुत सावधान और जवानी की खुवाहिश और मनमानी ज़िंदगी की बेएहतियातियों से बिल्कुल सुरक्षित थी। आप सल्ल० नबुअत मिलने से पहले भी खानदान में ख़ैरखुवाही और ख़ैरपसन्दी के जो कोई काम होते उसमे भरपूर हिस्सा लेते। वैवाहिक जीवन शुरू करने में आपने कोई जल्दबाज़ी भी नहीं की बल्कि संजीदा अंदाज़ में और ऐहतियात के साथ समय गुज़ारा और जब अच्छा रिश्ता मिला तो वैवाहिक जीवन में क़दम रखा।

आपकी पहली बीवी ख़दीजा बिन्त खुवैलिद हुईं, जो आपसे १५ साल बड़ी थीं और जो पूरे कबीले में इज़्ज़त वाली सदाचारी समझी जाती थीं और एक शौहर के इन्तिकाल के बाद बेवह हो गयी थीं।[2]

नबूवत की ज़िम्मेदारी मिलने से पहले जबकि आप पर कोई मज़हबी पाबन्दी ज़रूरी नहीं हुई थी आप सल्ल० ने उनके साथ आपसी मुहब्बत व उल्फत और एक दूसरे से मुवानिसत (आत्मीयता) के अंदाज़ से संजीदा और सम्मानपूर्वक ज़िंदगी गुज़ारी और जब आप सल्ल० को नबूवत की ज़िम्मेदारी सुपुर्द हुई तो भी उनका व्यवहार आपके साथ समर्थन और अनुकूलता का रहा। और जब भी बड़ी

---

(1) तफ़सीर तबरी 18/401, सही बुख़ारी, किताबुन निकाह, बाबु मन काला ला निकाह इल्ला बिवलीयिहि।

(2) अलबिदाया वन–निहाया 2/297–295

www.abulhasanalinadwi.org

ज़िम्मेदारी के एहसास से ज़हनी दबाव महसूस करते तो आपको आपकी पत्नी की तरफ से तसकीन व हमदर्दी हासिल होती थी। चुनांचे जब आप पर पहली "वही" (ईश्वरवाणी) आई और आपने उसका बहुत बोझ महसूस किया तो वह आपके दिल को मज़बूत करने के लिए अपने रिश्तेदार वरक़ा बिन नौफल के पास ले गईं और उनसे तसकीन की बात कहलवाई। वह पिछले नबियों के हालात का इल्म रखते थे और उनको पिछले नबियों के अक़वाल (कथन) से ऐसी सूरत के वजूद में आने का इल्म हासिल हो चुका था। लिहाज़ा उन्होंने तसकीन दी और नबूवत की तसदीक़ की।[1] उसके बाद जब नबूवत की जिम्मेदारी आप अंजाम देने लगे और उसकी वजह से लोगों की तरफ से आपको तकलीफें पहुंचाई जाने लगीं तो आप उससे प्रभावित होकर जब घर लौटते तो आपकी बीवी (पत्नी) तसकीन व हमदर्दी के अल्फाज़ (शब्द) प्रयोग करती। आप सल्ल० ने भी उनके जीवन काल मे उनके अलावा किसी दूसरी औरत से निकाह नहीं किया उनही पर संतोश किया। यहां तक कि २५ साल उनके साथ गुज़ारे उसके बाद उनका देहान्त हो गया।

आपने अपनी पहली बीवी हज़रत खदीजा के इन्तिकाल के बाद जोकि आपकी ५० साल की उम्र होने पर वफात पा गयी थीं कुछ दिन ठहरे रहे फिर ताल्लुक वालों के मशवरे पर जिन खातून (महिला) से निकाह किया वह भी बड़ी उम्र वाली थीं और उनमें ज़ाहिरी कशिश भी कम थी। यह हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ क़रशिया आमिरया थीं उनका रिश्ता कुबूल करने में अपनी उन साहबज़ादियों की जो अभी कम उम्र थीं की देख भाल और सरपरस्ती की ज़रूरत की मसलेहत थी। इसीलिए बड़ी और संजीदा तबीअत खातून को जीवन साथी (रफीक-ए-हयात) बनाने को इख्तियार किया।[2]

उम्र के 53 साल गुज़र जाने के बाद जब अपने मानने वालों के साथ हिजरत करके मदीना आ गए और वहां के मुसलमानों की सामाजिक और दीनी मसलहतों के मुनासिब तरीके इख्तियार करते हुए जंगो से साबिका पड़ा तो आपको मुखतलिफ़ खानदानों और कबीलों को, उनमें वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करके, करीब करने और अपना महदर्द (शुभचिन्तक) बनाने की ज़रूरत से विभिन्न प्रधान लोगों और सरदारों के यहां के रिश्ते क़ायम किये और उसके ज़रिये इंसानी हमदर्दी और सामानता की भी बाज़ मिसालें क़ायम कीं। चुनांचे कुरैश के सरदार के सेनापति की बेटी उम्मे हबीबा बिन्त अबू सुफियान उमवी को पत्नी के रूप मे क़बूल किया जिन्होंने इस्लाम को अपने शौहर के साथ कुबूल करके हबशा हिजरत की थी और वहां उनके शौहर इस्लाम छोड़ कर ईसाई हो

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1/236–241

(2) अलकामिल फ़ित्तारीख 2/307, ज़ादुल मआद 1/105

www.abulhasanalinadwi.org

गए थे और वह तन्हा पड़ गई थीं(१) और यहूदी कबीला बनू नज़ीर के सरदार हय्यि बिन अख़तब की बेटी सफिया नज़रया यहूदिया को बीवी बनाया[1] जोकि जंग में गिरफ़्तार हो कर बांदी क़रार पाई थीं। आपने यहूदी क़बीले पर एहसान रखने की खातिर उनको आज़ाद करके अपनी ज़ौजियत मे ले लिया और एक दूसरे यहूदी क़बीले बनु मुस्तलिक़ के सरदार हारिस बिन ज़रार की बेटी जुवैरिया भी बांदी हो कर मुसलमानों को हासिल हुई थी। उनको भी आपने सरदार कबीले को एहसान मंद बनाने के लिए आज़ाद किया और उनको भी रफ़ीक़-ए-हयात (जीवन साथी) बना लिया।[2]जिसके असर से पूरा क़बीला एहसानमंद हुआ और मुसलमान हो गया। दूसरी तरफ अपने क़रीबतरीन साथी हज़रत अबूबकर की साहबज़ादी हज़रत आयेशा को और दूसरे क़रीबतरीन सहाबी हज़रत उमर की साहबज़ादी हज़रत हफ़सा को रफ़ीक़-ए-हयात बनाया।[3] तीसरे क़रीबतरीन सहाबी हज़रत उस्मान बिन अफ्फान जोकि क़बीले क़ुरैश के खानदान उम्वी के अहम फर्द थे, जिसके सरदार अबू सुफियान आपसे जंग के सरबराह होते थें, आप सल्ल० ने अपनी दो साहबज़ादियों को उनकी ज़ौजियत (विवाह) में दिया।[4]

उसके बाद आप सल्ल० ने ज़ैनब बिन्त खुज़ैमा हिलालिया को अपनी ज़ौजियत मे क़ुबूल किया, जो शादी के दो माह बाद वफात पा गईं।[5] फिर उम्मे सलमा हिन्द बिन्त उम्य्या क़रशिया मखज़ूमिया को आप सल्ल० ने अपनी ज़ौजियत में लिया। [6] न्होंने अपने शौहर के हिजरते मदीना के मौके पर अपने खानदान की तरफ से तकलीफ पहुंचाने का सिलसिला साल भर तक बर्दाश्त किया था और इस्लाम की वफ़ादारी में फर्क नहीं आने दिया था और साल भर के मुजाहिदे के बाद मदीना अपने शौहर के पास आईं लेकिन जल्द ही एक जंग में उनके शौहर शहीद हो गए और वह तन्हा रह गईं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको ज़ौजियत में लेकर महदर्दी का सबूत दिया। आप सल्ल० ने अपनी फूफीज़ाद बहन ज़ैनब बिन्त जहश जो खानदानी इज़्ज़त का बड़ा मकाम रखती थीं जमहुरियत व मसावात की मिसाल क़ायम करने के लिए अपने आज़ाद करदा ग़ुलाम ज़ैद बिन हारिसा की ज़ौजियत (विवाह) में दे दिया। उन्होंने भी इस निकाह को अपनी तबीअत पर जब्र करके अपने मामूज़ाद भाई जो नबी (स०अ०) थे उनकी मर्ज़ी को अपनी मर्ज़ी पर तरजीह (प्रधानता) देते हुए क़ुबूल किया। बाद में दोनों के ताल्लुकात साज़गार (अनुकूल) न हो सके और हज़रत ज़ैद ने तलाक़

---

(1) तारीख़ तबरी 3/165, अलकामिल फ़ित्तारीख 2/307
(2) सीरत इब्ने हिशाम 2/646
(3) सीरत इब्ने हिशाम 2/645
(4) तारीख़ तबरी 3/161–162, ज़ादुल मआद 1/106
(5) अलबिदाया वन–निहाया 5/293
(6) ज़ादुल मआद 1/106, सीरत इब्ने हिशाम 2/647

www.abulhasanalinadwi.org

दे दी। जिससे उन मुअज़्ज़ज़ (सम्मानित) खानदान की खातून की एक आज़ाद करदा गुलाम से तलाक़ मिलने पर दिलशिकनी हुई। आप सल्ल० ने उसकी पूर्ति में उन तलाक़ शुदा को अपने निकाह मे कुबूल फरमा लिया।[1] इस तरह एक दूसरी मिसाल यह क़ायम की कि अल्लाह तआला के उस हुक्म पर सबके सामने ऐलान हो गया कि हज़रत ज़ैद जो आज़ाद किये हुऐ गुलाम होने के साथ हुज़ूर सल्ल० की तरफ से मुंह बोले बेटे बनाए गये थे, मुंह बोले बेटे की तलाक़शुदा बीवी से शादी जाहिलियत में ऐब समझी जाती थी, आप सल्ल० ने उस तलाक़शुदा का सम्मान करते हुए अल्लाह तआला के हुक्म से यह बात भी ज़ाहिर फरमा दी कि मुतबन्ना मुंह बोले बेटे से कोई बेटे की तरह नहीं हो जाता, और उसकी वज़ाहत क़ुरआन मजीद में भी आ गयी :-

अनुवाद :-

"फिर जब ज़ैद ने उससे (कोई) आवश्यकता (सम्बन्ध) न रखा (यानी उसको तलाक़ दे दी) तो हमने तुमसे उसका निकाह कर दिया।"[2] (सूराःअहज़ाब -37)

आप सल्ल० ने मिस्र के हाकिम मुक़ौकिस के तरफ़ से भेजी हुई एक बांदी मारिया बिन्त शमऊन क़िबतिया से जो अरब न थीं आज़ाद करके अपनी ज़ौजियत में लिया। इसी तरह एक दूसरी बांदी रैहाना बिन्त ज़ैद जो कबीले बनू नज़ीर की थीं, इस्लाम कुबूल करने के बाद उनको आज़ाद फरमाया और फिर उनको अपनी ज़ौजियत मे कुबूल किया।[3] और इस तरह इंसानी मसावात (बराबरी) की मिसालें क़ायम कीं कि कोई खातून (महिला) बांदी रही हो तो आज़ाद कर देने के बाद आज़ाद खातून (महिला) के रूतबे में आ जाती है। आप सल्ल० ने यह सब उस सूरत में किया कि दस्तूर के मुताबिक आप उन सबको बांदी रखते हुए बीवी वाला फाएदा उठा सकते थे लेकिन आपने ऊंच नीच खत्म करने के लिए ऐसा किया।

अज़वाजे मुतह्हरात (पाक बीवियों) में सबसे आख़िर में आप सल्ल० की रफीक-ए-हयात (जीवन साथी) बनने का सम्मान मैमूना बिन्त हारिस अलहिलालिया को हासिल हुआ।

बहरहाल आप सल्ल० ने विभिन्न महिलाओं से शादियाँ कुबूल फरमाईं जोकि सबके सब आपकी उम्र के **53** साल गुज़र जाने के बाद के ज़माने मे हुईं उनमें कई का साथ दो तीन साल रहा। किसी के साथ इससे कम किसी के साथ इससे ज़्यादा। लेकिन सब सिर्फ आपकी मुबारक ज़िंदगी के आखिरी ८-१० साल के अन्दर अमल में आया जो कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र की **53** साल से **63** की बीच की मुद्दत है।

---

(1) तारीख तबरी 3/164, ज़ादुल मआद 1/106
(2) तारीख तबरी 3/165
(3) ज़ादुल मआद 1/108

www.abulhasanalinadwi.org

आप अपनी उन बीवियों के मामले में मदीने के निवास की सूरत में बराबरी व इंसाफ से काम लेते थे और उसके लिए समय को बांटने का तरीक़ा एख्तियार करते और जब सफ़र का मौक़ा आता तो अपनी अज़वाजे मुतह्हरात के दरमियान कुरआ़ डाल कर जिसका नाम कुरआ़ में आता उसी को साथ ले जाते। इस तरह हर एक को सफ़र की रिफाक़त (साथ) का मौका मिलता और यह सब अल्लाह तआला की "वही" (ईश्वरवाणी) के मुताबिक होता था। खालिस अपनी मर्ज़ी से नहीं होता था और ज़ाहिर है कि अल्लाह तआला की तरफ से बताया गया जो अमल भी आप करते थे, उसमें अल्लाह तआला की तरफ से कोई हिकमत रखी गयी होती थी।

आप सल्ल० की हर रफीक-ए-हयात की अपनी खुसूसियत और एहमियत थी, जिसमे कोई इफादियत और हिकमत रखी गयी होती वह आप सल्ल० को हासिल होती थी। आपको उम्मत की रहनुमाई और अल्लाह तआला की तरफ से तय की गयी ज़िंदगी के लिये काबिले इत्तिबा (अनुसरण योग्य) नमूना होना था। शौहर और बीवी के बीच विभिन्न प्रकार के जो मसाएल उठते हैं उनके सिलसिले में शरीअत का जो हल होता उसके लिए आप सल्ल० की ज़िंदगी से नमूना होना था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इज़दिवाजी ज़िंदगी (वैवाहिक जीवन) के अनदुरूनी हालात के सिलसिले में इन्हीं पाक बीवियों से नबवी नमूने का इल्म शरअी हुक्म के रूप में सामने आता था। अतः हज़रत आयशा रज़ि० के ज़रिये बहुत से हालात में नबवी आर्दश का स्पष्टीकरण हुआ। इसके अलावा बीवी से शौहर को इंसानी स्तर पर जो ताकत और तसकीने खातिर मिलना इंसान की प्राकृतिक ज़रूरत है वह भी आप सल्ल० को अपनी विभिन्न बीवियों से विभिन्न मौक़ो पर हासिल होती रही।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबूवत मिलने पर जिस तकवियत और तसकीने खातिर की इंसानी ज़रूरत थी, वह हज़रत खदीजा बिन्त खुवैलिद रज़ि० से मिली, जिसका तज़किरा आप सल्ल० ने हज़रत आयशा रज़ि० से किया। इस तरह सुलह हुदैबिया के मौके पर आप सल्ल० को संदेह हुआ कि आपके असहाब आप सल्ल० के कहने पर अमल नहीं कर रहे हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने आप सल्ल० को ऐसा मशविरा दिया जिससे मसअला हल हो गया और सबने आप सल्ल० के इरशाद के मुताबिक कुर्बानी के जानवरों की कुर्बानी कर दी और बाल बनवाए गये।[1]

---

(1) सही बुखारी, किताबुशशुरूत..... अबूदाऊद 2725, मुसनद इमाम अहमद 4/323, 326, 328, 3331, ज़ादुल मआद 3/295

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत आयशा रज़ि० (हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ़ की एक साल बाद नबूवत के 11वें साल शव्वाल में आपके निकाह मे आईं) से दूसरे पहलूओं मे मदद मिली और आप सल्ल० की निजी ज़िंदगी के मामलात में अहकाम मालूम हुए। उन्होंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आमाल व अकवाल के सिलसिले में 2010 हदीसें रवायत कीं जिनसे शरीअत के बहुत से मसाएल लिये गये हैं। इसके अलावा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद 48 साल तक हयात रहीं और इस मुद्दत मे औरतों की दीनी तरबियत और दूसरी तरबियती कोशिशों को अंजाम दिया। 17 शाबान 57 या 58 हिजरी में इन्तिकाल किया और बक़ी में दफ़न हुईं।

हज़रत हफ़सा रज़ि० भी अपनी नेक अमली के साथ दीन की तकवियत का ज़रीअ़ बनीं और उनसे 200 हदीसें मरवी हैं। शाबान ३ हिजरी में आप सल्ल० की ज़ौजियत में आयीं। शाबान 45 हिजरी में मदीना मुनव्वरह में 60 साल की उम्र में इन्तिकाल किया।

उम्मुल मसाकीन हज़रत ज़ैनब बिन्त खुज़ैमा से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 4 हिजरी में निकाह किया। शादी के तीन महीने बाद रबीउस्सानी 4 हिजरी में वफ़ात पा गयीं और बक़ी में दफ़न हुई।

उम्मे सलमा हिन्द बिन्त अबीउम्य्या शव्वाल 4 हिजरी में आपकी ज़ौजियत में आयीं और 84 साल की उम्र में 59 हिजरी मे इन्तिकाल किया और बक़ी में दफन हुईं।

हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश के ज़रिये मुतबन्ना (मुंह बोला बेटा) बनाने और उसके असर से जो रस्म क़ायम थी और आज़ादशुदा और बांदी और शरीफ़ज़ादी के दरमियान फ़र्क़ किये जाने को खत्म करने की मिसाल क़ायम हुई। ज़ूकाअदा 5 हिजरी में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आईं और 53 साल की उम्र के 20 हिजरी में वफ़ात पा गयीं। बक़ी में दफ़न हुईं।

जुवैरिया बिन्त हारिस 5 या 6 हिजरी में आपके निकाह में आयी 65 साल की उम्र में 56 हिजरी मे इन्तिकाल किया और बक़ी में दफ़न हुईं।

हज़रत उम्मे हबीबा रम्ला बिन्त अबू सुफ़ियान और उनके शौहर अब्दुल्लाह बिन जहश दोनों ने इस्लाम पर मक्के वालों की तरफ से जो तकलीफें उठायी थीं उनसे मजबूर हो कर हबशा हिजरत की थी। हबशा में अब्दुल्लाह बिन जहश ईसाई औरतों के फितने में पड़कर मुरतद् (विधर्मी) हो गये थे। उनसे हज़रत रम्ला की ज़ौजियत खत्म हो जाने पर जो सदमा उनको हुआ उसकी पूर्ति हुजूर सल्ल० ने उनको अपनी ज़ौजियत में ले कर फरमाई। हज़रत रम्ला ने हुजूर सल्ल० की बेहतर रफीक-ए-हयात (जीवन साथी) के तौर पर ज़िंदगी गुज़ारी।

www.abulhasanalinadwi.org

सफ़िया बिन्त हुय्यि बिन अख्तब को हुज़ूर सल्ल० ने वाकिये ख़ैबर के बाद सन् ७ हिजरी में अपनी ज़ौजियत में लिया। 50 हिजरी में इन्तिक़ाल किया और बक़ी में दफ़न हुईं।

मैमूना बिन्त हारिस उमरतुलकज़ा के साल (ज़ूक़अ़दा 7 हिजरी) आप सल्ल० की ज़ौजियत मे आईं मुकामे सरिफ़ में ६१ हिजरी मे इन्तिकाल किया और वहीं दफ़न हुईं।

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम बीवियों ने अपनी अपनी जगह आप सल्ल० को अपनी रिफ़ाक़त से तक़वियत और तसकीन का फर्ज अंजाम दिया और नबूवत के फैले हुए और तरह तरह के कामों को पूरा करने में हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी के निजी दायरे में मदद पहुंचाई। अज़वाजे मुतह्हरात में से दो हज़रत खदीजा और उम्मुल मसाकीन ज़ैनब का इन्तिकाल हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी में हुआ। बक़ियः आप सल्ल० की वफ़ात के बाद हयात रहीं।

अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तौर तरीक़ को क़यामत तक आने वालों के लिए आप सल्ल० की शरीअत और दीन की ताबेदारी के लिए नमूना क़रार दिया। इस लिए आप सल्ल० के मुख़तलिफ अंदाज और तरीके इंसानी ज़िंदगी में पेश आने वालें हालात में रहबरी का ज़रिया रखते हैं, किसी को ज़ौजियत में लेने के सिलसिले में किस तरह की सूरतें पेश आ सकती हैं उन सूरतों में क्या किया जा सकता है वह आप सल्ल० के नमूनों से हासिल होगा।

आम इंसान के लिए अगर एक से ज़्यादा बीवी है तो दोनों के दरमियान पूरा इंसाफ बरतना कितना मुश्किल होता है। इसके बजाए किसी के साथ बराबरी का मामला हो तन्हा यह बात नबी सल्ल० का बहुत बड़ा मुजाहिदा था। जिसको देख कर आदमी के लिये जिसकी एक से ज़ायद बीवियाँ हों नबी सल्ल० का उसवा (आर्दश) किस क़दर हिम्मत और हौसला दिलाने वाला है। इस तरीक़े से बीवी के मामले में जो मुन्सिफ़ाना और इंसानी जज़्बे को इख्तियार करने की तल्क़ीन है इसके लिए वह रहनुमाई करने वाला नमूना है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ाहिदाना ज़िंदगी, संयमी जीवन और मोहतात सीरत व अखलाक़ और दुनयावी राहत व आराम से बेरग़बती का तरीक़ा इख्तियार कर रखा था। इसमें अपनी बीवियों को भी शरीक रखा। उनसे फरमाया अगर वह आराम चाहती हैं तो आप उनको अपनी ज़ौजियत (निकाह) से आज़ाद कर सकते हैं और इसके लिए उनको ग़ौर करने का मौक़ा दिया लेकिन उन्होंने आप सल्ल० के साथ रह कर तकलीफ़ में ज़िंदगी गुज़ारने को तरजीह

www.abulhasanalinadwi.org

(प्रमुख्ता) दी और आपके साथ एकता और सहयोग के साथ समय गुज़ारा और उत्कृष्ट आचरण रखने वाले कुनबे का सबूत दिया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद

हुज़ूर सल्ल० के साथ हज़रत खदीजा रज़ि० की रिफाकत 25 साल रही। १५ साल नबूवत से पहले और 10 साल नबूवत के बाद। इस दरमियान में उनसे आप सल्ल० की कई औलादें हुई। साहबज़ादे हज़रत कासिम तय्यब ताहिर और हज़रत अब्दुला हुए, जो अपने बचपने की उम्र में इन्तिकाल कर गये और चार साहिबज़ादियाँ हुईं, जिनमें सबसे बड़ी ज़ैनब रज़ि० हुईं जो बेसते नबूवत से 10 साल पहले पैदा हुईं। उनकी शादी अबुल आस बिन रबी बिन लक़ीत से हुई और हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी ही में सन् 8 हिजरी में इन्तिकाल हुआ। उनसे एक बेटी उमामा हुईं और एक बेटे अली हुए।[1]

आप सल्ल० की दूसरी साहबज़ादी हज़रत रूक़य्या रज़ि० हुईं जो नबूवत से 8 साल पहले पैदा हुईं और उनकी शादी अबू लहब के बेटे उतबा से हुई। आप सल्ल० को नबूवत मिलने पर अबू लहब ने जो दुश्मनी इख्तियार की उसी सम्बन्ध में उसने ज़बरदस्ती तलाक़ दिलवा दी। फिर उनकी शादी हज़रत उस्मान रज़ि० से हुई और उनका भी इन्तिकाल आप सल्ल० की हयात ही में हिजरत के दूसरे साल हुआ।[2]

आप सल्ल० की तीसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि० हुईं। उनकी पैदाईश भी नबूवत से पहले हुई। उनकी शादी अबू लहब के दूसरे बेटे उतैबा से हुई और उनसे भी अबू लहब ने अपने बेटे से तलाक़ दिलवादी और जब हिजरत के दूसरे साल हज़रत रूकय्या रज़ि० का इन्तिकाल हुआ और हज़रत उस्मान रज़ि० के यहां गुंजाईश निकल आयी तो हुज़ूर सल्ल० ने उनकी शादी भी उनसे कर दी। इस तरह हज़रत उस्मान रज़ि० आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो साहबज़ादियों के शौहर हुए। इसी बिना पर उनको "ज़ुननूरैन" का खिताब हासिल हुआ। उन साहबज़ादी का भी इन्तिकाल हुज़ूर सल्ल० की हयात तय्यबा में ही हो गया यह सन् ६ हिजरी का वाक़िया है।[3]

हुज़ूर स०अ० की चौथी साहबज़ादी हज़रत फातिमा रज़ि० हुईं जो नबूवत की 5 साल पहले पैदा हुईं और उनकी शादी हज़रत अली रज़ि० से हुई। यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे छोटी साहबज़ादी थीं और

---

(1) अलबिदाया वन–निहाया 5/307
(2) सुबुलुल हुदा वररशाद फ़ी सीरते खैरिल इबाद, लेखक मुहम्मद बिन यूसफ, सालिही शामी 11/29–32
(3)) " " 33–35

www.abulhasanalinadwi.org

उनसे ही हुजूर सल्ल० की नस्ल चली। दो बेटे हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि० हुए। यह हुजूर सल्ल० की हयात तय्यबा में रहीं, अलबत्ता आप सल्ल० की वफ़ात के छः माह बाद इन्तिक़ाल कर गयीं। उनका साथ हुजूर सल्ल० के साथ तमाम उम्र रहा क्योंकि शादी से पहले तो रहा ही था शादी के बाद भी रहा क्योंकि हज़रत अली आप सल्ल० के साथ ही रहते थे। इस लिए आप सल्ल० का भी साथ रहा, उसकी वजह से हुजूर सल्ल० की शफ़क़त और मुहब्बत उनको बहुत मिली और खुसूसी तरबियत हुई। फिर इसी ताल्लुक से उनके साहबज़ादों हज़रत हसन व हज़रत हुसैन ने भी हुजूर सल्ल० की शफ़क़त व तरबियत का बड़ा हिस्सा पाया और इसी के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको आख़िरत की फिक्र और दुनिया से बेताल्लुक़ी का आदी बनाया और इस ताल्लुक से भी आप सल्ल० ने हज़रत फातिमा और दोनों साहबज़ादिगान को बहुत मुहब्बत के अल्फाज़ से नवाज़ा।[1] आप सल्ल० उनसे मुहब्बत सिर्फ नवासों की तरह नहीं बल्कि पोतों की तरह करते थे और वह दोनों भी बहुत सआदतमंद और सालेहतरीन सीरत व अख़लाक़ के हुऐ और उनसे वही नमूना ज़ाहिर हुआ जो एक सर्वश्रेष्ठ नबी के नवासों और पोतों से ज़ाहिर होता है।

हुजूर सल्ल० की यह सब साहबज़ादियाँ और साहबज़ादे हज़रत खदीजा रज़ि० के बतन शरीफ से थे।[2] अलावा एक साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम के जो हिजरत के कई साल बाद हज़रत मारिया क़िबतिया रज़ि० के आप की ज़ौजियत में आने पर पैदा हुऐ लेकिन वह भी बचपने ही में इन्तिकाल कर गये। ये हज़रत खदीजा की वफात के कई साल बाद पैदा हुऐ थे।[3]

हज़रत फातिमा रज़ि० की ज़िंदगी भी ज़्यादा लम्बी नहीं हुई वह अपने वालिद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयात के सिर्फ छः माह बाद इन्तिक़ाल कर गयीं और अपने दोनों बेटों को यतीम छोड़ कर गईं जिनमें एक की उम्र उस वक्त 7 साल और दूसरे की सिर्फ 8 साल थी। वह अपने नामवर वालिद की संरक्षता में बढ़े और जवान हुऐ उनके वालिद हज़रत अली हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहले खालीफ़ा हज़रत अबूबकर रज़ि० से उम्र में 27 साल छोटे थे और दूसरे खालीफ़ा हज़रत उमर रज़ि० से 17 साल और तीसरे खालीफा हज़रत उस्मान रज़ि० से भी उम्र में छोटे थे और हुजूर सल्लल्लाहु

---

(1) अल–बिदाया वन–निहाया 5/308, सुबुलुलहुदा वररशाद फ़ी सीरते ख़ैरिल इबाद 11/36

(2) सुबुलुल हुदा वररशाद फ़ी सीरते ख़ैरिल इबाद, लेखक मु0बिन यूसुफ सालही शामी 11/55–82

(3) अलबिदाया–वन–निहाया 5/309, अनसाबुल अशराफ़ 448–453

www.abulhasanalinadwi.org

अलैहि वसल्लम के दामाद होने की सिफत में हज़रत उस्मान रज़ि० उनके शरीक थे। इस तौर पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दूसरी भी बेटियाँ एक के बाद दूसरी उनके निकाह में आयी थीं। इस तरह वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोहरे दामाद हुऐ। हज़रत अली रज़ि० उनके बाद खलीफ़ा हुए। इस तरह यह चार खलीफ़ा खुलफा-ए-राशिदीन कहलाए और उन चारों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सीखा हुआ तरीक-ए-हुकूमत और इमारत अच्छे तरीके से इख्तियार किया और दुनिया के सामने उसको नमूने के तौर पर पेश किया। इन चारों की खिलाफ़त का ज़माना लगभग तीस साल रहा।

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय - नौ

नबी-ए-करीम सल्ल० की विशेषताएं एवं स्वभाव व आचार

जब अल्लाह तआला किसी क़ौम के सुधार के लिए किसी को नबी की हैसियत से ऐसे इंसान को चुनता है जो अक़्ल व समझ, चरित्र व आचरण, हौसला व हिम्मत के लिहाज़ से सबमें मुमताज़ (विशिष्ट) होता है और यह इम्तियाज़ (विशिष्टता) दरअसल खुदा का ही दिया हुआ होता है। ताकि वह सुधार व उपदेश के सुपुर्द किये हुए काम को अंजाम दे सके। इसके लिए उसको आसमानी आदेश दिये जाते हैं उन्हीं के मुताबिक वह अपनी क़ौम को रूश्द व हिदायत (सद्मार्ग) की तरफ बुलाता है। अल्लाह तआला की तरफ़ से किसी को मंसबे नबूवत के मिलने से पहले उसकी ज़िंदगी का ज़माना गुज़रता है उसमें उसके रब की तरफ से इंसानी खूबियाँ इंसानी फ़ितरत के दायरे मे रखी गयी होती हैं और वह उच्चतर विशेषताएं होती हैं। उन विशेषताओं को उनकी क़ौम देखती है और पसंद करती है और क़ौम के अन्दर रहने की वजह से क़ौम उसकी उच्चतर और नेक ख़सलतों से वाक़िफ़ (परिचित) हो चुकी होती है।

लिहाज़ा जब वह नबूवत मिलने पर रूश्द व हिदायत की दावत देता है तो उसकी दावत को उसकी क़ौम के ज़िद्दी और नफ़्स परस्त लोग सिर्फ़ यह कह कर रद् कर दिया करते हैं कि यह शख़्स अब ऐसी बाते करने लगा है जो हमारे बड़ो ने नहीं की। यह हमारे बड़ों के तरीक़े से हट गया है लेकिन इसी के साथ साथ वह उसकी नेक और इंसानी ख़सलतों से इन्कार नहीं कर पाते हैं। लिहाज़ा वह लोग अपनी मज़हबी आदतों और तौर तरीक़ को जिनको अपनी पैदाईश के वक़्त से इख़्तियार किये होते हैं सिर्फ ताअसुब और हठधर्मी में उन आदतों और तौर तरीक के ख़िलाफ़ कोई बात सुनने को तैयार नहीं होते है। इसी के साथ वह नबी के अख़लाक़ी व इंसानी विशेषताओं से इन्कार भी नहीं करते हैं। नबी उनसे कहता कि भाई तुम हमको अच्छी तरह जानते हो फिर भी मेरी बात की तरफ ध्यान नही देते हो। इसी की तरफ क़ुरआन मजीद के यह आयत इशारा करती है :

अनुवाद :-

"मैंने तुममें इससे पहले एक उम्र गुज़ारी है ताज्जुब है तब भी तुम नहीं समझते" (सूरा यूनुस - **16**)

www.abulhasanalinadwi.org

नेक नियती, शराफत, पक्का इरादा, सब्र व हिम्मत, मज़बूती अच्छा मामला, हमदर्दी व अखलाक़, नबी की वह खूसुसीयात हैं जिनको जो भी ज़रा निष्पक्ष होकर उनकी बात सुनता है, तो मानने पर मजबूर हो जाता है।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यही मामला था कि आप ४० साल उनमें महबूब (प्रिय) और पसंदीदा रहे थे। उसके बाद जब आप उनके ग़लत रिवाज और बिगड़े हुऐ मज़हब से रोकने और अच्छे अख़लाक़ और मज़हब की तरफ़ दावत देने लगे तो वह सब उनसे नाराज़ हुए। लेकिन इस बात से सख्त मज़हबी दुश्मनी रखने के बाद भी उनमें से कुछ न कुछ लोग उनकी बात पर ग़ौर करते और आप सल्ल० की दावत कुबूल करते। क्योंकि आप सल्ल० की इंसानी हमदर्दी, सच्चाई और पाक दामनी और अच्छे आचरण से खूब परिचित थे। लिहाज़ा जो शख़्स भी निष्पक्ष हो कर आप सल्ल० की बात सुनता आप सल्ल० का गरवीदा (मोहित) हो जाता यहां तक की आप सल्ल० को नुक़सान पहुंचाने की नीयत से आने वाला भी आता, आप सल्ल० के सदु व्यवहार को देखता तो उसमें अचानक तबदीली आ जाती फिर भी क़ौम की बड़ी तादाद (संख्या) आपकी बात सुनने के लिए तैयार नहीं होती थी। अपने कानों में रूई डाल लेते कि न सुनेंगे और फिर आपको उस पैग़ाम से रोकने के लिए सख़्त रवय्या इख़्तियार करते और ज़ुल्म करते।

आप सल्ल० पर जब नबूवत की ज़िम्मेदारी पड़ी तो आप सल्ल० ने उसकी गिराँबारी महसूस करते हुए फिक्रमंदी का इज़हार अपनी ज़ौजा मुहतरमा हज़रत खदीजतुल कुबरा रज़ि० से किया तो उन्होंने यह कह कर तसल्ली दी और इत्मिनान दिलाया कि आप परेशान न हों। खुदा की क़सम अल्लाह तआला आपको कभी ज़लील व रूसवा (अपमानित) न करेगा। आप सल्ल० सिलह रहमी और रिश्तेदारी का पास व लिहाज़ करते हैं, दूसरो का बोझ हलका करते हैं, मोहताजों के काम आते हैं, मेहमान की ज़ियाफ़त (सत्कार) खातिर मदारात करते हैं। राहे हक़ (सत्य मार्ग) की तकलीफ़ों और मुसीबतों में मदद करते हैं।[1]

उम्मुलमोमिनीन हज़रज खदीजतुल कुबरा रज़ि० ने यह बात अक़्ले सलीम (शुद्ध बुद्धि) और फितरते सहीहा (उचितप्रकृति) और अपनी ज़िंदगी के तजुर्बो (अनुभवों) और लोगों से जानकारी की बुनियाद पर कही थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आपकी नेक आदतों और सच्चाई और अमानतदारी की वजह से क़ौम की तरफ से "अस्सादिकुल अमीन" (सत्यवादी, विश्वस्नीय) का खिताब (उपाधि) मिला था कि आप सल्ल० अति सच्चे और अति अमानतदार थे। इसी लिए आप सल्ल० से अदावत रखने के बावजूद आपकी

---

(1) सही बुखारी, बाब कैफ़कानाा बदइल वही इला रसूलिल्लाह सल्ल0

www.abulhasanalinadwi.org

दूसरी बात का सब सत्कार भी करते थे और आप सल्ल० के पास अमानतें भी रखाते थे। आप सल्ल० मदद और हमदर्दी के मौक़ों पर सबका ख़्याल रखते थे यहां तक कि काबा के नवनिर्माण के अवसर पर आप सल्ल० ने भी सबके साथ मिलकर पत्थर उठाए और किसी अच्छे उद्देश्य के लिए मशविरा होता तो उसमें शरीक होते। किसी को अचानक मुसीबत या परेशानी होती तो मदद करते। इसकी एक मिसाल यह है कि एक शख्स जिससे अबू जहल ने ऊंट खरीदे थे और उसकी कीमत अदा करने में बहुत टाल मटोल का रवय्या इख्तियार कर रखा था जब भी वह कीमत लेने आता, तो उसको टाल जाता। कुरैश के नवजवानों की एक बैठक में उसने यह बात रखी लोगों को मज़ाक सूझा कि अबू जहल का मामला है कि वह आप सल्ल० का बहुत दुश्मन बना हुआ है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उससे भिड़ा दिया जाए और तमाशा देखा जाए उस शख्स से कहा कि फलाँ साहब जो सामने बैठे हैं उनसे जाकर मदद लो। वह शख्स गया और आप सल्ल० से अबू जहल की बदमामलगी (दुर्व्यवहार) का शिकवा किया और मदद चाही। आप सल्ल० के लिए अगरचे यह बात बहुत दुश्वार थी कि अबू जहल से जाकर फरियाद करें या फरमाईश करें कि उसकी क़ीमत अदा कर दें मगर आप सल्ल० ने उसकी महदर्दी के जज़्बे के तहत ख़तरे की परवाह न की और उससे कहा कि चलो हम तुम्हारे लिए कोशिश करते हैं और अबू जहल के मकान पर जाकर दरवाज़ा खटकटाया और उसके निकलने पर उससे कहा कि इनकी कीमत अदा कर दो। उस पर आप सल्ल० को जुरअत (साहस) का ऐसा रोब बैठा कि उसने कहा कि अच्छा अदा करते हैं और घर के अन्दर जा कर क़ीमत ला कर अदा कर दी। अबू जहल उसके बाद अपने साथियों में आया तो साथियों ने अबू जहल का मज़ाक उड़ाया। तुम यूँ मुहम्मद सल्ल० के खिलाफ बहुत ज़ोर दिखाते हो यहां दब गऐ। उसने इक़रार किया कि मैं मरऊब (भयभीत) हो गया और ऐसा करने पर मजबूर हो गया। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इस तरह का रवय्या अपने ज़ाती फायदे के लिए नहीं होता था। तकलीफ उठाते थे और बदला लेने का खयाल भी नहीं आता था। लेकिन किसी को ज़रूरत पड़ जाए तो उसकी मदद करते थे। सबके साथ नरम रवय्या रखते थे। इस का इज़हार स्वयं अल्लाह तआला की ओर से किया गया है :-

अनुवाद :-

"सब यह अल्लाह की रहमत है आप उनके लिए नरम स्वभाव वाले हैं और अगर ज़बान व दिल के सख्त होते तो यह सब आपके पास से छूट जाते सो आप उनके कुसूर मआफ कीजिए और उनके लिए मग़फ़िरत की दरख्वास्त भी करते रहिये और काम चलाने में उनसे मशविरा भी कर लिया करें। फिर जब आपका पक्का इरादा हो जाया करे तो अल्लाह तआला पर भरोसा करें, बेशक

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह तआला भरोसा करने वालों से मुहब्बत करता है।" (आले इमरान - 159)

आप सल्ल० के साथ अगर किसी की ज़ाती दुश्मनी होती तो उससे आप बदला लेने का मामला न करते लेकिन सैद्धान्तिक और दीनी हिकमत हो तो फिर आप सल्ल० का रवय्या सख्त होता। आपकी विशेषता में जो बात बयान की गयी है उसके अल्फाज़ यूँ आये हैं : -

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहू आप सल्ल० के ऊंचे अख़लाक के बारे में बताते हुए कहते हैं कि :-

"मैंने आपको किसी ज़ुल्म व ज़्यादती का बदला लेते नही देखा, जब तक की अल्लाह की निर्धारित सीमाओं की खिलाफवर्ज़ी न हो और उसके हुक्मों की इज़्ज़त पर आँच न आए हाँ अगर अल्लाह तआला के किसी हुक्म को पामाल किया जाता और उसके गौरव पर आंच आती तो आप उसके लिए हर व्यक्ति से अधिक गुस्सा होते।"

हज़रत अनस बिन मालिक बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० बहुत दयालु और दयावान थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कोई ज़रूरतमंद आता तो आप उससे वादा ज़रूर करते और अगर कुछ होता तो उसी समय उसकी ज़रूरत पूरी फ़रमाते। एक बार नमाज़ खड़ी हो चुकी थी कि एक देहाती आगे बढ़ा और आप सल्ल० का कपड़ा पकड़ कर कहने लगा : मेरी एक मामूली सी ज़रूरत बाक़ी रह गयी है, मुझे डर है कि कहीं भूल न जाऊँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके साथ तशरीफ ले गए जब उसने अपना काम कर लिया तो आप सल्ल० वापस तशरीफ लाए और नमाज़ अदा फ़रमाई।

आप सल्ल० की सहनशीलता कुव्वतेबर्दाश्त, कुशादा दिली और सब्र व दृढ़ता के वाक़िआत में आप सल्ल० के खादिम हज़रत अनस की वह शहादत है जो उन्होंने इस सिलसिले मे दी है। उस वक्त वह बहुत कमसिन थे, उन्होंने कहा : मैंने नबी-ए-अकरम सल्ल० की 10 साल खिदमत की। आप सल्ल० ने मेरी किसी बात पर कभी न टोका और न यह फ़रमाया कि फ़लां काम तुमने क्यों किया और फलां काम क्यों न किया?

हज़रत उमर रज़ि० रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फरमाया : मेरी इस तरह आगे बढ़ कर तारीफ व बड़ाई न करो, जिस तरह नसारा ने हज़रत ईसा बिन मरियम अ० के साथ किया था। मैं तो सिर्फ एक बन्दा हूँ। तुम मुझे अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल कहो।[1]

---

(1) सही बुखारी किताबुल अंबिया

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अली औफा रवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० को इसमें कोई संकोच और लज्जा न होती थी कि आप सल्ल० किसी गुलाम या किसी बेवह के साथ चलें यहां तक की उसकी ज़रूरत पूरी हो जाए।[1]

हज़रत अनस कहते है : "मदीने की लौंडियों और बांदियो में से कोई आप सल्ल० का हाथ पकड़ लेती और जो कुछ कहना होता कहती थी और जितनी दूर चाहती ले जाती।"[2]

अदी बिन हातिम ताई रज़ि० आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप सल्ल० ने उनको अपने घर बुलाया। बांदी ने तकिया टेक लगाने के लिए पेश किया। आप सल्ल० ने उसको अपने और अदी के दरमियान रख दिया और खुद ज़मीन बैठ गए। हज़रत अदी रज़ि० कहते है "इससे मैं समझ गया कि आप सल्ल० बादशाह जैसे शान व शौकत वाले नही हैं।"[3]

हज़रत अनस रज़ि० बयान फरमाते हैं : "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बीमार का हाल पूछते थे, जनाज़े में शरीक होते थे, और गुलाम की दावत कुबूल फरमाते थे।"[4]

हज़रत जाबिर रज़ि० बयान करते हैं : "रसूलुल्लाह सल्ल० कमज़ोर के ख़्याल से अपनी रफ़्तार सुस्त फरमा देते थे और उसके लिए दुआ फरमाते थे।"[5]

हज़रत अनस रज़ि० रवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फरमाया कि मैं बंदा हूँ, बंदे की तरह खाता हूँ और बंदे की तरह बैठता हूँ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुद घर की सफाई फरमा लेते, ऊंट को बांध लेते और अपने जानवर को चारा भी दे देते। अपने खिदमतगार (सेवक) के साथ खाना खाते ओर आटा गूंधने में उसका हाथ बटाते और बाज़ार से सौदा भी ले आते।[6]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊंचे अख्लाक़ और पवित्र विशेषताओं का तत्वपूर्ण बयान

रसूलुल्लाह सल्ल० के ऊंचे अख्लाक और पवित्र विशेषताओं और शरीफाना आदतों का ज़िक्र हिन्द बिन अबी हाला रज़ि० ने (जो उम्मुल मोमिनीन

---

(1) अलबैहक़ी, बाब तवाज़ौ रसूलुल्लाह सल्ल0
(2) मुसनद अहमद 3/198–215, जमउलफ़वाएद, किताबुल नमक़िब बाब सिफ़ातिहि व अख़लाक़िहि
(3) ज़ादुल मआद 1/43
(4) शमाइलुत तिरमिज़ी, बाबु तवाजिइन नबी सल्ल0
(5) तरग़ीब व तरहीब–मुनजिरी।
(6) किताबुश शिफ़ा, पृ0 101

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत ख़दीजा के बेटे और हज़रत हसन और हुसैन रज़ि० के मामू हैं, बहुत व्यापक और सारगर्भित शब्दों में किया है। उनके अल्फाज़ यह हैं :-

"रसूलुल्लाह सल्ल० हर समय आख़िरत की सोच में रहते जो प्रायः निरन्तरता के साथ क़ायम था जैसे किसी समय भी आप सल्ल० को चैन हासिल नहीं। अक्सर देर तक खामोश रहते, बिना ज़रूरत न बोलते, बातचीत शुरू करते तो शब्दों को पूरा पूरा अदा करते और इसी प्रकार बात समाप्त करते। आपकी बातचीत और बयान बहुत साफ और दो टूक होता। बातचीत न बे ज़रूरत लम्बी होती और न बहुत मुख़्तसर। आप नरम मिजाज़ थे और नरम बात करने वाले थे। सख़्त मिज़ाज और बेमुरव्वत न थे। न किसी को अपमानित करते न अपने लिए अपमान पसंद करते। नेअ़मत की बड़ी क़द्र करते और उसको बहुत ज़्यादा जानते। चाहे कितनी ही थोड़ी हो और उसकी बुराई न फरमाते। खाने पीने की चीज़ों की न बुराई करते न तारीफ़। दुनिया और दुनिया से सम्बन्धित कोई भी चीज़ हो तो उसपर आपको कभी गुस्सा न आता। लेकिन जब खुदा के हक़ को दबाया जाता तो उस समय आपके जलाल के सामने कोई चीज़ ठहर नही सकती थी, यहां तक की आप सल्ल० उसका बदला ले लेते। आप सल्ल० को अपने लिए न गुस्सा आता और न उसके लिए बदला लेते। जब इशारा फरमाते तो पूरे हाथ के साथ इशारा फरमाते। जब किसी बात पर ताज्जुब फरमाते तो हाथ को पलटते। बात करते समय दाहिने हाथ की हथेली को बाएँ हाथ के अंगूठे से मिलाते। गुस्से और नागवारी की बात होती तो उस तरफ से मुंह फेर लेते खुश होते तो नज़रें झुका लेते। आपका हंसना ज़्यादातर तबस्सुम (मुस्कुराहट) था जिससे सिर्फ आपके दांत जो बारिश के ओलों की तरह साफ, निर्मल व चमकदार थे दिखाई देते।"

हज़रत अली रज़ि० जो आपके परिवार के एक व्यक्ति थे, आपको बहुत क़रीब से देखा था, और उन्हें आप सल्ल० को जानने के बेहतरीन मौक़े हालिस थे। मानव प्रवृत्ति तथा आचरण की बारीकियों पर उनकी गहरी नज़र थी। साथ ही चरित्र चितरण पर उनको अच्छी क़ुदरत थी। वह आपके महान चरित्र और अख़्लाक़ के बारे मे कहते हैं :-

"आप स्वभाव से बदकलामी, और बेहयाई और बेशर्मी से दूर थे और बनावटी तौर पर भी आपसे ऐसी कोई बात न ज़ाहिर होती थी। बाज़ारों में आप कभी आवाज़ बुलन्द न फरमाते। बुराई का बदला बुराई से न देते। बल्कि क्षमा कर देते। आपने कभी किसी पर हाथ न उठाया सिवाए इसके कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद का मौक़ा हो। किसी नौकर या औरत पर आपने कभी हाथ न उठाया। मैंने कभी आपको किसी ज़ुल्म व ज़्यादती का बदला लेते नहीं देखा। जब तक कि अल्लाह की निर्धारित सीमाओं की खिलाफवर्ज़ी न हो और उसकी

www.abulhasanalinadwi.org

हुरमत (इज़्ज़त) पर आंच न आए। हाँ ! अगर अल्लाह के किसी हुक्म को पामाल किया जाता और उसके गौरव पर आंच आती तो आप उसके लिए हर व्यक्ति से अधिक गुस्सा होते। दो चीज़े सामने होतीं तो हमेशा आसान चीज़ को चुनते। जब अपने घर आते आम इंसानों की तरह नज़र आते। अपने कपड़ों को साफ करते, बकरी का दूध दूहते, अपनी सब ज़रूरतें खुद पूरी करते।"

अपनी ज़बान-ए-मुबारक को महफ़ूज़ रखते और सिर्फ उसी चीज़ के लिए ज़बान से कुछ फरमाते जिसे आपको कुछ सरोकार होता। लोगों की दिलदारी फरमाते और उनका दिल न दुखाते। किसी क़ौम व बिरादरी का सरदार और शरीफ आदमी आता तो उसकी इज़्ज़त करते और उसको अच्छे ओहदे पर नियुक्त करते। लोगों के बारे में कुछ कहते तो बहुत सोच समझ कर कहते और उन्हें आप अपनी संरक्षता और मीठे वचन से महरूम न रखते। अपने साथियों के हालात की बराबर खबर रखते। लोगों से लोगों के मामलों के बारे में पूछते रहते। अच्छी बात की अच्छाई बयान करते और उसे बल प्रदान करते। बुरी बात की बुराई करते और उसे कमज़ोर करते। आपका व्यवहार सम तथा एकसाँ होता। आप किसी बात से ग़फलत न करते, इस ख़्याल से कि कहीं दूसरे लोग भी ग़ाफिल न होने लगें और उक्ता जाएं। हर हाल और हर मौक़े के लिए आपके पास उस हाल के मुताबिक ज़रूरी सामान था। हक़ के मामले में न कोताही करते और न हद से आगे बढ़ते थे। आपके क़रीब जो लोग रहते थे वह लोग सबसे अच्छे और चुने हुऐ होते थे। आपकी निगाह में सबसे ज़्यादा अफज़ल वह था, जिसका अख्लाक आम और सबके लिए हो। सबसे ज़्यादा उसकी क़दर करते जो दूसरों का दुख बांटने और उनकी मदद व सहायता करने में सबसे आगे होता। अल्लाह का नाम लेते हुए खड़े होते और अल्लाह का नाम लेते हुए बैठते। जब कहीं जाते तो जहां जगह मिलती वहीं बैठते और दूसरों से ऐसा ही करने के लिए कहते। अपनी सभा में आए हुए लोगों में से हर व्यक्ति को पूरा सम्मान देते। आपकी सभा में शरीक हर व्यक्ति यह समझता कि उससे बढ़कर आपकी निगाह में कोई और नहीं है। अगर कोई व्यक्ति आपको किसी मक़सद से बिठा लेता या किसी ज़रूरत में आपसे बात करता तो बड़े सुकून के साथ उसकी बात सुनते यहां तक की वह खुद ही अपनी बात पुरी करके चला जाता। अगर कोई व्यक्ति आपसे कुछ मांगता और कुछ मदद चाहता तो बिना उसकी ज़रूरत पूरी किये उसे न लौटाते या कम से कम नरम और मीठे एंव अच्छे प्रकार से जवाब दे देते। आपका सदाचरण तमाम लोगों के लिए आम था। आप उनके हक़ में बाप हो गए थे। हक़ के मामले में तमाम लोग आपकी नज़र में बराबर थे। आपकी मजलिस ज्ञान व भक्ति, हया व शर्म, सब्र व अमानतदारी की मजलिस थी, न उसमें आवाज़ें बुलन्द होती थीं, किसी की बुराईयाँ बयान की जाती थीं न किसी की

www.abulhasanalinadwi.org

इज़्ज़त पर हमला होता, न किसी की कमज़ोरियों का ढिंढोरा पीटा जाता। सब एक दूसरे के बराबर थे और सिर्फ तक़्वे के लिहाज़ से उनको एक दूसरे पर फज़ीलत (प्रमुख्ता) हासिल होती थी। इसमें लोग बड़ों का सम्मान और छोटों के साथ रहम दिली और शफ़क़त का मामला करते थे। ज़रूरतमंद को अपने पर प्राथमिकता देते थे। मुसाफिर और नए आने वाले की हिफाज़त करते और उसका ख्याल रखते थे।

आप सदा खुश रहते थे, बहुत नर्म अख़्लाक और नर्म पहलू थे, न सख्त तबीअत के थे न सख्त बात करने के आदी थे। न चिल्ला कर बोलने वाले न घटिया और बाज़ारू बात करने वाले, न किसी को ऐब लगाने वाले, न तंग दिल कंजूस, जो बात आपको पसंद न होती, उसकी ओर ध्यान ने देते और उसका जवाब भी न देते। तीन बातों से आप सल्ल० ने अपने आपको बिल्कुल बचा रखा था। एक झगड़ा, दूसरे घमंड और तीसरे ग़ैर ज़रूरी बेकार काम। लोगों को भी तीन बातों से आप सल्ल० ने बचा रखा था, न किसी की बुराई करते थे, न उसको ऐब लगाते थे और न उसकी कमज़ोरियों और पोशीदा (गुप्त) बातों के पीछे पड़ते थे। सिर्फ वह बात करते थे जिस पर सवाब की उम्मीद होती थी। आप जब बात करते तो वहां हाज़िर लोग अदब से इस तरह सर झुका लेते थे जैसे लगता था कि उनके सरों पर चिड़ियाँ बैठी हुई हों, जब आप खामोश होते तब यह लोग बात करते। आपके सामने कभी बहस न करते। आपकी मजलिस में अगर कोई आदमी बात करता तो बाकी लोग खामोशी से सुनते यहां तक की वह अपनी बात पूरी कर लेता। आपके सामने हर व्यक्ति की बात का वही दर्जा होता जो उसके पहले वाले व्यक्ति को होता (कि पूरे इत्मीनान से अपनी बात कहने का मौक़ा मिलता और उसी कदरदानी और उसी इत्मीनान के साथ सुना जाता) जिस बात से सब लोग हँसते उस पर आप सल्ल० भी हंसते जिस पर सब तअज्जुब करते आप भी उस पर तअज्जुब करते। मुसाफिर और परदेसी की बेतमीज़ी और हर तरह के सवाल को सब्र व सुकून के साथ सुनते। यहां तक कि आपके साथी ऐसे लोगों का ध्यान अपनी ओर कर लेते। आप फरमाते थे "तुम किसी ज़रूरतमंद को पाओ तो उसकी मदद करो" आप सल्ल० तारीफ उसी व्यक्ति की कुबूल फरमाते जो हद के अन्दर रहता। किसी की बात के दौरान बात न करते और उसकी बात न काटते। हाँ अगर वह हद से बढ़ने लगता तो उसको रोक देते या मजलिस से खुद उठ जाते और इसी तरह उसकी बात समाप्त कर देते।

आप सल्ल० सबसे ज़्यादा खुले दिल, सच्ची बात कहने वाले, नर्म तबीअत और मामलात और व्यवहार में बहुत दयालु थे। जो आपको पहली बार देखता उस पर आपका रोब छा जाता और जब आपके साथ रहता और जान पहचान हासिल होती तो वह आपका दिलदादा और फरेफता हो जाता। आपकी

www.abulhasanalinadwi.org

तारीफ करने वाला कहता है कि न आपके पहले मैंने आप जैसा कोई व्यक्ति देखा न आपके बाद। "सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम"।

अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्ल० को मनमोहक हुस्न व जमाल प्रदान किया था और मुहब्बत व दिलकशी और रोब व हैबत का हसीन व खूबसूरत पैकर बनाया था, हज़रत हिन्द बिन अबी हाला बयान करते हैं :-

"आप बहुत खुद्दार और शान व शौकत वाले थे और दूसरों की निगाह में भी बहुत शान व शौकत वाले। आपका मुखड़ा चौद्धवीं रात के चांद की तरह दमकता था।"[1]

पूर्ण मानवता और समता व संतुलन

आप सल्ल० के एक नवासे (हज़रत ज़ैनब रज़ि० के बेटे) का इन्तिक़ाल होने लगा तो आप सल्ल० की साहबज़ादी ने आप सल्ल० को बुलवाया कि बच्चे का आख़िरी वक़्त है, ज़रा आ जाइये, आप सल्ल० तशरीफ लाए। आपके साथ आपके सहाबा हज़रत सअ़द बिन उबादा, मआज़ बिन जबल, उबै बिन क़अ़ब और ज़ैद बिन साबित रज़ि० भी थे, बच्चा गोद मे लिया उसकी जाकनी (प्राणान्त) की हालत थी, शफ़क़त भरे नाना की आंखों मे आंसू आ गए, एक सहाबी (हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़ि०) मौजूद थे, कहने लगे : आप सल्ल० भी ऐसे प्रभावित होते हैं, फ़रमाया, मैं इंसान हूँ मेरे दिल मे भी मुहब्बत है और इतना भी नही तो वह इंसान क्या। यह अल्लाह की रहमत है। अपने बन्दों में से जिस बन्दे के दिल मे चाहता है रखता, अल्लाह रहम करने वाले बन्दों पर रहम करता है।[2]

इस तरह आप सल्ल० के अल्पायु बेटे हज़रत इब्राहीम का देहान्त हुआ। आप सल्ल० तशरीफ ले गए और देखकर फरमाया मेरी आंखे नम हो रही हैं, दिल ग़मज़दा है लेकिन अपनी ज़बान से सिर्फ वही कहूँगा जिससे मेरा रब राज़ी हो। ऐ इब्राहीम! तेरी जुदाई पर हम ग़मज़दा (शोकग्रस्त) हैं।

इस मौक़े पर सूरज ग्रहण हुआ। लोग कहने लगे कि बहुत बड़े नबी के बेटे के इन्तिक़ाल का यह असर मालूम होता है। हुज़ूर सल्ल० ने सुना तो फरमाया देखो ! यह सूरज चांद अल्लाह के हुक्म के ताबे (अधीन) हैं ये अपने निज़ाम (प्रबंध) के मुताबिक चलते हैं किसी के मरने जीने से उनपर असर (प्रभाव) नहीं पड़ता।[3]

ग़ौर कीजिए ! किस कदर बड़ी बात है कि ऐसे मौके पर आदमी खुश होता है कि हमारी और हमारे बेटे की अहमियत (महत्वता) समझी जा रही है।

---

(1) चयन शमाएल तिरमिज़ी
(2) बुख़ारी, बाबुल जनाएज़ नं0 1284
(3) सही बुख़ारी, किताबुल कुसूफ

www.abulhasanalinadwi.org

हमारे कुछ कहे बग़ैर खुद बखुद लोग अहमियत दे रहे हैं। अच्छा है कहने दिया जाए। नहीं, आप सल्ल० ने इसको बर्दाश्त नहीं किया कि किसी के अक़ीदे में बाल बराबर फर्क आए और वह खुदा के सिवा किसी और को आसमान व ज़मीन, सूरज चांद पर असर डालने वाला समझे।

यह ग़म के मौके की मिसाल थी, खुशी के मौके की भी मिसाल देखिये। आप सल्ल० के महबूब चचाज़ाद भाई हज़रत जाफर रज़ि० हबशा की हिजरत से मुन्तकिल (स्थानांतरित) होकर मदीना पहुंचे। आप सल्ल० उनसे मिल कर बहुत खुश हुए इसी बीच में मुसलमानों की जीत की खुशखबरी पहुंची तो एक तरफ मुसलमानों की खुशी से और दुसरी तरफ़ अपने महबूब और अल्लाह के लिए कुर्बानी देने वाले मोमिन भाई की आमद की खुशी थी। आप सल्ल० ने फरमाया : मैं बता नहीं सकता कि दोनों खुशियों में कौन सी खुशी ज़्यादा है।[1]

आप सल्ल० की इसी व्यापक विशेषता को देखिये कि आप इंसान थे, इंसानियत का तकाज़ा अपनी मुहब्बत के लायक अज़ीज़ के दीर्घकाल वतन वापसी के बाद से खुशी महसूस की जो उनके पूर्ण मानवता की दलील थी। इसी के साथ नबी होने और मुसलमानों के सरबराह होने के ताल्लुक से मुसलमानों की जीत की खबर से भी इस तरह खुशी महसूस की। और हकीकत पसंदी (यर्थाथवाद) की यह बात थी कि दोनों खुशियों का ऐतबार किया। इस तरह अमीर व नायक की हैसियत से खुशी का जो मौका था उसका हक अदा किया और इसी के साथ रिश्तेदारी और बिरादराना मुहब्बत का जो तकाज़ा था उसका भी हक़ अदा किया।

इनायत व मेहरबानी और बर्दाश्त की शक्ति

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बलंद अख्लाक, इनायत व नवाज़िश में सारी इंसानियत के इमाम व पेशवा थे। अल्लाह तआला का इरशाद है : बेशक आप बहुत अज़ीम अख्लाक वाले हैं। हुज़ूर सल्ल० ने खुद इरशाद फरमाया कि : अल्लाह ने मेरी तरबियत फरमाई है और बेहतरीन तरबियत फरमाई है।

हज़रत जाबिर रज़ि० रवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फरमाया : अल्लाह ने मुझे अच्छे अख्लाक और अच्छे कामों की तकमील के लिए नबी बना कर भेजा है।

हज़रत आयशा रज़ि० से आप सल्ल० के अख्लाक के बारे मे पूछा गया तो उन्होंने फरमाया : आप सल्ल० अखलाक में कुरआन का मुजस्सम नमूना थे।

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/359

www.abulhasanalinadwi.org

रहम व करम, कुशादा दिली और कूव्वते बर्दाश्त में आप सल्ल० का जो मुकाम था, वहां तक किसी ज़हन व ख़्याल और तसव्वुर की भी पहुंच नहीं हो सकती। इस जगह चंद मिसालें पेश की जाती है :-

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नवाज़िश व करम और बड़े से बड़े दुश्मन के साथ दिलदारी और एहसान का एक नमूना वह था जो मुनाफिक़ीन के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबैयी बिन सलूल के मामले में इख़्तियार किया। यह आदमी वह था जिसने आप सल्ल० की खुली दुश्मनी के अल्फाज़ इस्तेमाल किये थे और आप सल्ल० के खिलाफ़ खुफ़िया साज़िशों में शरीक रहा था और सब मुसलमान उसके इस रवय्ये से वाकिफ़ थे, उसको मरने के बाद जब कबर में उतारा गया तो उनके बेटे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह जो पूरे मोमिन और रसूलुल्लाह सल्ल० के पूरे वफ़ादार और मुहब्बत करने वाले थे, खवाहिशमंद हुए कि आप सल्ल० उनके बाप के साथ कुछ तवज्जुह फरमा दें तो उनके मोमिन कामिल होने की क़दर में और उनके इकराम (सम्मान) में आप सल्ल० ने इस क़दर रवादारी फरमाई कि आप सल्ल० वहां तशरीफ़ लाये और हुक्म दिया कि उसको कबर से निकाला जाए उसके बाद आप सल्ल० ने उसको अपने घुटनो पर रखा और अपना लुआबे दहन उसपर डाला और अपनी कमीज़ मुबारक उसको पहनाई।[1]

हज़रत अनस इब्ने मालिक रज़ि० से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ चल रहा था आप स०अ० उस वक़्त नजरान की चादर पहने हुए थे जिसके किनारे मोटे थे, रास्ते में एक आराबी आपको मिला और आप सल्ल० की चादर पकड़कर इस ज़ोर से खींचा कि आपकी गर्दन पर उसकी वजह से निशान पड़ गए फिर उस आराबी ने कहा ऐ मुहम्मद ! अल्लाह का जो माल आपके पास है वह मुझे देने का हुक्म दिजिए। आप सल्ल० ने उसकी तरफ मुड़ कर देखा और हंसे और हुक्म दिया कि इसको कुछ दिया जाए।

हुज़ूर सल्ल० ने ज़ैद बिन सअना यहूदी से एक मौके पर हज़रत बिलाल रज़ि० के ज़रीये कर्ज़ लिया था जो आप सल्ल० ज़रूरतमंदो की मदद के लिए अपने पास कुछ न होने की सूरत में लेते थे, यह भी एक ज़रूरत मंद के लिए था और उसकी मुद्दत भी तय हो गई थी लेकिन वह समय पूरा होने से पहले ही आपके पास आया और कर्ज़ का मुतालबा किया और आपका कपड़ा अपनी मुट्ठी में पकड़ कर आप सल्ल० के शान-ए-मुबारक से ज़ोर से खीचा और अपनी मुट्ठी मे कपड़े को ले लिया और सख्त अल्फाज़ में बात की। फिर कहा कि तुम अब्दुल मुत्तलिब की औलाद बड़े टाल मटोल करने वाले हो। हज़रत उमर

---

(1) सही बुखारी, किताबुल जनाएज़

www.abulhasanalinadwi.org

रज़ि० ने उसको झिड़का और सख़्त लहजे में बात की, लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल० का रवय्या मुस्कुराहट का रहा। आप सल्ल० ने हज़रत उमर रज़ि० से फरमाया : उमर! हम और यह शख्स तुम्हारी तरफ से दूसरे रवय्ये के मुसतहिक थे। मुझे तुम कर्ज़ जल्द अदा करने का मशविरा देते और इसको नरम तरीके से तकाज़ा करने को कहते। फिर आप सल्ल० ने फरमाया इसकी आदायगी की मुद्दत में अभी तीन दिन बाक़ी हैं। बहरहाल आप सल्ल० ने हज़रत उमर रज़ि० को उसके कर्ज़ की आदायगी का हुक्म दिया और बीस साअ ज़्यादा देने को फरमाया कि यह उसका मुआवज़ा है जो हज़रत उमर रज़ि० ने उसको डरा दिया था और फिर यही बात उसके इस्लाम लाने का सबब बन गयी।[1]

जानवरों के साथ नरमी

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बेज़बान जानवारों के साथ भी नरमी का हुक्म फरमाते थे। शद्दाद बिन औफ कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हर चीज़ के साथ अच्छा मामला करने और नरम बरताव करने का हुक्म दिया है। इसलिए अगर जानवर को ज़बह भी करो तो अच्छी तरह करो। तुममें जो ज़बह करने जा रहा है वह अपनी छुरी पहले से तैयार कर ले। (यानी छुरी तेज़ कर ले और उसको उसके मुंह के सामने न करे ताकि जानवर यह देख कर पहले से परेशान न हो) और अपने ज़बीहे को आराम दे।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० बयान करते हैं कि एक शख्स ने एक बकरी ज़मीन में ज़बह करने के लिए लिटाई उसके बाद छुरी तेज़ करना शुरू किया। आप रसूलुल्लाह सल्ल० ने यह देख कर फरमाया कि क्या तुम इसको दो बार मारना चाहते हो? इसको लिटाने से पहले तुमने छुरी तेज़ क्यों न कर ली?[3]

हज़रत इब्ने मसूद रज़ि० बयान करते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्ल० के साथ एक सफ़र में थे, आप सल्ल० एक ज़रूरत के लिए वहां से थोड़ी देर के लिए तशरीफ ले गए इस दरमियान हमने एक छोटी चिड़िया देखी उसके साथ उसके दो बच्चे थे। हमने दोनों बच्चे पकड़ लिये। वह यह देख कर अपने परों को फड़फड़ाने लगी आप सल्ल० तशरीफ लाए और पूछा : किसने उसके बच्चे छीन कर उसको तकलीफ पहुंचायी है? फिर आप सल्ल० ने हुक्म दिया कि उसके बच्चे वापस कर दो और वहाँ हमने चीटियों की एक आबादी देखी और उसको

---

(1) मुसनद अहमद
(2) सही मुस्लिम किताबुज़ज़बह
(3) तबरानी

www.abulhasanalinadwi.org

जला दिया आपने नापसंद किया और फरमाया इसको किसने जलाया है ? अर्ज़ किया हम लोगों ने। आप सल्ल० ने फरमाया : आग से अज़ाब देने का हक़ सिर्फ आग के रब को है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाब-ए-किराम को जानवरों को चारा पानी देने का आदेश देते और उनको परेशान करने और उनकी ताकत से ज़्यादा बोझा लादने को मना करते। आपने जानवरों की तकलीफ दूर करने और उनको आराम पहुंचाने को अज्र सवाब का सबब और अल्लाह से करीब होने का ज़रिया करार दिया। और उसके फज़ायल (श्रेष्ठताएँ) बयान फरमाए। हज़रत अबू हुरैरा बयान करते हैं कि एक शख्स कहीं से सफर पर था, रास्ते में उसको सख्त प्यास लगी, सामने एक कुंआ दिखाई पड़ा वह उसमें उतर गया बाहर आया तो देखा एक कुत्ता प्यास की शिद्दत की वजह से कीचड़ चाट रहा है उसने अपने दिल मे कहा प्यास से जो मेरा हाल हो रहा था यही इसका भी है। वह फिर कुऐं मे उतरा अपने चमड़े के मोज़े पानी से भरे फिर उनको अपने दांतों से दबाया और ऊपर आ कर कुत्ते को पिलाया। अल्लाह तआला ने उसके इस अमल को कुबूल फरमाया और उसकी मग़फ़िरत फ़रमा दी। लोगों ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्ल० पशुओ और जानवरों के मामले मे भी अज्र है? आप सल्ल० ने फरमायाः हर उस मख़लूक में जो तरो ताज़ा जिगर रखती है अज्र है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० रावी हैं कि रसुलूल्लाह सल्ल० ने बयान फरमाया : कि एक औरत को सिर्फ इस बात पर अज़ाब दिया गया कि उसने अपनी बिल्ली को खाना पानी नहीं दिया और न उसको छोड़ा कि वह ज़मीन के कीड़े मकोड़ों ही से अपना पेट भर ले।[2]

सुहैल बिन अमर् रवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्ल० का गुज़र एक ऐसे ऊंट पर हुआ जिसकी पीठ लाग़री (क्षीणता) की वजह से उसके पेट से लग गयी थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : इन बेज़बान जानवरों के मामले मे अल्लाह से डरो उन पर सवारी करो तो नरम तरीक़े से। उनका गोश्त इस्तेमाल करने के लिए उनको ज़बह करो इस हालत में कि वह स्वस्थ हों।[3]

हज़रत अबू हुरैरा रावी है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर तुम किसी हरी भरी जगह जाओ तो ऊंटो को ज़मीन पर उनके हक़ से वंचित न करो और अगर खुश्क ज़मीन पर जाओ तो वहां तेज़ चलो। रात को पड़ाव डालना हो तो रास्ते पर न डालो। इसलिए कि वहां जानवरों की आमद व रफ़्त (आवागमन) रहती है और कीड़े मकोड़े वहां पनाह (शरण) लेते हैं।

---

(1) सही बुख़ारी, किताबुल मसाक़ात
(2) इमाम नौवी बरवायत मुस्लिम
(3) सुनन अबू दाऊद

www.abulhasanalinadwi.org

दुश्मनों के साथ अच्छा व्यवहार

मक्का के विजय होने के अवसर पर जहां आप सल्ल० को और आपके असहाब को दीन की दावत देने पर 13 साल निरन्तर वहां के लोगों की तरफ़ से सख़्त तकलीफ पहुंचायी गयी थी, जिसकी वजह से आप सबको वहां से निकलना पड़ा था। अब विजयता की हैसियत से आपका वहां प्रवेश हुआ और उनका सामना हुआ तो हुज़ूर सल्ल० ने फरमाया : ऐ कुरैशियो! तुम्हें क्या उम्मीद है इस समय मैं तुम्हारे साथ क्या करूंगा? उन्होंने कहा हम अच्छी ही उम्मीद रखते हैं। आप सल्ल० शीलवान और सज्जन भाई हैं अच्छे और शरीफ भाई के बेटे हैं। आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया मैं तुमसे वही कहता हूँ जो यूसुफ़ अ० ने अपने भाईयों से कहा था : आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं जाओ तुम सब आज़ाद हो।

जब पूर्ण रूप से विजय हो गई और सब लोगों को हुज़ूर सल्ल० ने अमान दे दी केवल ६ आदमियों को छोड़ कर जिनको उनके संगीन जुर्मो की वजह से क़त्ल कर दिये जाने की इजाज़त दी। भले ही वह काबा के पर्दों के अन्दर मिलें, उन में कोई वह था जो इस्लाम लाने के बाद इस दीन से फिर गया था, किसी ने धोखा दे कर किसी मुसलमान को क़त्ल किया था। किसी ने अपनी कविता द्वारा आप सल्ल० की निंदा और अपमान करने को मनोरंजन का सामान बना लिया था और उसको लोगों में फैलाता था। उनमें अब्दुल्लाह बिन सअ़द बिन अबीसरह भी था, जो इस दीन से फिर गया था। अकरमा बिन अबी जहल था जो इस्लाम के प्रभुत्व और उसकी कामयाबी से घृणा के कारण और जान के ख़ौफ से अपना वतन छोड़ कर यमन चला गया था। लेकिन उसकी बीवी ने उसके फरार होने के बाद रसूलुल्लाह सल्ल० से उसके लिए अमान मांगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह जानते हुए वह सारी दुनिया में आपके घोर शत्रु का लड़का है उसको अमान दी ख़ुशी और स्वागत में इस तरह उसकी तरफ लपके कि चादर भी आपके शरीर से हट गयी थी।[1]

उनमें हुज़ूर सल्ल० के प्रिय चचा हज़रत हमज़ा का क़ातिल (जुबैर बिन मुतइम का ग़ुलाम) वहशी भी था जिसने उनको क़त्ल करके उनका कलेजा चबवाने में मदद की थी और कसास (हत्यादण्ड) के तौर पर रसूलुल्लाह सल्ल० ने उसको क़त्ल करने की इजाज़त दे दी थी लेकिन वह जब इस्लाम लाया तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने उनका इस्लाम कुबूल फरमाया।[2] इनमें हिबार बिन असवद भी था जिसने आपकी सुपुत्री हज़रत ज़ैनब के पहलू पर बरछी से हमला किया। यहां तक

---

(1) ज़ादुल मआद 3/411–422

(2) सही बुख़ारी, बाब क़त्ले हमज़ा, सीरत इब्ने हिशाम 2/72, दलाएलुन नबूवह, बैहक़ी 5/95

www.abulhasanalinadwi.org

की वह ऊंट से एक चट्टान पर गिर पड़ीं और गर्भपात की घटना घटित हुई। इस घटना के बाद वह भाग गया बाद में उसने इस्लाम कुबूल कर लिया। "सारा" तथा दो एक और गानें वालियों के सम्बन्ध में जो आपकी निंदा में कहे गए शेर भी गाती थीं, उनके सिलसिले में भी आपसे अमान चाही गई। आपने उन्हें अमान देदी और वह दोंनो मुसलमान हो गईं।[1]

उमैर बिन वहब एक योजना के अन्दर मुहम्मद सल्ल० के कत्ल करने के इरादा से मदीना पहुंचा हज़रत उमर ने तेवर देख लिये। गला दबाए हुये उसको हुज़ूर सल्ल० के पास लाए आप सल्ल० ने फ़रमाया : उमर छोड़ो उमैर करीब आ जाओ। पूछा किस इरादे से आए हो? जवाब दिया : बेटे को छुड़ाने आया हूँ, फरमाया : फिर तलवार क्यों लटकी है? उमैर ने कहा : आखिर तलवारें बदर में किस काम आई? फरमाया क्यों नहीं, तुमने और सफवान ने हिजर में बैठ कर मेरे कत्ल की साज़िश नहीं की थी। उमैर यह सुन कर सन्नाटे में आ गया। बेइख़्तियार बोले : मुहम्मद सल्ल० बेशक तुम पैग़म्बर हो। खुदा की कसम मेरे और सफवान के अलावा किसी को इस मामले की खबर नहीं थी। चुंनाचे मुसलमान हो गया। आप सल्ल० ने सहाबा कराम से फ़रमाया : अपने भाई को दीन सिखाओ कुरआन सिखाओ और इसके बेटे को आज़ाद कर दो। कुरैश जो उसके हाथ से हुज़ूर सल्ल० के क़त्ल करने की ख़बर सुनने का इन्तिज़ार कर रहे थे, उन्होंने उमैर के मुसलमान हो जाने की खबर सुनी।[2]

सफवान बिन उमय्या फतह मक्का के मौक़े पर जद्दा की ओर भाग गए ताकि वहां नाव द्वारा यमन पहुंच जाए। चुनांचे उमैर बिन वहब नबी-ए-करीम सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! सफवान बिन उमय्या अपनी कौम के सरदार हैं। वह आपसे डर कर समुद्र की ओर भाग गए हैं। जब आप सल्ल० को यह खबर मिली तो आपने उन्हें भी अमान दे दी। हज़रत उमैर ने अर्ज़ किया : कि अल्लाह के रसूल संतोश के लिए कुछ लिख दीजिए। तो आप सल्ल० ने उनको चिन्ह के रूप में अपनी पगड़ी दे कर सफवान के पीछे रवाना कर दिया। उन्होंने सफ़वान को समुद्र के किनारे जा लिया और कहा कि अल्लाह के रसूल ने तुम्हें अमान दी है अपने आपको हलाकत (विनाश) से बचाओ। सफ़वान ने कहा कि मुझे अपनी जान का ख़ौफ है तो उन्होंने कहा कि नबी-ए-करीम सल्ल० बहुत उदार हैं सहनशील हैं। अतः हज़रत उमैर उन्हें वापस ले कर मक्का आए। जब नबी-ए-करीम सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे तो सफ़वान ने कहा कि इस शख्स

---

(1) ज़ादुल मआद 3/411

(2) दलाइलुन नबूवह बैहक़ी 3/147–149, सीरत इब्ने हिशाम 1/861

www.abulhasanalinadwi.org

का ख्याल है कि आपने मुझे अमान दी है। तो आप सल्ल० ने इस खबर की तसदीक (पुष्टि) की। सफवान ने दो महीने की छूट मांगी। आप सल्ल० ने उन्हें चार महीने की छूट दी।[1]

इस समय तुम्हें कौन बचा सकता है?

जब रसूलुल्लाह सल्ल० ग़ज़व-ए-ज़ातुररिका से वापस हुए तो दोपहर को आप सल्ल० ने ऐसी जगह आराम फरमाया जहां बबूल के बहुत से पेड़ थे और लोग उन पेड़ों की तरफ चले गए और आप खुद सल्ल० बबूल के पेड़ के नीचे आराम फरमाने लगे और अपनी तलवार उसी पेड़ पर लटका दी।

हज़रत जाबिर रज़ि० बयान करते हैं उसी बीच में हमारी आंख लग गयी और हम थोड़ा सो गए थे कि महसूस हुआ कि रसूलुल्लाह सल्ल० हमें आवाज़ दे रहें हैं हमने देखा की एक आराबी सल्ल० के पास बैठा हुआ है आप सल्ल० ने फरमाया कि मैं सो रहा था, उसने यह तलवार उठायी मेरी आंख खुली तो यह तलवार मेरे सर पर खीचे हुए था इसने मुझसे कहा कि इस वक्त तुम्हें कौन बचा सकता है? मैंने कहा : अल्लाह! लो यह बैठा हुआ है लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल० ने उसको कोई सज़ा नही दी।

रहमतुललिलआलमीनी
(पूरे संसार के लिए करूणा और दया)

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में मुहब्बत और सबके साथ हमदर्दी का जज़्बा असाधारण स्तर का था और उस जज़्बे का असर मुसलमानों पर जो पड़ा, और मुसलमानों के ज़हनो की जो तरबियत (प्रशिक्षण) हुई वह आप सल्ल० के ज़माने में और आप सल्ल० के बाद आने वाले मुसलमानों की ज़िंदगियों में बराबर महसूस की जाती रही और उसका असर (प्रभाव) यह ज़ाहिर हुआ कि आप सल्ल० के बाद मुसलमानों की हुकूमत जहां जहां फैली और जहां जहां मुसलमान आबाद हुए। वहां उन लोगों की रहम दिली और रिआयतें देख कर इलाक़े के इलाक़े खुद से इस्लाम में दाखिल हो गए। उनपर किसी ने ऐसा करने के लिए कोई ज़ोर जब्र नहीं किया। इसलिए कि इस्लामी शिक्षा में अपना धर्म बदल कर इस्लाम लाने के लिए किसी पर जब्र करने की इजाज़त नहीं और यहां तक कि मुसलमानों के शासन काल में जो ग़ैर मुस्लिम आबाद हों उन पर वह ज़िम्मेदारियां भी नहीं डाली जाएँ जो मुसलमानों पर डाली जाती हैं। और उनको अपने अपने धर्म पर अपनी धार्मिक शिक्षाओं के अमल करने की इजाज़त उन

---

(1) ज़ादुल मआद 3/413, मुहम्मद सल्ल0 अलइनसानुल कामिल, मुहम्मद बिन अलवी मालिकी हुसैनी, पृ0 159

www.abulhasanalinadwi.org

मामलात में दी जाती रही है कि जिन की मुमानियत मुसलमानों के लिए होती है। इसी का प्रभाव था कि इस्लाम की यह विशेषताएं जिन जिन ग़ैर मुस्लिमों को देखने का मौका मिला उन्होंने इस्लाम को कुबूल किया।

इस्लाम को कुबूल करने का तात्पर्य यह था कि अल्लाह को अकेला पालनहार और मालिक माना जाए और उसके आदेशों पर जो नबी द्वारा मिले हैं उन पर अमल करे। और इस्लाम से पहले की ज़िंदगी में जो अत्याचार और नैतिक गिरावट और यौन सम्बन्धी बिगाड़ था वह समाप्त हो। अतः इसी पर अमल होता रहा और मानव समाज में बहुत सुधार आया और बहुत सी अच्छाईयाँ उत्पन्न हुईं। जिनमें उत्तम मानव विशेषताएं और आचरण प्रमुख रूप में सामने आया। इसका अनुमान इस्लाम से पहले की सोसाइटी में जातिवादी और सत्तावादी की ओर से जो अत्याचार और खूनखराबा होता था, और जिसको इतिहास के पन्नों में देख कर आदमी कांप जाता था। इस्लाम के अधीन बनने वाली हुकूमतों में लड़ाई और टकराव होने की सूरत में भी उसका एक प्रतिशत भी पेश नहीं आया। बैतुलमुकद्दस पर जब रूमियों ने लड़ कर कब्ज़ा किया तो उसके मुसलमान शासकों और उनके हम क़ौम लोगों को मुसलमानों को कत्ल करने में इतना खून बहाया कि घोड़ों के घुटने तक खून पहुंचा। लेकिन मुसलमानों ने जब उसे बाद में वापस लिया तो मुसलमानों ने उस पर कब्ज़ा करने वाले ईसाई शासकों को माफ कर दिया। जिसको स्वयं अंग्रेज़ इतिहासकार "स्टैनले लेन पोल" ने स्वीकार किया है।[1]

इस्लाम से पहले की हर सोसाइटी में चाहे रूमी साम्राज्य की सोसाइटी हो, या ईरानी साम्राज्य की सोसाइटी हो, या हिन्दुस्तानी उपमहाद्वीप या आस पास की सोसाइटी हो औरतों के साथ ऐसा अत्याचारी व्यवहार किया जाता था कि जो जानवरों के साथ किया जाता था। उनको न विरासत में हक़ मिलता था और न भाईयों की तरह हक़ हासिल कर सकती थीं। उसकी इज़्ज़त और आबरू की हिफाज़त का भी कोई प्रबन्ध न था और उनसे खिदमत स्वयं उसके घर में नौकरों और गुलामों की तरह ली जाती थी और विधवा होने पर तो उन्हें मनहूस समझा जाता था और उनकी पैदाईश पर घरवाले ग़मज़दा (शोकग्रस्त) हो जाते थे और बहुत से लोग उनको बड़े होने से पहले ही ख़त्म कर दिया करते थे और जिनको ख़त्म नहीं किया जाता था उनके साथ पूर्ववर्णित व्यवहार किया जाता था।

इस्लाम के आने के बाद औरत को इज़्ज़त का हक़दार करार दिया। विरासत में उसको हिस्सेदार बनाया कि माँ बाप के मरने पर वह भी विरासत के माल में हिस्सेदार हों, औरत के साथ औरत होने की वजह से दुर्व्यवहार को

---

(1) इनसाइक्लोपीडिया बर्टानिका, भाग6, पृ0 627

www.abulhasanalinadwi.org

हराम क़रार दिया। जाहिलियत में जब औरत को माहवारी आती तो सोसाइटी में उसको अछूत बना दिया जाता। उसके कोई क़रीब नहीं आता। कोई क़रीब बैठता नहीं। इस्लाम ने इस बात को भी ख़त्म किया। उससे सम्भोग करने के अलावा सहयोग की दूसरी बातों की इजाज़त दी। इस्लाम से पहले औरत को शो पीस बना कर रखा जाता था कि वह अपने शरीर और वस्त्र द्वारा दूसरों को लुभाए और अपने सज्जा श्रृंगार द्वारा लोगों की नज़रों में आनन्द का साधन बने और मर्दों के स्वभाव में मर्दों के लिए मनोरंजन का सामान बने। इस्लाम ने आकर इस बात को सख्ती से मना किया और हुक्म दिया कि औरत को ग़ैर मर्दों के बीच आने की ज़रूरत पड़े तो वह अपने शरीर को ढीले ढाले वस्त्र में रखे ताकि उस पर ललचाई नज़रें न पड़ें।

इसी तरह विभिन्न मामलात में और इबादत के अवसर पर जो आदेश दिये गये उनमे मर्दो के साथ औरतों का भी उल्लेख किया गया और मौक़ा दिया गया अलबत्ता दोनों के बीच जो शारीरिक और प्राकृतिक अन्तर है उसके लिहाज़ से जितना अन्तर आवश्यक था वह अन्तर रखा गया। क़ुरआन मजीद में फरमाया गया :-

"और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के ताल्लुक वाले हैं अच्छे काम करने को कहते और बुरी बातों से मना करते और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञा पालन करते हैं, यही लोग हैं जिन पर खुदा रहम करेगा। बेशक खुदा ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) हिकमत वाला।" (सूरा तौबा - 71)

और फ़रमाया :

"जो व्यक्ति नेक काम करेगा मर्द हो या औरत और वह मोमिन भी होगा तो हम उसको (दुनिया में) पाक और (आराम की) ज़िंदगी से जिंदा रखेंगे और (आख़िरत में) उनके आमाल को निहायत अच्छा सिला देंगे।" (सूरा : नहल-97)

और फ़रमाया :

"मैं किसी अमल करने वाले के अमल को मर्द हो या औरत बर्बाद (नष्ट) नहीं करता, तुम एक दूसरे से सम्बन्धित हो।" (सूरा : आले इमरान - 195)

और हुज़ूर सल्ल० ने हज्जतुलविदा के मौके पर फ़रमाया : औरतों के मामले में अच्छा रवय्या इख़्तियार करो तुमने उनको अपने सम्बन्ध में अल्लाह की अमान के साथ लिया है और उनसे सम्भोग करने का हक़ अल्लाह के हुक्म के ज़रिये प्राप्त किया है।

www.abulhasanalinadwi.org

इस तरह औरत की बनावट में मर्दों के मुकाबिले में थोड़ा अन्तर है जो मर्द के मुकाबिले में कमज़ोरी का कारण है। इस का लिहाज़ करते हुए मर्द का उससे ग़लत फायदा उठाने से बचाने के लिए कुछ तरीके नियुक्त किये गए। उदाहरणतः वह अकेले सफर न करे, उसके साथ उसका पति और कोई सगा रिश्तेदार भी रहे, उसको पत्नी बनाकर उस पर अपना अधिकार प्राप्त करने के बदले में रकम या माल के रूप में महर का भेंट करना अनिवार्य किया गया। उसकी मिलकियत (स्वामित्व) में जो माल व सामान हो उसमें रद्दो बदल की इजाज़त नहीं दी। उस माल पर अधिकार केवल उसी को दिया शौहर (पति) को नहीं दिया। विवाह से पहले उसके खर्च की ज़िम्मेदारी उसके माँ बाप पर वह न हों तो उसके बहुत ही करीबी रिश्तेदारों पर थी और निकाह के बाद यह जिम्मेदारी उसके शौहर (पति) पर की गयी। इसी तरह बीवी अपने खर्च की खुद ज़िम्मेदार नहीं रखी गयी। अलबत्ता वह उसके मुक़ाबले में घर की मलिका और अपने पति की सहायक होगी। घर के मामलात और बच्चों के देखभाल की ज़िम्मेदार होगी। फरमाया गया : "और अपने शौहर की देख भाल की ज़िम्मेदार है और शौहर से तलाक़ के ज़रिये जुदा होने की सूरत में अपने माता पिता की किफ़ालत (प्रतिभूति) और ज़िम्मेदारी में वापस हो जाती है।"

इस्लाम ने रहमदिली, हमदर्दी और इंसानियत नवाज़ी की जो क़दरें (वैल्यूज़) अनिवार्य कीं उनका यह प्रभाव पड़ा कि जहां जहां मुसलमान उन क़दरों के साथ गए वहां की दुनिया बिल्कुल बदल गयी और वह ज़ुल्म व ज़्यादती जो आपस में वर्ग भेद के कारण या औरत मर्द के अन्तर के लिहाज़ से या राजा प्रजा के भेदभाव के लिहाज़ से अथवा परस्पर सामरिक टकराव के अवसर पर या केवल आनन्द और भोग विलास के उद्देश्य से जो अत्याचार किया जाता था वह समाप्त हो गया और इस्लाम को न कुबूल करने वालों पर भी इन बातों का कुछ न कुछ असर पड़ा। और उनकी बातों की नक़ल किसी हद तक ग़ैर मुस्लिम समाज में भी की जाने लगी। इंसान के अलावा दूसरे प्राणियों के साथ ज़ुल्म के जो तरीक़े अपनाऐ जाते थे केवल मनोरंजन और खेल के तौर पर इंसानों और ज़ानवारों को कुएँ जैसी जगह पर बंद करके लड़ाया जाता था और उससे तमाशा देखने वाले मज़ा लेते थे। जानवारों के साथ किसी भी तरह की रहमदिली (करूणा) की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी। उन सबमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगमन और आपकी शिक्षा और आचरण से असाधारण परिवर्तन आ गया। इस तरह आप सल्ल० मुसलमानों के लिए ही रहमत (करूणा) नहीं बने बल्कि इंसानो के साथ साथ सारी सृष्टि के लिए रहमत बने और उसी की ओर अल्लाह तआला की तरफ से कुरआन मजीद में इज़हार (अभिव्यक्ति) किया गया कि "हमने आपको सारे जहानों के लिए रहमत बना कर भेजा है।"

www.abulhasanalinadwi.org

सुधार और दावत का नबवी तरीका

रब्बुलआलमीन (सारे जहानों के रब) की ओर से हुजूर मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० को नबी का मक़ाम प्रदान किये जाने पर पूर्ण मानवता के लिए महान नायक की और विश्वव्यापी क्षेत्र में महान मार्ग दर्शक की हैसियत प्रदान की गयी और उसका क्षेत्र क़यामत तक विस्तृत कर दिया गया। इस तरह आपको जो स्थान मिला वह मिला लेकिन इससे बढ़ कर यह बात हुई कि इंसानों को उसकी पस्ती और गुमराही से निकलने का काम भी अंजाम पाया, जिसकी सख़्त आवश्यकता सामने आ चुकी थी। आप सल्ल० की पैदाइश के समय सारे अरब और सारे अजम ऐसी नैतिक गिरावट और अत्याचार की चरम सीमा पर पहुंच गए थे जहां इंसान की हैसियत से इंसान की पहचान समाप्त होती जा रही थी। मानो इंसान अपनी विशेषता से वंचित होने के कगार पर पहुंच गया था कि अल्लाह तआला की रहमत जोश में आई और उसने आप सल्ल० की सूरत में सुधारक पैदा किया और उसको "वही-ए-इलाही" (ईश्वरवाणी) के द्वारा इंसानों को इंसानियत के मुक़ाम पर लाने की ज़िम्मेदारी सुपुर्द की, जिसको आप सल्ल० पूर्ण रूप से पूरा किया। आप सल्ल० एक महान पैग़म्बर होने के साथ साथ एक महान शिक्षक व पोशक भी थे और आपकी शिक्षा व दिक्षा प्रणाली अल्लाह तआला के हुक्म के अनुसार थी :

"अपने रब (पालनहार) के मार्ग की ओर लोगों को हिकमत और बेहतरीन नसीहत के साथ बुलाइये और उनसे बेहतरीन ढंग से बात कीजिए।" (सूरा : नहल -125)

और - "और इससे ज़्यादा अच्छी बात वाला कौन है जो अल्लाह की ओर बुलाए और नेक काम करे और कहे कि मैं अवश्य मुसलमानों मे से हूँ।" (सूरा : हामीम सजदा-33)

अतएव इसके प्रभाव से आप सल्ल० को यह विशेषता प्राप्त हुई जिसका ज़िक्र अल्लाह तआला ने इस तरह किया कि :-

"फिर वही जिसके और तुम्हारे बीच दुश्मनी है ऐसा हो जाऐगा जैसे दिली दोस्त और यह उन्हीं को नसीब होती है जो सब्र करें और उसे बड़े नसीब वालों के अलावा कोई नहीं पा सकता।" (सूरा : हामीम सजदा-34—35)

इस तरह आपकी नीतिपूर्ण दावत और संवेदनशील नसीहत का नतीजा यह हुआ कि दुश्मन दोस्त बन गए लेकिन इसी के साथ साथ इस कार्य प्रणाली को ग्रहण करने में आपको जिस सहनशीलता और धीरज से काम लेना पड़ा वह भी असाधारण था। अल्लाह तआला की इनायत खास्सा (विशेष कृपा) की बदौलत आप ही के बस की बात थी। अतः सुधार व नसीहत सम्बन्धी वाकियात

www.abulhasanalinadwi.org

आपके जीवन चरित्र में खूब मिलते हैं। उसमें मुहब्बत व अपनाईयत की पूरी स्प्रिट नज़र आती हैं। इस सिलसिले का एक वाक़िया हदीस की किताबों में भी है कि एक देहाती मस्जिद में कच्ची ज़मीन देख कर पेशाब करने लगा तो मुसलमान उसकी तरफ झपट पड़े ताकि उसकी खबर लें। आप सल्ल० ने देखा तो रोका और उसको बुलाकर नर्मी से समझाया कि यह अल्लाह की इबादत की जगह है। यहां पेशाब नहीं करना चाहिए आप सल्ल० न गुस्सा हुए न झुंझलाए बल्कि नर्मी और सुलूक से समझाया और कहा कि पानी बहाकर गंदगी को दूर कर दो।[1]

ऐसे ही सिखाने और समझाने का एक वाकिया और है वह यह कि एक व्यक्ति ने माली सहायता के लिए आप सल्ल० से सवाल किया आप सल्ल० के पास देने के लिए कुछ न था, आप सल्ल० ने उससे माज़रत की लेकिन वह न माना और मांगता चला गया और आप सल्ल० की चादर मुबारक को ऐसा खींचा कि आप सल्ल० की गर्दन पर निशान पड़ गया और वह खीचता गया यहां तक कि कांटो में उलझा दिया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी क़ौम के शासक की हैसियत से थे आप सख्त सज़ा दे सकते थे लेकिन आप सल्ल० नर्मी से यह कहते रहे कि हमारे पास इस समय कुछ नहीं है वरना मैं ज़रूर देता [2] और माली लिहाज़ से व्यक्तिगत रूप में आपका यही हाल था कि ज़रूरत पूर्ण करने के लिए आपके पास कुछ भी न होता था, फ़ाका भी करना पड़ता था और कभी कभी दो एक खजूरों पर गुजारा करना पड़ता था।

इसी प्रकार एक अवसर पर आप सल्ल० से सहायता मांगने वाले ने आप सल्ल० से कहा कि तुम लोग कंजूस हो। आप सल्ल० ने नर्म लहजे में कहा मैं कंजूस नहीं हूँ मगर देने के लिए कुछ है नहीं। आप सल्ल० उस समय नाराज़ नहीं हुए और बहुत नरमी से जवाब दिया। यूँ आप सल्ल० की सखावत (दानशीलता) का यह हाल था कि मेहमानों का सिलसिला रहता और आप सल्ल० के मकान के बाहर चबूतरे पर सुफ़्फ़ा वाले जमा रहते थे और उनके खाने का प्रबंध आप सल्ल० को ही करना होता था, जब तब फ़ाक़े की नौबत भी आती रहती।[3] ाप सल्ल० जब उपदेश देते और किसी को ग़लती पर चेतावनी देनी होती तो उसका नाम लेकर उसे सम्बोधित करके चेतानवनी न देते। बल्कि कहते "लोगों की एक संख्या ऐसी क्यों है कि फ़लाँ काम क्यों करती है?"

---

(1) सही बुख़ारी, किताबुल वज़ू।
(2) सही बुख़ारी, किताबुल जिहाद व मुसनद अहमद 3/153।
(3) सही बुख़ारी व सही मुस्लिम किताबुज़ ज़ुहद।

www.abulhasanalinadwi.org

शुद्धीकरण और अंतः सुधार

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शिक्षा और हृदय की शुद्धता और सुधार के लिए नियुक्त किया था इसी लिए फरमाया :

"वही है जिसने अनपढ़ लोगों में उनहीं में से एक रसूल भेजा जो उन्हें उसकी आयतें पढ़ कर सुनाता है और उनको पाक करता है और उन्हें किताब व ज्ञान सिखाता है। निःसंदेह यह इससे पहले खुली गुमराही में थे।"

(सूरा : जुमा-2)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विशेषताओं में तज़किया यानी इंसानों के अख़लाक और आदतों का सुधार करना और उनको अच्छा बनाना ख़ास विशेषता थी, इस विषय में अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी सीरतुननबी भाग छः के पृष्ठ 5–6 में लिखते हैं :-

"कुरआन मजीद ने जगह जगह हुजूर सल्ल० की तारीफ़ में यह कहा है कि पैग़म्बर सल्ल० उन अरब अनपढ़ जाहिलों को पाक व साफ़ करता है, उनको किताब व हिकमत की बातें सिखाता है।" (सूरा : जुमआ - २)

इस आयत से यह दो शब्द ध्यान देने योग्य हैं एक पाक साफ करना जिसका कुरआन पाक ने "तज़किया" कहा है और दूसरा "हिकमत"।

१. तज़किया का शाब्दिक अर्थ पाक साफ करना, निखारना, मैल कुचैल दूर करना। पवित्र कुरआन ने इस शब्द को इस अर्थ में प्रयोग किया है कि नफ़्से इंसानी को हर प्रकार की गंदगियों और नापाकियों से निखार कर साफ़ सुथरा किया जाए यानी इस आइने (दर्पण) के ज़ंग को दूर कर के उसमें चमक और निखार पैदा कर दिया जाए।

सूरा वश्शम्स में है :-

"क़सम है नफ़्स की और जैसा उसको ठीक किया, फिर उसमें उसकी बदी और नेकी इल्हाम कर दी (डाल दी) निःसन्देह जिसने उस नफ़्स को साफ सुथरा बनाया वह कामयाब हुआ और जिसने उसको मिट्टी में मिलाया वह नाकाम हुआ।" (अश-शमसु : 1)

२. हिकमत : उसके बाद दूसरा शब्द "हिकमत" का है। हिकमत का शब्द पवित्र कुरआन में जहां उस इल्म व ज्ञान के अर्थ में जो नूर इलाही की सूरत में नबी के सीने में वदीअ़त (धरोहर) रखा जाता है और जिसके आसार व मज़ाहिर (लक्षण व सूचक) हर रसूल की ज़बान से कभी मसालेह व असरार (राहस्य) कभी सुनन व अहकाम (आदेश) की सूरत में ज़ाहिर होते हैं, वहीं उसका दूसरा इतलाक़ (अर्थ) उस इल्म व इरफ़ान (ज्ञान) के उन अमली आसार व नताएज पर भी होता है जिनमे बड़ा भाग नैतिक शिक्षा का है। कुरआन में दो

www.abulhasanalinadwi.org

मौंको पर यह बताया गया है कि इस दूसरे अर्थ की हिकमत में कौन कौन बातें दाखिल हैं। सूरा बनी इस्राईल में तौहीद (एकेश्वरवाद), माँ बाप का आज्ञा पालन, रिश्तेदारों और मोहताजों की मदद करने की नसीहत और फुजूल खर्ची, कंजूसी, औलाद का क़त्ल, दुष्कर्म, किसी बेगुनाह की जान लेने, और अनाथों के सताने की मुमानिअत (वर्जित) के बाद वादे का पूरा करने, ठीक नापने और तौलने और ज़मीन पर अकड़ कर न चलने की ताकीद की गयी है। उसके बाद इरशाद है :-

"यह हिकमत की उन बातों में है जिनको तेरे रब ने "वही" किया।" (सूराः अलइस्रा - **39**)

सूरा लुक़मान में है :-

"और हमने लुक़मान को हिकमत की बातें सिखायीं कि खुदा का शुक्र अदा करो।" (लुक़मान - **12**)

इसके बाद हिकमत की उन बातों की इसके अतिरिक्त व्याख्या की गयी है कि किसी को खुदा का साझीदार न बना, माँ बाप के साथ नम्रतापूर्वक व्यवहार कर, नमाज़ पढ़ा कर, लोगों को भली बात करने को कह, और बुरी बात से रोको, मुसीबतों में दृढ़ता और मज़बूती दिखा, घमण्डी न बन, ज़मीन पर अकड़ कर न चल, नीची आवाज़ में बातें कर। इन आयतों से मालूम हुआ कि क़ुरआन की परिभाषा में इन स्वाभाविक नेक कामों को भी जिनका भला होना स्वभावतः तमाम कौमों और मज़हबों में मान्य है और जिनको दूसरे अर्थ में अख़लाक कह सकते है "हिकमत" कहा गया है।

और हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह० लिखते हैं :

"क़ुरआन मजीद ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तीन विशेषताएं बयान की हैं :"

1. आयतों की तिलावत
2. तज़किया
3. किताब व हिकमत की तालीम

इन विशेषताओं में रसूलुल्लाह सल्ल० की विशेष सिफत आप सल्ल० की सिफते तज़किया है। तज़किया का मतलब यह है कि आप सल्ल० सिर्फ पढ़ कर सुना देने और सिर्फ समझा देने पर नहीं ठहरते बल्कि उस तिलावत व तालीम का रंग उन पर चढ़ा देते हैं, इस किताब व तालीम को उनके कानों और दिमागों से गुज़ार कर उनके दिलों और रूहों को रंगीन करते हुए उनके शारीरिक अंगों से जारी कर देते हैं। यही सिफ़त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुनिया के तमाम उपदेशकों और शिक्षकों से श्रेष्ठ करती है कि आप सल्ल० उपदेशक व शिक्षक के अलावा "मुज़क्की" पाक साफ़ करने वाले भी थे और इसी लिए आप

www.abulhasanalinadwi.org

सल्ल० दुनिया के सबसे कामयाब मुरशिद व हादी (उपदेशक व मार्गदर्शक) थे। सहाबा की आश्चर्यजनक रूहानी, अख़लाकी, ज़हनी, अमली तब्दीली (परिवर्तन) और इस्लाम की प्रारम्भिक सफलता का रहस्य यही था और आज की इस्लामी ज़िंदगी के हर अंश में सबसे अधिक विशेष रूप में महसूस होती है।

दोस्त दुश्मन सब मानते हैं कि आप सल्ल० की संगत में पारस की विशेषता थी, जिसको आपकी संगत मिल गयी वह खरा सोना नहीं बल्कि वह खुद पारस बन गया। जानवर इन्सान बन गए और इंसान फरिश्ते। उनकी ऐतिक़ादी, अख़लाकी, रूहानी तरबियत इतनी आला और मुकम्मल हुई जिससे ज़्यादा ख़्याल में नहीं आ सकती। जो आप सल्ल० के पास बैठा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रंग में रंग गया, शरीअ़त के सांचे में ढल गया। शरीअ़त पर अमल बिला इरादा होने लगा। अल्लाह का आज्ञापालन करना आसान और प्रिय हो गया और अवज्ञा अप्रिय। यहां तक की उम्मत का सहाबा के बारे में अकीदा है कि वह सबके सब आदिल (न्यायी) हैं और कम दर्जे के सहाबी भी बाद के बड़े से बड़े वलीउल्लाह से श्रेष्ठ हैं।

त्वरित परिवर्तन और अन्तःकरण से वशीभूत होने की घटनाओं से "सीरत" की किताबें भरी हैं : फुज़ाला बिन उमैर कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फतह मक्का में तवाफ़ फ़रमा रहे थे मैं बुरे इरादे से आया, जब करीब हुआ तो आप सल्ल० ने फ़रमाया : फुज़ाला ! कहो क्या सोच रहे हो ? मैंने कहा : कुछ नहीं। अल्लाह का ज़िक्र कर रहा था। आप सल्ल० हंसे और कहा फुज़ाला ! अल्लाह से माफी चाहो फिर आप सल्ल० ने मुबारक हाथ मेरे सीने पर रख दिया मेरा दिल ठहर गया। खुदा की क़सम अभी आप सल्ल० ने हाथ नहीं हटाया था कि अल्लाह की मख़लूक़ात (सृष्टि) में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादा कोई चीज़ मेरी नज़र में महबूब नहीं रही। मैं वापस गया तो वह औरत मिली जिससे मैं बातें किया करता था। उसने कहा : आओ फुज़ाला बातें करें। मैंने कहा : इस्लाम के बाद यह नहीं हो सकता।[1]

हज़रत अमर बिन आस कहते हैं कि बैअत से पहले मेरी यह हालत थी कि मेरी नज़र में आप सल्ल० से ज़्यादा अप्रिय हस्ती दुनिया में कोई नहीं थी। अगर खुदा न खुवास्ता मुझे मौका मिल जाता तो अपनी आक़िबत ज़रूर खराब कर लेता। लेकिन बैअत के बाद मेरी नज़र में आप सल्ल० से ज़्यादा प्रिय और सम्मानित कोई व्यक्ति दुनिया में न था। यहां तक कि मैं नज़र भर कर आप सल्ल० को देख नहीं सकता था, अगर कोई मुझसे आप सल्ल० का हुलया पूछता तो वल्लाह मैं आप सल्ल० का हुलया मुबारक नहीं बतला सकता था।

---

(1) ज़ादुल मआद, इब्ने क़य्यिम,

www.abulhasanalinadwi.org

इसलिए कि आप सल्ल० को नज़र भर कर देखने की मुझमें हिम्मत नहीं हुई थी।[1]

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अपनी इन ही विशेषताओं और ज़िम्मेदारियों की बिना पर जो अल्लाह तआला की तरफ़ से उन पर सौंपी गई थीं, एक तरफ़ अल्लाह के आदेश लोगों को बताए दूसरी तरफ़ मिज़ाज और तबिअतों को दीन के साँचे में ढ़ालने का कर्त्तव्य भी पूरा किया। अल्लाह तआला की निशानियों को जिनसे अल्लाह तआला की मारफत (परिचय) हासिल होती है उनको बयान किया। लोगों में जो ऐब व बुराईयाँ पैदा हो गई थीं उनका सुधार किया। उनके चरित्र को पाकीज़ा बनाया, किताब की शिक्षा यानी अल्लाह के आदेशों से ख़बरदार किया, पवित्र आचरण के साथ ज़िंदगी गुज़ारी जाए इसका उपदेश दिया, क़ुरआनी शिक्षा की रोशनी में गुमराहियों को दूर किया। अल्लाह की एक मात्रता और महानता का पाठ पढ़ाया। आप सल्ल० ने अपनी नबूवत की ज़िम्मेदारी की अदाएगी के ज़रिये इंसानों के सुधार के सिलसिले में सफल शिक्षक और निपुण पोषक का कर्त्तव्य पूरा किया। अनपढ़ और पथभ्रष्ट क़ौम को ऐसी शिक्षा दी और तरबियत की कि वह सारी दुनिया की सुधारक और अभिभावक बन गयी। और वह आप सल्ल० की जमाअत के ऐसे ट्रेन्ड लोग थे कि जहां वह गए वहां उन्होंने चरित्र और आचरण में क्रान्ति पैदा कर दी। आप सल्ल० की शिक्षा और दीक्षा का ऐसा प्रभावशाली तरीका होता था कि पहले मरहले मे क्रान्ति आ जाती थी लेकिन यह बात अल्लाह तआला की मर्ज़ी के अधीन होती थी। अल्लाह तआला फरमाता है :-

"आप जिसे चाहें हिदायत नही कर सकते, बल्कि अल्लाह तआला ही जिसे चाहे हिदायत करता है। हिदायत वालों से वही खूब आगाह है।"

(अलक़सस - **56**)

जो जिसकी किसमत में पहले दिन से गुमराह रहना मुकद्दर था, उसकी हिदायत किसी भी मुअल्लिम व मुरब्बी के इख्तियार मे न थी वह तो महरूम रहा, उन कुछ बदकिस्मतों के अलावा जिसकी तरफ आपकी तवज्जो हुई वह प्रभावित हुए बग़ैर नहीं रहा और यह भी अल्लाह तआला की मर्ज़ी थी, ऐसे इंसान से, जो अनपढ़ था उसने पढ़ने पढ़ाने का कहीं सबक नहीं लिया था और किसी ने उसको इसका तरीक़ा भी नहीं बताया था, अल्लाह तआला ने यह काम लिया जो दुनिया का बड़े से बड़ा मुअल्लिम भी नहीं कर सकता था। उसकी सबसे बड़ी वजह यह थी आपने असलन इल्म का सबक तो किसी से नहीं लिया था लेकिन आपमें इल्म की बुनियाद उच्चमत थी इस बुनियाद पर आपको आसमानी ज़रिये से इल्म बख्शा गया। आसमानी इल्म ज़िंदगियों को बनाने की जो सलाहियत

---

(1) सही मुस्लिम किताबुल ईमान

www.abulhasanalinadwi.org

(क्षमता) रखता है वह ज़मीनी ज़रिये से हासिल होने वाली सलाहियत से बेहद श्रेष्ठ और असर रखने वाला होता है आपको उस आसमानी इल्म ने वह योग्यता प्रदान की जिसने आपने इंसानों की दुनिया बदल दी और आपसे वह फायदा हर तरफ़ फैला जिससे इंसान को निचले स्तर से उठा कर बुलंद और उच्च स्तर का इंसान बना दिया और मानव जीवन के लिए ऐसा मार्ग दर्शन दिया जो रहती दुनिया तक इंसानों को अन्तिम कामयाबी की मंजिल तक पहुंचाने की सलाहियत रखता है और इंसान की आवश्यकता और उसके उच्च स्तर के अनुकूल इल्म प्रदान करता है। कुरैश के लोग जो आम तौर पर अनपढ़ थे उनके सामने उच्च कोटि की बातें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पेश कीं तो उन्होंने अहले किताब के आलिमों से मालूम करके आपको जांचने के लिए ऐसे सवालात आप सल्ल० के सामने रखे जिनके मुतालिक़ उनका ख्याल था कि आप सल्ल० न बता सकेंगे क्योंकि उनकी जानकारी आम इंसानों को इल्म के प्रचलित तरीक़े से ही हासिल हो सकती थी और आप उन प्रचलित तरीक़ों से नहीं गुज़रे लेकिन आपको आसमानी मुअल्लिम (शिक्षक) से हासिल हुआ था। कुरैशियों ने असहाबे कहफ़ का वाक़िया और ज़ुल्क़रनैन का वाक़िया मालूम किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को "वही" (ईश्वरवाणी) द्वारा जानकारी मिल गयी और आप सल्ल० ने उनसे कुरैश को अवगत कराया। जिससे कुरैश के सामने यह बात स्पष्ट हो गई कि आप सल्ल० जो कुछ कहते है वह ख्याली बातें नहीं हैं वह उस इल्म से प्राप्त की हुई है जो आप सल्ल० को खुदा से मिला है और यह इल्म इंसान की सीरत (जीवन चरित्र) और आचरण का उत्तम निर्माण व संरचना के उचित मार्ग का इल्म है, जो इंसानों को तबाही से बचाने वाला और सही दिशा पर ले जाने वाला मार्ग है।

अतएव केवल आधी शताब्दी में दुनिया ने देख लिया कि इस इल्म की रहनुमाई में एक विश्व क्रान्ति आ गई और इंसानों की ज़िंदगियों का रूख पूरे तौर से बदल गया। इंसान मुकम्मल तबाही की ओर जा रहा था। आधी शताब्दी में वह उन्नति और सफलता के राजपथ पर चलने लगा और उस पथ पर चलने से दुनिया की उस समय की महान शक्तियाँ सर के बल झुक गयीं और वहां भी क्रान्ति आ गई। यह सब अल्लाह तआला की उस नबी आखिरुज़्ज़मा की तालीम व तरबियत का असर था जिसने ज़िंदगी के हर रूख पर रहनुमाई प्रदान की और ज़िंदगी के हर पहलू में कामयाबी और इज़्ज़त का नमूना बताया और रहबरी की।

अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी रह० ने रसूलुल्लाह सल्ल० के पूर्ण, विश्वव्यापी और न मिटने वाले जीवन चिन्ह, आप सल्ल० की व्यापकता और परिपूर्णताः, समस्त मानव वर्ग एवं हर माहौल, हर ज़माना, हर पेशा और हर

www.abulhasanalinadwi.org

मामला तात्पर्य हर प्रकार के हालात और हर स्तर के लिए आप सल्ल० की परिपूर्ण व व्यापक रहनुमाई और आदर्श की अतिप्रभावशील और तत्वपूर्ण शैली में व्याख्या की है वह लिखते है :-

"एक ऐसा वैयक्तिक जीवन जो हर मानव वर्ग और हर हाल में इंसान की उचित भावनाओं और पूर्ण आचरण की मँजुषा हो वह केवल मुहम्मद सल्ल० का जीवन चरित्र है। अगर तुम दौलतमंद हो तो मक्का के व्यापारी और बहरेन के कोषाधिकारी का अनुसरण करो, अगर तुम ग़रीब हो तो शअ़ब अबी तालिब के क़ैदी और मदीने के मेहमान की कैफ़ियत सुनो, अगर तुम बादशाह हो तो सुल्ताने अरब का हाल पढ़ो, अगर तुम रिआया हो तो कुरैश के महकूम (प्राधीन) को एक नज़र देखो, अगर तुम फातेह (विजेता) हो तो बदर व हुनैन के सिपहसालार पर निगाह दौड़ाओ अगर तुमने शिकस्त खाई हो तो मारक-ए-उहद से इबरत हासिल करो, अगर उस्ताद और मुअल्लिम हो तो सुफ़्फ़ा के दरसगाह के मुअल्लिमे कुद्स को देखो अगर शार्गिद हो तो रूहुल अमीन के सामने बैठने वाले पर नज़र जमाओ, अगर तुम वाएज़ व नासेह (उपदेशक) हो तो मदीने की मस्जिद के मिंबर पर खड़े होने वाले की बातें सुनो, अगर तुम तन्हाई और बेकसी के आलम में हक़ के मुनादी का फर्ज़ अंजाम देना चाहते हो तो मक्का के बे यार व मददगार नबी का उसव-ए-हसना (आर्दश) तुम्हारे सामने है। अगर तुम हक़ की नुसरत (मदद) के बाद अपने दुश्मनों को ज़ेर (अधीन) और अपने मुख़ालिफों को कमज़ोर बना चुके हो तो फातेह मक्का का नज़ारा करो, अगर तुम कारोबार और दुनियावी मेहनत व कोशिश का प्रबन्ध सुधारना चाहते हो तो बनी नज़ीर, ख़ैबर और फ़िदक की ज़मीनों के मालिक के कारोबार और व्यवस्था को देखो, अगर यतीम (अनाथ) हो तो अब्दुल्लाह और आमिना के जिगर गोशे को ना भूलो अगर बच्चा हो तो हलीमा सादिया के लाडले को देखो, अगर तुम जवान हो तो मक्का के एक चरवाहे की सीरत पढ़ो, अगर तुम सफरी कारोबार में हो तो बसरा के कारवाने सालार की मिसाल ढूंढ़ो, अगर तुम अदालत के काज़ी हो और पंचायतों के सालिस (मध्यस्थ) हो तो काबा में नूरे आफ़ताब से पहले दाखिल होने वाले सालिस को देखो जो "हजरे असवद" को काबा के एक गोशे में ख़ड़ा कर रहा है, मदीना की कच्ची मस्जिद के सहन में बैठने वाले मुनसिफ को देखो, जिसकी नज़रे इंसाफ में शाह व गदा और अमीर व ग़रीब सब बराबर थे, अगर तुम बीवियों के शौहर हो तो ख़दीजा रज़ि० और आयशा रज़ि० के मुकद्दस शौहर के पवित्र जीवन का अध्ययन करो, और अगर तुम औलाद वाले हो तो फातिमा रज़ि० के बाप और हसन रज़ि० व हुसैन रज़ि० के नाना का हाल पूछो, गरज़ तुम जो कुछ भी हो और किसी हाल में भी हो तुम्हारी ज़िंदगी के लिए नमूना, तुम्हारे चरित्र के सुधार का सामान, तुम्हारे अंधकारमय जीवन के

www.abulhasanalinadwi.org

लिए हिदायत का चिराग और तुम्हारे पथप्रदर्शन के लिए हर समय और हर पल मुहम्मद सल्ल० का प्रकाश मिल सकता है। इसलिए मानव जाति के हर क्षेत्र और नूरे ईमानी के हर खोजी के लिए केवल मुहम्मद सल्ल० का चरित्र हिदायत का नमूना और नजात का ज़रिया है, जिसकी निगाह के सामने मुहम्मद सल्ल० की सीरत (चरित्र) है उसके सामने नूह व इब्राहीम, अय्यूब व यूनुस, मूसा व ईसा अलैहिमुस्सलाम की सीरतें मौजूद हैं। मानो तमाम दूसरे अंबिया-ए-कराम की सीरतें, एक ही प्रकार की चीजों की दुकाने हैं और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत, अख़लाक़ व आमाल की दुनिया का सबसे बड़ा बाज़ार है। जहां हर तरह के खरीदार और हर वस्तु के चाहने वालों के लिए बेहतरीन सामान मौजूद है।[1]

---

(1) खुतबात मदरास, पृ0 90–98

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय दस

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तौहीद (एकेश्वरवाद) ईमान की दावत इस ढंग से दी कि जिसने भी ध्यान से सुना बात उसके दिल मे उतर गयी और उस पर उसका ईमान मज़बूत हो गया और आपका अख़लाक़ी, इंसानी हमदर्दी और मुहब्बत भरा अंदाज़ भी ऐसा था जिसने भी करीब से देखा और सुना वह केवल प्रभावित ही नहीं हुआ बल्कि दिल व जान से आपका कहना मानने वाला बन गया और आप पर फ़िदा होने के लिए तैयार हो गया। और यह हालत दो चार आदमियों की नहीं हुई बल्कि जिसने भी आपको देखा सुना और समझा उसकी यही कैफ़ियत (स्थिति) हो गई। इस प्रकार आपकी दावती ज़िंदगी की २३ वर्ष की अवधी में ईमान वालों की एक ऐसी जमाअत तैयार हो गई जिसका उदाहरण इतिहास में कहीं नहीं मिलता। आपके दुनिया से तशरीफ ले जाने के बाद यही जमाअत आपका पूर्ण प्रतिनिधित्व करने वाली बन गयी और आपके मिशन को उसने पूरी दियानत व अमानत (सत्यनिष्ठा) के साथ और ध्यानपूर्वक जारी रखा। उसी के अनुकूल अवसर मिलने पर वह जमाअत आप सल्ल० पर ईमान लाने वाली और कहना मानने वाली जमाअत बन गयी। यह सज्जन लोग मक्का के १३ वर्षीय जीवन काल में कम सख्या में थे, और कुरैश के विभिन्न खानदानों में बिखरे हुए थे। इसलिए हर एक को स्वयं उसके रिश्तेदार परेशान करते थे और इस तरह वह कुरैश के कठोर दिल काफ़िरों और इस्लाम का विरोध करने वालों के अत्याचार का निशाना बनते थे लेकिन इसके बावजूद यह ईमान वाले अपने ईमान पर पूरी तरह जमे रहे थे। उनके सामने अल्लाह की प्रसन्नता और हुजूर सल्ल० की मुहब्बत और आख़िरत का मसअला था, जिसको उन्होंने दिल व जान से कुबूल किया था, जो भी ईमान लाता चाहे अमीर होता चाहे ग़रीब, ऊंचे खानदान का होता या कमज़ोर पोज़ीशन का उसमें ऐसा ही पक्का ईमान पैदा हो जाता।

यह ईमान ज़्यादातर दो वजह से पैदा होता था, एक वजह अल्लाह तआला का कलाम (क़ुरआन) मूजिज़ बयान (आजिज़ करने वाला बयान) था,

www.abulhasanalinadwi.org

जिसको एक बार भी सुन लेने से आदमी का दिल बदल जाता था। दूसरी वजह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक व शफ़क़त (स्नेह) को क़रीब से देख लेता था। क़ुरआन मजीद सुन कर ईमान लाने वालों की संख्या बहुत थी और आपके अख़लाक व बात-चीत सुन कर प्रभावित होने वालों की भी संख्या बहुत थी। आपसे प्रभावित होने की एक मिसाल समामा बिन असाल का वाकिया है। वह कहते हैं कि वह हुज़ूर सल्ल० के पास दुश्मनी बल्कि आपको नुकसान पहुंचाने आए लेकिन मिलते ही बदल गये और कहने लगे कि या रसूलुल्लाह सल्ल०! कसम है खुदा की, कि सारी दुनिया में मुझको आपसे ज़्यादा और किसी से ऐसी नफरत नहीं थी लेकिन अब तो आप सल्ल० ही दुनिया में सबसे बढ़कर प्यारे मालूम होते हैं।[1]

आप पर ईमान लाने वालों का हाल आपकी मुहब्बत व तरबियत से ऐसा ही बन गया कि उनके दिलों में ईमान लाते ही इस तरह की मुहब्बत और जान निछावर करने की कैफ़ियत पैदा हो जाती और फिर आपकी रहनुमाई और शिक्षा व दीक्षा से जीवन के वास्तविक और उच्च तथ्य की जानकारी इस दर्जे पैदा हो जाती कि उनको उच्चतर उद्देश्य के लिए जान निछावर कर देने में ज़रा भी संकोच न होता और अपने गुरू और नायक नबी-ए-मुकर्रम के आज्ञा पालन में बिना संकोच अपनी जान निछावर कर देने के लिए तैयार हो जाते। अपनी मर्ज़ी और इच्छा में चाहे कितना कठोर हों लेकिन आप सल्ल० की मर्ज़ी के सामने परवाह नहीं करते। और आपकी मर्ज़ी के अनुकूल अमल करते। अतः जो भी आप सल्ल० पर ईमान लाया उसने इस बात का सबूत दिया। उसकी एक बड़ी मिसाल हुदैबिया की सन्धि में सहाबा कराम का क़ुरैश की ज़ालिमाना शर्तों का कुबूल कर लेना और आप सल्ल० की मर्ज़ी के सामने झुक जाना और ग़ज़्व-ए-ख़नदक़ में तीन सप्ताह से अधिक भूखे प्यासे रह कर और सख्त सर्दी की हालत में अपनी जान हथेली पर लिये जमे रहना है और ग़ज़्व-ए-उहद में जब दुश्मन ने सामने आ कर सीधा आक्रमण किया तो दसयों जाँनिसार सहाबा आपके सामने आ गए और दुश्मनों के वार अपने सीनों पर लिये और सारे ज़ख्म बर्दाश्त किये ताकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुरक्षित रहें और सब एक एक करके आप पर कुर्बान हो गए। हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० ने अपना हाथ सामने कर दिया और तीरों को रोकना शुरू किया यहां तक कि उनकी सब उंगलियाँ ज़ख्मों से लहू लुहान (रक्तरंजित) हो गयीं और हाथ लुन्ज हो गया। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने ख़ोद की एक कड़ी को अपने दांतों से निकाला तो उसी के साथ उनका एक दांत भी गिर पड़ा। दूसरी कड़ी निकाली

---

(1) सही मुस्लिम, किताबुल जिहाद।

www.abulhasanalinadwi.org

तो दूसरा दांत भी उसके साथ बाहर आ गया। अबू दुजाना ढाल बन कर आपके सामने खड़े हो गए, तीर उन पर गिरते रहे लेकिन वह उसी तरह आप पर झुके रहे, यहां तक कि उनकी पीठ तीरों से छलनी हो गई।[1]

ग़ज़व-ए-उहद के बाद मुसलमान मदीना पंहुचे तो रास्ते में बनी दीनार की एक महिला के मकान पर उनका गुज़र हुआ, जिसके बाप, भाई और शौहर उस जंग में काम आ गए थे। बारी बारी उन तीन हादसों की सदा उनके कानों में पड़ी थी लेकिन वह हर बार सिर्फ यह पूछती थीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कैसे हैं? लोगों ने कहा खैरियत से हैं। उन्होंने पास आ कर देखा और बेइख्तीयार पुकार उठीं "आपके होते सब मुसीबतें कुछ नहीं।"[2]

जब कुफ़्फ़ार ज़ैद बिन दसना को कत्ल करने के लिए हरम से बाहर लाए तो अबू सुफियान ने उनसे कहा : ज़ैद मैं तुमसे कसम दिला कर पूछता हूँ क्या तुम यह पसन्द करोगे कि तुम आराम से अपने घर वालो में हो और तुम्हारी जगह मुहम्मद (सल्ल०) हों? ज़ैद ने जवाब दिया कि मुझे तो यह भी गवारा नहीं कि मैं अपने घर मे आराम से रहूँ और मुहम्मद सल्ल० को एक कांटा भी चुभे। अबू सुफियान ने इस पर कहा मैंने किसी को किसी से इतनी मुहब्बत करते नहीं देखा जितनी मुहब्बत सल्ल० के साथी करते हैं।[3]

जो व्यक्ति भी कुछ मिनट के लिए हुजूर सल्ल० से मिल जाता वह आप पर सब कुछ कुरबान कर देने के लिए तैयार हो जाता, कुछ उन आदमियों के अलावा जो यहूदियों के साथ रह कर ईमान ज़ाहिर करते थे लेकिन अन्दर से दुश्मन थे लेकिन आप सल्ल० ने उनके साथ भी मुहब्बत और रवादारी का सुलूक किया।

अतः आप सल्ल० के सहाबा कराम की जो जमाअत बनी वह ईमान और मुहब्बते रसूल और आपके लाए हुऐ दीन इस्लाम के आज्ञा पालन में पहाड़ की तरह अटल थे। आहिस्ता आहिस्ता इतनी बड़ी सख्या में यह जमाअत तैयार हुई कि मानव इतिहास में ऐसी नेक और पक्के ईमान व दीन की कोई मिसाल नहीं मिलती। यह हक़ीक़त में अल्लाह की तरफ़ से था, जिसने यह फैसला किया कि आप सल्ल० के बाद किसी नबी के आने की ज़रूरत नहीं और आपकी संगत और रहनुमाई हासिल करने वालों की जमाअत को ऐसी विशेषताओं और आचरण वाला बना दिया कि नबूवत का उचित प्रतिनिधित्व करते हुए इस दीन को और सर्वोच्च मानवीय मूल्यों को आगे बढ़ाऐं। उस जमाअत का हर व्यक्ति

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2/417
(2) सीरत इब्ने हिशाम 2/99
(3) सीरत इब्ने हिशाम 2/174

www.abulhasanalinadwi.org

अपनी जगह सूरज व चांद था और आप सल्ल० ने इस की पुष्टि की और फरमाया : मेरे सहाबा सितारों की तरह हैं, उनमें से जिसका अनुसरण करोगे हिदायत (सद्मार्ग) पर रहोगे।

आप सल्ल० से जो जितना ज़्यादा करीब रहा उसको उतनी ज़्यादा प्राथमिकता प्राप्त हुई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सबसे ज़्यादा क़रीब हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि० रहे, कि जिनसे आपकी संगति और मित्रता नबूवत से पहले से थी। वह लगभग आपके समायु थे, केवल दो ढ़ाई साल छोटे थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद इस दीने इस्लाम को स्थापित रखने और आगे बढ़ाने की ज़िम्मेदारी सबसे पहले आपको मिली और आप प्रथम ख़लीफ़ा हुए। फिर इसी क्रम से आपके बाद तीन दूसरे खलीफ़ा हुए जो आपके सच्चे उत्तराधिकारी हुए और खुलफा-ए-राशदीन कहलाए। उन सबके ज़रिये खिलाफत राशिदा यानी उच्चकोटी की खिलाफ़त का सिलसिला आप सल्ल० की वफात के बाद **30** साल तक जारी रहा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने "वही" के ज़रिये जो आचरण और गुण और ज़िंदगी के विभिन्न ज़िम्मेदारियों में जो कार्यप्रणाली अपनाई थी और अपने सहाबा को उसकी शिक्षा दी थी उसके अनुसार इस्लामी जीवन पद्धति को सहाबा के ज़रिये बिना घटाए बढ़ाए जारी किया जाता रहा। अगामी समय के लिए उच्च उदाहरण बन गया और सत्य धर्म का मार्ग नियुक्त हुआ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की २३ वर्षीय शिक्षा व दीक्षा के बाद आपके विश्वास पात्र सहाबा के पास ३० साल तक इस ज़िम्मेदारी के रहने से जिसमें हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में अख़तियार की हुई कार्यप्रणाली के अनुसार काम अंजाम पाए और आईन्दा के लिए नमूना बना। हुज़ूर सल्ल० के विश्वास पात्र खुलफा के प्रबन्ध व व्यवस्था की यह ३० वर्षीय मुद्दत ऐसी मुद्दत थी कि उसकी समाप्ति पर प्रबन्ध संभालने का काम नई नस्ल तक क्रमशः स्थानातन्रित हुआ जिसमें प्रत्यक्ष रूप में हुज़ूर सल्ल० की संरक्षता नहीं थी परन्तु हुज़ूर सल्ल० के काल की समानता थी और यह वास्तव में अल्लाह तआला की ओर से ही प्रबन्ध था और वह यह कि दस साल वही-ए-इलाही के अधीन स्वयं हुज़ूर सल्ल के ज़रिये फिर **30** साल आप सल्ल० द्वारा दीक्षा प्राप्त किए हुए लोगों के तहत गुज़रे और इन **40** साल में इस्लाम धर्म की आर्दश व्यवस्था का नमूना सामने आ जाए और कयामत तक उसी को सामने रख कर अमल की कोशिश की जाए क्योंकि दीन मुकम्मल कर दिया गया था।

अतः उसके मुकम्मल होने का नमूना क़यामत तक सामने रहे। अब इसमें किसी तरमीम (संशोधन) की ज़रूरत पेश नहीं आना है। कयामत तक इंसानों की सलाह व फलाह (अच्छाई और भलाई) के लिए बिल्कुल काफ़ी है।

www.abulhasanalinadwi.org

इसलिए कि वह अल्लाह सारे संसार के पालनहार का दिया हुआ दीन है, जो इंसानों के मिज़ाज और ज़रूरतों को शुरू से अख़िर तक जानने वाला है बल्कि बताने वाला है। इसी लिहाज़ से उसको मुकम्मल फरमा दिया गया और अल्लाह तआला की ओर से उसकी हिफाज़त का वादा भी फरमा दिया गया :

""बेशक यह (किताब) नसीहत हमने ही उतारी है और हमही इसके रक्षक हैं।" (सूरा हिज्र -9)

दूसरी जगह फ़रमाया :

"आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन पूरा कर दिया और अपनी नेमतें (वरदान) पूरी कर दीं और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसंद किया।" (सूरा : माईदा - 3)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद जिन सज्जनों को यह सिलसिला (क्रम) चलाना था अर्थात आपके करीबी साथियों की जमाअत (दल) इस्लाम की वह आर्दश जमाअत बनी जिसने नबी की करनी और कथनी को अच्छी तरह समझा था और वह इसके लिए अपनी मर्ज़ी और इच्छा को मिटा चुके थे और अपने नबी का दर्पण बन चुके थे। वह कोई ऐसी बात नहीं कह सकते थे और न कर सकते थे जो अल्लाह के रसूल की मर्ज़ी के विरूद्ध हो, यह जमाअत (दल) जमाअते सहाबा कहलाई, जिनकी संख्या हज़ारों से अधिक हुई।

अमरीकी सैनिक इतिहासकार श्री रिचर्ड जाबेल ने जिन्होंने अमरीका के विभिन्न महत्वपूर्ण राजकीय विभागों तथा अमरीकन गुप्तचर एजेन्सी सी०आई०ए० में कर्मचारी के रूप में काम किया है और विभिन्न शीर्षकों पर ४० पुस्तकें लिखी हैं हाल ही में एक नई तहकीकी किताब (अन्वेशणात्मक पुस्तक) लिखी है जिसमें उन्होंने स्वीकार किया है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर प्रकार से पूर्ण पुरूष (मर्दे कामिल) और जीनियस इंसान हैं। विशेष कर उक्त महोदय ने हुज़ूर सल्ल० की सैन्य तथा नेतृत्व की क्षमता और प्रशिक्षण योग्यता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि मुहम्मद (सल्ल०) पहले इस्लामी नायक हैं और मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने मानने वालों की एक ऐसी आर्दश जमाअत तैयार कर दी जिसने बैज़िनतीनी और ईरानी साम्राज्य फतह कर लिया और ऐसी जमाअत तैयार की जिसका इस बात पर पक्का और पूर्ण ईमान व यकीन था कि आप (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं और अपने नबी व रसूल की बताई हुई हर बात पर कार्यबंद (कर्मनिष्ठ) थे, अगर ऐसी संगठित, त्याग व बलिदान की भावना से भरपूर और अपने नायक व उपदेशक के बताए हुए सिद्धान्तों और जीवन व्यवस्था पर सख्ती से कारबन्द जमाअत न होती तो मुहम्मद (सल्ल०) की मृत्यु के पश्चात इस्लाम का विकास न होता। मुहम्मद की मृत्यु के पश्चात मुहम्मद के साथियों का फितन-ए-इरतिदाद (धर्मपरित्यागउपद्रव) पर काबू पा लेना और मुरतद्

(विधर्मी) कबीलों को पुनः इस्लाम पर जमा देना मुहम्मद की तरबियत और उनके नायक होने की खुली दलील है।

रिचर्ड जाबेल ने आगे लिखा है कि मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने साथियों और ईमान लाने वालों के दिल व दिमाग में यह बात भली भांति बिठा दी और पक्की कर दी कि वह भूमण्डल पर अल्लाह के आदेश को लागू करने वाले हैं। यह इतिहास में पहली घटना है कि कोई जमाअत (दल) यह ईमान व विश्वास रखती हो कि वह भूमण्डल पर अल्लाह के आदेशों को लागू कर रही है। मुहम्मद (स०अ०) ने जो जमाअत तैयार की वह खानदानी, कौमी, नस्ली, कबाएली, इलाकाई (क्षेत्रीय) और रंग व रूप की बुनियाद पर नहीं बल्कि वह ख़ालिस (विशुद्ध) दीने इस्लाम की बुनियाद पर मुत्तहिद (एकजुट) थी"।[1]

अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी रह० लिखते हैं :

"इस्लाम के शिक्षक (हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सम्बन्ध में केवल यही दावा नहीं कि वह लोगों को किताब व हिकमत की बातें सिखाता और अल्लाह के आदेश को सुनाता है बल्कि यह भी कि वह उनको अपने फ़ैज़ व असर से पाक व साफ़ व मुसफ़्फ़ा (शुद्ध) भी बना देता है, वह नाक़िसों को कामिल (अपूर्ण को पूर्ण) गुनाहगारों को नेक, अंधों को बीना (आंख वाला) और तारीक दिल को रौशन दिल (अंधकारपूर्ण हृदय को प्रकाशमान हृदय) बना देता है। अतः जिस समय उसने अपने जीवन का कारनामा समाप्त किया। कम से कम एक लाख इंसान उसकी शिक्षा से अमलन (व्यवहारतः) भाग्यवान हो चुके थे और वह अरब जो नैतिक पतन के अन्तिम बिन्दु पर था, २३ वर्ष बाद वह उच्च नैतिकता की चरम सीमा को पहुंचा, जिसकी बुलन्दी तक कोई सितारा आज तक न पहुंच सका।"

यदि किसी शिक्षक की परिपूर्णता में यह तासीर भी हो फिर भी यह देखना है कि इस विश्व की परिपूर्णता और प्रबन्ध-व्यवस्था के लिए एक ही योग्यता के इंसानों की नहीं बल्कि सैकड़ो विभिन्न योग्यता वाले इंसानों की आवश्यकता है, नैतिक शिक्षा के दूसरे शिक्षकों की पाठशालाओं पर एक नज़र डालने से मालूम होगा कि वहां केवल एक विषय के विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के प्रशिक्षण ग्रह में सैनिक शिक्षा के अतिरिक्त कोई और विषय सामने नहीं। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पाठशाला में क्षमा के अतिरिक्त कोई और पाठ नहीं। लेकिन मुहम्मद सल्ल० की उच्च पाठशाला में आकर देखो तो मालूम होगा कि यह सार्वजनिक विद्यालय है, जिसमें मानव विकास की हर क्षमता फल फूल रही है। स्वयं शिक्षक अपने व्यक्तित्व में एक पूर्ण

---

(1) पत्रिका "अल–मुजतमा" अंक 1796, 5 अप्रैल 2008 ई0

www.abulhasanalinadwi.org

विश्वविद्यालय है, जिसके अन्दर कला व विद्या का हर विभाग अपनी जगह स्थापित है। हर प्रकार और रूचि के विद्यार्थि आते हैं और अपनी अपनी क्षमता और आम रूचि के अनुसार कमाल (कौशल) प्राप्त करते हैं।

आप सल्ल० की हैसियत एक इंसान, एक बाप, एक शौहर, एक दोस्त, एक गृहस्थ, एक करोबारी (व्यापारी), एक हाकिम, एक काज़ी, एक सेनापति, एक बादशाह, एक उस्ताद, एक मुरशिद (उपेदशक) एक वाएज़, एक ज़ाहिद व आबिद और आख़िर एक पैग़म्बर की नज़र आती है। यह तमाम इंसानी तबके आप सल्ल० के सामने शागिर्द बन कर बैठते हैं और अपने अपने व्यवसाय व कला के अनुसार आप सल्ल० की शिक्षा से लाभप्रद होते हैं।

नबी के शहर की इस बड़ी पाठशाला को ग़ौर से देखो जिसकी छत खजूर के पत्तों से और खम्भे खजूर के तनों से बनाए गए थे और जिसका नाम मस्जिद नबवी था, उसके अलग अलग गोशों (कोनो) में इंसानी जमाअतों के अलग अलग दर्जे खुले हुऐ थे। कहीं हज़रत अबूबकर रज़ि० व उमर रज़ि०, उसमान रज़ि०, अली रज़ि० जैसे फरमारवा (शासक) तालीम हासिल कर रहे हैं। कहीं तलहा रज़ि०, ज़ुबैर रज़ि०, मआविया रज़ि०, सअद बिन मआज़ व सईद बिन ज़ुबैर रज़ि० जैसे बड़ी सूझ बूझ वाले लोग हैं कहीं खालिद रज़ि०, अबू उबादा रज़ि०, सअद बिन अबी वक्कास रज़ि० और अमर बिन आस जैसे सेनापति हैं। कहीं वह हैं जो बाद में प्रान्तो के शासक, अदालतों के जज और कानून के विधायक बने। कहीं आबिदों व ज़ाहिदों का जनसमूह है जिनके दिन रोज़ों और रातें नमाज़ों में कटती हैं। कहीं अबूज़र रज़ि० व सलमान रज़ि० व अबूदरदा रज़ि० जैसे वह ख़िरकापोश (गुदड़ी पहनने वाले) जो मसीहे इस्लाम कहलाते है। कहीं वह सुफ़्फ़ा वाले तालिब इल्म थे जो जंगल से लकड़ी ला कर बेचते थे और गुज़ारा करते और दिन और रात इल्म के हासिल करने मे लगे रहते थे। कहीं हज़रत अली रज़ि०, हज़रत आयशा रज़ि०, हज़रत इब्न अब्बास रज़ि०, हज़रत इब्न मसूद रज़ि०, हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० जैसे फकीह व मुहद्दिस थे, जिनका काम इल्म की खिदमत और इशाअत (प्रसार) था। एक जगह गुलामों की भीड़ है तो दूसरी जगह मालिकों की सभा है, मगर उनमें दिखावटी आदर व दुनियावी सम्मान का कोई अन्तर नहीं पाया जाता। सब समानता के एक ही स्तर पर और सच्चाई की एक ही शमा के गिर्द परवानावार जमा हैं। सब पर तौहिद (एकेश्वरवाद) का नशा छाया और सीनों में हक़ परस्ती (सत्यवादी) का एक ही वलवला मौजें ले रहा है और सब नैतिकता के एक ही पवित्र आईने की प्रतिछाया बनने की कोशिशों मे लगे हुए हैं।[1]

---

(1) सीरतनुनबी–अल्लामा शिबली नोमानी व सय्यद सुलैमान नदवी 6/24–25

www.abulhasanalinadwi.org

साबिक़ीन, अव्वलीन और अशर-ए-मुबश्शरा

शुरू में जो लोग ईमान लाए उनको अपने ईमान लाने पर जो ज़ुल्म और दुश्मनी झेलनी पड़ी वह असाधारण हद तक ज़्यादा थी और बरसों जारी रही और इससे सम्बन्ध ऐसे लोगों को पड़ रहा था जो अपने खानदान के सम्मानित लोग थे और इससे पहले तक वह मामूली अपमान अथवा अत्याचार किसी क़ीमत पर बर्दाश्त नही कर सकते थे चाहे लड़ाई की नौबत आ जाए लेकिन उन ईमान लाने वालों को हुक्म यही था कि बर्दाश्त करो और उनको यह भी नहीं मालूम था कि यह कब तक बर्दाश्त करना है और यह कभी ख़त्म होगी भी नहीं। ऐसी सूरत में ज़ब्त नफ़्स (मनोविग्रह) और बर्दाश्त पत्थर जैसे दिल रखने वाले ही कर सकते हैं या ऐसे कमज़ोर और बेहैसियत लोग जो किसी भी ज़ुल्म (अत्याचार) का मुक़ाबला नहीं कर सकते। लेकिन यह ईमान लाने वाले क़ुरैशी बदला लेने की क्षमता रखते थे, लेकिन हुक्म खुदावंदी की वजह से बर्दाश्त कर रहे थे। अतः इसी लिहाज़ व मुक़ाम से उनका रूतबा बढ़ा और "साबिक़ीन अव्वलीन" (ईमान की पुकार पर सबसे अव्वल आगे बढ़ने वाले) कह कर उनका रूतबा बुलन्द क़रार दिया गया। क़ुरआन मजीद में इरशाद है :-

"जिन लोगों ने पहल की (यानी सबसे पहले ईमान लाए) मुहाजीरीन (यानी अल्लाह की राह में वतन छोड़ने वाले) और अन्सार (यानी जो उनके मद्दगार बने) में से भी और जिन्होंने उपकार के साथ उनकी पैरवी की खुदा उनसे खुश है और वह खुदा से खुश हैं और उसने उनके लिए बाग़ात तैयार किये हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं और हमेशा उनमें रहेंगे यह बड़ी कामयाबी है।" (सूरा : तौबा - 100)

और दूसरी जगह इरशाद है :-

"फतह मक्का से पहले जिस किसी ने ख़र्च किया और लड़ाई में हिस्सा लिया, तुममें से कोई दूसरा उनके बराबर का नहीं हो सकता। इनके लिए अल्लाह के पास बड़े बड़े दर्जे हैं उन लोगों के मुकाबले में जिन्होंने बाद में अल्लाह की राह में माल खर्च किया और लड़ाई में शामिल हुए। नेक बदले का वादा तो अल्लाह ने हर एक के लिए कर रखा है और तुम जो भी काम करते हो अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर है।" (सूरा : अल हदीद - 10)

यह वास्तविकता है कि शुरू में जो लोग ईमान लाए उनको ज़्यादा सख्त हालात का सामना करना पड़ा और उन्होंने पूर्ण रूप से आज्ञा पालन और प्रेम का सबूत दिया, जो ऊंचे दर्जे का आर्दश था। यह मदनी ज़िंदगी से पहले का ज़माना था, जिसमें उनको अपने ही रिश्तेदारों से बाइकाट का सामना करना पड़ा और उनकी ओर से नाना प्रकार के कष्ट उठाने पड़े। फिर दीन ही की वजह से

www.abulhasanalinadwi.org

अपना घरबार, बाल बच्चे और वतन छोड़ना पड़ा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल पर उनके इस गहरे सम्बन्ध और कुर्बानी का बड़ा असर पड़ा था। आप सल्ल० ने अल्लाह के हुक्म से उनमें से बहुत से लोगों के ईमान व यक़ीन की मज़बूती के कुबूल किए जाने और बेहतरीन कामयाबी होने का इज़हार फरमाया। इनमें दर्जा अव्वल के हज़रात (सज्जन) अशर-ए-मुबश्शरा कहलाए। यह दस हज़रात हैं जिनको एक साथ जन्नती होने की खुशखबरी सुनाई गयी। फरमाया :-

"हज़रत अबूबकर जन्नत में, उमर जन्नत में, उस्मान जन्नत में, तलहा जन्नत में, ज़ुबैर जन्नत में, अब्दुर्रहमान बिन औफ जन्नत में, सअद जन्नत में, सईद जन्नत में और अबू उबैदा बिन जर्राह जन्नत में।"[1]

इनके अलावा और भी दूसरे कई सहाबा के बारे में ज़ाती तौर पर बशारत के जुमले इरशाद फरमाये हैं। ग़ज़व-ए-बदर में शरीक होने वालों और बैअत-ए-रिज़वान में शरीक होने वालों के लिए भी बशारत दी। इसी तरह कुछ सहाबी औरतों के बारे में भी बशारत दी। और हुज़ूर सल्ल० का इस दीन के सिलसिले में कुछ भी फ़रमाना अल्लाह तआला के हुक्म ही से होता था। इन अहम हज़रात (सज्जनों) के सम्बन्ध में यह बशारतें (खुशखबरियाँ) मौके मौके से नाम लेकर दी गयीं। सामान्यतः बशारत दूसरे लोगों को भी दी गयी। कुरआन मजीद में फरमाया :- "रज़ीअल्लाहु अनहुम व रजूअन्हु" (अल्लाह तआला उन सबसे राज़ी व खुश है और यह भी अपने खुदा से राज़ी व खुश हैं) और खुद आप सल्ल० ने अपनी ज़बाने मुबारक से बशारत दी। कुरआन मजीद में आपकी हर कही बात के बारे यह फरमाया गया कि आप अपनी तरफ़ से नहीं कहते, "वही" की बिना पर कहते हैं, जो आप पर भेजी जाती है :-

"और न खुवाहिश नफ़्स से मुंह से बात निकालते हैं ये तो हुक्म खुदा है जो उनकी तरफ भेजा जाता है।" (सूरा : नज्म - 4)

तो यह बशारतें भी "वही" इलाही के अनुसार होती थीं। इस तरह अल्लाह तआला ने उनके जीवन काल ही में उनके जन्नती होने की सूचना दी।

खुलफा-ए-राशिदीन

अशर-ए-मुबश्शरा में सबसे प्रथम चार सज्जन अधिक उत्तम माने गए उन सज्जनों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के पश्चात आप सल्ल० का वास्तविक उत्तराधिकार खिलाफत राशिदा के रूप में प्रदान हुआ, यह

---

(1) सुनन तिरमिज़ी, किताबुल मनाक़िब।

www.abulhasanalinadwi.org

खुलफाऐ राशिदीन कहलाए। हुज़ूर सल्ल० का इरशाद भी था "कि मेरी और खुलफ़ाए राशिदीन की सुन्नत को लाज़िम पकड़ो।"[1]

यह चार सज्जन एक के बाद दूसरे हुज़ूर सल्ल० की मृत्यु के पश्चात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को पूरे इख़लास व अमानतदारी के साथ अंजाम देते रहे और इस तरह हुज़ूर सल्ल० की अपने बाद के लिए यह भविष्यवाणी भी पूरी हुई कि नबूवत की खिलाफ़त तीस साल रहेगी। हज़रत अबूबकर रज़ि० पहले ख़लीफ़ा हैं, दूसरे हज़रत उमर रज़ि०, तीसरे हज़रत उस्मान रज़ि० और चौथे हज़रत अली रज़ि०। हज़रत अली रज़ि० की शहादत के बाद हज़रत हसन रज़ि० ने छः महीने प्रबन्ध संभाला इस पर 30 साल पूरे हुए। उनकी ख़िलाफ़त तक के ज़माने को ख़िलाफ़ते राशिदा का ज़माना क़रार दिया गया। इस पर हिजरी तारीख के 40 साल पूरे हुए। शुरू के दस साल स्वयं हुज़ूर सल्ल० के मदनी जीवन काल में इस्लामी व्यवस्था की स्थापना एवं रचना के और फिर ३० साल उसकी अधीनता और प्रतिनिधित्व में गुज़रे। इस 30 वर्षीय अवधि इस्लाम का सर्किल अरब क्षेत्र से निकल कर पास पड़ोस के देशों में फैलता और विशाल होता गया। हुज़ूर सल्ल० की मृत्यु के तत्पश्चात मदीने के कुछ अरब क़बीलों ने यह समझ कर कि हुज़ूर सल्ल० के न रहने पर अब उन पर पाबन्दी नहीं रही, इस्लामी तरीक़े को छोड़ना चाहा तो उनको इस्लाम के अक़ीदे और निज़ाम (व्यवस्था) की तरफ वापस लाया गया। इस विद्रोह की जो दुष्टता सामने आई थी उसे प्रथम ख़लीफ़ा हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़ि० के आदेश पर सैनिक अभियान द्वारा समाप्त कर दिया गया और इस्लाम की आर्दश व्यवस्था जारी रही और ख़िलाफ़ते राशिदा का इस ३० वर्षीय अवधि में इस्लामी क्षेत्र मध्य एशिया से अफ़्रीक़ा तक पहुंच गया।

खुलफाऐ राशिदीन का यह 30 वर्षीय काल वह आर्दश काल है जो हर युग में उचित इस्लामी व्यवस्था के लिए आर्दश और मार्गदर्शक काल है, जिससे हर इस्लामी व्यवस्था को रहनुमाई (पथप्रर्दशन) लेना ही उसके इस्लामी निज़ाम (व्यवस्था) होने की तसदीक़ (पुष्टी) की जा सकती है।[2]

हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़िअल्लाहु अन्हु

यह प्रथम ख़लीफ़ा हैं और यह घर के बाहर के लोगों में सबसे पहले ईमान लाने वाले सहाबी हैं। रसूलुल्लाह सल्ल० के अति विश्वास पात्र और जान निछावर करने वाले सहाबी हैं। जब आप सल्ल० ने मदीने मुनव्वरा हिजरत करने

---

(1) अबूदाऊद व तिर्मिज़ी।

(2) ह तीस वर्षीकाल रबीउलअव्वल सन् 11 हिजरी से शुरू हो कर रबीउल अव्वल सन् 41 हिजरी पर पूरा हुआ।

www.abulhasanalinadwi.org

का फ़ैसला किया तो साथी बनाने के लिए उनही को चुना। नबवी मिज़ाज वह मंशा (नबवी स्वभाव और अभिप्राय) को समझने में यह सर्वश्रेष्ठ थे। अपनी वफ़ात से पहले हुज़ूर सल्ल० ने नमाज़ की इमामत इनसे कराई। सारी ज़िंदगी हुज़ूर सल्ल० के साथ रहे और हर काम में शरीक। इसी लिए उन्हें सहाबा किराम में पहले नम्बर का व्यक्ति समझा जाता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद आपके क़ायम मुक़ाम (स्थानापन्न) और ख़लीफ़ा हुए और आइन्दा के लिए इस्लाम की मज़बूती का ज़रिया बने। हुज़ूर सल्ल० ने आपकी एक साहबज़ादी हज़रत आयशा रज़ि० को अपने निकाह में दाख़िल फ़रमाया था। इस तरह से उनकी दोस्ती और सहयोग का सम्मान किया। हज़रत आयशा रज़ि० चूंकि कम उम्री में आपके निकाह में आ गयीं इस लिए उनका पालन पोषण आपकी संरक्षता में हुआ और बीवी होने की वजह से आपके आन्तरिक घरेलू बातों को जानने वाली हुईं। जिससे बाद में लोगों को बहुत फाएदा हासिल हुआ।

प्रथम ख़लीफ़ा की खिलाफत दो साल रही। इस अवधि में आपने हुज़ूर सल्ल० के मिज़ाज और हिदायत (आदेश) के अनुसार सामाजिक व्यवस्था और शासन काल को जमाया और मज़बूत किया और इस ढंग से इस्लाम का यह प्रबन्ध अपनी पट्री पर संचालित रहा फिर अपने जीवन के अन्तिम समय अपने बाद के लिए बहुत सोच समझ कर हज़रत उमर रज़ि० को ख़लीफ़ा तय कर दिया, जिनके नम्बर दो होने का सबूत बाद में पूरी तरह साबित हुआ और उन्होंने इस्लामी प्रबन्ध को उसी पटरी पर महान कारनामों के साथ प्रचलित रखा। इसका सेहरा भी उनही के चयन की ओर जाता है।

हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रज अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि० के बाद दूसरे दर्जे पर हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० का नाम है। वह शुरू में जब तक इस्लाम को नहीं समझ पाए थे, उसके सख़्त दुश्मन थे और समझने के बाद उसके ज़बरदस्त फ़िदाई (मोहित) बन गए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहयोग और समर्थन में पूर्ण रूप से लग गए। इस्लाम के जांबाज़ और वफ़ादार सिपाही की हैसियत से लगे रहे। यहां तक कि यह वास्तविकता स्पष्ट हो गई कि हज़रत अबूबकर रज़ि० के बाद उनही का मरतबा है। अतः हज़रत अबूबकर रज़ि० के बाद ख़लीफ़ा हुए और १० साल उन्होंने इस्लाम की नुमाईन्दगी (प्रतिनिधित्व) की और इस्लामी व्यवस्था को फैलाने में बड़ी मेहनत की। उनहीं की ख़िलाफ़त में अरब के पास पड़ोस के कई महत्वपूर्ण देश इस्लामी शासन के ताबेदार (अधीनस्त) बने और इस्लाम का झंडा करीब के कई देशों में लहराया और बैतुलमुकद्दस जैसा

www.abulhasanalinadwi.org

मुतबर्रक शहर जहां के लोग इस्लाम के ताबेदार अब तक नहीं हुए थे उनके सामने खुशी से ताबेदार बने और शहर मुसलमानों के हवाले कर दिया। उनकी भी एक साहबज़ादी को हुज़ूर सल्ल० ने अपने निकाह में दाख़िल किया और इस तरीके से उनकी ख़िदमात की क़द्रदानी (सम्मान) का इज़हार किया। इस्लाम के सही मिज़ाज (उचित स्वभाव) से उनकी अनुकूलता कई मामलों में खुल कर सामने आयी।

हज़रत उमर रज़ि० के शासन काल में महान विजय हुई और उच्चतम प्रबन्ध और अनुशासन स्थापित हुआ और नए हालात के सामने आने पर हुज़ूर सल्ल० के बताये हुए नियमों के अनुसार आपने उनका समाधान किया। इस प्रकार अशान्ति की सूरत नहीं पैदा हुई और इस्लामी आदेश और हुज़ूर सल्ल० के स्थापित किये हुए अनुशासन की मज़बूती का साधन बने।

हज़रत उस्मान रज़िअल्लाहु अन्हु

तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० हुए जो दौलतमंद आदमी थे। ईमान लाने के बाद अपनी दौलत को ज़्यादा से ज़्यादा इस्लामी कामों में खर्च करने लगे और इस्लाम को ताक़त पहुंचाने के लिए तन, मन और धन से लग गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक साहबज़ादी हज़रत रूकय्या रज़ि० को उनके निकाह में दिया। उनके इन्तिक़ाल के बाद दूसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि० को दिया। इस तरह उनको हुज़ूर सल्ल० से दोहरा रिश्ता हासिल हुआ और ज़ुन्नुरैन का ख़िताब (उपाधि) मिला। यानी दो "नूर" हासिल करने वाले। वह हुज़ूर सल्ल० की दादीहाली शाखा उमय्या बिन अबदे शम्स की औलाद में थे और अपने खानदान में आली मरतबत (उच्चश्रेणी) थे। उनके इस्लाम लाने से इस्लाम को ताकत मिली थी, लेकिन उनके खानदान वालों ने इस्लाम लाने पर उनको परेशान किया और इतना परेशान किया कि उनको मक्का छोड़ कर दो बार हिजरत करनी पड़ी और जब इस्लाम को मज़बूती हासिल हो गई तो वह हबशा से वापस आए।

अल्लाह तआला ने उनको बड़ी खुबियाँ और विशेषताएं प्रदान की थीं। ग़ज़व-ए-तबूक में ग़ज़वा के खर्च के लिए बहुत भारी रकम (राशि) द्वारा सहायता दी। उनकी विशेषताओं में शर्म व हया (लज्जा) विशेषकर थी। जिसकी विशेषकर इज़हार क़द्रदानी हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाई। उनको अपने खिलाफत काल में कुछ आक्षेप करने वालों की ओर से बड़ा कष्ट पहुंचा और उनके विरोधियों ने उन पर आक्रमण करके शहीद भी कर दिया। यह कष्टदायक घटना सन् **35** हिजरी में हुई। उस समय उनकी उम्र **82** वर्ष की थी। यह शहीद किये जाने वाले दूसरे ख़लीफ़ा हैं उनकी शहादत की घटना से इस्लामी शासन में बड़ी बेचैनी पैदा हुई

जो विभिन्न परेशानियों का कारण बनी। उनकी विशेषता में हुज़ूर सल्ल० ने फरमाया : "हर नबी का एक साथी होता है और मेरे साथी उस्मान होंगे।"[1]

हज़रत अली रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रत उस्मान रज़ि० के बाद हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० ख़लीफ़ा हुए, जो अबू तालिब के बेटे होने की वजह से हुज़ूर सल्ल० के चचाज़ाद भाई भी थे और हुज़ूर सल्ल० को नबूवत मिलने से पहले ही उनको हुज़ूर सल्ल० ने अपने चचा से लेकर अपने साथ कर लिया था। इस तरह वह बचपन से ही हुज़ूर सल्ल० के साथ रहे। उनकी उम्र हुज़ूर सल्ल० से **30** साल कम थी। लिहाज़ा उम्र के लिहाज़ से आप सल्ल० के लड़के की तरह थे। आप सल्ल० ने उनके जवान होने पर अपनी साहबज़ादी को उनके निकाह में दे दिया। यह साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा हुज़ूर सल्ल० की बहुत महबूब (प्रिय) साहबज़ादी थीं और ज़िंदगी भर आप सल्ल० के साथ और क़रीब रहीं और हुज़ूर सल्ल० की औलाद नवासों और नवासियों की सूरत में उनही से चली। हज़रत हसन और हज़रत हुसैन उनके बेटे थे, जो घर से घर मिला होने की वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेटे और पोतों की तरह रहे। इस तरह उनको बड़ी शफकत (ममता) मिली। हज़रत अली रज़ि० चूंकि हुज़ूर सल्ल० के साथ अपने बचपन ही से आखिरी ज़िंदगी तक रहे। इस लिए उन्होंने आप सल्ल० से बहुत कुछ बल्कि सबसे ज़्यादा सरिखा और आपकी तरबियत (प्रशिक्षण) पाई, जिससे दूसरों को फैज़ पहुंचा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद आपसे बहुत क़रीब रहने और आपकी ख़ास तरबियत (शिक्षा व दीक्षा) पाने की वजह से बाज़ लोगों का ख्याल हुआ कि आपके बाद यही ख़लीफ़ा होंगे लेकिन हुज़ूर सल्ल० के दूसरे निकटतम साथी हज़रत अबूबकर रज़ि० से **28** साल छोटे होने की बिना पर हज़रत अबूबकर रज़ि० ज़्यादा श्रेष्ठता रखते थे और हुज़ूर के मुख्य साथी होने की वजह से अधिक स्वभाविक अनुकूलता रखने वाले थे। लिहाज़ा पहली ख़िलाफत के लिए उनका चयन हुआ और खलिफा-ए- दोम हज़रत उमर रज़ि० हुए वह भी हज़रत अली से १७ साल बड़े थे। इस्लाम के तीसरे ख़लीफा हज़रत उस्मान रज़ि० हुए वह भी हज़रत अली से उम्र में बड़े थे, उनकी शहादत के बाद हज़रत अली रज़ि० का ख़िलाफत के लिए चयन हुआ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निकटतम ज़िंदगी गुज़ारने की वजह से इल्म (ज्ञान), बहादुरी और दीनी विशेषताओं में प्रमुख थे। जिहाद में अपने को आगे रखने की कोशिश करने वाले थे और कई बार असाधारण सूबुत दिया। हज़रत उस्मान के बाद इस्लामी

---

(1) सुनन तिरमिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबे उस्मान रज़ि०

www.abulhasanalinadwi.org

साम्राज्य में जो अशान्ति की स्थिति बनी उससे निपटने में उनको सख्त मुकाबला करना पड़ा और अन्त में उनको अपने भूतपूर्व ख़लीफा की तरह शहीद कर दिया गया। यह रमज़ान सन् 40 हिजरी की घटना है।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि०

शुरू से इस्लाम में दाखिल हुए और वह कामयाब ताजिर (व्यापारी) थे। इस लिए वह धनवान थे। उन्होंने अपने माल और तन, मन, धन से इस्लाम को ताकत पहुंचाने का काम किया। वह उन दस सहाबा में हैं जिनको जन्नत की बशारत मिली और उनको सहाबा किराम के मुख्य लोगों में स्थान प्राप्त हुआ। हब्शा की तरफ दो बार हिजरत की। बदर, उहद और दूसरे ग़ज़वात में बहादुरी के साथ शिरकत की। ग़ज़वे तबूक में एक नमाज़ हुज़ूर सल्ल० ने उनके पीछे अदा की। सन् 32 हिजरी में मदीने तय्यबा में वफात (देहान्त) पायी और बकीअ़ में दफन हुए।

हज़रत तलहा रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह बिन उस्मान तैमी नाम है। बदर, उहद और दूसरे ग़ज़वात व मार्को (संग्रामों) में शरीक हुए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके और हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी के बीच भाई चारा कराया था। उहद में हुज़ूर सल्ल० की तरफ मुशरिकीन को बढ़ते देखा तो खुद आगे आ गए जिसकी वजह से उनको चोटें आयीं और जख्मी हुए। सन् 36 हिजरी में शहादत पायी। ज़िंदगी इस्लाम की वफादारी और हुज़ूर सल्ल० की आज्ञा पालन में गुज़ारी कि उनको भी दस जन्नतियों की बशारत में बशारत हासिल हुई।

हज़रत ज़ुबैर रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम बिन खुवैलद असदी मुख्य सहाबा में थे और हुज़ूर सल्ल० की फूफी साहस और वीरता से भरपूर हज़रत सफिया बिन्त अब्दुल मुत्तलिब के बेटे थे। हज़रत असमा बिन्त अबीबक्र सिद्दीक उनके निकाह में थीं। उनके बेटों में हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर को सहाबियत का सम्मान प्राप्त है। सन् 36 हिजरी में शहादत पायी। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत ज़ुबैर को अपना "हवारी" निश्चित किया था और जिन दस सहाबा की जन्नती होने की बशारत दी उनमें उनका नाम भी लिया।

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़िअल्लाहु अन्हु

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नानीहाली खानदान से सम्बन्ध था और हुज़ूर सल्ल० आपका बड़ा ख़याल फ़रमाते थे। ईरान के खिलाफ़ जंग में

नायक भी रहे और यह भी उन दस जन्नतियों में हैं जिनको जन्नत की बशारत दी गयी।

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़िअल्लाहु अन्हु

जलीलुल्लक़द्र (महानुभाव) सहाबी हैं। "साबिक़ीन अव्वलीन" सबसे पहले ईमान लाने वालों में हैं। हज़रत उमर रज़ि० के बहनोई थे। उनसे प्रभावित होकर हज़रत उमर ने इस्लाम लाने का इरादा ज़ाहिर किया। उनको भी जन्नत की बशारत (खुशखबरी) मिली और उनके नाम पर अशर-ए-मुबश्शरा की संख्या पूरी होती है।[1]

हज़रत अबू उबैदह रज़ि०

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह का नाम आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन जर्राह अल-फ़हरी है, हज़रत अबू बकर की कोशिश से इस्लाम से सम्मानित हुवे, सभी ग़ज़वात व मअ़रकों में शरीक हुवे, शाम (सीरिया) का बड़ा इलाक़ा उनके ज़रिये फ़तह (विजय) हुवा, शाम में ही गवर्नर थे, उसी ज़माने में सन् १८ हिजरी को वफ़ात पाई, यह भी दस बशारत प्राप्तकर्ता जन्नतियों में हैं।

---

(1) तुलफ़ा–ए–राशिदीन और "अशर–ए–मुबश्शरा" के हालात व फ़ज़ाएल के लिये मुलाहिज़ा करें: जामे तिरमिज़ी, किताबुल मनाक़िब, तबक़ात इब्ने सअ़द, उसुदुलग़ाबा, तज़किरतुल हुफ़्फ़ाज, सियर आलामिल नुबला, किताबुर रियाज़िन नज़स, सुबुलुलहुदा वर रशाद फ़ी सीरते ख़ैरिल इबाद भाग 11, हयातुस्सहाबा, तारीख़ तबरी भाग 3, अलबिदया वन–निहाया, अल–कामिल फ़ित्तारीख़।

www.abulhasanalinadwi.org

दूसरे कुछ अहम
सहाब-ए-किराम
रज़िअल्लाहु अन्हुम

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत हमज़ा बिन अबदिल मुत्तलिब रज़ि०

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा की औलाद में दो हज़रात को इस्लाम लाने की इज़्ज़त हासिल हुई। उनमें से एक हज़रत हमज़ा हैं, जो हुज़ूर सल्ल० को नबूवत मिल जाने के समय जवान और बड़े साहस वाले थे, उनकी दृढ़ता, साहस और ख़ानदानी उच्चता का मक्के में चर्चा था और यह चीज़ उनके रोबदाब की वजह से थी। हुज़ूर सल्ल० के साथ भतीजा होने के रिश्ते से हमदर्दी रखते थे। अतः एक अवसर पर अबू जहल जो हुज़ूर सल्ल० का सबसे बड़ा विरोधी शख्स था और उसे ख़ानदाने कुरैश में बड़ा सम्मान और ऊंचा स्थान प्राप्त था। उसने आप सल्ल० को बहुत कष्ट पहुंचाया और तकलीफ दी। हज़रत हमज़ा शिकार से वापस आ रहे थे तो उनको इस बात का पता चला उनको गुस्सा आया, उन्होंने अबू जहल की ख़बर ली और चैलेन्ज किया और इसी जोश व हमदर्दी में इस्लाम भी कुबूल कर लिया और अपने इस्लाम का ऐलान कर दिया, जिसके असर से हुज़ूर सल्ल० को ताक़त हासिल हुई। उसके बाद से हज़रत हमज़ा रज़ि० बराबर हुज़ूर सल्ल० के साथ शरीक रहे और मदद व सहयोग करते रहे। ग़ज़व-ए-उहद में धोका देकर उनको शहीद किया गया, जिससे हुज़ूर सल्ल० को बड़े रंज व नुक़सान का एहसास हुआ और अपने मुहब्बत और हमदर्दी करने वाले रिश्तेदार की कमी महसूस की।

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० एक बड़े मरतबे के सहाबिए रसूल थे। वह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए जिसके परिणामस्वरूप उनको आराम व सुख वाली ज़िंदगी छोड़नी पड़ी और उन्हें बहुमूल्य वस्त्र और अच्छा खाना भी छोड़ना पड़ा जो उनको अपने माँ बाप के साथ रहने की सूरत में प्राप्त था। अतः माँ बाप भी छूट गये। हज़रत मुहम्मद सल्ल० के साथ पूरी मुहब्बत और जांनिसारी के साथ हो गए और जब मदीने में ईमान का माहौल बन गया और जब वहां दीनी शिक्षा की ज़रूरत महसूस की गयी तो हुज़ूर सल्ल० ने आप ही को वहां उस्ताज़ और दाई बना कर भेजा। उन्होंने पूरा आज्ञा पालन किया और बड़ी मेहनत और हिकमत से दावत का काम अंजाम दिया। यहां तक कि साल भर में मदीने के अधिकांश लोग इस्लाम में दाखिल हो गए और वह इस कारनामे और ईमान व संयम के साथ जीवन व्यतीत करते हुए ग़ज़वऐ उहद में मुजाहिद की हैसियत से शरीक हुए और उसमें शहीद हुए। उस समय भी उनकी दरिद्रता का यह हाल था कि कफ़न तक के लिए उनके पास पूरा कपड़ा न था सिर्फ एक कंबल था कि सर छुपाया जाता तो पैर खुल जाते और पैर छुपाए जाते तो सर खुल जाता। हुज़ूर

www.abulhasanalinadwi.org

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सर ढको और पैरों को दरख़्त के पत्तों से छुपाओ। हार्दिक सम्बन्ध और बहुत भावुकता के साथ आप सल्ल० ने उनके ईमान और त्याग पर बड़े सम्मानित शब्द कहे।

हज़रत अब्बास बिन अबदिल मुत्तालिब रज़िअल्लाहु अन्हु

चचाओं में दूसरे चचा थे, जिन्होने इस्लाम कुबूल किया। अलबत्ता एक समय तक इस्लाम कुबूल नहीं किया था लेकिन गुप्त रूप से हमदर्दी और सहायता बराबर करते रहे और हुजूर सल्ल० के विरूद्ध दुश्मनों की जो कार्यवाहियाँ होती थीं उनका निष्पक्षता के साथ निवारण करते थे। अन्त में जब मक्का के माहौल से उनको जो ख़तरात महसूस होते रहे थे उन ख़तरात के कमज़ोर हो जाने पर अपने इस्लाम का खुल कर इज़हार (प्रकाशन) किया। उनसे भी हुजूर सल्ल० को ताकत पहुंची। आपके बेटों को भी इस्लाम लाने की दौलत नसीब हुई, जिनमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० को ऊंचा मुकाम हासिल हुआ, जिनको ख़ानदानी नातेदारी के ज़रिये हुजूर सल्ल० से ऐसा सम्बन्ध रहा जो एक छोटे को अपने कुटुम्ब के बड़े से होता है। उनके वंश में अल्लाह तआला ने बड़ी बरकत दी, जिनमें बाज़ से इल्म व दीन का बड़ा प्रसार हुआ और दीर्घ काल तक उनके वंश को शासन करने का अवसर मिला। उनकी मृत्यु सन् ३३ हिजरी मे हुई।

हज़रत जाफर बिन अबी तालिब रज़िअल्लाहु अन्हु

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा अबू तालिब जो अपनी ज़िंदगी भर बावजूद इस्लाम न लाने के आप सल्ल० की भरपूर हिमायत करते थे और मक्का में एक तरह से आपकी हिफाज़त का ज़रिया थे, उनकी वजह से आपको नबूवत मिलने के १० साल तक बड़ी मदद मिलती रही और वह दुश्मनों के कष्ट पहुंचाने में अपनी हद तक बाधक बनते रहे वह अगरचे इस्लाम नहीं लाए लेकिन उनके कई बेटे इस्लाम लाए, जिनमें ख़ास तौर पर हज़रत अली और हज़रत जाफर और हज़रत अ़क़ील रज़िअल्लाहु अनहुम उल्लेखनीय हैं।

हज़रत जाफर बिन अबी तालिब रज़ि० ने उन मुसलमानों का नेतृत्व किया था जो हिजरत करके हब्शा गए थे और वहां के बादशाह नजाशी से बहुत प्रभावशील बात करके सहायता प्राप्त की थी। हज़रत जाफर की तकरीर बड़ी प्रभावकारी और इस्लाम की सर्वोत्तम व्याख्या थी। दीन के लिए बड़ी कुर्बानियाँ दी। ग़ज़व-ए-मूता सन् 8 हिजरी में मुसलमानों की कियादत (नेतृत्व) करते हुए शहादत पायी। हुजूर सल्ल० को बहुत प्रिय थे। उनकी वफ़ात का भी हुजूर सल्ल० पर बड़ा असर पड़ा और आपने उन्हें 'तय्यार' का (उड़ने वाला) ख़िताब दिया। उनके लिए एक मौके पर फरमाया "सूरत और सीरत (रूप और आचरण) में तुम मेरे समान हो, आयु में हज़रत अली से बड़े थे 40 से अधिक आयु पायी।

www.abulhasanalinadwi.org

उनकी ग़रीब परवरी की वजह से उन्हें "अबुल मसाकीन" का ख़िताब दिया गया और मअरके (युद्धस्थल) में दोनों हाथ कट जाने की वहज से "ज़ुल जिनाहैन" का ख़िताब मिला।" हुज़ूर सल्ल० ने फरमाया कि मैंने जाफर को फरिश्तों के साथ जन्नत में उड़ते देखा है।[1]

हज़रत सलमान फारसी रज़िअल्लाहु अन्हु

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने वालों में हज़रत सलमान फ़ारसी के इस्लाम लाने का वाक़िया बड़ा अहम है। वह ईरानी थे, लेकिन उनमें उचित धार्मिक व्यक्ति की तालाश थी, उस तालाश में वह कई ईसाई उल्मा और बुज़ुर्गो के यहां एक के बाद दूसरे के यहां रहते रहे। लेकिन उनको अच्छा तजुरबा (अनुभव) नहीं हुआ और आख़िर में मक्का पहुंच कर हुज़ूर सल्ल० से मिले और इस्लाम लाए और फिर बराबर इस्लाम को ताक़त पहुंचाने और हुज़ूर सल्ल० के साथ मदद करने में शरीक रहे और इस्लाम की सुरक्षा में बाज़ उचित प्रस्ताव पेश किये, जिसको हुज़ूर सल्ल० ने अख़्तियार किया। ग़ज़्व-ए-ख़नदक़ में खनदक़ खोदने की तजवीज़ (प्रस्ताव) भी उनहीं की थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी बड़ी क़द्र फ़रमाई और फरमाया : "सलमान हमारे घरवालों में से हैं।" मदाएन में सन् ३६ हिजरी में इन्तिकाल फरमाया।

हज़रत सअद बिन मआज़ रज़िअल्लाहु अन्हु

इस्लाम की दावत जब मदीना तय्यबा पहुंची और वहां के कई ज़िम्मेदार इस्लाम में दाखिल हुए उनमें मदीने के दो अहम क़बीलों के सरदार हज़रत सअद बिन मआज़ जो क़बीले औस के सरदार थे और कबीले के बड़े ज़िम्मेदार और प्रभावशाली थे, इस्लाम में दाख़िल हुए और इसी तरह सअद बिन उबादा जो क़बीले खज़रज के सरदार थे और प्रभावशाली ज़िम्मेदार थे। इस्लाम में दाख़िल हुए। इन दोनों के प्रभाव से दोनो कबीलों के अधिकतर लोग इस्लाम में दाख़िल हो गए। इस तरह मदीने की अधिकतर जनसंख्या आज्ञाकारी हो गई और हुज़ूर सल्ल० को वहां मुन्तिक़िल होने की दावत दी और इसी दावत पर आप सल्ल० ने मदीना तय्यबा को अपना मरकज़ (केन्द्र) बनाया और इन दोनों कबीलों के लोगों ने मुकम्मल वफादारी और मुकम्मल ताबेदारी का सबूत दिया और मक्का से आने वाले मुसलमानों को अपने सगे भाईयों की तरह मेहमान बना लिया। इन हज़रात (सज्जनों) ने इस्लाम में दाख़िल होने के समय हुज़ूर सल्ल० से अपने एक सहाबी को मदीना बुलवाया, वह हज़रत मुसअ़ब बिन उमैर थे। जिनका इस्लाम के विशाल ढंग से फैलाने में बड़ा हाथ

---

(1) तिरमिज़ी, किताबुल मनाक़िब।

www.abulhasanalinadwi.org

था। मदीना के उसैद बिन हुज़ैर, असद बिन ज़रारा ने बड़ी मदद दी और हिकमत के साथ हज़रत मुसअ़ब बिन उमैर की सफलता में सहायता दी। जिसके नतीजे में लगभग पूरा मदीना इस्लाम का समर्थक और रक्षक बन गया और हज़रत सअद बिन मआ़ज़ और सअद बिन उबादा ने अपने अपने कबीले के सरदार होने की बिना पर इस्लाम और मुसलमानों को पूरी मदद दी। हज़रत सअद बिन मआ़ज हुज़ूर सल्ल० पर ईमान लाने के बाद पूरी जांनिसारी के साथ इस्लाम की मदद और रसूलुल्लाह सल्ल० की मुहब्बत का हक़ अदा करते रहे।

हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़िअल्लाहु अन्हु

क़बील-ए-औस और क़बील-ए-ख़ज़रज मदीना मुनव्वरह के बड़े कबीले थे। उनमें क़बील-ए-ख़ज़रज ज़्यादा बड़ा कबीला था। कबील-ए-औस अगरचे क़बील-ए-ख़ज़रज से छोटा था लेकिन उसी की टक्कर का कबीला था। वह दोनों मिल कर मदीने के असल और बड़ी संख्या के निवासी थे। हज़रत सअद बिन उबादा क़बील-ए-ख़ज़रज के सरदार थे। इस क़बीले के एक बड़े सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल थे। इस्लाम के मदीना पहुंचने के समय उनकी बड़ी ऐहमियत थी और वह हुज़ूर सल्ल० पर दिल से ईमान नहीं लाए थे, उनकी तरफ़ से हुज़ूर सल्ल० से दूरी और अन्दर से विरोध और गुप्त शत्रुता के बावजूद हज़रत सअद बिन उबादा ने हुज़ूर सल्ल० से गहरा सम्बन्ध रखा और अपने सरदार से प्रभावित नहीं हुए और इस्लाम से पूरी वफ़ादारी का सुबूत दिया।

हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़िअल्लाहु अन्हु

उसैद बिन हुज़ैर कबीले औस के सरदार थें, जिसके बड़े सरदार हज़रत सअद बिन मआज़ थे हज़रत सअद बिन मआज़ के इस्लाम लाने में उनकी कोशिश का बड़ा हिस्सा है। हज़रत असअद बिन ज़रारा का भी बड़ा सहयोग रहा और यह सब हज़रात इस्लाम के ऐसे हामी (समर्थक) बने कि मुसलमानों को मदीने में सफल कार्यक्षेत्र बनाने में बड़ी मदद मिली।

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़िअल्लाहु अन्हु

जुन्दुब बिन जनादा नाम था और कबीले गिफ़ार के फर्द थे। रिसालत मअब हुज़ूर अकदस सल्ल० की ख़बर सुन कर मक्का मुकर्रमा आए और आप सल्ल० से मिल कर संतुष्ट हुए और ईमान लाए। फिर अपने क़बीले में और अपने पड़ोस "असलम" में कोशिश करके उनको इस्लाम की दावत दी और उनको इस्लाम में दाखिल किया और बराबर इस्लाम की दावत का काम करते रहे और हुज़ूर सल्ल० को मदद देते रहें। उन्होंने संयम और वैराग्य के जीवन को प्रमुख्ता दी और हमेशा धन से बचते रहे। संतोष के साथ कम से कम पर गुज़ारा

किया और संयमी जीवन की ऐसी ऊंची मिसाल पेश की जो आपकी पहचान बन गयी। और आखिर में गोशानशीं हो गए।

हज़रत अबू दरदा रज़िअल्लाहु अन्हु

उवैमर बिन साईदा नाम है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की संगत में रहे और दीन का बड़ा इल्म हासिल किया। चूंनाचे हुज़ूर सल्ल० के बाद दीन के मुअल्लिम, मुहद्दिस, फक़ीह की हैसियत से हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी ख़िलाफत के ज़माने में शाम भेज दिया था। वहां उन्होंने दीन का इल्म खूब फैलाया।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु अन्हु

मशहूर सहाबा में हुए, अबू अब्दुर्रहान कुन्नियत है, ख़जरजी हैं। हुज़ूर सल्ल० के साथ रहते हुए बहुत इल्म हासिल किया यहां तक की हराम हलाल के सिलसिले में सबसे बड़े आलिम कहे गए और इस सिलसिले में उनको विश्वास पात्र मिला। हुज़ूर सल्ल० ने विभिन्न मौक़ों पर उन्हें दीनी मसाएल की शिक्षा दी जिसकी जानकारी उन्होंने बाद के लोगों को दी और उसका प्रचार किया। उनसे हुज़ूर सल्ल० ने यह भी फरमाया कि : "मुझे तुमसे मुहब्बत है।" उन्हें दीन की तालीम देने के लिए और तबलीग़ के लिए यमन भेजा था। जहां से वह हुज़ूर सल्ल० की वफात के बाद मदीना आए और फिर शाम जा कर तालीम व दावत का काम किया और वहीं १५ हिजरी मे वफात पायी।

हज़रत हुज़ैफा बिन यमान रज़िअल्लाहु अन्हु

हुज़ूर सल्ल० से जो सहाबा बहुत क़रीब थे और जिनसे आप सल्ल० राज़ की बातें भी फ़रमाया करते, उनमें हज़रत हुज़ैफा को विशेष स्थान प्राप्त रहा। इसी लिए आपको "साहिबेसिर रसूलुल्लाह सल्ल०" के राज़ को जानने वाले का ख़िताब मिला। मुनाफिकीन की निशानदही और क़यामत तक पेश आने वाली मुसीबतों और भविष्यवाणियों का इल्म ख़ास तौर पर हुज़ूर सल्ल० से हासिल किया। हज़रत उस्मान रज़ि० की शहादत की घटना के कुछ ही दिन बाद वफात पा गए।

हज़रत ख़ब्बाब रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत भी मशहूर सहाबा में थे और शुरू ही से इस्लाम में दाख़िल हुए और कुफ़्फ़ार की तरफ से बहुत तकलीफें उठायीं। दहकते अंगारों पर लिटाए गए, और सीने पर पत्थर रखा गया ताकि हिल न सकें। मगर

www.abulhasanalinadwi.org

सब कुछ सहा अपने अक़ीदे व दीन पर मज़बूती पर क़ायम रहे और अल्लाह के लिए दीन के लिए बड़े साहस का सबूत दिया।

हज़रत बिलाल रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रत बिलाल बिन रिबाह ने भी दीन के लिए बड़ी तकलीफें उठायीं। हब्शा के रहने वाले थे और मक्का के एक सरदार के ग़ुलाम थे। शुरू में इस्लाम लाए। इस पर उनको उनके सरदार ने बड़ी तकलीफ दी। ज़मीन पर उन्हें लिटा कर गरम पत्थर उनपर रखता और उनसे फिरने को कहता। वह "अहद अहद" (एक एक) कहे जाते यहां तक कि हज़रत अबूबकर रज़ि० ने उन्हें उससे ख़रीद लिया फिर आज़ाद कर दिया। यह बराबर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ लगे रहे और जब नमाज़ के लिए अज़ान मुक़र्रर की गयी तो वही अज़ान देते थे। हुज़ूर सल्ल० ने उनको मुअज़्ज़िन बनाया और आख़िर तक वह मुअज़्ज़िन रहे और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत अंजाम देते रहे। हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात के बाद मदीना में रहने की उन्हें हिम्मत न हुई वह दूसरी जगह निकल गए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़िअल्लाहु अन्हु

बड़े दर्जे के सहाबी हैं बनी इस्राईल के फर्द हैं। यहूदी मज़हब से सम्बन्धित थे, यहूदियों के बड़े उल्मा में उनका शुमार होता था। ईमान लाए तो इस्लाम में भी उनका दर्जा बुलन्द हुआ और यह आयत नाज़िल हुई :

अनुवाद : -

"और बनी इस्लाईल में से एक गवाह इसी तरह की एक (किताब) की गवाही दे चुका और ईमान ले आया।" (सूरा : अहक़ाफ़ - 10)

चुनांचे यह बड़े उल्मा-ए-इस्लाम में भी हुए। जन्नत की बशारत हुज़ूर सल्ल० ने दी। क़ौम यहूद उनकी बड़ी क़ायल और उनकी उत्तमता और विशेषता को मानती थी लेकिन उनके ईमान लाते ही उनकी दुश्मन हो गई। अलबत्ता उनका अपना घर ईमान ले आया।

हज़रत सुहैब रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रत सुहैब बिन सनान भी मशहूर सहाबी हैं। रूम के इलाके के थे, दारे अरक़म में हाज़िर हो कर इस्लाम ले आए और उन्होंने इस्लाम लाने के बाद इस्लाम को अपनी बहादुरी और सैनिक क्षमता से फायदा पहुंचाया और हुज़ूर सल्ल० के विश्वास पात्र और आज्ञा पालक और कारगुज़ार सहाबी रहे। मुशरिकीन मक्का ने उन्हे बड़ी तकलीफें दीं। हिजरत करने लगे तो वह लोग आड़े आए मगर यह कहा कि अगर तुम अपना सारा माल व मता छोड़ दो तो जा सकते

www.abulhasanalinadwi.org

हो, उन्होंने वह सब कुर्बान कर दिया और हिजरत कर गए। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फरमाया : "रबिहः सुहैब रबिहः सुहैब" कि सुहैब खूब नफा में रहे। हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अन्हु उनकी खूबियों के बड़े क़ायल थे और नमाज़ जनाज़ा के लिए उन्हीं के लिए वसीअत फरमाई थी।

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा हुज़ूर सल्ल० के आज़ाद किये हुए गुलाम और मशहूर सहाबी गुज़रे हैं। वह गुलाम की हैसियत से आप सल्ल० की अहलिया (पत्नी) उम्मुलमोमिनीन हज़रत खदीजतुल कुबरा रज़ि० के पास थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निकाह का सम्बन्ध होने के बाद उन्होंने आपको दे दिया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको आज़ाद करके बेटे की तरह क़रार दिया। उनके बाप अर्से से उनकी तलाश में थे उन्होंने चाहा कि उनका बेटा उनको मिल जाए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तैयार हो गए मगर हज़रत ज़ैद बाप के साथ जाने पर तैयार न हुए और आपके साथ रहने को तरजीह (प्रमुख्ता) दी। आप भी उनसे बेटे की तरह पेश आते। इसकी वजह से उनको ज़ैद बिन मुहम्मद कहा जाने लगा था। "वही" के ज़रिये हुक्म मिला कि किसी को बेटा बना लेने से बेटा नहीं बनता। लिहाज़ा वह ज़ैद बिन हारिसा कहे जाने लगे।

आप सल्ल० ने उनका बड़ा ख़्याल रखा और बाद में अपनी फूफी की लड़की से उनकी शादी कर दी, जो निभ न सकी और दोनों में अलाहिदगी हो गई। तो आप सल्ल० ने अपनी फूफी की बेटी की दिलदारी के लिए अपने निकाह में ले लिया लेकिन हज़रत ज़ैद के साथ अच्छा बर्ताव ही करते रहे। उनके बेटे उसामा थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके साथ औलाद की तरह मुहब्बत व शफ़क़त का मामला करते थे और उनको एक ग़ज़वे में बड़े बड़े सहाबा के बावजूद फ़ौज का सरबराह बनाया।

हज़रत अरक़म बिन अबिल अरकम रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रत अरकम बिन अबिल अरकम कुरैश के मशहूर क़बीले बनी मख़ज़ूम के व्यक्ति थे। उस शाख़ में हुज़ूर सल्ल० के सख़्त विरोधी थे लेकिन हज़रत अरक़म इस्लाम ले आए फिर अपने घर को हुज़ूर सल्ल० के अपने सहाबा के मिलने और दीनी रहनुमाई (पथ प्रर्दशन) के लिए एक गुप्त स्थान की हैसियत से सुपुर्द कर दिया था। हुज़ूर सल्ल० अपने सहाबा से मिलते और वार्तालाप करते। हज़रत उमर भी वहीं जाकर इस्लाम लाए। हज़रत अरक़म बिन अबिल अरकम ने इस तरह इस्लाम को ताकत पहुंचाने और मदद करने का सबूत दिया और उनके घर का नाम "दारे अरकम" के नाम से आज भी जाना जाता है।

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत अमर बिन आस रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रत अमर बिन आस बड़ी सूझ बूझ, कूट नीति में प्रमुख समझे जाते थे। कुरैश की तरफ से इस्लाम की मुख़ालिफत (विरोध) में लगे रहे और जब मुसलमान हब्शा हिजरत करने लगे तो उनको पकड़ कर लाने के लिए भेजे गए थे, कि हब्शा के बादशाह से बात करके पकड़ कर लाएं। वह इस्लाम के विरोध में रहे। लेकिन "हुदैबिया संधि" के बाद उनको इस्लाम के बारे में इतमीनान हासिल हुआ और हज़रत जाफर बिन अबी तालिब रज़ि० के हाथ पर ईमान लाए और फिर अपनी योग्यताएं इस्लाम की सेवा में लगा दीं। और बड़ी लाभदायक सेवाएं अंजाम दीं। हज़रत उमर के ज़माने में मिस्र की फ़तह का कारनामा अंजाम दिया और मिस्र में सन् ५० हिजरी के आस पास वफ़ात पायी।

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़िअल्लाहु अन्हु

साबीकीन अव्वलीन, सबसे पहले ईमान लाने वालों में हैं। मूलतः कैहतानी हैं। उन्हें भी मक्का के मुशरिकीन ने बड़ी तकलीफें दी, जिससे उनकी पीठ पर काले दाग़ पड़ गए थे। जो आख़िर तक रहे। इसी तरह आपके बाप हज़रत यासिर और माँ हज़रत सुमय्या तो इस्लाम की पहली शहीद ख़ातून थीं। हुज़ूर स०अ० उनकी तकलीफों को देख कर फरमाया करते : "ऐ अहले यासिर सब्र करो" और कभी फरमाते "तुमको बशारत हो जन्नत तुम्हारी मुश्ताक़ (लालायित) है।" हज़रत अम्मार को शहादत की बशारत हुज़ूर सल्ल० ने सुनाई थी। जंग सिफ़्फ़ीन में शहादत पायी।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद कुरैश के शहसवारों में थे और सैनिक नेतृत्व का काम भी उनके सुपूर्द किया जाता था और मुसलमानों की जो जंगें काफ़िरों से हुई उनमें वह मुसलमानों के विरूद्ध शरीक रहे। उन्होंने ख़ास तौर पर ग़ज़व उहद में अपनी विरोधी कूट नीति से बहुत नुकसान पहुंचाया लेकिन "हुदैबिया संधि" के बाद हज़रत अमर बिन आस के साथ वह भी इस्लाम से संतुष्ट हो कर मदीना आकर मुसलमान हो गए और फिर अपने सैन्य संचालन और सैनिक नेतृत्व को पूर्ण वीरता के साथ प्रयोग करते रहे। यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० ने उनकी कारगुज़ारी से खुश हो कर "सैफ़ुल्लाह" अल्लाह की तलवार का ख़िताब दिया और हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात के बाद भी युद्ध-अभियान में विशेष प्रमुखता प्राप्त रही और बड़ी कामयाबियाँ मिली। उनके नेतृत्व में शाम भी फतह हुआ। यह भी कबीले मख़ज़ूम के व्यक्ति थे, जिसके कई लोगों की इस्लाम से दुश्मनी मशहूर

www.abulhasanalinadwi.org

थी। हज़रत उमर के ख़िलाफत काल में "हिम्स" (शाम) में सन् २१ हिजरी में वफात पायी।

हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० उन ऊंचे सहाबा में हैं जिनकों हुजूर सल्ल० की ख़िदमत में ज़्यादा से ज़्यादा वक्त गुज़ारने की सआदत (सौभाग्य) मिली। इसलिए सबसे ज़्यादा हदीसें भी इन्हीं से बयान की गयी हैं। अल्लाह ने इनको याद करने और बयान करने की आला दर्जे की सलाहियत अता फरमाई थी। उनकी यह सलाहियत दीन व शरीअत की हिफाज़त में बड़ी काम आयी। अच्छी उम्र पायी। ज़माने की बड़ी ऊंच नीच देखी और उम्मत की रहनुमाई का काम अंजाम दिया।

हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़िअल्लाहु अन्हु उन चार मशहूर सहाबा मे से हैं जिनको क़ुरआ़न मजीद का खुसुसी तौर पर इल्म अता हुआ था और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन हज़रात से क़ुरआ़न मजीद सीखने को फरमाया था। अन्सार के कबील-ए-खज़रज से हैं। हुजूर सल्ल० ने उनसे फ़रमया था कि अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें क़ुरआ़न मजीद सुनाऊँ। हुजूर सल्ल० ने उनको "सय्यदुल अन्सार" का ख़िताब दिया था। मदीने में सन् 18 हिजरी में वफात पायी।

हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रत मूसा अशअ़री का नाम अब्दुल्लाह बिन क़ैस है। कबीलए अशअर के फर्द थे। मक्का में इस्लाम लाए और इस्लाम क़ूबुल करने पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पूरा साथ दिया और हुजूर सल्ल० का ऐतमाद (विश्वास) हासिल किया और हुजूर सल्ल० के बाद ख़िलाफते इस्लामिया की तरफ से दी गयी ज़िम्मेदारियों को भली भांति अंजाम दिया और वह प्रसिद्ध सहाबा में शुमार किये जाते हैं। हब्शा हिजरत की थी फिर वहां से मदीना हाज़िर हुए थे। मक्का मुअ़ज़्ज़मा में सन् 52 हिजरी में वफात पायी।

हज़रत अबू सुफ़यान व मआविया बिन अबी सुफ़यान रज़िअल्लाहु अन्हुमा

ख़र बिन हर्ब बिन उमय्या नाम है। क़ुरैश के उन सरदारों में थे, जिनके ज़िम्मे जंगों में लीडरी सुपुर्द की जाती थी। चुंनाचे मुसलमानों से क़ुरैश की जंगों में उन्होंने बड़ी लीडरी की। वह क़ुरैश की शाख़ बनी उमय्या में थे, जिसमें

www.abulhasanalinadwi.org

तीसरे ख़लीफ़-ए-राशिद हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान भी थे और बनी उमय्या की शाख़ हुज़ूर सल्ल० के दादा की चचाज़ाद शाख़ थी। इस तरिके से ज़्यादा क़रीबी रिश्तेदारी भी थी लेकिन कुरैश के जंगी लीडर होने की वजह से वह मुसलमानों के विरूद्ध लीडरी करते रहे और फतह मक्का के मौक़े पर मुसलमानों के मक्का पहुंचने से पहले वह इस्लाम ले आए और फिर इस्लाम के वफादार रहे और निःस्वार्थ सहाबी की हैसियत से ज़िंदगी गुज़ारी। उनके साहबज़ादे हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़यान थे।

हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़यान रज़िअल्लाहु अन्हुमा ख़िलाफते राशिदा के बाद ख़लीफा हुए और बनी उमय्या का दौरे, हुकूमत व ख़िलाफ़त उनसे शुरू हुआ। उन्होंने बड़ी कूट नीति और राजनैतिक समझ बूझ के साथ शासन किया और इस्लामी महिमा को बाकी रखने की कोशिश की। उनको हज़रत उमर ने अपनी ख़िलाफत में शाम का गर्वनर बनाया था। जहां उन्होंने अपनी ज़िम्मेदारी अच्छे ढंग से पूरी की। हज़रत उस्मान रज़ि० की शहादत के बाद उनमें और हज़रत अली रज़ि० में इख़्तिलाफ़ हुआ जो हज़रत अली रज़ि० की वफ़ात तक क़ायम रहा।

कुछ कम उमर सहाबा

कम उमर सहाबा में जिनको बचपन से इस्लाम में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहनुमाई हासिल हुई, उनकी भी एक अच्छी संख्या है। उनमें जिनको बाद में हुज़ूर सल्ल० की भी रहनुमाई (पथ प्रर्दशन) और दीक्षा के नतीजे में दीन की जो समझ हासिल हुई उसमें उन्होंने दूसरो को बहुत फ़ायदा पहुंचाया और इस वक्त जो दीन की मालूमात और ख़ज़ाना है उनके हासिल करने में ख़ास तौर पर ज़रिया बने। उनमें ख़ास तौर पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अनस बिन मालिक और उसामा बिन ज़ैद और खुद हुज़ूर सल्ल० के नवासे हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़िअल्लाहु अन्हुम हैं और यह वह लोग हैं जिनसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तअ़ल्लुक रहा है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि०

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हुमा अगरचे चचाज़ाद भाई थे, मगर एक तरह औलाद के समान थे। उनकी खाला उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना हुज़ूर सल्ल० के निकाह में थीं। और उन्हें इस तरह हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में हाज़िर होने का बार बार मौक़ा मिलता रहता था। हुज़ूर सल्ल० ने एक मौक़े पर खुश हो कर यह दुआ दी कि "ऐ अल्लाह इनको हिकमत (ज्ञान)

www.abulhasanalinadwi.org

की तालीम दे।" [1] चुनांचे वह जमाअते सहाबा में इस खूबी में नुमायाँ हुए और हज़रत उमर रज़ि० उनसे मशविरा लेते और उनको बाज़ बड़े सहाबा पर इस सिलसिले में फ़ौकियत (प्रधानता) देते।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहु अन्हु

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहु अन्हु उन सहाबा किराम मे से एक हैं जिन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कुर्ब (निकटता) और विश्वास प्राप्त हुआ। उनकी बहन उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़िअल्लाहु अन्हा थीं, उनसे हुज़ूर सल्ल० ने उनके भाई की तअरीफ़ भी फरमाई थी और नेक इंसान भी कहा था। वह इल्म व तफ़क्कोह (शास्त्र ज्ञान) में भी एक मुकाम रखते थे। इसमें उनसे बाज़ सहाबा व ताबेईन की एक जमाअत ने फायदा हासिल किया। हज़रत नाफ़े उस्ताद इमाम मालिक उनके ख़ास शार्गिद हैं। मक्का मुअज़्ज़मा में सन् 73 हिजरी को 86 साल की उम्र मे इन्तिकाल किया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़िअल्लाहु अन्हु

कम उम्री मे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत को कुबूल करके आप पर मर मिटे। आचार, व्यवहार, काम करने का ढंग, चरित्र व आचरण इन सब में रसूलुल्लाह सल्ल० से बहुत क़रीब थे। इल्म व तफ़क्को में भी बहुत बढ़े हुए थे। फ़िकह हनफ़ी (धर्मशास्त्र) का बड़ा मरजअ़ उनका इल्म फ़िक्ह है। 32 हिजरी में जबकि आपकी उम्र 60 साल से ज़्यादा थी वफात पायी। साबिक़ीन अव्वलीन में हैं।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु अन्हु

अनस बिन मालिक बिन नज़र नाम है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मदीना तशरीफ़ लाए तो उस वक्त 10 साल के थे। खिदमत गुज़ारी के लिए पेश किये गए। चुंनाचें 10 साल हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत की और पूरी मुद्दत में हुज़ूर सल्ल० ने कभी भी सख्त सुस्त नहीं कहा बल्कि अख़्लाक व सुलूक ही बरता और बड़ी दुआएं दी। जिसके असरात वह पूरी उम्र महसूस करते रहे। 100 साल से ज़्यादा उम्र पायी। बसरा में ८१ हिजरी में इन्तिकाल किया।

हज़रत हसन व हज़रत हुसैन रज़िअल्लाहु अन्हुमा

यह दोनों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बड़े चहीते नवासे हैं, जिनसे हुज़ूर सल्ल० को न सिर्फ ऊंची उम्मीदें थीं बल्कि उनके सिलसिले में

---

(1) सुनन तिरमिज़ी किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िब अब्दुल्लाह बिन अब्बास

www.abulhasanalinadwi.org

बशारत के जुमले (वाक्य) भी सुनाए और फ़रमाया कि "हसन और हुसैन जन्नत के नौजवानों के सरदार होंगे।" इन दोंनों को हुज़ूर सल्ल० से एकरूपता भी थी और हुज़ूर सल्ल० से यह फ़रमाते हुए भी सुना गया कि "यह दोनो मेरे बेटे हैं और मेरी बेटी के बेटे हैं, ऐ अल्लाह मैं इन दोंनो से मुहब्बत करता हूँ आप भी इन दोनों से मुहब्बत फ़रमाईये और जो इन दोनों को चाहे आप भी चाहिये।"[1]

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़िअल्लाहु अन्हु

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज़ाद कर्दा चहीते ग़ुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा के बेटे और हुज़ूर सल्ल० के महबूब हैं। इनको "हिब्बु रसूलिल्लाह" कहा जाता था। वफ़ात से पहले एक लश्कर की क़यादत (नेतृत्व) इन्हीं ने की थी। मदीना तय्यबा में सन् 54 हिजरी में वफ़ात पायी।

यह थे मुसलमानों के असलाफ़ (पूर्वज) जिनको देख कर ईमान ताज़ा होता है और नेक अमल की रग़बत होती है। उनकी सीरतें (चरित्र) उनके हालात हमारी नई नस्लों के सामने आते रहने चाहिएं ताकि उनसे फ़ायदा हासिल हो सके। मिसाल के तौर पर कुछ सहाबा के संक्षिप्त में हालात बयान कियं गए। सहाबा की जमाअत का हर फर्द अपनी जगह उम्मत था। हज़रत अबू दुजाना, हज़रत ख़ुबैब, हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन, हज़रत कअ़ब बिन मालिक, हज़रत हस्सान बिन साबित, हज़रत ज़ैद बिन साबित, हज़रत अम्मार बिन यासिर, हज़रत मुग़ैरा बिन शोअबा, हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी, हज़रत अनस बिन नज़र अल्लाह उन सबसे राज़ी हो उन सब के महान कारनामे और कुर्बानियाँ किसी से पोशिदा नहीं।

और इसी तरह सहाबियात में उम्मुहातुल मोमिनीन (ईमान वालो की माँए) यानी अज़वाज मुतह्हरात (पाक बीवियाँ) को और बनाते ताहिरात (पाक बेटियाँ) को छोड़ कर जिन्होंने दीन को ताकत पहुंचाने और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को राहत देने में कोई कसर नहीं छोड़ी और हौसलामंदी व बुलन्द हिम्मती से काम लिया। सहाबियात में और भी ऐसे नाम मिलते हैं, जैसे हज़रत सुमय्या रज़िअल्लाहु अन्हा जो इस्लाम की पहली शहीद ख़ातून हैं, ज़ईफ बूढ़ी थीं मगर अबू जहल ने इस्लाम की दुश्मनी में उनकी शर्मगाह पर बर्छी मार कर शहीद कर दिया। फिर हज़रत ख़नसा की बहादुरी की मिसाल दी जाती है,

---

(1) सुनन तिरमिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबिल हसन वल हुसैन रज़िअल्लाहु अन्हुमा

www.abulhasanalinadwi.org

जिनके चार जवान बेटे शहीद हो गए और वह सब्र व इस्तिक़ामत (स्थिरता) का पहाड़ बनी रहीं और इसी तरह हज़रत सफ़िया रज़िअल्लाहु अन्हा जो कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी थीं, हज़रत असमा बिन्त अबूबकर सिद्दीक जो कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की माँ हैं, उनके अलावा हज़रत उम्मेहानी, हज़रत उम्मे ऐमन की ख़िदमात के ज़िक्र से सीरत की किताबें खाली नहीं। अल्लाह तआला उन सब को बेहतरीन बदला अता फ़रमाए और खूब खूब रहमतें उन पर नाज़िल फ़रमाए, रज़िअल्लाहु अन्हुम व रज़ुअन्हु अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वह सब उससे राज़ी हुए।

www.abulhasanalinadwi.org

بسم اللہ الرحمن الرحیم

اللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ

وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیْتَ

عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ

اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ ۝

اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی

اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی

اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ

اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ ۝

www.abulhasanalinadwi.org

www.abulhasanalinadwi.org